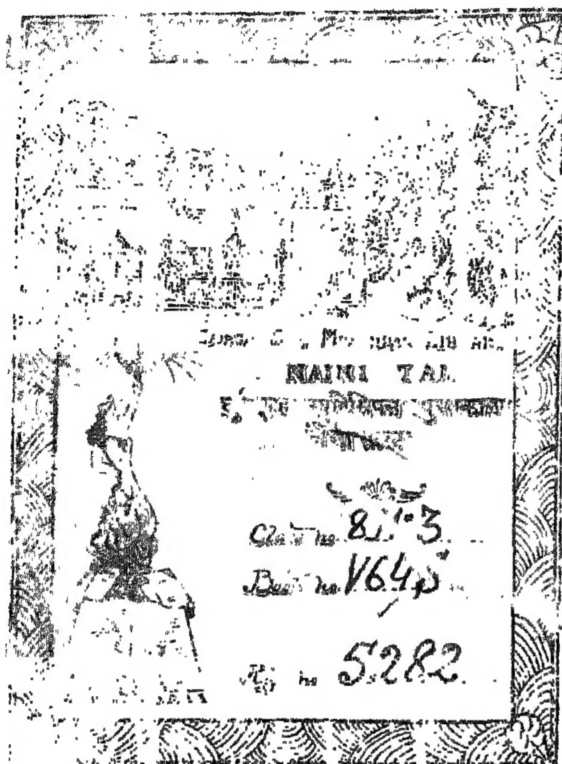


जूल्स वर्न

समुद्र की गहराइयों में

समुद्र के अंदर हजारों फुट नीचे की यात्रा के रोमांचकारी वर्णन Twenty Thousand Leagues Under the Sea का हिंदी रूपांतर



राजपाल एण्ड सन्ज़, दिल्ली

यूनेस्को के सहयोग से प्रकाशित

रूपांतरकार

संत कुमार अवस्थी

मूल्य	:	पांच रुपये [redacted]
प्रकाशक	:	राजपाल एंड सन्ज, दिल्ली
चित्रकार	:	आनंद
मुद्रक	:	सुरेन्द्र प्रिंटर्स प्रा० लि०, दिल्ली

जूल्स वर्ने

प्रसिद्ध फ्रेंच लेखक जूल्स वर्ने का जन्म आठ फरवरी, १८२८ को हुआ। वर्ने के पिता अपने नगर के प्रसिद्ध वकील थे और उनका काफी सम्मान था। वर्ने की माता जहाज निर्माताओं के परिवार से थीं।

वर्ने के पिता का काम अधिकतर जहाजरानी से संबंधित मुकदमों से उलझा हुआ था। बालक ने भी अपने भावी कार्य का स्वप्न उन्हीं अनोखी कहानियों के ताने-बाने से बनाया। ६ बरस की आयु में वर्ने स्कूल गया। वह स्कूल एक जहाज के कप्तान की विधवा पत्नी चलाती थी। वह अपने बाल-पाठकों को अपने पति के समुद्र में डूब जाने की दुखभरी कहानी सुनाया करती थी। वर्ने की कल्पना को इस कहानी ने बहुत प्रभावित किया।

१८३९ में वर्ने ने घर के वातावरण से तंग आकर भागने का यत्न किया। वह एक जहाज के कप्तान से बात करके उस पर भागना चाहता था—वह जहाज भारत आ रहा था—पर पिता ने पकड़ लिया। उसके बाद जूल्स ने घर पर ही अपनी कल्पना की उड़ानें भरनी आरंभ कीं।

१९ वर्ष की आयु में जूल्स नें वकालत का पहला इम्तहान दिया और चोरी-छिपे साहित्यिक गतिविधि भी आरंभ की। फ्रांस की राज्य-क्रांति वाले साल जूल्स अपनी वकालत की तालीम समाप्त करने पेरिस आया। वहां उसने नाटककार बनने की सोची और उसकी भेंट उस समय के प्रसिद्ध लेखकों से हुई। अलेक्जेंडर ड्यूमा ने उसे प्रोत्साहित किया। पिता चाहते

थे वह अपने नगर लौट आए, पर जूल्स अपने असली कार्य क्षेत्र में उतर आया था। १८५३ में उसने 'कोलिन मेलार्ड' रूपक लिखा। पिता चाहते थे कि वह वह सब छोड़-छाड़ कर घर आकर वकालत करे, पर वर्ने अपनी कल्पना के घोड़े पर सवार था। आखिर जब बेटे ने एक नौकरी कर ली, तो पिता ने जिद्द छोड़ दी। वर्ने खाली समय में कहानियां और लेख लिखने लगे।

१८५४ में वर्ने ने 'मास्टर जकारियस' लिखा, जिसमें विज्ञान और धर्म का द्वंद्व है। तब पिता ने बेटे की साहित्यिक योग्यता स्वीकार की—पर हैरानी की बात कि उसी समय बेटे ने सट्टे की दलाली का काम आरंभ कर दिया।

१८५७ में जूलस ने दो बच्चों वाली एक विधवा युवती से शादी कर ली। १८६२ में वर्ने का साहित्यिक सितारा चमकने की आशा हुई—उसे एक प्रकाशक मिल गया। उसके बाद तो उसने कई प्रसिद्ध उपन्यास लिखे। उसके बाद उसने अपना अधिकांश जीवन समुद्र के किनारे बिताया और एक छोटा जहाज खरीद लिया। इन्हीं दिनों 'समुद्र की गहराइयों में' (Twenty Thousand Leagues Under the Sea) नामक प्रसिद्ध उपन्यास लिखा। इसके प्रकाशन के बाद वर्ने की ख्याति उन्नति की चरम सीमा पर पहुंची। उसके बाद उसने दर्जनों और पुस्तकें लिखीं।

१८८६ में उसके पागल संबंधी ने उसकी बाईं टांग में गोली मार दी। उसके बाद उसे अपनी घुमक्कड़ आदत छोड़नी पड़ी। १९०५ में जब यह महान साहित्यकार स्वर्ग सिधारा, तो हजारों आदमी और फ्रेंच घुड़सवार सेना तथा सभी देशों के कूटनीतिक प्रतिनिधि उसके जनाज़े के साथ थे।

गत १८६६ ई० में यूरोप और अमेरिका के जहाजी जगत में एक रहस्यमय चीज के विषय में एक उत्तेजना सी फैली हुई थी। इन महाद्वीपों के व्यापारियों, खलासियों, जहाजी कप्तानों तथा अन्य जहाजी अधिकारियों में ही यह उत्तेजना हो, ऐसी बात नहीं; वहां की सरकारों में भी इस संबंध में बड़ा कौतूहल था।

इस उत्तेजना का प्रधान कारण समुद्र की तलहटी में दिखाई पड़ने वाली, दोनों छोर से नुकीली, बेलन जैसी, कोई वस्तु थी। आकार में यह चीज ह्वेल मछली से बड़ी और चाल में भी उससे तेज थी। रात में समय-समय पर इससे तेज प्रकाश निकलता था।

यद्यपि जहाजों के कप्तानों की डायरियों में, इस चीज के भी कई तरह के वर्णन थे, परंतु इसकी चाल-ढाल और आकार-प्रकार में सब का एक-सा ही मत था। पर कोई भी यह निश्चय नहीं कर पाया था कि वह है क्या? इसकी गणना जीवधारियों में की जाय या निर्जीवों में?

यदि उन लोगों के अंदाज पर ध्यान न दिया जाय, जिन्होंने डरते डरते इस वस्तु की लंबाई दो सौ फुट आंकी थी, और उन लोगों के अतिरंजनापूर्ण अनुमानों पर भी विश्वास न किया जाय, जो उसे एक मील चौड़ी तथा तीन मील लंबी बतलाते थे, तो भी सब अनुमानों का औसत उस आकार से बड़ा था, जो उस काल के समुद्री-जीव-विशेषज्ञ मानने को

तैयार थे। उसके अस्तित्व से इंकार नहीं किया जा सकता था, परन्तु यह बात इतनी अद्भुत थी, कि संसार भर के लोगों में जितनी उत्तेजना फैली और जितना आश्चर्य उन्हें हुआ, वह स्वाभाविक ही था।

२० जुलाई सन् १८६६ ई० को 'कलकत्ता और वरनाच स्टीम कम्पनी' का जहाज 'गवर्नर-हिगेन्सन' जब आस्ट्रेलिया के पूर्वी तट के निकट पहुंचा, तो इस जहाज के कप्तान वेकर को अपने जहाज से लगभग ५ मील दूर पर एक हिलता-डुलता पदार्थ दिखाई दिया। कप्तान ने पहले उसे कोई मूंगे की अज्ञात चट्टान समझा। वे इसकी यथार्थ स्थिति समुद्री नक्शे में आंकने का प्रयत्न कर ही रहे थे, कि पानी के दो भयंकर फव्वारे बड़े जोर से आवाज करते हुए छूटे और लगभग १५० फुट ऊंचे उठते दिखाई पड़े। थोड़ी देर बाद यह चट्टान जैसा पदार्थ डुबकी मार कर समुद्र में समा गया। कप्तान वेकर को यह विशाल जल-जीव बहुत ही अद्भुत लगा।

इस प्रकार की एक और घटना इसके ठीक तीन दिन बाद २३ जुलाई को 'वैस्ट-इण्डिया और पैसिफिक स्टीम नेवीगेशन कंपनी' के जहाज 'कोलंबस' के साथ प्रशान्त महासागर में घटी। इससे यह स्पष्ट हो गया कि यह 'पदार्थ' कोई ऐसा जीव है, जो ७०० मील का समुद्री सफर केवल तीन दिन में महान तेज चाल से कर सकता है।

१५ दिन पश्चात् 'कंपनी नेशनल' के 'हेलवेशिया' तथा 'रायल मेल स्टीमशिप कंपनी' के 'शैनन' जहाजों को लगभग २ हजार मील दूर अतलांतिक महासागर में वही जीव दिखाई पड़ा। इन दोनों जहाजों में प्रत्येक की लंबाई लगभग ३००

फुट थी, और वे उस जीव से छोटे प्रतीत होते थे। इस कारण इस 'जीव' की साधारण लंबाई ३५० फुट अनुमान की गई थी। स्मरण रहे कि सबसे बड़ी ह्वेल मछली १८० फुट से ज्यादा लंबी नहीं होती।

इन दो तथा कुछ नए विचारों और मतों के फलस्वरूप विभिन्न देशों के समुद्री बेड़े के अधिकारियों ने अपने-अपने विचार प्रकट किए। धीरे-धीरे यह विशालकाय 'जीव' चर्चा एक महत्वपूर्ण विषय बन गया। समाचार पत्रों में तो इस पर काफी अनोखी बातें लिखी गई, कि यह विशालकाय जीव ५०० टन भारी जहाज को भी अपने जाल में फांस कर समुद्र की तलहटी में खींच ले जाता है।

६ महीने तक यह वाद-विवाद जारी रहा। अंत में एक प्रसिद्ध लेखक ने बड़े ही विनोदपूर्ण लेख में उस 'जीव' तक पहुंचने तथा उसे मार डालने की कल्पना का ब्योरा प्रकाशित किया। इस पर काफी मजाक हुआ। इस हंसी-मजाक में खोज की बात दब-सी गई।

सन् १८६७ ई० के शुरू में यह कहानी लोग भूल से रहे थे, किंतु एक नई खोज ने इसे फिर चर्चा का विषय बना दिया। पर इस चर्चा का रूप वैज्ञानिक खोज न होकर यह हो गया, कि यह या तो कोई द्वीप है या चट्टान। ५ मार्च सन् १८६७ ई० की रात को 'मांट्रियल ओशन कंपनी' के जहाज 'मोरेवियन' की एक चट्टान से टक्कर हुई, जबकि समुद्री नक्शे में वहां चट्टान का नामोनिशान भी न था। यह जहाज उस समय तेजी से जा रहा था। यदि यह जहाज काफी मजबूत न होता, तो टूट फूट गया होता और इसके २२७ यात्री भी समुद्र

में समा गए होते ।

यह घटना दिन निकलने के करीव हुई थी । जहाज के अधिकारियों ने वड़े ध्यान से इसका पता लगाना शुरू किया, परंतु कोई विशेष चीज न मालूम पड़ी । जहाज का थोड़ा-सा ही भाग टूटा था । इससे यह स्पष्ट हो गया था कि अन्य जहाजों को भी ऐसी ही परिस्थिति में चोटें उठानी पड़ी होंगी ।

१३ अप्रैल सन् १८६७ ई० को 'कुनार्ड स्टीमर कंपनी' का 'स्कोशिया' जहाज तेजी से जा रहा था । संध्या के ४ बजकर १८ मिनट का समय था । जहाज के यात्री खाना खाने के लिए भोजनालय में इकट्ठे थे । उसी समय एक हल्का-सा झटका लगा । साधारण यात्रियों को तो मालूम भी न हुआ, पर एक मांझी जहाज के डैक पर जाकर जोर से चिल्लाया, जहाज डूब रहा है ।

यात्री पहले तो वहुत घबराए, परंतु कप्तान एंडरसन के विश्वास दिलाने पर, कि जहाज की पेंदी में मामूली-सी ही क्षति होने की आशंका है, यात्रियों को कुछ संतोष हुआ ।

कप्तान एंडरसन फौरन जहाज के नीचे के भाग में गया और देखा कि जहाज के पांचवें तले में सूराख हो गया है । समुद्र का पानी वड़े वेग से अंदर आ रहा है । कप्तान ने इंजन को तुरंत बंद कर देने का आदेश दिया । जहाज के एक मल्लाह ने डुबकी मारी और कुछ ही मिनट बाद उसे मालूम हुआ कि करीब-करीब २ गज व्यास का छेद जहाज के निचले भाग में हो गया है । यह सूराख बंद भी न किया जा सकता था । 'स्कोशिया' को अपना रास्ता तय करना ही था । अतः वह अध-डूवी हालत में २०० मील की वाकी यात्रा पूरी करके, निश्चित समय से तीन

दिन बाद लिवरपूल पहुंचा। कंपनी के इंजीनियरों ने जहाज का निरीक्षण किया। ज्ञात हुआ कि जहाज के पानी वाले निशान के ढाई गज नीचे एक त्रिभुजाकार सूराख था। यह सूराख ऐसा बना था मानो किसी सूराख करने वाली मशीन से काट कर किया गया हो।

यही उस जीव के बारे में आखिरी तथ्य था, जिससे दुनिया का ध्यान फिर उधर गया और समुद्री दुर्घटनाओं का कारण उसी विशालकाय भयंकर जीव को ही ठहराया जाने लगा। दोनों महाद्वीपों के मध्य संबंध कट-सा गया और जनता जोरों से इसकी जांच की मांग करने लगी।

२

जिस समय इन घटनाओं के कारण अमेरिका और यूरोप के जहाजियों में हलचल मची थी, उस समय मैं नेब्रास्का से लौट रहा था। मैं अपने देश फ्रांस में नहीं, अमेरिका में था। मैं उन दिनों फ्रांस की राजधानी पेरिस में प्राकृतिक इतिहास का सहकारी प्रोफेसर था। फ्रांस सरकार ने मुझे विविध प्राकृतिक वस्तुओं के संग्रह के लिए फ्रांस से अमेरिका भेजा था। संयुक्त राज्य अमेरिका के नेब्रास्का राज्य में कोई छः मास तक अपनी खोज पूरी करता रहा और मार्च सन् १८६७ ई० के अन्त में कितनी ही बहुमूल्य जानकारी और चीजें लेकर न्यूयार्क शहर पहुंचा। मुझे मई के शुरू में फ्रांस से दूसरी जगह जाना

था। जब 'स्कोशिया' की घटना हुई, उन दिनों मैं अपनी इकट्ठी की हुई महत्व की सभी चीजों के श्रेणीवद्ध विभाजन में व्यस्त था।

इस अनोखी चीज के बारे में मुझे काफी जानकारी थी; क्योंकि मैंने अमेरिका और यूरोप के समाचार पत्रों में उसका विवरण पढ़ा था—यद्यपि किसी विवरण से मेरी तसल्ली न हुई थी। इस अदभुत पदार्थ के कारण मैं वहुत वेचैन था और किसी भी निष्कर्ष पर न पहुंच पाया था।

जव मैं न्यूयार्क पहुंचा, तो वहां के विद्वानों में इस समुद्री जीव की चर्चा खूब चल रही थी। इस रूप के प्रकट होने के उपरांत कितने ही विद्वानों ने कहा था, कि यह कोई चट्टान या निर्जीव वस्तु नहीं हो सकती; क्योंकि चट्टान या निर्जीव वस्तु में स्वत: दौड़ने, उतराने या डुवकी मारने की शक्ति कहां होती है ? अत: या तो यह कोई विराट समुद्री जीव है या पनडुब्वी जहाज। दूसरी बात जहाजियों की समझ में कुछ ज्यादा आई। इस पर यह भी कहा गया कि यदि यह पनडुब्बी जहाज है, तो निश्चय ही किसी सरकार का होगा; क्योंकि कोई साधारण व्यक्ति ऐसी शक्तिशाली विध्वंसक पनडुब्वी कहां से बनवा सकता है ? और कैसे वह 'चीज' गुप्त रह सकती है ? मेरी समझ में आया कि शायद किसी सरकार ने इसे विध्वंसक कार्यों के लिए रख छोड़ा हो, और इसी कारण उसे गुप्त रक्खा हो।

विध्वंसक पनडुव्वी का ध्यान होने के कारण, विभिन्न सरकारों को वहुत चिंता हुई; क्योंकि ऐसी भयंकर चीज किसी भी देश का, किसी भी समय अहित कर सकती थी। फलस्वरूप

इंग्लैंड, फ्रांस, रूस, जर्मनी, इटली, अमेरिका और तुर्की में आपसी विचार-विनिमय हुए। तब पता चला कि इन सरकारों ने ऐसे किसी भी जहाज का निर्माण नहीं किया। इससे यह निश्चय हुआ कि यह कोई पनडुब्बी नहीं है। यह निश्चय होते ही विद्वानों ने कहा कि यदि यह पनडुब्बी नहीं, तो विराट समुद्री जीव अवश्य है।

न्यूयार्क पहुंचने पर लोगों ने मुझसे उस 'अनोखी चीज' के अस्तित्व के बारे में मेरे विचार जानने चाहे। मैंने फ्रांस में 'समुद्री तलहटी के कुछ रहस्य' नामक पुस्तक दो खंडों में प्रकाशित की थी। इस पुस्तक ने वैज्ञानिक जगत में एक लहर-सी पैदा कर दी थी तथा मेरा कुछ मान भी बढ़ाया था। पहले तो मैं उस अनोखी चीज के अस्तित्व से ही इंकार करता रहा। इससे मेरे गौरव में कुछ कमी भी आ गई। अंत में मुझे मजबूर होकर लेख द्वारा अपना विचार स्पष्ट करना ही पड़ा।

मेरे ३० अप्रैल के लेख का संक्षेप यह है—"अनेक मतों पर विचार करने के बाद यह तो स्वीकार ही करना होगा कि वह कोई महान शक्ति-संपन्न समुद्री जीव होना चाहिए।

"समुद्र की अधिक से अधिक गहराई का तो हमें पता नहीं है। हमें यह मालूम नहीं कि समुद्रके अंदर कहां क्या होता है। समुद्र की १२ या १५ मील की गहराई में कौन कौन से जीव जिंदा रह सकते हैं। हम इस बात की केवल कल्पना ही कर सकते हैं। इस समस्या को हल करने के लिए हम दो ही बातें कह सकते हैं। या तो हम यह मान लें कि सभी समुद्री जीवों की जातियां हमें मालूम हैं। यदि ऐसा नहीं, तो यही मान लेना ठीक होगा कि समुद्र के अंदर कुछ ऐसी मछलियां और अन्य

जीव रहते हैं, जो वहां के अज्ञात वातावरण में जीवित रह सकते हैं और कुछ कारणों से कभी-कभी समुद्री सतह पर भी आ जाते हैं।

''यदि हम यह निश्चय न करें और यही ठीक समझें कि हम समुद्र के अंदर रहने वाले सभी जीव-जंतुओं से परिचित हैं, तो हमें इस जीव को उन्हीं समुद्री जीवों की किसी न किसी एक शाखा में गिनना पड़ेगा। ऐसी दशा में हमको यही मानना पड़ेगा कि यह अनोखा जीव नारह्वाल जाति की एक विशाल-काय मछली है।

"साधारण नारह्वाल, जिसको हम दरियाई गैंडा भी कहते हैं, प्राय: ६० फुट लंबी होती है। इसका आकार ५ गुने से १० गुने तक संभव है, तथा इसकी शक्ति भी उसी अनुपात से बढ़ती है। इसका चोट करने का अंग—सींग भी उसी अनुपात में बढ़ जाता है। इसकी शक्ति का जैसा वर्णन शैनन जहाज के अधिकारियों ने किया था, असंभव नहीं है। नारह्वाल के सींग फौलाद जैसे कड़े होते हैं और ह्वेल मछलियों के शरीर में चुभे पाए गए हैं। ह्वेल बहुत बड़ी होती है, पर नारह्वाल ह्वेल पर हमला कर विजय पा लेती है। इसी प्रकार के कुछ सींग जहाजों के पैदों में घुसे देखे गए हैं, जो कठिनाई से निकाले जा सकते हैं। पेरिस म्यूजियम में रक्खा हुआ एक सींग सवा दो गज लंबा है तथा १५ इंच व्यास का है।

अब आप यही कल्पना कीजिए कि यही सींग १० गुना और अधिक मजबूत हो, इसको धारण करने वाला १० गुना अधिक शक्तिशाली हो और वह २० मील प्रति घंटा की चाल की-सी गति से प्रहार करे, तो कितनी क्षति पहुंचेगी?

जब तक हमको इसका पूर्ण व्योरा प्राप्त न हो जाय, तब तक हम इस जीव को ऐसा ही समझेंगे। जब तक कि कोई बात ऐसी न मालूम हो जाय, जो कि अभी तक ध्यान में न लाई गई हो, तब तक हम इतना ही कहने में समर्थ हैं।"

मेरे आखिर के शब्द कुछ कमजोर प्रतीत होते हैं, परंतु मुझे प्रोफेसर होने के नाते अपनी मर्यादा कायम रखनी थी। मुझे डर था कि कहीं ऐसा न हो कि अमेरिका वाले मेरी बात की हंसी उड़ाएं, जिससे मुझे कुछ लज्जित-सा होना पड़े। इसीलिए मैंने अपने बचाव के लिए दबी जबान से यही स्वीकार कर लिया था कि संभवतः यह कोई समुद्री जीव ही है।

मेरे इस लेख की पर्याप्त सराहना हुई, तथा उस पर काफी वाद-विवाद हुआ। इसमें जो हल दिया गया था, उससे कोई भी कल्पना की जा सकती थी। मनुष्य का दिमाग ऐसे अलौकिक जीवों के बारे में ऊंची उड़ानें अधिक पसंद करता है। समुद्र ही ऐसी जगह है जहां ऐसे विशाल शरीर वाले जीव रह सकते हैं, जिनके समक्ष हाथी बौने प्रतीत होते हैं। ३०० फुट से भी ज्यादा लंबे और २०० टन वजन के जीव की कल्पना करते ही कलेजा धक-धक करने लगता है।

लोगों ने इस संबंध में अपनी राय बना ली थी। उन्होंने विश्वास कर लिया था कि 'जीव' बड़ा ही भयानक है, किंतु पौराणिक सर्पों से बिल्कुल भिन्न है।

जनता में इस वस्तु के लिए दो राएं थीं। कुछ तो इसे साधारण वैज्ञानिक समस्या कहकर टाल देना चाहते थे। परंतु अमेरिका और इंग्लैंड के जहाजी बेड़ों के अफसरों की राय थी कि समुद्री यातायात को सुचारु रूप से कायम रखने के लिए

इस अज्ञात जीव का ठीक पता लगाना अत्यंत आवश्यक है।

अन्त में संयुक्त राज्य अमेरिका इस संबंध में जांच करने के लिए मैदान में उतर पड़ा। तुरंत ही न्यूयार्क में बड़े जोर-शोर से उस समुद्री दैत्य का पीछा करने के लिए तैयारियां शुरू हो गईं। एक अत्यंत द्रुतगामी 'अब्राहम लिंकन' नामक जहाज यात्रा के लिए तयार किया जाने लगा। यात्रा की देख-रेख का काम कप्तान फरागत को सौंपा गया। कप्तान फरागत ने जहाज को अपनी पसंद के अनुसार होशियारी से लैस किया।

जैसा कि प्राकृतिक नियम है, कि जिस अनोखे जीव का पीछा करने की तैयारियां हो रही थीं, उन दिनों दो महीनों तक उसका कहीं पता ही न चला। ऐसा प्रतीत होता था मानों उस जीव के विरुद्ध रचे गए षड्यंत्र का उसे पता चल गया हो।

जहाज तो पूरे तौर पर तैयार हो गया, पर जहाजियों को यह पता नहीं था कि यात्रा कहां की करनी है। जितनी देर होती जाती थी, उतना ही जहाजी लोग उतावले होते जाते थे। दो जुलाई को एकाएक समाचार मिला कि अमेरिका के कैलिफोर्निया से चीनी तट स्थित शंघाई जाने वाले एक जहाज ने तीन सप्ताह पूर्व उत्तरी प्रशांत महासागर में इस जीव को देखा था। इस समाचार ने लोगों में काफी उत्तेजना पैदा कर दी। कप्तान फरागत को यात्रा के लिए रवाना होने को सिर्फ २४ घंटे और दिए गए।

इस यात्रा के आरंभ होने के कोई ३ घंटे पहले हमें एक पत्र मिला। इसमें लिखा था :—

मि. ऐरोनेक्स,
प्रोफेसर पेरिस संग्रहालय,
एवेन्यू होटल, न्यूयार्क ।

महाशय यदि आप 'अब्राहम लिंकन' की यात्रा में सम्मिलित होंगे तो अमेरिकी सरकार आपको इस यात्रा में फ्रांस सरकार का वैज्ञानिक प्रतिनिधि समझेगी । कप्तान फरागत ने आपके रहने के लिए इस जहाज में एक कमरा चुन रखा है ।

आपका
जे० बी० होब्सन,
संयुक्त राज्य का नौ सचिव ।

३

यह पत्र पाने के तीन सेकेंड पहले इस विशाल समुद्री 'जीव' का पीछा करने का मेरा कोई इरादा न था । परंतु पत्र मिलते ही मैंने इस अभियान में सम्मिलित होने का निश्चय किया । मुझे ऐसा जान पड़ने लगा कि इस जीव का पीछा करना ही मेरे जीवन का एकमात्र लक्ष्य है ।

मैं अभी-अभी सफर से थका वापस आया था, और उस थकान को दूर करने के लिए आराम कर रहा था । इस नई यात्रा की धुन में मैं थकान बिल्कुल भूल ही गया । मैं जो महत्वपूर्ण वस्तुएं लाया था, उन्हें भी भूल गया । मैंने अमेरिकी सरकार का यह निमंत्रण स्वीकार कर लिया । मन ही मन

सोचा कि ऐसा न हो कि इस जीव की तलाश में हमें फ्रांस तट पर ही जाना पड़े, और ऐसा विचित्र जीव कहीं यूरोपीय सागरों में ही न पकड़ा जाय। लेकिन इसी बीच में मुझे ध्यान आया कि इस जीव की तलाश में तो हमें उत्तरी प्रशांत महासागर की ओर जाना है। यह रास्ता फ्रांस के रास्ते से बिल्कुल भिन्न है।

मैंने जल्दी से पुकारा, "कनसील, कनसील !"

कनसील मेरा विश्वस्त और वीर नौकर था। वह हालैंड का रहने वाला तथा मेरी समस्त यात्राओं में मेरे साथ रहता आया था। मुझे उस पर बहुत विश्वास था। वह अपनी बात का बहुत पक्का और बहुत ही चतुर था। वैज्ञानिकों के संपर्क से उसको विज्ञान का कुछ ज्ञान भी हो गया था।

नौकरी के पिछले १० वर्षों में वह मेरे आदेशों का अक्षरशः पालन करता रहा था। वह यात्रा की थकावट या दूरी से कभी घबराया न था। दूर से दूर जाने में उसे जरा भी हिचकिचाहट न थी। अपनी सुदृढ़ देह, उत्तम स्वास्थ्य तथा शान्त स्वभाव के कारण सदा चुस्त और आनंदित रहता था। उसकी उम्र कोई ३० वर्ष की थी और मेरी चालीस वर्ष की। कनसील में एक दुर्गुण था, वह मुझे सदा अन्य-पुरुष में संबोधित करता था।

पुकारते ही मेरे सामने आ कनसील ने कहा, "क्या स्वामी ने मुझे बुलाया है ?"

"हां ! हम लोग एक यात्रा के लिए चल रहे हैं। तुम दो घंटे में तैयार हो जाओ। एक भी मिनट खराब न हो। मेरे सारे सफरी बर्तन तथा कोट, कमीज, मौजे, जितने तुम रख सको

रख लो। जल्दी करो।"

कनसील ने पूछा, "जो महत्वपूर्ण वस्तुएं आप इकट्ठी करके लाए हैं, उनका क्या होगा ?"

मैंने उत्तर दिया, "मैं उनका प्रबंध कर दूंगा। फ्रांस भेज देने के लिए ही कह दूंगा।"

कनसील ने पूछा, "इसका मतलब यह है कि हम लोग पेरिस वापस नहीं जा रहे ?"

मैंने उत्तर दिया, "निश्चय ही जाएंगे, परंतु चक्कर लगा कर।"

कनसील, "जैसी आपकी इच्छा।"

मैंने कहा, "कनसील, तुम समुद्री दैत्य के बारे में कुछ जानते हो ? कुछ तुमने भी सुना होगा ? हम उसी का पीछा करने 'अब्राहम लिंकन' जहाज से जा रहे हैं। 'समुद्री तलहटी के रहस्य' का लेखक कप्तान फरागत के साथ न जाय, ऐसा संभव नहीं। कितना आकर्षक उद्देश्य है, पर उतना ही खतरनाक भी ! हमें यह भी पता नहीं कि हमें किधर जाना है। परंतु हमने निश्चय किया है, कि हम अवश्य जाएंगे---चाहे जिधर जाना पड़े।"

"कनसील, समझ लो, यह उन यात्राओं में से है, जहां से आदमी प्रायः लौटकर नहीं आता। मैं तुम से कुछ छिपाना नहीं चाहता।"

कनसील ने कहा, "जो स्वामी कहेंगे, वही मैं भी करूंगा।"

इसके १५ मिनट ही बाद हम लोगों की तैयारी हो गई। मेरा सामान कनसील ने ठीक कर दिया था। मुझे विश्वास है कि वह कुछ भी भूला न होगा। लिफ्ट से मैं नीचे आया और

होटल के बिल का भुगतान कर अपने जानवरों और सूखे पौधों के बक्सों को पेरिस भेज देने का आदेश दे दिया । तार से अपने बैंक को भी सूचना दे दी । उत्तर की प्रतीक्षा किए बिना में कूदकर एक गाड़ी में कनसील के साथ बैठ गया । ब्राडवे, यूनियन स्क्वायर होकर कावरी स्ट्रीट से चौथे एवेन्यू होकर हम कारटीन स्ट्रीट पहुंचे और नाव से बुकलिन । कुछ ही मिनट पश्चात् हम लोग दो चिमनियों द्वारा काले धुएं के बादलों को उड़ाते हुए 'अब्राहम लिंकन' जहाज के सामने पहुंच गए ।

मेरा सामान तुरंत जहाज में पहुंचा दिया गया । हम लोग भी उसी के पीछे-पीछे चल दिए । मैंने कप्तान फरागत के विषय में पूछा । मल्लाहों में से एक ने मुझे उसके पास पहुंचा दिया । मैंने हाथ मिलाया । उन्होंने पूछा---"महाशय, पियर ऐरोनेक्स ?"

"मैंने उत्तर दिया----"मैं ही स्वयं हूं । क्या आप कप्तान फरागत हैं ?"

"हां, प्रोफेसर । आपका स्वागत । आपका कमरा तैयार है ।"

मैं कप्तान से विदा ले अपने कमरे की ओर चल दिया ।

'अब्राहम लिंकन' इस यात्रा के लिए खूब सुसज्जित था । इसमें गर्मी पैदा करने वाला यंत्र भी लगा था । चाल भी काफी तेज थी । १८ मील प्रति घंटे यात्रा करना साधारण बात थी । इतनी तीव्र गति होते हुए भी उस विशाल दैत्य के साथ दौड़ने की सामर्थ्य इस जहाज में न थी । जहाज के अंदर का प्रबंध समुद्री परिस्थितियों के अनुसार था । मेरी कोठरी अलग थी तथा नौकरों के कमरे की तरफ खुलती थी । इस

कोठरी से मुझे पूर्ण संतोष हुआ। मैंने कनसील से कहा, "यहां हम लोगों को काफी आराम मिलेगा।"

कनसील ने उत्तर दिया, "यहां हम लोग वैसे ही रहेंगे, जैसे साधु कुटिया में वास कर रहा हो।"

मैंने कनसील को सामान ठीक करने के लिए छोड़ दिया, और स्वयं जहाज छूटने की तैयारियां देखने डेक पर चला गया। कप्तान फरागत अब आखिरी लंगर को उठाने का आदेश देने ही वाला था। अगर मुझे १५ मिनट की ही देर हो जाती, तो जहाज मुझे लिए बिना ही चल देता। क्योंकि कप्तान फरागत यथा-संभव शीघ्र ही उसी समुद्र में पहुंचना चाहता था, जहां उस विचित्र जीव के प्रकट होने का समाचार मिला था।

सैकड़ों नावों पर खड़े दर्शकों को पीछे छोड़ 'अब्राहम लिंकन' मंद-मंद गति से रवाना हुआ। पूर्वी नदी के दोनों ओर न्यूयार्क शहर में दर्शकों की भीड़ थी। हमारे जहाज के खुलते ही भीड़ ने हर्षध्वनि की और रूमाल हिलाकर हमें विदा दी। जब तक यह जहाज हडसन की खाडी तक न पहुंचा, दर्शक डटे ही रहे। इस रमणीय नदी के दाहिने किनारे न्यूजरसी तट होते हुए हम आगे बढ़ गए, ज्योंही जहाज दो सरकारी किलों के बीच पहुंचा, वहां की बड़ी-बड़ी तोपों ने गर्जन कर सलामी दी। इस जहाज ने अपना अमरीकन झंडा तीन बार फहराकर प्रत्युत्तर दिया और धीरे-धीरे अपनी चाल बढ़ाई। न्यूयार्क चैनल के फाटक तक, जहां पर दो तेज रोशनियां न्यूयार्क का रास्ता बता रही थीं, साथ में आई हुई नौकाएं लौट गई। इस समय शाम के तीन बजे थे। जहाज

के मल्लाह अपने-अपने काम पर लग गए तथा उसकी चाल और तेज हो गई।

अब जहाज लांग द्वीप के किनारे पहुंच गया था। ८ बजे रात तक तो जहाज की वही गति रही, परन्तु ज्योंही उसने फायर द्वीप पार कर अतलांतिक सागर में प्रवेश किया, अपनी चाल और बढ़ाई। कुछ ही समय में वह अंधकार से आछन्न अतलांतिक महासागर के अथाह जल में उथल-पुथल मचाता हुआ अत्यंत तेजी से अपने निर्धारित स्थान की ओर दौड़ने लगा।

'अब्राहम लिंकन' के कप्तान फरागत बहुत ही योग्य व्यक्ति थे। वह इस जहाज की आत्मा थे। उन्हें विश्वास था कि वह रहस्यमय रूप और किसी का नहीं, किसी विशालकाय समुद्री जीव का है। इस संबंध में उन्हें कोई शक बाकी न था। उन्हें इस जीव के अस्तित्व में उतना ही विश्वास था जितना किसी साधारण व्यक्ति का बिना देखे, विश्वास के आधार पर ही, भगवान् के अस्तित्व पर होता है। उन्होंने इस बात की प्रतिज्ञा कर रक्खी थी कि वे उसे अवश्य पकड़ लेंगे। यह बात दूसरी है कि वह जिंदा मिले या मरा हुआ। कप्तान की यह भी धारणा थी कि या तो वे इस जीव का वध करेंगे या वह जीव उन्हें इस जहाज के साथ नष्ट कर देगा। उनके साथी खलासियों तथा अफसरों का भी यही निश्चय था। अभी तक

जहाज खुले महासागर पर नहीं पहुंचा था।

मशीन पर काम करने वालों की बातचीत का एक ही विषय था। वह यह कि समुद्री दैत्य को कैसे पकड़ा जाएगा। कैसे डेक पर लादा जाएगा। विभिन्न कल्पनाएं की जा रही थीं। कप्तान फरागत ने आदेश दे रक्खा था कि जो मनुष्य उसे पहले-पहल देखेगा, उसे दो हजार डालर नकद इनाम दिया जाएगा।

जैसे कि मैंने पहले ही बताया कि कप्तान फरागत ने उस जीव से मुकाबिला करने का सारा प्रबंध कर रक्खा था। इस जहाज में हर प्रकार के अस्त्र-शस्त्रादि तथा बंदूकें थीं। सामने वाले कमरे में एक प्रकार का यंत्र लगा था, जिसका पिछला भाग मोटा तथा अगला पतला था। इसी नमूने का यंत्र पेरिस संग्रहालय में १८६७ में रक्खा गया था। इस पर एक बहुत अनुभवी तथा वीर शिकारी नेडलैंड तैनात था। वह भाला चलाने में सिद्धहस्त और मशहूर था।

नेडलैंड कनाडा का रहने वाला था। उस जैसा भाले-बाज दूसरा व्यक्ति नहीं था। वह बड़ा ही योग्य और उत्साही था। उसके भाले के वार से कोई भी ह्वेल मछली बच कर नहीं जा सकती थी। उसकी उम्र करीब ४० वर्ष की होगी। वह लंबा, हृष्ट-पुष्ट तथा गंभीर था। उसका व्यक्तित्व काफी प्रभावशाली था, उसकी दृष्टि बहुत ही तीव्र थी। कप्तान फरागत ने उसको जहाज पर रख बड़ी बुद्धिमत्ता का काम किया था।

नेडलैंड से मेरी जान-पहचान बड़ी जल्दी हो गई थी। मेरे अमेरिकन न होने ने ही उसको सबसे अधिक आकर्षित

किया होगा। उसके परिवार वालों का मूल निवासस्थान जब फ्रांसीसियों के अधिकार में था, तभी इस परिवार के लोग मछली मारने का काम करने लगे थे। धीरे-धीरे नेडलैंड बातें करने में खुल गया। मुझे उसके समुद्री गान बहुत पसंद आए।

नेडलैंड के इस जीव के संबंध में क्या विचार थे ? मुझको यह स्वीकार करने में जरा भी हिचक नहीं, कि उसे इस जीव के संबंध में बिल्कुल विश्वास नहीं था। उस जहाज पर यही अकेला आदमी था, जो उन सब के द्वारा स्वीकृत तथ्य पर तनिक भी विश्वास न करता था। यात्रा आरंभ के ३ सप्ताह बाद ३० जुलाई की सायंकाल जहाज पैटागोनियन तट से ३० मील ब्लैंक अंतरीप के पास पहुंचा। अगले सप्ताह जहाज प्रशांत महासागर में प्रवेश करने वाला था। मैं और नेडलैंड जहाज पर बैठे विभिन्न विषयों पर बातें कर रहे थे, परंतु हमारी निगाह अथाह समुद्र की ओर थी, जिस की गहराई की कल्पना ही नहीं की जा सकती। मैं बातचीत के विषय को बदल उसे जीव के विषय पर लाया और यात्रा सफल होने के विभिन्न दृष्टिकोणों पर वादविवाद करने लगा। यह देखकर कि वह स्वयं तो चुप है पर मेरी बातों को बढ़ावा देता जा रहा है ; मैंने नेडलैंड से कहा, "ओ नेड, क्या तुम्हें उस जीव के, जिसका कि हम लोग पीछा कर रहे हैं, अस्तित्व में अब भी विश्वास नहीं ? क्या तुम्हारे ऐसा सोचने का कोई खास कारण है ?"

वह जवाब देने से पूर्व मेरी ओर कुछ मिनट देख, माथे पर हाथ रख और थोड़ी देर आंखें बंद कर बैठा रहा। अंत में उसने कहा, "प्रोफेसर ऐरोनेक्स, ऐसा सोचने के लिए कुछ

कारण हैं ।"

"नेड, क्या तुम, अब भी अपने को ह्वेल मछली की जानकारी तक ही महदूद रक्खोगे ! तुम तो समुद्र के जानवरों से भली-भांति परिचित हो । तुम्हें तो इस अनोखे जीव को फौरन स्वीकार कर लेना चाहिए था । इन परिस्थितियों में तुमको इस जीव के संबंध में जरा-सा भी शक न होना चाहिए था ।"

नेड बोला, "महाशय, यही आपको धोखा है। मैंने कितने ही जीवों का पीछा किया है, कितनों पर भालों से आक्रमण किया और कुछ मार भी डाले । लेकिन चाहे जितना शक्तिशाली जीव हो, या अच्छे आवरण से सुसज्जित हो, वह जहाज की लोहे की परत में सूराख नहीं कर सकता ।"

"नेड, कहा जाता है कि नारह्वाल मछली के सींग जहाज के पेंदे में घुस जाते हैं ?"

नेडलैंड ने उत्तर दिया, "वे शायद लकड़ी के जहाज होंगे । मैंने स्वयं तो कभी देखा नहीं और जब तक इस बात का प्रमाण मुझे नहीं मिलता, मैं मानने को तैयार नहीं कि ह्वेल तथा अन्य समुद्री जीव ऐसा कर सकते हैं ।"

"नेड, जरा मेरी बात सुनो," मैंने कहा ।

"नहीं, नहीं आप कुछ भी कहें, पर यह भयानक वस्तु कोई जीवित प्राणी नहीं हो सकती ।"

"क्या आप वास्तव में उस समुद्री जीव में विश्वास रखते हैं ?"

"हां नेड, कुछ वास्तविक तर्कों के आधार पर मुझे इसका पूर्ण विश्वास है तथा यह भी समझता हूं कि यह

जीव महान् शक्तिशाली है, और ह्वेल मछलियों की तरह रीढ़ वाली जाति का है। इसके भाले जैसा सींग भी है, जो अंदर घुसने की काफी शक्ति रखता है।"

"वाह।" नेड ने ऐसे सिर हिला कर कहा जैसे कि इस बात का वह कायल न हो।

मैंने फिर कहा, "याद रक्खो नेड, कि यह कोई ऐसा जीव है जो समुद्र की गहराई में ही रहता है। इसके पास कोई अवश्य ऐसा उपाय है, जिसके मुकाबिले में दूसरी शक्ति ठहर नहीं सकती।"

नेड ने कहा, "मैं समझा नहीं।"

मैंने कहा, "मान लो, यह कोई जीव नहीं, कोई पनडुब्बी नाव है, तो इस नाव की दीवारें समुद्र के पानी का दबाव सहने योग्य होनी चाहिए। समुद्री जल का घनत्व साधारण पानी के घनत्व से अधिक होता है। आप जब पानी में डुबकी लगाते हैं, तो ३२ फुट पानी की इकाई मानकर जितने गुना पानी तुम्हारे ऊपर होता है, उतनी ही हवा के दबाव का सहारा तुम्हारे शरीर को मिलता है। इससे यह प्रमाणित होता है कि प्रति वर्ग इंच पर १५ पौंड का दबाव पड़ता है। क्या तुमको यह मालूम है कि तुम्हारे शरीर की सतह कितने वर्ग इंच है?"

"ऐरोनेक्स महाशय, मुझे इसका कोई अन्दाज नहीं।"

"लगभग ६५०० वर्ग इंच वास्तव में हवा का दबाव १५ पौंड प्रतिवर्ग इंच पर पड़ता है। इसलिए ६५०० वर्ग इंच पर ९७,५०० पौंड का दबाव पड़ेगा।"

"और मुझे तो कुछ जान ही नहीं पड़ता।"

"हां, तुमको इस पर आश्चर्य होगा कि तुम इससे दब

क्यों नहीं जाते हैं। इसका कारण यह है कि तुम्हारे शरीर के अंदर भी ठीक इसी के बराबर दबाव की हवा भरी हुई है। इससे अंदर और बाहर के दबाव में संतुलन हो जाता है और यह ऊपर का दबाव आपको मालूम नहीं पड़ता। लेकिन पानी में यह बात नहीं है।"

कुछ देर सोचकर नेडलैंड ने उत्तर दिया, "हां, मैं समझ गया। मैं पानी के अंदर हूं, फिर भी पानी मेरे अंदर नहीं।"

"ठीक नेड, इस प्रकार समुद्र जल के ३२ फुट नीचे तुम्हारे ऊपर ९७५०० पौंड का दबाव पड़ेगा। ३२० फुट नीचे ९७५००००० पौंड। इतने पर आपको दब कर पापड़ के समान चपटा हो जाना चाहिए।

नेड ने आश्चर्य प्रकट करते हुए कहा, "हे भगवान्, यदि वह जीव इतनी गहराई में रहता है, और उसकी सतह हजारों वर्ग इंच है, तो उसके ऊपर लाखों पौंड का दबाव पड़ता होगा। अब हम यह अनुमान करें कि इस दबाव को रोकने के लिए उसके शरीर की हड्डियां कितनी शक्तिशाली होंगी।"

नेड ने फिर कहा, "वे ८ फुट मोटे लोहे की परत की बनी होंगी।"

"हां, और तुम यह भी सोचो कि यदि ऐसा पदार्थ डाकगाड़ी की चाल से दौड़े, तो किसी जहाज को कितनी हानि पहुंचा सकता है?"

नेड अभी कुछ न समझा था।

मैंने पूछा, "क्या तुम्हें अब भी विश्वास नहीं हुआ!"

"महाशय, आपने मुझको केवल एक बात पर संतुष्ट किया है, कि यदि समुद्र के अंदर ऐसे जानवर रहते हैं, तो वे

आप जैसा बताते है, वैसे शक्तिशाली होंगे ।"

"परंतु भाई साहब, आप यह तो बताइए यदि समुद्र के अंदर ऐसे कोई जीव रहते ही नहीं, तो फिर स्कोशिया की यह दुर्घटना कैसे हुई ?"

नेड ने जबाव दिया, "साहब मैं अब भी नहीं मानता ।"

नेडलैंड के उत्तर से ही उसके जिद्दी होने का आभास मिलता है । मैंने उस दिन फिर उस पर कोई दबाव न डाला । मैं भी यह समझता था कि स्कोशिया में सूराख अपने आप नहीं किया जा सकता था । यदि वह समुद्री चट्टान से न हुआ था, तो निश्चय ही किसी जीव के तेज अंग से हुआ होगा ।

५

कुछ समय तक 'अब्राहम लिंकन' की यात्रा में कोई घटना नहीं हुई । आखिर एक दिन नेडलैंड को अपना कौशल दिखाने का मौका मिला । ३० जून को जहाज जब फाकलैंड द्वीप समूह से आगे पहुंचा, तब ह्वेल के शिकारी कुछ अमेरिकन मिले । उनके कैप्टन ने नेड से सहायता मांगी । कप्तान फरागत भी नेडलैंड का काम देखना चाहता था । अतः कप्तान ने उसको डेक पर जाने को कहा । नेडलैंड की तकदीर ने इतना साथ दिया कि एक ह्वेल के बजाय दो मछलियां पकड़ी गईं । एक मछली के दाहिनी ओर भाला लगा था, तथा दूसरी कुछ मिनट पीछा किए जाने के बाद पकड़ी गई थी । जहाज ने

बहुत तेज चाल से अमेरिका के दक्षिण-पूर्वी किनारे को पार किया। ३ जुलाई को हम लोग वियरजेस अंतरीप से दूर मैगेलन जलडमरूमध्य में जा पहुंचे। ६ जुलाई को संध्या ३ बजे हम लोग इसके १५ मील दक्षिण एक सुनसान अंतरीप के पास पहुंचे। इस प्रदेश का नाम डच मल्लाहों ने अपने देशीय शहर के नाम पर हार्न अंतरीप रक्खा था। कितने ही स्थानों में घूमता-फिरता ७ जुलाई को हमारा जहाज प्रशांतमहासागर में दाखिल हुआ।

इसी के उत्तरी अंचल में उस समुद्री जीव के प्रगट होने की सूचना प्रकाशित हुई थी। फलत: जैसे ही यह इस समुद्र में प्रविष्ट हुआ, जहाज के खलासियों तथा अफसरों ने एक दूसरे को उच्च स्वर से सावधान कर दिया। खलासियों ने चिल्ला कर कहा, होशियार हो जाओ। कप्तान फरागत की २ हजार डालर के पुरस्कार की सूचना ने इस जहाज के प्रत्येक मनुष्य को बहुत पहले से केवल सावधान ही नहीं, अत्यंत उत्सुक बना रक्खा था। जिस दिन से इस जहाज ने प्रशांतमहासागर में प्रवेश किया, उसी दिन से सभी जहाजी रात-दिन दूरबीनों द्वारा चारों ओर की समुद्री तलहटी छानने लगे।

मुझे स्वयं रुपयों की परवाह तो थी नहीं, पर मैं भी कम आकर्षित नहीं था। खाने के कुछ मिनट छोड़ कर बिना धूप-वर्षा की परवाह किए, मैं निरंतर डेक पर मौजूद रहता था। कितनी बार मैं भी जहाजी अधिकारियों के साथ ह्वेल मछली के पिछले काले भाग को लहरों में देखकर चकित हो गया था। ऐसे मौके पर एक ही मिनट में डेक पर काफी भीड़ लग जाती थी। मैं देखते देखते अंधा-सा हो जाता था, परंतु

मेरा नौकर कनसील शांत हो, मुझसे यही कहता था :---

"स्वामी, यदि आप अपनी आंखें इतनी ज्यादा खुली न रखें, तो आप ज्यादा देख सकेंगे ।"

यह सारी उत्तेजनाएं बेकार थीं । जब कोई जीव दिखाई देता, 'अब्राहम लिंकन' की चाल तेज कर उस जीव का पीछा किया जाता था । परंतु वह जीव ह्वेल मछली या अन्य समुद्री जीव में परिणत हो तूफान में अदृश्य हो जाता था । इस बीच मौसम अच्छा रहा, इसलिए यात्रा भी ठीक रही । संभव है इन दिनों दक्खिनी गोलार्ध में मौसम खराब रहा हो; क्योंकि यहां का जुलाई महीना यूरोप के जनवरी जैसा होता है । समुद्र भी शांत था, जिससे साधारण आंखों से दूर तक चारों ओर देखा जा सकता था । नेडलैंड अब क्रोधित-सा हो गया था । उसने अब समुद्र को देखना बंद कर दिया था । उसने कह रक्खा था, जब तक ह्वेल मछली दिखाई न पड़ेगी, मैं न देखूंगा । किन्तु नेडलैंड की तीव्र दृष्टि अब भी काम कर रही थी । पर अब वह १२ घंटे में से ८ घंटे अपने कमरे में सोया करता था ।

नेडलैंड बार बार कहता, "वाह महाशय ऐरोनेक्स, यहां कुछ नहीं है । और यदि कोई जीव होगा भी, तो हम लोगों को उसको देखने का क्या मौका ? क्या हम लोग बेकार इधर उधर नहीं घूम रहे हैं ? मैं यह स्वीकार करता हूं कि जीव इसी प्रशांत महासागर में दुबारा दिखाई दिया था, पर अब तो इस बात को दो महीने हो चुके । वह एक दिन से ज्यादा एक जगह नहीं रुकता । इसलिए यदि वह अनोखा जानवर है भी, तो वह अब बहुत दूर ही होगा ।"

मैं इसका क्या उत्तर देता। यह हमको तो मालूम ही था कि हम लोग आंख मूंद कर इधर उधर जा रहे हैं। हम इसके अतिरिक्त कर ही क्या सकते थे। परंतु हम लोगों की विजय में भी किसी को कोई संदेह न था। २७ जुलाई को भूमध्य-रेखा पार कर जहाज ने अपना रुख पश्चिम की ओर कर मध्यप्रशांतमहासागर में प्रवेश किया। कप्तान फरागत का विचार था कि जीव द्वीप समूहों से दूर गहरे समुद्र में ही होगा। वहीं उसकी तलाश करनी चाहिए। मेरी राय में भी कप्तान का विचार सही था।

अंत में जब जहाज उस स्थान पर पहुंचा, जहां उस के प्रकट होने का अंतिम समाचार मिला था; तब जहाजियों ने बहुत ही सावधानी से काम किया।

जहाजियों ने खाना-पीना और सोना छोड़ और बात-चीत तक बंद कर, दिन-रात अपनी आंखों तथा दूरबीनों द्वारा उसको देखने का यत्न आरंभ किया। दिन में बीस-बीस बार अनुमान की गलती से या दूरदर्शक यंत्र के भ्रम से खलासी गजों उछल पड़ते थे। इससे काफी दूर तक आना-जाना पड़ता था। इस प्रकार के बार-बार परिश्रम के कारण तुरंत जीव के मिलने की आशा की प्रतिक्रिया होती रहती थी।

तीन महीने हो गए थे। इन तीन महीने का एक-एक दिन एक शताब्दी-सा बीत रहा था। 'अब्राहम लिंकन' ने सारे उत्तरी प्रशांतमहासागर को मथ डाला था। जितनी ह्वेल मछलियां देखी गईं, सब का पीछा किया गया था। इससे जहाज कभी-कभी अपने रास्ते से भी हट जाता था। यहां तक कि चीन और जापान के तट का कोई भी कोना बिना ढूंढ़े न बचा

था। इतना होने पर भी नारह्वाल जैसी महान कोई चीज दिखाई न दी। सारा परिश्रम बेकार हो रहा था। इसका फल यह हुआ कि अब जहाजियों के मन में प्रतिक्रिया प्रारंभ हुई। उस विशाल जीव के देखने की प्रबल इच्छा के बदले उनके मन में लज्जा और क्रोध उत्पन्न हुआ। वे लोग उस जीव को देखने का विचार त्याग कर खाने-सोने तथा उस जीव की असारता के संबंध में आलोचना, प्रत्यालोचना में अधिक समय बिताने लगे। अंत में सर्व सम्मति से यह तय हुआ कि यह जीव और कुछ नहीं, बहुतेरे जहाजों के कप्तानों का दृष्टि-दोष मात्र है। ऐसी दशा में इस जहाज को एक भ्रम-मूलक बात के पीछे पड़ अपना समय नष्ट न कर अमेरिका लौट चलना चाहिए। कप्तान फरागत से बार-बार यह बात कही जाने लगी। अंत में उन्होंने अपने जहाजियों का विचार देख कहा, कि तीन दिन तक और खोज देखते हैं। इस बीच भी वह न मिला, तो हम अमेरिका लौट चलेंगे।

२ नवंबर को यह बात तय हुई थी। इस बात से जहाजियों का उत्साह एक बार फिर सजीव हुआ और वे सब श्रमपूर्वक उस जीव के देखने का प्रयत्न करने लगे।

दो दिन बीत गए। जहाज रोक कर उसकी नावें चारों दिशाओं को भेजी गईं। ४ नवंबर की रात भी बीत गई, पर जीव दिखाई न दिया।

तीसरे दिन ५ नवंबर को आखिरी दिन था। यदि इस दिन भी वह दिखाई न देता, तो जहाज अमेरिका लौट जाता। जहाज पूरी चाल पर था और जापानी तट से दो सौ मील के अंतर पर था। मैं और मेरा नौकर कनसील जहाज की छत पर एक दूसरे

के समीप खड़े थे। जहाज में सब अफसर क्षितिज की ओर दूर-बीनों से देख रहे थे। कनसील की तरफ देखकर मुझको आभास हुआ कि वह उत्तेजित-सा था। मुझे यह भी आभास हुआ कि आज पहले-पहल कौतूहल के कारण कनसील की नसें फूल रही थीं।

मैंने कनसील से कहा, "कनसील, इनाम जीतने का अभी भी मौका है।"

"स्वामी, यदि आप मुझे कहने की आज्ञा दें, तो मैं बता देना चाहता हूं कि मैं पुरस्कार को कुछ नहीं समझता, और यदि हमारी सरकार लाखों रुपए इनाम देने का वादा करे, तो भी वह गरीब नहीं हो सकती।"

"कनसील, तुम ठीक कहते हो। पुरस्कार का लोभ बड़ी मूर्खता की बात है। हमने धैर्य और समय दोनों खो दिए। अगर हम लोग यहां न आते, तो अब तक अपने देश फ्रांस पहुंच गए होते।"

कनसील बोला, "हां, आपके उस छोटे कमरे में मैं आपकी बहुमूल्य वस्तुओं का विभाजन कर रहा होता।"

"कनसील ठीक है, यहां से असफल लौटने पर हमारी बड़ी हंसी होगी।"

कनसील ने शांति पूर्वक कहा, "अवश्य, वे लोग अवश्य हंसेंगे, मुझको तो यही कहना चाहिए।

"क्या कनसील ?"

कनसील—"आप जैसे लोगों को ······ ।

कनसील अपनी बात पूरी भी न कर पाया था कि शांत वातावरण में नेडलैंड की आवाज गूंजी।

"सामने देखो, वह जीव दिखाई दे रहा है।"

६

नेडलैंड की आवाज सुनते ही जहाज के सभी अफसर कप्तान, मालिक, खलासी इत्यादि नेडलैंड की दौड़ पड़े। और तो क्या, इंजन चलाने वाले भी अपने इंजन रोक नेडलैंड की ओर लपके। जहाज को रोकने का आदेश दे दिया गया था। इस समय जहाज अपनी तेज चाल के कारण हिल रहा था। घोर अंधकार छाया हुआ था। यह जानते हुए कि नेडलैंड की आंखें बहुत तेज हैं, मैंने अपने आपसे पूछा कि उसने क्या देखा होगा ! कैसे देखा होगा ! मेरा दिल तेजी से धड़कने लगा। लेकिन नेडलैंड से गलती न हुई थी। वह जिस वस्तु को बता रहा था, उसे हम लोगों ने भी देखा। इस जहाज से लगभग १२०० फुट दूर समुद्र की तलहटी अपने भीतर के तीक्ष्ण प्रकाश से चमचमा रही थी। ऐसा जान पड़ता था कि वह अनोखा जीव तीक्ष्ण प्रकाश से अपने ऊपर के अथाह जल को प्रकाशित कर रहा है। ऐसी ही रोशनी का वर्णन विभिन्न कप्तानों ने अपनी रिपोर्टों में किया था।

एक अफसर ने चिल्ला कर कहा, "यह फासफोरस के टुकड़ों का ढेर है।"

मैंने पूर्ण विश्वास के साथ कहा, "महाशय, ऐसा नहीं। वह रोशनी निश्चय ही बिजली की है। देखो, यह हम लोगों की ओर बढ़ रही है।"

यह देख जहाज में शोर मच गया।

कप्तान ने कहा, "शांत हो जाओ, यह समय चिल्लाने का नहीं। सब चुप होकर अपना काम करो। पतवार दुरुस्त करो।

इंजन उल्टा चलाओ ।"

इस प्रकार जहाज भागना चाहता था, परंतु यह अनोखा जीव जहाज से दूनी चाल से उसके पास आ गया।

डर से ज्यादा आश्चर्य के मारे मेरी आवाज बंद थी, और मैं पुतले की भांति चुपचाप खड़ा था। जीव ने हम लोगों के ऊपर विजय पा ली। उसने जहाज का चक्कर लगाया। जहाज इस समय १४ मील की चाल से जा रहा था। जीव ने इस जहाज को अपनी चमकदार बिजली की रोशनी से आवृत्त कर लिया था। उसके बाद वह जीव जहाज से २ या ३ मील दूर चला गया। यह जीव डाकगाड़ी के इंजन की भांति चमकदार भाप उड़ा रहा था। एकाएक भयानक चाल से फिर वह जीव जहाज की ओर झपटा और जहाज से २० फुट की दूरी पर रुक गया। उससे जो प्रकाश प्रकट हो रहा था, वह एकाएक बुझ गया। इसके पश्चात् वह जहाज के दूसरे पार्श्व में फिर प्रकट हुआ। उस जीव की टक्कर से जहाज को काफी हानि पहुंच सकती थी।

अपने जहाज की गतिविधि पर मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ। हमला करने की बजाय वह जानवर ही जहाज पर हमला कर रहा था। यह देख मैंने आश्चर्य-चकित हो कप्तान फरागत से इसका कारण पूछा। कप्तान के उद्वेग शून्य चेहरे पर अत्यंत आश्चर्य की झलक थी।

कप्तान ने कहा, "मिस्टर ऐरोनेक्स जो जीव हमारे सामने है, मैं नहीं जानता कि उसमें शक्ति कितनी है। ऐसी दशा में रात्रि के अंधकार में इस जीव पर आक्रमण कर अपने को विपत्ति में नहीं डाला जा सकता। मुझे दिन के प्रकाश की

इंतजार है, और दिन का प्रकाश होते ही हम अपनी चालें बदल देंगे ।"

"कप्तान, अब तो इस जीव के संबंध में कोई शक बाकी न रहा होगा ?"

"नहीं महाशय, वास्तव में यह एक भयानक नारह्वाल है, और इसमें बिजली का-सा प्रकाश उत्पन्न करने की शक्ति भी है। संभव है कि इसमें जल उड़ाने की भी शक्ति हो। अगर यह जल उड़ाता है, तो मेरे लिए ऐसा भयानक जीव होगा, जैसा कि अभी तक पैदा ही नहीं हुआ। इसी शक्ति के भय से मैं इस अंधकार में इस जीव पर आक्रमण नहीं करना चाहता, बल्कि अपने को बचाना चाहता हूं।" उस रात कोई भी जहाजी सो न सका था।

इस जीव की चाल का मुकाबला न कर सकने के कारण जहाज ने अपनी चाल आधी कर दी थी। उस जीव ने भी हमारे जहाज की नकल की। ऐसा प्रतीत होता था कि उसने वीर पहलवान की भांति मैदान न छोड़ने का निश्चय कर लिया था।

आधी रात को एक विशाल जुगनू की भांति वह जीव अदृश्य हो गया। एक बजने में सात मिनट बाकी थे, कि एक तेज सीटी सुनाई दी—जैसे पानी की बहुत ही तेज धार छूट रही हो।

कप्तान फरागत, नेडलैंड और मैं, सब लोग उत्सुकता से उस दैत्य को देख रहे थे।

कप्तान ने पूछा, "नेडलैंड, तुमने तो ह्वेल मछली की आवाज प्रायः सुनी ही होगी ?"

"हां कप्तान साहब, परंतु ऐसी दो हजार डालर के पुरस्कार वाली मछली की आवाज कभी नहीं सुनी ।"

"सत्य है, तुम पुरस्कार पाने के अधिकारी हो, परंतु यह तो बताओ, कि ह्वेल मछली क्या ऐसी ही आवाज करती है ?"

"हां महाशय, परंतु यह आवाज उन मछलियों की आवाज से काफी तेज है, इसमें भ्रम न होना चाहिए । यह निश्चय ही ह्वेल जाति की मछली है । मैं सुबह उससे मुलाकात करूंगा ।"

मैंने असंतुष्ट आवाज में कहा, "मिस्टर लैंड, अगर वह कुछ सुनने को तैयार होगी तभी तो ?"

"जब वह चार भाले की दूरी पर होगी, तब वह मेरी बात सुनने को मजबूर हो जाएगी ।"

रात्रि के दो बजे हमारे जहाज से कोई ५ मील दूर वह तीक्ष्ण प्रकाश एक बार फिर प्रकट हुआ । इतना अधिक अंतर तथा हवा और समुद्र का शोर होते हुए भी, इस जीव की पूंछ की चोटों तथा सांस लेने की आवाज यहां तक साफ सुनाई देती थी । यह जीव जब समुद्र के तल पर आकर सांस लेता था, तो इसके फेफड़ों में घुसती हुई हवा के कारण ऐसा प्रतीत होता था, मानो दो हजार हार्स पावर के इंजन के सिलेंडर से भाप निकलती हो ।

रात्रि बीती । प्रभात होते ही मछलियों के शिकार के अस्त्र-शस्त्र तैयार किए गए । दूर तक भाला फेंकने की बंदूक, जिस से कि एक मील तक भाला फेंका जा सकता था, तैयार की गई । यह इतनी शक्तिशाली थी कि इस भयानक जीव पर भी घातक चोटें कर सकती थी । नेडलैंड भी भाले को सान पर चढ़ा

अपने हाथ में ले खड़ा हो गया। प्रातःकाल कोई ६ बजे सूर्य की पहली किरण के प्रकट होते ही वह बिजली का प्रकाश लुप्त हो गया। ७ बजे जहाज के चारों ओर कुहरा छा गया। उस समय यत्न करने पर भी वह जीव दिखाई न दिया। दिन के आठ बजे कुहरा कुछ-कुछ साफ होने लगा। रात की तरह अब भी नेडलैंड ने यकायक चिल्ला कर कहा—

"वह देखो वह जीव दिखाई दे रहा है।" जहाज के सभी आदमी उधर देखने लगे। वह सचमुच दिखाई दे रहा था। जहाज से कोई डेढ़ मील दूर एक बड़ा काला शरीर पानी से लगभग १ गज ऊपर उतराता दिखाई दिया। जीव की पूंछ बड़े जोर से समुद्र में इधर-उधर हिल कर जल में बड़ा शब्द तथा झाग उत्पन्न कर रही थी। जहाज धीरे-धीरे उस जीव के पास चला। अब मैं उसे पूर्णरूप से देख रहा था। 'शैनन' और 'हिलवेशिया' ने इसकी लंबाई-चौड़ाई का वर्णन कुछ बढ़ा चढ़ा कर किया था। मुझे इस जीव की लंबाई १५० फुट ही लगी। अन्य भाग जल में छिपा था, इसलिए उसके संबंध में कुछ कहा न जा सकता था। उस जीव के सूराखों से पानी तथा भाप मिले हुए फव्वारे निकले और कोई पचास गज ऊंचे उड़ गए। मैंने इस जीव का सांस लेने का तरीका समझा। मैं यह न तय कर सका कि यह जीव किन जल-जंतुओं की किस जाति का है। बड़े समुद्री जीवों की तीन जातियां होती हैं। ह्वेल, कचलाट, डालफिन। ह्वेल डालफिन के परिवार की होती है। जहाजी बड़ी उत्सुकता से उस जीव के समीप पहुंचने के समय की प्रतीक्षा कर रहे थे। जहाज के अफसर को अपने पास बुला कप्तान ने पूछा, "क्या तुम्हारे इंजन की भाप तैयार है?"



अफसर ने जवाब दिया, "तैयार है।"

कप्तान बोला, "अच्छा, आग अच्छी तरह प्रज्ज्वलित कर जहाज को खूब तेज दौड़ाओ।"

तीन अफसरों ने कप्तान के इस आदेश का स्वागत किया। मुठभेड़ का समय आ गया था। थोड़ी देर बाद जहाज की चिमनियां काला काला धुआं उड़ाने लगीं। सब इंजनों के अपनी पूरी शक्ति से चलने के कारण जहाज की छत डग-डग हिलने लगी। जहाज अपनी पूरी शक्ति से उस जीव की ओर दौड़ा। वह जीव उसे अपनी ओर आता देख कर भी न तो जलमग्न हुआ, न भागा। जहाज जब थोड़ी दूरी पर रह गया, तब ऐसा प्रतीत हुआ कि जीव इस समय डुबकी नहीं लगाना चाहता। वह आगे बढ़ा जा रहा था। जहाज उसका पीछा कर रहा था। कोई पौन घंटे तक यह दौड़ होने पर भी 'अब्राहम लिंकन' उसके बिलकुल समीप न पहुंच पाया। प्रत्यक्ष था कि इस चाल से यह जहाज कभी भी उस तक न पहुंच सकेगा।

झुंझलाहट से कप्तान ने अपनी दाढ़ी हिलाई। कप्तान ने पुकारा, "नेडलैंड, क्या तुम समझते हो कि नावें छोड़ देने से कुछ काम बन सकता है ?"

नेडलैंड ने उत्तर दिया, "नहीं महाशय, जब तक वह खुद न चाहे, वह पकड़ा नहीं जा सकता।"

"तो अब क्या होना चाहिए।"

"कप्तान यदि संभव हो तो जहाज की चाल और तेज करवाओ। मैं बिलकुल आगे खड़ा हो जाऊंगा और यदि मुझको एक भाले भर भी लंबाई मिल गई, तो मैं उस पर वार कर दूंगा।"

कप्तान ने कहा—"बहुत अच्छा नेड । अफसरो, जहाज को और तेज दौड़ाओ ।"

नेडलैंड अपनी जगह पर चला गया । आग और प्रचंड की गई । भाप बनाने के यंत्र ने तेजी से भाप बना चाल और बढ़ाई, परंतु उस जीव ने भी अपनी चाल लगभग उसी रफ्तार से बढ़ा दी । एक घंटे तक जहाज की यही चाल रही, पर जहाज बीच का एक गज भी अंतर कम न कर पाया। कप्तान ने अत्यंत क्रोधित होकर एक बार फिर अफसरों को बुलाया और कहा, "क्या तुम्हारा इंजन इससे अधिक नहीं चल सकता ?"

"नहीं महाशय ।"

कप्तान ने कहा कि तुम जो कुछ कर सको, करो। यहां तक कि सीटी बनाने की भाप भी खराब न करो । और भी अधिक कोयला फौरन आग में झोंक दिया गया । जहाज की चाल और बढ़ाई गई ।

कैसी दौड़ थी वह ! मेरे चित्त में जो विचार उत्पन्न होते थे, उनका मैं वर्णन नहीं कर सकता । नेड हाथ में भाला लिए अपनी जगह पर खड़ा था । जीव ने जहाज को कई बार अपने समीप आने दिया । कभी-कभी तो इतना नजदीक आ जाता था कि नेडलैंड भाला चलाने के लिए अपना हाथ उठा लेता था, लेकिन फौरन ही जीव ३० मील की चाल से भाग जाता था । इतना ही नहीं, वह जीव समय पर इस जहाज के गिर्द चक्कर लगा, एक बार फिर हमारे जहाज से आगे दौड़ने लगता था । दिन के बारह बज रहे थे, फिर भी जहाज उस जीव के अधिक समीप कभी न पहुंच सका था । अब कप्तान ने कुछ अन्य तरीके इस्तेमाल में लाने का निश्चय किया ।

उसने कहा, जीव तो मेरे जहाज से तेज दौड़ता है। अच्छा, देखता हूं कि यह जीव तोप के गोले से भी आगे जा सकता है या नहीं। जहाज की तोप तुरंत भर दी गई तथा निशाना लगाया गया। तोप चलाई गई, परंतु गोला जीव से कई गज आगे समुद्र-जल में जा गिरा।

कप्तान ने कहा, "कोई दूसरी कोशिश करें। जो इस जीव को तोप से मारेगा, उसे १५०० रु० पुरस्कार दिया जाएगा।"

भूरी दाढ़ी वाले बुड्ढे तोप चलाने वाले ने तोप भरी तथा काफी देर निशाना साधा और तोप को चलाया। भयंकर शब्द हुआ। जहाज के सभी जहाजियों में कोलाहल हुआ। गोला जीव की देह पर लगा और फिसल कर उससे कोई दो मील दूर सागर में जा गिरा।

कप्तान ने चिल्ला कर कहा, "यह जीव नहीं, कोई पिशाच है, तथा ६ इंच मोटे लोहे के प्लेट से ढका है। मैं निश्चय ही इसको पकड़ूंगा। मेरा जहाज रहे या टूट जाय।"

यह आशा की जाती थी कि जीव की शक्ति अब समाप्त हो गई होगी। वह बारूद और इंजन के विरुद्ध अधिक यात्रा के कारण थक गया होगा। लेकिन घंटों बीत गए, किंतु उसमें थकने के कोई चिन्ह प्रकट न हुए।

'अब्राहम लिंकन' की तारीफ में यह कहा जाना चाहिए कि उसने परिश्रम से जीव का मुकाबिला किया। इस दिन यह जहाज कोई ३०० मील दौड़ा होगा। यह दिन प्रत्येक जहाजी के लिए अनोखा था। प्रातः काल से सायंकाल तक विचित्र दौड़ हुई। अंत में संध्या हो गई। सागर-तल तथा आकाश में अंधकार छा गया। उस समय मुझे यह विश्वास था कि मेरी

यात्रा अब समाप्त प्राय: है, और मैं विचित्र जीव को फिर न देखूंगा। परंतु यह भ्रम था। १० बजकर ५० मिनट पर रात को वह बिजली की रोशनी एक बार फिर दिखाई पड़ी। यह जहाज से कोई ३ मील दूर थी। कल की भांति तीक्ष्ण तथा स्वच्छ भी थी।

जीव भी स्थिर दिखाई दिया। शायद दिन भर काम के कारण थकी हुआ लहरों के झूले में सो रहा हो। यही मौका था जिससे कप्तान फायदा उठा सकते थे।

कप्तान ने आदेश दिया। जहाज की चाल धीमी कर दी गई और इस प्रकार सतर्कता से आगे बढ़ा, कि कही उसका दुश्मन जग न पड़े। समुद्र में सोती हुई ह्वेल मछलियों का मिलना स्वाभाविक था। नेडलैंड ने ऐसी ही दशा में काफी मछलियों को मार कर पकड़ लिया था। नेडलैंड अपनी जगह पर वापस जा हाथ में भाला ले तैयार हो गया। जहाज शांतिपूर्वक आगे बढ़ा तथा जीव से कुछ दूर जाकर रुक गया। किसी ने सांस तक न ली। डेक पर पूर्ण शांति रही। हमारा जहाज और आगे बढ़ा। उस समय उस जीव की बिजली की ज्योति से हमारी आंखों को चौंध लगने लगी। मैं डेक के एक किनारे जहाज की मुंडेर से लगा खड़ा था। मैंने देखा नेडलैंड हाथ में भयानक भाला ले मेरी बगल में आ खड़ा हुआ। इस समय यह जहाज उस जीव से केवल २० फुट के अंतर पर था। एकाएक नेडलैंड ने अपना भाला चलाया। वह निशाने पर जा बैठा। एक बड़ा शब्द हुआ। जान पड़ा इस भाले ने किसी कठोर वस्तु पर चोट की। अचानक उस जीव की बिजली की रोशनी बुझ गई। साथ-साथ जल के दो फव्वारे डेक पर आ

गिरे। इन फव्वारों ने डेक को जल से प्लावित कर दिया। इनके वेग ने कितने ही मनुष्यों को गिरा दिया और कितनी ही चीजों को नष्ट-भ्रष्ट कर दिया। थोड़ी ही देर बाद एक भयानक धक्के ने जहाज को बड़े वेग से हिला दिया। मैं अपने को संभाल न सका, समुद्र में जा गिरा।

७

यद्यपि मुझे अपने अचानक गिरने पर आश्चर्य हुआ, परंतु मेरी चैतन्य शक्ति उस समय भी काफी तीव्र थी। पहले तो मैं दो-तीन फुट अंदर गहराई में चला गया, परंतु इससे मेरी चेतना न खोई थी। मैं एक अच्छा तैराक था, दो ही बार हाथ-पैर चला कर मैंने ऊपर आ, अपने जहाज को देखा। क्या जहाजियों को मेरे गिर जाने का पता था ?

काफी अंधकार था। पूर्व की ओर दूर एक काली वस्तु दिखाई दे रही थी। दूरी के कारण उसकी रोशनी धीमी दिखाई देती थी। यही मेरा जहाज था। इस अंधकार में इतना समुद्र तैर कर अपने जहाज तक पहुंचना मेरे लिए असंभव था। इस ओर से हताश हो मैं जहाज की ओर तैरते हुए चिल्लाया, "बचाओ, बचाओ।"

मेरी पोशाक ने मेरे हाथ-पैर पूरी तरफ से जकड़ रक्खे थे। इसमें पानी भर गया था। वह मुझे डुबाने लगी थी। अंधकार में गिर मैं एक बार चिल्लाया, बचाओ। यह अंतिम चीत्कार

था। मेरे मुंह में पानी भर गया। मैं छटपटाने लगा। ऐसे समय में न जाने किसने मेरा वस्त्र पकड़कर मुझे जल से निकाल कर एक बार फिर ऊपर उठाया। उसी समय मुझे यह शब्द सुनाई पड़े, "यदि आप मेरे कंधे का सहारा ले लेंगे तो आप आसानी से तैर सकेंगे।"

कनसील के कंधे का सहारा ले मैं चिल्लाया, "अरे कनसील, तुम यहां कैसे ?"

"महाशय, मैं कनसील ही हूं। आप की सेवा को हाजिर हूं।"

"क्या धक्के से ही तुम भी समुद्र में आ गिरे ?"

"नहीं, मैं आप की सेवा के लिए आपके पीछे आया हूं।"

"जहाज क्या हुआ ?"

कनसील ने पीछे मुड़कर कहा, "जहाज ! महाशय यदि आप जहाज की चिंता न करें तो अच्छा होगा।"

"क्यों।"

"क्योंकि समुद्र में कूदते समय मैंने जहाजियों को कहते सुना था कि जहाज का पतवार तथा चर्ख दोनों नष्ट हो गए हैं।"

"चर्ख नष्ट हो गया ?"

"हां महाशय, उस जीव से टकरा कर नष्ट हो गया। जहाज की इससे अधिक क्षति नहीं हुई.परंतु बिना पतवार और चर्ख के जहाज चलेगा कैसे ?"

"तब तो हम लोगों का जीवित रहना संभव नहीं।"

कनसील ने शांतिपूर्वक उत्तर दिया, "महाशय का अनुमान सत्य हो सकता है। हम कुछ समय तक जीवित रहेंगे। तब तक संभव है कि हम लोगों के बचने का कोई उपाय निकल आय।"

कनसील की इस आशा से मुझे भी कुछ भरोसा हुआ। मैं काफी हिम्मत से तैरता रहा, परंतु अपनी पोशाक से परेशान था। यह पोशाक मुझे ऊपर लदे भार की भांति नीचे की ओर दबा रही थी। मुझे अपने को समुद्र की सतह पर रखना अत्यंत कठिन हो गया। कनसील ने यह देख लिया। उसने कहा, "महाशय, क्या मैं आपकी पोशाक चाकू से काट दूं ?" और एक खुले चाकू को मेरे कपड़ों पर फेर उसने ऊपर से नीचे तक मेरे कपड़े काट दिए। मुझको इस भारी परेशानी से मुक्त कर तैरने में मदद की। मैंने भी उसी चाकू से कनसील के सारे कपड़े काट दिए। अब हम लोग निश्चिंत हो गए थे। हम लोग एक दूसरे के नजदीक तैरने लगे थे। इस समय हम लोगों की हालत बहुत ही खतरनाक थी। हम लोग बिना पतवार वाले जहाज की भांति समुद्र तल पर छटपटा रहे थे। हम लोगों के बचने का केवल एक ही उपाय था। किसी नाव के हमारे समीप आने पर ही हमारी प्राण रक्षा हो सकती थी। रात के ग्यारह बजे हम लोग सागर में गिरे थे। तैरते तैरते रात का एक बज गया। थकावट से मेरी देह की मांस पेशियां जकड़ गई थीं। मैं डूबने लगा था। कनसील ही मुझे समुद्र तल पर थामे हुए था। मेरे प्राण केवल कनसील पर ही निर्भर थे। वह भी थक गया था। मुझे आशंका थी कि वह अब अधिक देर तक मुझे सहारा न दे सकेगा।

मैंने चिल्लाकर कहा, "छोड़ दो, मुझे डूब जाने दो। अपने प्राणों की रक्षा को।"

उसने उत्तर दिया, "कभी नहीं महाशय, मैं आपको नहीं छोड़ सकता। आपके साथ मैं भी डूबूंगा।

हवा पूरब की ओर से बह रही थी। बादल कुछ साफ हुए, तथा उनके बीच से चंद्रमा निकला। समुद्र का तल दिखाई दिया। मैंने अपना सिर उठाया। जहाज अब भी दिखाई पड़ रहा था।

वह हम लोगों से ५ मील दूर था। एक काले पदार्थ जैसा दिखाई देता था। मुझे कोई नाव न दिखाई पड़ी। मैंने पुकारने की कोशिश की परंतु इतने अंतर से पुकारना व्यर्थ था। मेरे फूले हुए होठों से आवाज न निकल सकती थी। कनसील कुछ अब भी बोल सकता था। मैंने उसे कई बार बचाओ, बचाओ, चिल्लाते सुना था। मैंने कुछ समय के लिए तैरना बंद कर दिया और ध्यान से सुनने लगा। मेरे कानों में गाने की भांति कुछ सुनाई पड़ रहा था। मुझे यह प्रतीत होता था, मानो कनसील के चीत्कार का कोई उत्तर दे रहा हो।

मैंने भर्राए हुए स्वर में पूछा, "कनसील क्या तुमको कुछ सुनाई पड़ता है ?"

"हां, महाशय !"

कनसील ने एक बार फिर जोर से चीत्कार किया। इस समय कोई भ्रम न था। हम लोगों के चीत्कार का किसी ने उत्तर अवश्य दिया था।

क्या यह आवाज मेरे ही समान धक्के से गिरे हुए व्यक्ति की है अथवा कोई नाव मेरी तरफ आ रही है। कनसील ने अब की बड़े जोर से कोशिश की। उसने हम लोगों के लिए अंतिम लड़ाई लड़ी। वह मेरे कंधों का सहारा ले अपने आधे शरीर को पानी के ऊपर लाया। मैंने उसको जोर से चिल्लाते सुना। इस समय मेरी सारी शक्ति समाप्त हो चुकी थी।

मेरा मुंह पानी से भर गया था। मेरा सारा शरीर ढीला हो गया था। मैं अब डूबने लगा था। ऐसे समय मेरा हाथ किसी कठोर वस्तु पर पड़ा। प्राण रक्षा के लिए दोनों भुजाओं द्वारा पकड़कर उस वस्तु से लिपट गया। उस समय मुझे ऐसा जान पड़ा कि मैं जल से खींच लिया गया हूं। मैं बेहोश हो गया, पर इतना जान पड़ता था कि कोई मेरे शरीर पर मालिश कर रहा है। आंखें आधी खोल मैंने धीमे स्वर में कहा, "कनसील।"

इसके उपरांत चंद्रमा की रोशनी में मुझे दिखाई दिया कि मेरे समीप कनसील तो था ही, उसकी बगल में और भी एक मनुष्य था। उसको मैंने तुरंत पहचान लिया। मैंने उच्च स्वर में पूछा, "क्या नेडलैंड !"

नेडलैंड ने उत्तर दिया "जी हां, मैं ही हूं।"

"क्या तुम भी जहाज के उसी धक्के से समुद्र में गिर गए थे ?"

"हां महाशय, लेकिन मेरा भाग्य आपसे अच्छा था। मैं तुरंत ही एक तैरते हुए द्वीप पर चढ़ आया था।"

"द्वीप पर ?"

"हां महाशय, और यदि अधिक जानना चाहते हों तो मैं बताऊं यह द्वीप नहीं है, बल्कि वही जीव है जिसकी तलाश में हम लोग अमेरिका से इतनी दूर आए हैं।"

"नेड, यह तुम क्या कह रहे हो ?"

"मैं अब समझा कि मेरा भाला इसकी खाल में क्यों नहीं चुभा था, उलट गया था।"

"नेड, क्यों ! क्यों !"

"क्योंकि जानवर लोहे के प्लेटों का बना है। जिस आधो

डूबी हुई वस्तु पर मुझको शरण मिली थी, उस वस्तु की छत पर मैं तुरंत पहुंच गया। वहां पहुंच मैंने इसमें पूरे जोर का आघात किया। यह निश्चय ही कड़ा तथा चिकना शरीर था। इसमें संदेह नहीं कि यह किसी समुद्री जीव का शरीर न था, क्योंकि समुद्री जीव के शरीर नर्म होते हैं। यह सख्त शरीर हड्डियों का बना है। मैं इस जीव को जल-स्थल पर समान रूप से रहने वाले उन जीवों की श्रेणी में भी न विभाजित कर सकता था, क्योंकि इसकी काली पीठ मछली जैसी छिलकेदार न होकर, चिकनी तथा पालिश की हुई थी।

मेरे इस आघात से धातु निर्मित वस्तु जैसी आवाज बिल्कुल अजीब थी—मानो फौलाद की चादर पर चोट देने से पैदा हुई हो। अब कोई शक बाकी न रहा था। जिस वस्तु ने सारे वैज्ञानिक जगत में इतने समय से उथल-पुथल कर रक्खी थी, यह वस्तु मनुष्य-निर्मित थी। यथार्थ में हम मछली जैसी बेलनाकार एक पनडुब्बी नाव के ऊपर थे। कनसील और मैं इस राय से सहमत थे, परंतु नेडलैंड अब भी अपनी ही बात पर जमा था।

मैंने कहा, "यदि यह नाव है तो इसके अंदर इसको चलाने की मशीन अवश्य होगी। और उस मशीन को चलाने वाले खलासी अवश्य होंगे।"

नेडलैंड ने उत्तर दिया, "अवश्य ही, परंतु मुझे इस तैरते हुए द्वीप के ऊपर सवार हुए ३ घंटे हो गये हैं। इसने जिंदा होने के कोई चिन्ह प्रकट नहीं किए।"

"नाव हिली तक नहीं ?"

"जी नहीं महाशय, यह लहरों में झूल रही है लेकिन

यह इतनी देर से चली नहीं ।"

"हम जानते हैं कि इसकी चाल तेज है। यह चाल पैदा करने के लिए मशीन जरूरी है और मशीन के लिए चलाने वाले बहुत आदमी होंगे। इससे मुझे आशा है कि अब हम लोग सुरक्षित हैं।"

उस समय इस विचित्र यंत्र से भाप निकलने लगी। पीछे की चरखी भी घूमने लगी। नाव आगे बढ़ चली। हम लोग जिस भाग पर थे, वह पानी से प्रायः ३ फुट बाहर था। उसे हमने बड़े जोर से पकड़ लिया। कुशल इतनी थी कि नाव अधिक वेग से नहीं चल रही थी।

नेडलैंड ने धीरे से कहा, "जब तक नाव पानी के ऊपर ऊपर चल रही है, तभी तक कुशल है। जैसे ही यह गोता मारेगी, हमारी मृत्यु निश्चित है।"

नेडलैंड की यह बात अक्षरशः सत्य थी। इसलिए यह अत्यंत आवश्यक हो गया कि जो कोई भी आदमी इस मशीन के अंदर हो, उसे हम लोगों के ऊपर होने की सूचना दी जाय। बहुत ढूंढने तथा ध्यान से देखने पर भी कोई छिद्र न दिखाई दिया। फौलाद की चद्दरों पर चद्दरें लगीं थीं, तथा मजबूत पेचों द्वारा परस्पर अत्यंत सावधानी से जड़ी गई थीं। इसमें संदेह नहीं कि ऊपर से भीतर जाने का कोई द्वार अवश्य होगा, परंतु वह कहां था, मुझे मिल न सका। अब तक चंद्रमा अस्त हो चुका था। अंधकार के कारण कुछ दिखाई भी न देता था। अतः हम लोगों को दिन हो जाने तक प्रतीक्षा करनी पड़ी; क्योंकि तभी इस समुद्री नाव के भीतर घुसने के तरीके निकाले जा सकते थे। इस समय हमारी रक्षा तो इस

नाव चलाने वालों के ऊपर निर्भर थी। अगर इस यंत्र ने गोता मारा, तो हम सब लोग खत्म हो जाएंगे। जब तक हम लोग अंदर नहीं घुसते, अंदर वालों को सूचना करने का कोई दूसरा साधन न था। यह भी निश्चय था कि यदि इन आदमियों के पास अंदर हवा भरी हुई नहीं है, तो इन लोगों को समय समय पर समुद्र तल पर आना ही पड़ेगा। इसलिए कोई ऐसा दरवाजा अवश्य होगा जिससे वे लोग अंदर से बाहर हवा में आ जा सकें।

कप्तान फरागत की ओर से बचाए जाने की आशा अब हम छोड़ चुके थे। हम लोग पच्छिम की ओर जा रहे थे। मैंने अनुमान किया, नाव की चाल उस समय १२ मील प्रति घंटा थी। चर्खी बराबर चल रही थी। कभी-कभी तो नाव चमकदार पानी को काफी ऊपर उछालती थी।

लगभग ४ बजे प्रातः यंत्र की तेजी से बड़ी बड़ी लहरें हम लोगों को बड़े वेग से थपेड़े मारने लगीं। हम लोग नाव के इस भाग को मजबूती से पकड़े उसी से चिपटे रहे। किसी तरह रात व्यतीत हुई। प्रातः होते ही कोहरे ने हम लोगों को ढक लिया। थोड़ी ही देर में कोहरा साफ भी हो गया।

नेडलैंड ने नाव पर बलपूर्वक पदाघात करके उच्च स्वर से कहा, "यारो खोलो। क्या हम लोगों को मार डालना चाहते हो।" लेकिन उस चरखे की आवाज में मनुष्य की आवाज सुनाई पड़ना अधिक कठिन था। कुशल यह थी कि हम लोगों का डूबना बंद हो गया।

नाव में एकाएक एक शब्द हुआ—मानो किसी द्वार का कोई लोहे का डंडा हटाया गया हो। इस नाव के मध्य भाग में

लगा एक बड़ा लोहे का यंत्र द्वार की तरह खुला और ऊपर की ओर उठा। छेद में से एक मनुष्य प्रकट हुआ। हमें देख चीख उठा और दरवाजा बंद कर नीचे चला गया। थोड़ी देर बाद आठ बलवान नकाबपोश आदमी शांतिपूर्वक इस द्वार से निकले और हम लोगों को घसीटकर अंदर नीचे ले गए।

८

हम लोग बेरहमी और तेजी से अंदर घसीटे गए। मैं औरों के विषय में नहीं जानता, पर अपने को इस तैरते हुए कैदखाने में बंद समझ मेरा शरीर कांप उठा। पता नहीं कैसे व्यक्तियों से निपटना पड़े। हमको किसी ऐसी नई तरह के समुद्री लुटेरों से निपटना था, जो समुद्र में ही रह अपना जीवन व्यतीत करते थे। हमें एक कोठरी में बंद कर दिया गया। वहां घोर अंधकार था। मेरी आंखें बाहर की रोशनी के कारण चकाचौंध हो गई थीं। इसलिए वहां कुछ सूझ न पाता था। मेरे नंगे पैर लोहे की एक सीढ़ी के जीने से छू गए। नैडलैंड तथा कनसील मजबूती से डंडे पकड़े मेरे पीछे चले आ रहे थे। सीढ़ी समाप्त होते ही एक दरवाजा खुला, परंतु वह शीघ्र ही बंद हो गया। हम लोग अकेले थे! कहां थे? इस विषय में न तो हम लोग जानते ही थे, और न इसका अनुमान ही कर सकते थे। वहां बिलकुल अंधकार था।

नैडलैंड इस अद्भुत व्यवहार पर क्रोधित हुआ। उसने

कहा, "यहां के लोग स्काटलैंड के लोगों की भांति, अर्थात् सत्कार-परायण जान पड़ते हैं। कौन जाने मनुष्य-भक्षी हों। लेकिन मैं इतना कह सकता हूं कि बिना मेरे विरोध किए खा नहीं पाएंगे।

कनसील ने शांतिपूर्वक कहा, "नेड शांत रहो, पहले से ही क्रोध करना ठीक नहीं।"

"नहीं, इस कमरे में जैसा अंधकार है वैसा कहीं न होगा। चाकू मेरे पास अब भी है। जो बदमाश मेरे शरीर पर हाथ लगाएगा, मैं देख लूंगा।

मैंने नेडलैंड से कहा, "बेकार क्रोध न करो। यह कौन नहीं जानता कि हम लोगों की कोई सुनवाई नहीं! हमको यह जानने की कोशिश करनी चाहिए कि हम लोग इस समय हैं कहां!"

हम लोग टटोल कर जान सके कि जिस कोठरी में हम बंद थे, वह लौह-पत्र की बनी थी। उसके मध्य भाग में एक टेबुल रक्खा था। उसके चारों ओर कई स्टूल पड़े थे। इस कोठरी के फर्श पर चटाई जैसी कोई चीज बिछी हुई थी। दीवारों में न कोई खिड़की थी और न दरवाजा। दो भिन्न दिशाओं से कमरे का चक्कर लगा मैं तथा कनसील कमरे के बीच में एक दूसरे से मिले। हमने कमरे की लंबाई २० फुट तथा चौड़ाई १० फुट अनुमान की। नेडलैंड अपनी लंबाई के बावजूद कमरे की ऊंचाई न नाप सका।

हम लोगों ने आधा घंटा उसी हालत में गुजारा। अकस्मात् इसके भीतर की छत से लगे हुए एक पालिशदार शीशे के गोले से तीक्ष्ण बिजली का प्रकाश प्रकट हुआ। इससे अंधकार दूर हो गया। काल-कोठरी एकाएक प्रकाशमान हो गई। रोशनी तेज

थी। पहले हम इसकी चमक को बरदाश्त न कर पाए। इसकी सफेदी तथा तेजी से मैंने अनुमान किया कि वह वही प्रकाश है जो समुद्री नाव के चारों ओर चमका करता था। मेरी आंख अपने आप बंद हो गईं।

हाथ में अपना चाकू लिए हुए नेडलैंड जोर से चिल्लाया, "महाशय जी, अब हम लोग कम से कम देख तो सकते हैं।"

"हां, नेडलैंड, परंतु हम लोगों की स्थिति अब भी कुछ कम चिंताजनक नहीं है।"

कनसील ने कहा, "महाशय जरा धैर्य रखिए।"

इस प्रकाश से मैं कमरे को पूर्ण रूप से देख सकता था। इसमें केवल एक मेज तथा ५ स्टूल थे। अदृश्य दरवाजे विचित्र रूप से वंद थे। हमें कोई भी शब्द न सुनाई पड़ता था। ऐसा प्रतीत होता था— मानो मशीन के अंदर के सब आदमी मर गए हों। क्या यह चल रही थी, या स्थिर थी? समुद्र तल पर थी, या अंदर गहराई में? मुझे इसका कुछ आभास न हुआ। वह रोशनी अकारण न थी, पेच खोलने और लोहे की डंडी खींचने की आवाज सुनाई पड़ी। दरवाजा खुला। उससे दो व्यक्ति प्रकट हुए। एक नाटा, स्वस्थ, चौड़े कंधे तथा बड़े सिर वाला था। उसके बाल काफी काले तथा मोटे थे। उसका सारा शरीर दक्षिणी फ्रांस के निवासियों जैसा था। दूसरे व्यक्ति का रूप दर्शनीय था। उसके चेहरे तथा नेत्रों से प्रकट होता था कि वह स्वस्थ-हृदय, दृढप्रतिज्ञ, गंभीर, परिश्रमी तथा वीर था। उसकी उम्र ३५ से ५० वर्ष की थी। उसका लंबा कद, चौड़ा माथा, सीधी नाक, लंबा मुंह, चमकीले दांत, लंबे हाथ उसके स्वभाव को प्रकट करते थे। इस प्रकार

का मनुष्य मुझको कभी नहीं मिला था।

अपने आकार से वह नाव का स्वामी जान पड़ता था। उसकी आंखें अंदर तक की गहराई मापने में समर्थ थीं, मानों उनमें समुद्र के अथाह जल की गहराई नापने की भी सामर्थ्य है।

उनकी टोपियां, बूट और कपड़े समुद्री जल जीवों की खाल और चमड़े के बने थे, जिन्हें पहने वे काफी चुस्त मालूम देते थे।

लंबे मनुष्य ने हम लोगों का निरीक्षण किया। फिर उसने अपने साथी से मुड़ ऐसी भाषा में बातचीत की, जिसे मैं कुछ समझ न पाया। समझ में न आने पर भी मुझे जान पड़ा कि यह भाषा सुनने में मधुर तथा मुहावरेदार तथा शब्द भंडार से मालामाल थी। इसके स्वर प्रायः चढ़ती हुई आवाज के मालूम पड़ते थे।

उनके दूसरे साथी ने सर हिला कर दो तीन शब्दों में कुछ उत्तर दिया। इसके बाद व्यक्ति के चेहरे से ऐसा मालूम पड़ता था, मानो वह मुझ से कुछ पूछ रहा है। मैंने फ्रांसीसी भाषा में उत्तर दिया। परंतु ऐसा मालूम दिया कि वह फ्रेंच नहीं जानता। अब परिस्थिति बहुत ही गंभीर थी।

कनसील ने कहा, "महाशय, आप अपना हाल इनसे बताएं, शायद उससे यह लोग कुछ समझ सकें।"

मैंने अपना हाल बताना शुरू किया। पहले मैंने अपने लोगों के नाम तथा पेशा बतलाया। वह आदमी मेरी सब बातों को ध्यानपूर्वक सुनता रहा। लेकिन उसके चेहरे से जान पड़ता था कि वह कुछ भी न समझ पाया था। मैं जब अपना सारा हाल कह चुका पर उसने कुछ जवाब न दिया।

अब केवल एक तरीका बाकी रह गया था कि हम लोग अंग्रेजी में उनसे बातें करें, शायद वे कुछ समझ सकें। मैं अंग्रेजी और जर्मन जानता था। मैं उन्हें ठीक से पढ़ लेता था, परंतु जल्दी से बोल न पाता था।

मैंने नेडलैंड से कहा, "लैंड अब तुम्हारी बारी है। अपनी अच्छी अंग्रेजी का लाभ उठाओ। शायद तुम ही हम से ज़्यादा भाग्यशाली निकलो।"

नेड ने अपना सारा हाल अंग्रेजी में कह सुनाया। अंत में उसने कहा कि भूख से हमारी जान निकल रही है, यह वास्तव में सत्य था। नेडलैंड की बात उस व्यक्ति की अधिक समझ में न आई। उस आदमी ने उसका भी कोई उत्तर न दिया।

कनसील ने कहा, "यदि महाशय मुझे आज्ञा दे, तो मैं जर्मन भाषा में उन्हें समझाऊं।"

"मैंने कहा, "क्या तुम जर्मन भी जानते हो ?"

"हां महाशय, थोड़ी थोड़ी।"

"मेरे पुराने साथी, तुम्हीं इनको कुछ समझाओ।"

कनसील ने अपनी शांत भाषा में तीसरी बार हम लोगों का हाल उनसे कहा। उसका भी कोई प्रभाव न हुआ।

अब क्या किया जाय ? मुझे टूटी-फूटी लैटिन का अभ्यास था। अंत में मैंने लैटिन में आत्मकथा वर्णन की, परंतु इसका भी कोई असर न हुआ। इसके उपरांत उन दोनों व्यक्तियों ने अपनी भाषा में कुछ वातचीत की और हम लोगों को कोई उत्तर दिए विना चले गए। दरवाजा बंद हो गया।

नेडलैंड क्रुद्ध होकर बोला, "इन बदमाशों से अंग्रेजी, फ्रैंच, लैटिन या जर्मन में से क्या बोला जाय। दो में से किसी एक ने

भी हमारा उत्तर न दिया।"

मैंने क्रोधित नेडलैंड से कहा, "नेड शांत रहो, क्रोध से काम न चलेगा।"

नेड ने उत्तर दिया, "प्रोफेसर क्या आप जानते हैं, कि हम लोग इसी लोहे के पिंजड़े में भूख के मारे मर न जाएंगे।"

कनसील ने कहा, "हम लोग अब भी जिंदा रह सकते हैं।"

मैंने कहा, "मेरे दोस्त हताश न हो। हम लोग इससे पहले और भी बुरी दशा में थे। हम को कुछ इंतजार करना चाहिए। उसके बाद ही हमें इस नाव के कप्तान या अन्य कर्मचारियों के संबंध में कुछ राय बनानी चाहिए।"

नेड ने उत्तर दिया, "मैं इन लोगों को बिल्कुल समझ गया। यह लोग बिल्कुल असभ्य हैं।"

"नेड, यह किस देश के हैं ?"

"मूर्खराज के देश के।"

"नेड, यह देश दुनिया के नक्शे में कहीं नहीं। मैं तो यह समझता हूं कि इन लोगों की राष्ट्रीयता का अनुमान हम नहीं कर सकते। हम केवल यही कह सकते हैं कि ये लोग न तो अंग्रेज, न फ्रांसीसी और न जर्मन हैं। हम लोगों को वह स्वीकार ही करना पड़ेगा कि यह लोग कर्क रेखा और मकर रेखा के बीच के किसी देश के निवासी हैं। यह तुर्क, अरब, भारतीय या स्पेन, कहां के हैं, इनकी शक्ल-सूरत और जबान से कुछ भी पता नहीं चलता।"

कनसील ने उत्तर दिया, "हर एक भाषा न जानने का यही तो अवगुण है।"

नेड ने कहा, "इससे कोई लाभ नहीं। क्या तुम यह

नहीं देखते कि इन लोगों की अपनी भाषा है---जिसे इन लोगों ने भले आदमियों को खाना न देने और हताश करने के लिए बना रक्खा है, पर विश्व के हर देश को मुंह खोलना, जबड़े चलाना, दांत और होंठ हिलाना तो समझ में आता है। क्या यह इशारे जैसे पैरिस में समझे जाते हैं, संसार के सुदूरतम देशों या एकांत द्वीपों के वासी नहीं समझते, कि हमें भूख लगी है---कुछ खाने को दीजिए।"

कनसील ने कहा, "यहां के आदमी इस प्रकार न समझेंगे।"

कनसील यह कह ही रहा था कि दरवाजा खुला। उससे एक रसोइया अंदर प्रविष्ट हुआ। वह पहले वालों की तरह ही कपड़े पहने और हम तीनों के लिए भी वैसे कपड़े लाया था। इसी बीच दूसरा आदमी कमरे की मेज पर एक मेजपोश बिछा कर चला गया। हम लोगों ने जल्दी से कपड़े पहन लिए।

कनसील ने कहा, "अब कुछ आशा हुई।"

नेड ने उत्तर दिया, "मैं इस पर कुछ शर्त लगा सकता हूं, यहां खाने योग्य कोई चीज नहीं मिलेगी। कछुए का जिगर, समुद्री कुत्ते की बोटियों के अतिरिक्त यहां कुछ न मिल सकेगा।"

कनसील ने कहा, "यह तो अभी मालूम हुआ जाता है।"

थोड़ी देर बाद उस रसोइए ने विभिन्न प्रकार के भोजन की तश्तरियां मेज पर रक्खीं। यह तश्तरियां चांदी की बनी थीं। हमें जिन व्यक्तियों से निपटना है, वे निश्चय ही काफी सभ्य हैं। अगर इस नाव में यह अद्‌भुत बिजली की रोशनी न होती, तो हम यही समझते कि हम लोग लिवरपूल---अडेल्फी

होटल या पेरिस के ग्रांड होटल में भोजन कर रहे हैं । उन तश्तरियों में न तो रोटियां थीं और न प्यालों में शराब। उनमें शुद्ध ताजा पानी था। तश्तरियों में विभिन्न प्रकार की मछलियां थीं, जो बहुत ही स्वादिष्ट बनी थीं । कुछ ऐसी चीजें भी थीं जो खाने में स्वादिष्ट तो थीं, परंतु मैं उनको जान न पाया कि वे क्या हैं । मैं यह न समझ सका कि यह सब किस राज्य का है । इसी समय एक बात और समझ लेना चाहिए कि यह भोजन तथा पानी आदि जिन बर्तनों में था, उन के किनारे एक अक्षर बना था । उसका रूप 'न' जैसा था ।

नेडलैंड और कनसील ने इस पर विशेष ध्यान न दिया। मेरी समझ में आया कि यह अक्षर उसी के नाम का द्योतक होगा, जो इस समुद्री सल्तनत पर राज्य करता होगा । नेड और कनसील ने अपने आगे रक्खी सभी तश्तरियों को खाली कर दिया । अंत में मैंने भी उन लोगों का अनुकरण किया । हम तीनों ने खूब डटकर भोजन किया । पिछली रात हम लोग मौत से लड़े थे । इससे काफी थक गए थे । इसकी प्रतिक्रिया स्वाभाविक थी। हम लोगों ने खाना खूब खाया । अवसर मिलते ही निद्रा ने हम लोगों पर विजय पा ली । मेरे दोनों साथी उसी जगह चटाई पर लेट कर सो गए । परंतु मैं बहुत देर तक जागता हुआ अपनी अवस्था पर विचार करता रहा । मेरे मस्तिष्क में भिन्न-भिन्न प्रकार के प्रश्न आते तथा मैं उन्हें हल करने की चेष्टा करता । उस समय ऐसा जान पड़ा मानों यह नाव नीचे डूब कर सागर जल के तल में चली गई है । यह जान मेरे मन में भय हुआ। मेरा मस्तिष्क जब कुछ शांत हुआ, तब मेरा ध्यान स्वप्न में बदल गया, मैं गहरी नींद में सो गया ।

९

पता नहीं मैं कितनी देर सोया। इतना तो अवश्य कह सकता हूं कि काफी देर तक सोया, क्योंकि जब मैं सोकर उठा मेरी सारी थकावट दूर थी। अपने साथियों में मैं ही पहले जागा था। इस कमरे की किसी भी वस्तु की स्थिति में कोई परिवर्तन न हुआ था।

मैंने मन में सोचा कि क्या मुझको आजन्म इस कोठरी में कैद रहना पड़ेगा! इस कोठरी में बंद रहना दुखद था। मस्तिष्क तो कुछ हल्का हो गया था परंतु मन भारी और परेशान था। सांस लेने में कठिनाई हो रही थी। कोठरी में काफी आक्सीजन नहीं थी। शायद उसका अधिक भाग हम इस्तेमाल कर चुके थे। मेरे मन में यह बात बार-बार उठ रही थी, कि कहीं हवा की कमी के कारण हम लोगों की मृत्यु न हो जाय। इतने में नमकीन जल की गंध से परिपूर्ण स्वच्छ वायु का झोंका कमरे में घुसा। यह समुद्री वायु थी तथा आयोडीन से युक्त थी। मैंने अपना मुंह जोर से फैलाया। मेरे फेफड़ों में ताजी हवा भर गई। इस समय मुझे ऐसा प्रतीत हुआ मानों ह्वेल मछली की भांति यह नाव पानी के अंदर से समुद्र तल पर हवा लेने आई हो। अब मैंने उस छिद्र को देखा, जिससे यह हवा आई थी। जिस समय मैं यह जांच कर रहा था, तभी मेरे दोनों साथियों की निद्रा भंग हो गई। निश्चय ही यह लोग इस हवा के अंदर आने के प्रभाव ही से जगे होंगे। आंखें मलते हुए अंगड़ाई ले, यह लोग फर्श पर खड़े हो गए।

कनसील ने फुसफुसाकर मुझसे पूछा, "महाशय, आज तो

आप खूब सोए होंगे।"

"खूब, और तुम मिस्टर नेड !"

"प्रोफेसर साहब, मैं भी खूब सोया। शायद मैं समुद्री हवा में सांस ले रहा हूं।"

"अब्राहम लिंकन से जब तुम काल्पनिक नारह्वाल को देख रहे थे, उस समय जो शब्द सुनाई पड़ता था, वह यही था," नेडलैंड बोला।

"हां नेडलैंड महाशय, इसका सांस लेने का यह तरीका है।"

"ऐरोनेक्स महाशय, मुझे खाने के समय के अतिरिक्त और कभी भी यह पता नहीं चलता कि क्या बजा है।"

"क्या खाने का समय ! इस समय हम लोग २४ घंटे सोकर जागे हैं। यह समय नाश्ते का होगा।"

नेडलैंड ने उत्तर दिया, "मैं तुम्हारा विरोध नहीं कर सकता। खाना हो या नाश्ता, रसोइए को आना चाहिए। वह दो में से कोई लाय।"

"दो वक्त खाना मिलना तो हमारा अधिकार है ?"

"इंतजार करो ! यदि उन्होंने हमें भूखों मारना होता तो वे कल खाना क्यों देते," मैंने उत्तर दिया।

"बशर्ते कि खाना हमें मोटा-ताजा करने के लिए न दिया गया हो," नेड बोला।

"मैं इसका विरोध करता हूं। कम-से-कम हम आदमखोरों के पल्ले नहीं पड़े," मैंने उत्तर दिया।

"तुम्हें यह ख्याल दिल से निकाल देना चाहिए और ऐसी भी कोई बात नहीं करनी चाहिए, जिससे इन लोगों का गुस्सा बढ़े।"

मैंने कहा, "नेडलैंड महाशय, आपको इस नाव के नियमों को समझ लेना चाहिए। हो सकता है कि रसोइए कि खाना तैयार होने की घंटी बजने से पहले ही हम लोगों को भूख लग गई हो ।"

कनसील ने उत्तर दिया, "तो हमें यह ठीक करना होगा ।"

"वे लोग ठीक तुम्हारे ही जैसे हैं कनसील । तुम तो कोई शिकवा नहीं करोगे, हमेशा शांत रहोगे, चाहे भूखों मर जाओ," नेड ने जवाब दिया ।

कनसील ने कहा, "शिकायत से लाभ क्या ?"

"शिकायत करने से केवल एक ही लाभ है । उससे कुछ होता तो है । इसके बाद सुनते तो हैं ये समुद्री डाकू ! अब मैं इनको समुद्री डाकू ही कहूंगा---नरभक्षी नहीं कह सकता, क्योंकि इससे प्रोफेसर महाशय को कष्ट होता है। यदि यह समुद्री डाकू यह सोचते हों कि वे हमारे रहन-सहन के विषय में पूछे बिना, हम लोगों को इस कैदखाने में रखना चाहते हों, तो यह बिलकुल गलत है । प्रोफेसर महाशय, आप ही बताइए हम लोग इस तरह इस लोहे के बक्से में कब तक बंद रहेंगे ।"

"मेरे मित्र नेडलैंड, सच्ची बात तो यह है कि इस संबंध में तुम हमसे ज्यादा जानते हो ।"

"लेकिन आपकी इस संबंध में क्या राय है ?"

"मैं तो यह समझता हूं कि हम लोग अचानक ही इन लोगों के अतिथि बन गए हैं । यदि इस नाव वाले अपने इस समुद्र में रहने के रहस्य को छिपाना चाहेंगे, तो हम लोगों को जिंदगी का खतरा है । यह भी हो सकता है कि यह लोग हमें अपने साथी आदमियों में पुनः छोड़ दें ।"

नेडलैंड ने उत्तर दिया, "जब तक कोई दूसरा जहाज 'अब्राहम लिंकन' से तेज तथा शक्तिशाली नहीं होगा, तब तक कैसे हम लोगों को भेजेंगे। फिर यह डाकू लोग कब चाहेंगे कि हम लोग उनके पंजे से छूट कर निकल जाएं।"

मैंने कहा, "नेडलैंड, अभी हमारे सामने कोई ऐसी परिस्थिति नहीं आई। उस पर अभी कोई बहस करना व्यर्थ है। मैं एक बार फिर कहता हूं कि हमें इंतजार करना चाहिए और परिस्थितियों के अनुसार काम करना चाहिए।"

नेड ने उत्तर दिया, "मेरी राय इसके विरुद्ध है। मुझे कुछ अवश्य करना चाहिए।"

"तो क्या ?"

"भागना !"

"क्या भागना। भागना तो साधारण जेल से भी कठिन होता है। इस समुद्री जेल से भागना तो असंभव ही है।"

कनसील ने कहा, "मित्र नेड, कहिए आपको प्रोफेसर महाशय की इस बात पर क्या कहना है। मैं यह विश्वास करता हूं कि एक अमेरिकन के उपाय कभी समाप्त नहीं होते।"

उसने कुछ देर बाद उत्तर दिया, "प्रोफेसर साहब, तब आप ही बताइए कि यदि हम लोग भाग नहीं सकते, तो हमको क्या करना चाहिए।"

"नेडलैंड, यह तो बहुत साधारण बात है। हमें यहीं ठहर कर प्रबंध करना चाहिए।"

कनसील ने कहा, "मेरा भी यही ख्याल है। इस नाव के ऊपर बैठने या लटकने से अंदर रहना अधिक सुरक्षित है।"

"नेड, क्या तुम सचमुच ही इस नाव को छोड़ना चाहते हो ?"

नेड ने उत्तर दिया, "बिलकुल।"

"यह असंभव है।"

"कोई ऐसा समय आ सकता है जिससे कि हम लोग लाभ उठा सकें। यदि इस मशीन में २० आदमी भी हैं, तो क्या ये दो फ्रांसीसी एक अमेरिकन को आंतकित नहीं कर सकते?"

नेडलैंड की बात मान लेना ही अच्छा था। तर्क करने से क्या होता है। यही समझ मैंने नेडलैंड को उत्तर दिया, "ऐसा मौका आने तो दो। हम उस समय उस पर विचार करेंगे। और जब तक वह समय नहीं आता, मैं विनम्र होकर कहता हूं कि धैर्य रक्खो। तुम क्रोधित होकर उस समय कुछ भी लाभ नहीं उठा सकोगे। इस बात का मुझसे वचन दो कि तुम क्रोध न करोगे।"

नेडलैंड ने अनमना-सा उत्तर दिया, "प्रोफेसर, मैं इसका वचन देता हूं। न तो मेरे मुंह से कोई कड़ा शब्द निकलेगा और न मेरी चाल से ही क्रोध का आभास होने पाएगा।"

मैंने फिर कहा, "मैं तुम्हारी यह बात याद रखूंगा। देखूं कैसे तुम उनका पालन करते हो।"

बातचीत थोड़े समय के लिए स्थगित कर दी गई, और हम लोगों ने अपने अपने विषय में सोचना निश्चय किया। नेड-लैंड के विश्वास को मैं नहीं कह सकता, परंतु मेरा तो निश्चय था कि छूटने का अवसर कभी न आएगा। इसके बारे में मुझे जरा भी भ्रम न था। इस प्रकार की अच्छी समुद्री नाव में अवश्य ही काफी संख्या में खलासी होंगे। जब हम लोग यहां से भाग जाने का विचार करेंगे, तो हमें इन सबका मुकाबिला

करना पड़ेगा। यदि इस नाव का कप्तान अपना यह रहस्य हम लोगों से छिपाना चाहेगा, तो वह हमें कहीं बाहर न निकलने देगा। हमें यह कुछ स्पष्ट नहीं कि हमें इन लोगों से छुटकारा पाने के लिए लड़ाई-झगड़ा करना होगा, या वे हम लोगों को दूर पृथ्वी पर अपने आप छोड़ देंगे। सबसे बड़ा भय तो मुझे यह था कि मौके-बे-मोके नेडलैंड जहाजियों से लड़ न बैठे।

दो घंटे और बीत गए। नेडलैंड का क्रोध और अधिक बढ़ता गया। कई बार जोर से चिल्लाया, परंतु यह सब निष्फल हुआ। लोहे की वह दीवारें बहरी थीं। नाव उस समय बिल्कुल स्थिर मालूम पड़ती थी। यह शांति हम लोगों को अत्यंत दुखद प्रतीत होती थी। हमारी समझ में यह न आया कि हम लोग इस कोठरी में कब तक बंद रहेंगे। हमारी कप्तान से मिलने पर जो आशाएं हुई थीं, वे एक एक करके समाप्त हो गईं। उस मनुष्य की सीधी चितवन, भोले चेहरे तथा ऊंचे चरित्र, सबकी सब बातें मेरे दिमाग से ओझल हो गई थीं। अब वह मनुष्य हमें क्रूर तथा कठोर प्रतीत होने लगा। क्या वह हम लोगों को समाप्त कर देने की कोई योजना बना रहा था! यह भयानक विचार मेरे मस्तिष्क में समा गया। ऐसी ही कल्पनाओं ने मेरे दिल में उथल-पुथल पैदा कर रक्खी थी।

कनसील शांत था—पर नेडलैंड मारे क्रोध के गरज रहा था। उसी समय कोठरी के बाहर कुछ आवाज सुनाई दी। पेच निकाल दिए गए। दरवाजा खुला तथा रसोइया प्रविष्ट हुआ। जैसे ही वह अंदर आया, नेडलैंड उस पर टूट पड़ा और उस को फर्श पर पटक दिया तथा उसके ऊपर चढ़ अपनी शक्ति-शाली भुजाओं से उसका गला दबाने लगा। रसोइया इस

कोठरी के फर्श पर गिर छटपटाने लगा। मैं तथा कनसील दोनों उसे नेडलैंड के पंजे से छुड़ाने का प्रयत्न करने लगे। ऐसे समय इस कोठरी में आ किसी ने शुद्ध फ्रांसीसी भाषा में कहा, "नेडलैंड, तुम इस मनुष्य को छोड़, दूर खड़े हो जाओ, तथा प्रोफेसर, तुम मेरी बात सुनो।"

१०

वह मनुष्य जिसने इस प्रकार कहा था, कोई और न था। वह इस नाव का कप्तान था, जिसे हमने कल भी देखा था। नेड-लैंड यह शब्द सुनते ही अचानक उठ कर खड़ा हो गया। रसोइया चिल्लाता हुआ अपने स्वामी के इशारे पर चला गया। कप्तान का व्यक्तित्व इतना प्रभावशाली था कि उसके इशारे को कोई टाल न सकता था। मैं और कनसील थोड़ी देर चुपचाप नेड के इस कृत्य की प्रतिक्रिया का इंतजार करने लगे।

कप्तान अपने हाथ अपनी छाती पर बांध हम लोगों को ध्यान से देखने लगा। कुछ ही मिनट शांत रह, कप्तान ने शांत और धीमी आवाज में कहा, "महाशय, मैं जर्मन, फ्रैंच, अंग्रेजी तथा लैटिन, सभी भाषाएं बोल लेता हूं। मैंने तुम लोगों की बातों का कल ही उत्तर दे दिया होता, परंतु मैं तुमको परखना चाहता था, और तुम्हारी बातों पर विचार करना चाहता था। तुम तीन आदमियों की बताई हुई कहानी एक ही है। इससे तुम लोगों की असलियत का पता मुझे चल गया।

तुम में से एक का नाम ऐरोनेक्स है। वह फ्रांस की राजधानी पेरिस में प्राकृतिक इतिहास का प्रोफेसर है। दूसरे का नाम कनसील है; वह इन प्रोफेसर का नौकर है। तीसरा नेडलैंड है। वह कनाडा का निवासी है तथा भाला चलाने का उस्ताद और ह्वेल मछली का शिकारी है। तुम लोग अमेरिका के 'अब्राहम लिंकन' जहाज पर सवार थे।"

मैंने सिर हिलाकर कप्तान की बात का समर्थन किया। उत्तर देना आवश्यक नहीं था। यह आदमी बिना किसी बनावट के हम लोगों से बड़े स्वाभाविक रूप से बातें कर रहा था। पर मुझे यह मालूम पड़ रहा था कि वह मेरे देश का आदमी नहीं है।

उसने फिर कहा, "इस दूसरी मुलाकात के पहले मैंने बहुत काफी सोच विचार किया है। मैंने तुम्हारा सारा हाल जान लिया है।

"तुम्हारे सम्बन्ध में हमें क्या करना चाहिये! बात यह है कि घटना क्रम से तुम ऐसे मनुष्य के पास आ पहुंचे हो, जो मानवीय जगत से अपना सारा नाता तोड़ चुका है। यथार्थ में मेरी स्थिति को दुखद बनाने के लिए ही तुम्हारा यहां आना हुआ है।"

मैंने कहा, "किंतु हमारा आना जान-बूझ कर नहीं।"

उसने कुछ उच्च स्वर में दोहराया, "जान-बूझ कर नहीं?

"क्या यह प्रयोजन रहित था कि तुम सब लोग 'अब्राहम लिंकन' पर सवार हो, प्रत्येक समुद्र में हमारा पीछा करते रहे? क्या यह भी प्रयोजन रहित है कि तुम उस पर सवार होकर यहां आए थे? क्या तुम्हारी तोपों ने गोले मेरी नाव पर बिना प्रयोजन ही बरसाए थे? क्या नेड महाशय ने भाला प्रयोजन रहित ही चलाया था?"

मैंने उत्तर दिया, "शायद आपको यह पता नहीं कि आपकी इस नाव से यूरोप और अमेरिका में किस प्रकार हलचल मची हुई है। जिस समय 'अब्राहम लिंकन' आपकी इस नाव का पीछा कर रहा था, उस समय उस जहाज के जहाजी इस विश्वास में थे कि वे किसी भयंकर समुद्री जीव का पीछा कर रहे हैं।"

कप्तान के चेहरे पर हल्की मुस्कान दौड़ गई।

उसने कहा, "यदि तुम लोग मेरी इस नाव को नाव समझते, तो क्या इसका पीछा छोड़ देते ? फलतः तुम्हारे साथ शत्रुओं जैसा व्यवहार करने का मुझे अधिकार है।"

मैंने जान-बूझ कर इसका कोई उत्तर न दिया, क्योंकि मैं समझता था कि इस मनुष्य के पास शक्ति है। इससे बहस काम न देगी। कप्तान ने कहा, "मैंने बहुत देर तक इस पर विचार किया है। मुझे तुम लोगों को आश्रय देने की कोई आवश्यकता न थी। यदि मैं तुम लोगों को उसी छत पर, जहां तुम लोगों ने उस घटना के बाद शरण ली थी, छोड़ देता, तो मुझको कोई बुरा न कह सकता, और तुम भी अब तक जिंदा न रहते।"

मैंने कहा, "किंतु यह बर्ताव सभ्य मनुष्यों का नहीं, बर्बरों का समझा जाता।"

कप्तान ने तुरंत उत्तर दिया, "मैं उस प्रकार का सभ्य मनुष्य नहीं हूं। अपने हिसाब से ठीक समझ, मैंने समाज को छोड़ दिया है। इसी कारण मैं अब समाज के नियमों का पालन करने के लिए बाध्य नहीं। मैं यह चाहता हूं कि समाज के नियमों के बारे में मुझसे कुछ न कहें।"

थोड़ी देर निस्तब्ध रहकर कप्तान ने कहा, "फिर भी दया और धर्म की शिक्षा मैंने पाई है। मैं इनका महत्व जानता हूं। इसी

प्रेरणा से मैं तुम्हें इस नाव में रहने की अनुमति देता हूं। यहां तुम स्वतंत्र रह सकते हो। परंतु इसके बदले में मैं तुमसे केवल एक शर्त करना चाहता हूं, जिसके पालन के लिए तुम्हारा वचन मैं काफी समझता हूं।"

मैंने उत्तर दिया, "महाशय, बताइए। मैं समझता हूं कि हर एक सच्चे आदमी को आपकी शर्त स्वीकार कर लेनी चाहिए।"

कप्तान, "हां, ऐसे अवसर आ सकते हैं, जब तुम लोगों को कुछ घंटों या दिनों के लिए इस कोठरी में बंद रहने की आवश्यकता पड़े। इन अवसरों पर तुम्हें हमारा आदेश बिना बहस मानना पड़ेगा। आदेश का पालन करोगे तो मैं तुम्हारी सारी जिम्मेदारी लेता हूं। मैं तुमको पूर्णरूप से छोड़ दूंगा। नहीं तो मुझे वही करना पड़ेगा जो नहीं करना चाहता। क्या तुमको यह शर्त मंजूर है ?"

मैंने उत्तर दिया, "हमें मंजूर है। आपकी अनुमति से मैं आपसे सिर्फ एक प्रश्न पूछना चाहता हूं। आप हम को किस प्रकार की स्वतंत्रता देंगे ?"

"मैं तुम लोगों को घूमने-फिरने की वही आजादी दूंगा, जो मैं तथा मेरे साथी स्वयं भोग करते हैं।"

हम लोगों की आपसी गलतफहमी अभी दूर न हो पाई थी।

मैंने कहा, "यह तो कैदी को कैदखाने में रहने की स्वतंत्रता हुई। इससे हम लोग संतुष्ट तो नहीं हो सकते।"

"मैं आपकी आपत्ति ठीक तरह समझ नहीं पाया।"

मैंने कहा, "क्या आप यह चाहते हैं कि हम लोग आजन्म इस नाव में कैद रहें और अपने मित्रों, संबंधियों तथा देश के

दर्शन की आशा अपने मन से निकाल दें ?"

"जी हां, परंतु मेरी समझ में इस दुनिया के झंझट, जिसको आप लोग आजादी कहते हैं, छोड़ना कोई कठिन बात नहीं, जैसा आप समझते हैं ।"

नेड बोला, "मैं साफ कहे देता हूं कि मैं आपको यह वचन नहीं दे सकता कि मैं इस कैद से भागने की कोशिश न करूंगा ।"

कप्तान ने उत्तर दिया, "लैंड महाशय, मैं आपसे वचन नहीं मांगता ।"

मैंने उत्तर दिया, "यदि आप हम लोगों के यहां अचानक फंसने का लाभ उठाना चाहते हैं, तो वह बहुत क्रूर काम होगा ।"

"नहीं महाशय, यही उचित है । तुम हमारे युद्ध के कैदी हो । तुमने मेरे ऊपर आक्रमण किया था, जो रहस्य मैं किसी दूसरे को नहीं बतलाना चाहता था, उसे तुम लोगों ने जानने की कोशिश की । इस पर भी तुम यह आशा करते हो कि मैं तुमको उस समाज के पास वापस भेज आऊंगा, जिसे मैं अपना शत्रु समझता हूं । तुमको यहां रोक कर मैं तुम्हारी नहीं, वरन् अपनी ही रक्षा करूंगा ।"

इन बातों से स्पष्ट हो गया कि कप्तान अपनी बात पर तुला था । वह किसी प्रकार की दलील सुनने को तैयार न था ।

मैंने उत्तर दिया, "तो क्या हमें मौत और जिंदगी में से एक को चुनना होगा ?"

"हां, जैसा आप चाहें ।"

मैंने कहा, "मेरे दोस्त, तो यह बात स्पष्ट है कि हम इस नाव के मालिक से किसी प्रतिज्ञा से बंधे नहीं हैं ।"

कप्तान ने उत्तर दिया, "ऐसी कोई बात नहीं है ।"

कप्तान ने धैर्य के साथ फिर कहा, "मैं जो कुछ तुमसे कहना चाहता था, सब कह चुका। प्रोफेसर ऐरोनेक्स, यहां रहने से तुम्हारे साथी प्रसन्न हों या न हों, किंतु तुम अवश्य प्रसन्न रहोगे। तुम्हें मैं जानता हूं, तुम विद्वान पुरुष हो। तुमने सागर के रहस्य पर जो पुस्तक लिखी है, उसे मैं प्रायः पढ़ा करता हूं। इस पुस्तक में तुमने उतनी ही बातें लिखी हैं, जितनी विज्ञान द्वारा जानी जा सकी हैं। तुम मेरी इस नाव में रहकर ऐसी चीजें देखने पाओगे, जिन्हें मनुष्य ने अभी तक नहीं देखा। मैं इस नाव के सारे रहस्य तुम्हें बताने को तैयार हूं।"

इन शब्दों ने मेरे ऊपर काफी प्रभाव डाला। मैंने सोचा कि कप्तान ने मेरी कमजोरी पहचान ली है। मैं अब इस समय सोचता हूं कि क्या अपनी स्वतंत्रता खोकर इन सारी वस्तुओं का अध्ययन करना चाहिए। ऐसा ध्यान में रख कर मैंने कप्तान से पूछा, "कप्तान महाशय, आपका क्या नाम है?"

कप्तान ने उत्तर दिया, "कप्तान नेमो, भविष्य में मैं तुमको तथा तुम्हारे साथियों को इस नाव का यात्री समझूंगा।"

कप्तान ने आवाज दी, रसोइया आ गया। कप्तान ने उसे अपनी ही भाषा में कुछ आदेश दिया। नेडलैंड और कनसील से कहा कि तुम इस मनुष्य के साथ जाओ। तुम्हारे कमरे में तुम्हारा नाश्ता तैयार होगा। और तुम प्रोफेसर, मेरे साथ आओ।"

मेरे साथी रसोइए के साथ चले गए।

मैं कप्तान के पीछे-पीछे गया। इस कोठरी के बाहर एक संकीर्ण पथ था। बड़े जहाजों में नीचे की मंजिल में इस प्रकार के मार्ग होते हैं। हम केवल १२ गज ही चले थे कि मेरे सामने एक दूसरा दरवाजा खुला। उसके द्वारा हम लोग एक अत्यंत

सुसज्जित भोजनागार में प्रविष्ट हुए। कमरे के एक ओर अच्छी कीमती लकड़ी की आलमारियां सुसज्जित थीं। यह शीशे के खिलौनों और चीनी के बर्तनों से परिपूर्ण थीं। इस कमरे के बीच में एक मेज पड़ी थी। उस पर विभिन्न प्रकार की तश्तरियां चुनी हुई थीं। इन तश्तरियों में अच्छे-अच्छे बेलबूटे बने हुए थे। इस मेज के एक ओर पड़ी कुरसी पर नेमो बैठा तथा दूसरी पर मुझे बैठने का इशारा किया।

भोजन आरंभ हुआ। अनेक तश्तरियां भिन्न-भिन्न समुद्री सामान से सुसज्जित थीं। पहले की तरह अब भी मेरे भोजन में कितनी ही ऐसी चीजें थीं, जो स्वादिष्ट तो अवश्य थीं, पर मैं उन्हें पहचान न पाया।

यह देख कप्तान नेमो ने कहा, "इन तश्तरियों में से बहुतों को आप अभी नहीं जानते। हां, आप उन्हें बिना भय खाएं। यह पौष्टिक चीजें हैं। मैंने काफी समय हुआ दुनिया का खाना छोड़ दिया है। मेरे इस नाव के जिन आदमियों को आप स्वस्थ देखते हैं, वह सब यही खाना खाते हैं।"

मैंने पूछा, "तो क्या सारी चीजें समुद्र से ही मिलती हैं ?"

"हां, मेरी सारी आवश्यकताएं समुद्र ही पूरी करता है। मैं समुद्र में जाल फेंक देता हूं और खाने के सारे पदार्थ यहीं एकत्रित हो जाते हैं। कभी कभी मैं समुद्री जंगलों में शिकार खेलने भी जाता हूं। समुद्र के अंदर ही मेरा साम्राज्य है। उससे मेरी सारी चीजें इकट्ठी हो जाती हैं।"

मैंने कप्तान की ओर कुछ आश्चर्य से देख उत्तर दिया, "मैं समझ गया। आपके जाल से ही यह ऐसी मछलियां आपको खाने के लिए मिल जाती हैं। मछलियों की तो कमी नहीं

परंतु मेरी समझ में यह न आया कि यह गोश्त कहां से आया ?"

"प्रोफेसर, यह कछुए का गोश्त है। मेरा रसोइया बहुत होशियार है। वह अपने फन का विशेषज्ञ है। इन सारी तश्तरियों का स्वाद लो। इस खाने में समुद्र की मछलियों से तैयार किया मक्खन तथा उत्तरी सागर के एक समुद्री पौधे से तैयार की हुई शक्कर है। यह मुरब्बा भी समुद्री फलों से बना है।"

खाने के समय कप्तान ने मुझे कई कहानियां भी सुनाईं।

कप्तान ने कहा, "मुझे समुद्र से खाना ही नहीं, कपड़े भी मिलते हैं। हम और आप जो कपड़े पहने हैं, वे समुद्र में ही प्राप्त चीजों के बने हैं। समुद्र में कई प्रकार के पौधे रेशम के तार जैसे रेशों से अपने अंग समुद्री चट्टानों से चिपकाते हैं। इन्हीं रेशों का संग्रह कर और बुन कर हमारी यह पोशाकें बनाई जाती हैं। सागर में कई प्रकार के रंग भी पाए जाते हैं। उन्हीं से यह पोशाकें रंगी गई हैं। आपके कमरे में जो इत्र रक्खे हैं, वह सब समुद्री पौधों का अर्क निकालकर बनाए गए हैं। गद्दा भी समुद्र की घास का बना हुआ है। जिस कलम से आप लिखेंगे, वह ह्वेल मछली के बाजू से बना है। रोशनाई कालवरी नाम की मछली से संचित किए हुए नीले रंग से बनाई गई है। इस प्रकार इस नाव की हर एक वस्तु समुद्र से ही प्राप्त की जाती है, तथा एक दिन यह सारी चीजें समुद्र को ही फिर समर्पित कर दी जाएंगी।"

"कप्तान, आपको समुद्र से बड़ा प्रेम है ?"

"हां महाशय, मैं इससे बड़ा प्रेम करता हूं। समुद्र ही मेरा सर्वस्व है। मेरा साम्राज्य सागर बड़ा ही विस्तीर्ण है। पृथ्वी के

१० भाग में से ७ भाग जल तथा ३ भाग स्थल है। यहां की वायु स्वच्छ तथा स्वास्थ्यप्रद है। सागर मानों एक विशाल स्थल है। इसमें मनुष्य अकेले रहने का साहस नहीं कर सकता। यह साम्राज्य विभिन्न विचित्र दृश्यों का खजाना है। यह निरंतर अस्थिर और प्रेम से परिपूर्ण रहता है। वास्तव में प्रोफेसर, प्रकृति ने समुद्र में तीन प्रकार के खजाने संग्रह कर रक्खे हैं। इसमें खनिज है, वनस्पति है तथा जीव हैं।

"यहां के जानवर भी तीन भागों में बांटे जा सकते हैं। दूध पीने वाले, रेंगने वाले तथा छोटी बड़ी मछलियां। पृथ्वी भर की मछलियां तेरह हजार किस्म की हैं। इनका दसवां भाग ही स्वच्छ पानी में रहता है। समुद्र प्रकृति का एक बड़ा खजाना है। समुद्र से ही पृथ्वी बनी है, और समुद्र में ही शायद विलीन भी हो जाएगी। समुद्र में अनंत शांति है। इसी की छाती पर मनुष्य लड़ते हैं, मरते हैं, कटते हैं और आतंक पैदा करते हैं; परंतु समुद्र तल से ३० फुट ही नीचे मनुष्य की सारी शक्ति समाप्त हो जाती है। सारा असर जाता रहता है तथा सारी ताकत लुप्त हो जाती है। महाशय, हमें समुद्र के ही वक्षस्थल में रहना चाहिए। यहीं वास्तविक स्वतंत्रता है। यहां मैं स्वतंत्र रहता हूं। मेरा कोई मालिक नहीं।"

यह कह, नेमो एकाएक चुप हो गया। मानो उसने कोई अपनी गुप्त बात कह दी हो, और उसी के भय से चुप हो गया हो। थोड़ी देर तक कप्तान अत्यंत परेशान रहा, परंतु फिर एकाएक उसके चेहरे पर गंभीरता छा गई। उसने कहा, "प्रोफेसर, यदि आप इस नाव की सैर करना चाहते हों, तो मैं इस समय खाली हूं।"

११

कप्तान नेमो उठ कर चल दिया। मैं भी उसके पीछे-पीछे चल दिया। कमरे के पीछे को एक दरवाजा खुला। उसके द्वारा हम दूसरे कमरे में प्रविष्ट हुए। यह लंबाई चौड़ाई में पहले वाले के ही बराबर था। यह था कप्तान का पुस्तकालय। इसमें काली लकड़ी की बनी हुई आलमारियां लगीं थीं। और उनके खाने समान रंग-रूप की जिल्दों में बंधी हुई हजारों पुस्तकों से सुसज्जित थे। हम लोग इस कमरे में चारों तरफ घूमे। इन आलमारियों के निकट भूरे चमड़े से मढ़ी हुई आरामदेह कौचें लगी हुई थीं। पढ़ने के लिए हल्की मेजें पड़ी थीं, जो इच्छानुसार इधर-उधर हटाई जा सकती थीं। सबके बीच एक मेज मासिक, अर्द्ध-मासिक तथा साप्ताहिक पत्रिकाओं से लदी हुई थी। इनमें कुछ पुराने समाचार पत्र भी थे। कमरे की छत में चार शीशे के गोले थे। इनका आधा भाग छत के अंदर घुसा तथा आधा बाहर था। इन गोलों की सफेद रोशनी सारे कमरे को प्रकाशित कर रही थी। कमरा, आलमारियां तथा अन्य लकड़ी के सामान की पालिश तथा पुस्तकों के रंग आदि से मैं बहुत प्रभावित हुआ। मुझे ऐसा लग रहा था, मानो आंखें धोखा दे रही हों।

मैंने कप्तान से कहा, "कप्तान नेमो, आपका पुस्तकालय किसी भी महल से अधिक सुंदर है। जब मैं यह सोचता हूं कि यह सब समुद्र की गहराई में भी आपके साथ रहता है, तो मुझे और भी आश्चर्य होता है।"

कप्तान ने उत्तर दिया, "यहां से अधिक एकांत तथा

शांति कहां मिल सकती है। क्या आपके संग्रहालय में पढ़ने के लिए इससे अधिक शांति मिल सकेगी ?"

"ऐसा नहीं है। मुझको यह स्वीकार करना पड़ेगा कि मेरा संग्रहालय आपके भंडार से बहुत छोटा भी है। आपके पुस्तकालय में ६, ७ हजार तक पुस्तकें होंगी ?"

"प्रोफेसर ऐरोनेक्स, १२ हजार हैं। विश्व से मेरे संबंध का बंधन केवल यही पुस्तकें हैं। जिस दिन से मेरी नाव ने समुद्र में प्रवेश किया, उसी दिन से मेरे और विश्व के सब संबंध समाप्त हो गए। प्रोफेसर, यह पुस्तकें आप के लिए प्रस्तुत हैं। यदि आप पढ़ना चाहें, तो इनको पढ़ सकते हैं।"

मैंने कप्तान नेमो की इस उदारता पर उन्हें धन्यवाद दिया तथा वाचनालय का निरीक्षण किया। यहां विज्ञान, धर्म-शास्त्र तथा प्रायः प्रत्येक भाषा की पुस्तकें थीं, परंतु मुझे राज-नीति तथा अर्थशास्त्र की एक भी पुस्तक न मिली। शायद इन विषयों के संबंध में कप्तान का प्रतिबंध ही हो। पुस्तकालय की एक और अदभुत बात यह थी, कि वह पुस्तकें बिना किसी क्रम तथा विषय के विभाजित थीं। इस अनियमितता से यह ज्ञात होता था, कि इस नाव का कप्तान अपनी मौज के अनुसार सभी पुस्तकें पढ़ने और उन्हें समझने का अभ्यासी था।

इन पुस्तकों में प्राचीन तथा वर्तमान—१९वीं शताब्दी के महान लेखकों की रचनाएं थीं। इतिहास, कविता, तथा वैज्ञा-निक विषयों पर जितनी अच्छी पुस्तकें उस समय लिखी गई थीं, सब मौजूद थीं। विज्ञान की पुस्तकें सबसे अधिक थीं। प्रकाशन तिथि के अनुसार एक पुस्तक १८६५ ई० के लगभग प्रकाशित हुई थी। इससे यह सिद्ध हुआ कि यह नाव १८६५

ई० से पूर्व समुद्र की तलहटी में न उतरी थी। इस प्रकार कप्तान नेमो को अपनी समुद्र यात्रा को केवल ३ वर्ष हुए थे। मुझे आशा थी कि यदि इन पुस्तकों का निरीक्षण ठीक से किया जाय, तो इस नाव के सागर-तल में प्रविष्ट होने के समय का अनुमान किया जा सकता था, परंतु इसके लिए काफी समय चाहिए।

मैंने कप्तान से कहा, "आपने अपना वाचनालय मुझे उपयोग करने दिया, इसके लिए धन्यवाद। मैंने देखा कि इसमें विज्ञान का खजाना है। मैं इससे लाभ उठाऊंगा।"

"यह पुस्तकालय ही नहीं, यह धूम्रपान का कमरा भी है।"

"क्या आप सिगरेट भी पीते हैं?"

"निश्चय ही।"

"महाशय, इससे मुझे यह विश्वास होता है, कि आप हवाना द्वीप से अपना संबंध अवश्य रखते हैं।"

कप्तान ने उत्तर दिया, "नहीं महाशय, मेरा हवाना द्वीप से कोई संबंध नहीं। आप यह सिगार तो लीजिए, यद्यपि यह हवाना से नहीं आता, तथापि यदि आप शौक़ीन हैं, तो इससे प्रसन्न अवश्य होंगे।"

मैंने सिगार हाथ में लेकर उसे सुलगाया। यह सुनहरी पत्तियों का बना मालूम पड़ता था। मैंने दो दिन से सिगरेट न पी थी। पहला ही कश मुझे बहुत अच्छा लगा।

मैंने कहा, "यह तो बहुत अच्छा है। मगर यह तंबाकू नहीं मालूम पड़ती।"

कप्तान ने कहा, "नहीं, यह तंबाकू न तो हवाना से आती है और न पूर्वी देशों से। यह समुद्र से प्राप्त होनेवाली एक लता है। इस लता में निकोटिन काफी मात्रा में पाई

जाती है।"

जिस दरवाजे से हम लोग इस वाचनालय में प्रविष्ट हुए थे, उसके ठीक सामने का दरवाजा कप्तान ने खोला। मैं अन्दर घुसा। यह कमरा वाचनालय से बड़ा तथा अधिक बत्तियों द्वारा प्रकाशित था। यह कमरा ३० फुट लंबा, १८ फुट चौड़ा तथा १५ फुट ऊंचा था। इसकी छत और फर्श बिजली के बहुत से गोलों से सुसज्जित थे। इन बिजलियों के उज्ज्वल प्रकाश में इस कमरे में एकत्र कीमती पत्थरों का रमणीय संग्रहालय था। इसमें अनेक कला कृतियां और प्रकृति के बहुत से नमूने एकत्र थे। छत और फर्श लकड़ी के थे। दीवालों में किसी चित्रकार के लगभग ३० चित्र, एक से फ्रेम में लगे हुए टंगे थे। संग्रहालय विविध बहुमूल्य पदार्थों से सुसज्जित था। मैंने यूरोप की प्रदर्शनियों में ऐसी वस्तुएं कभी नहीं देखी थीं।

कप्तान ने कहा, "प्रोफेसर, इस कमरे की व्यस्तता तथा मेरे द्वारा आपके स्वागत के प्रबंध की कमी के लिए क्षमा कीजिए।"

मैंने उत्तर दिया, "महाशय, आपसे अधिक परिचित नहीं हूं, फिर भी मैं समझता हूं कि आप कलाकार अवश्य हैं।"

"महाशय, सब शौक की बात है। युवावस्था में यह कला-कृतियां इकट्ठा करने का बड़ा शौक था। तभी मुझे यह कुछ बहुमूल्य वस्तुएं भी मिल गई थीं।"

मैंने कहा, "यह संगीत ग्रंथ ?" मैंने वेबर, रोसिनी, वेगनर, आबर, मोजर्ई, बीथेवेन, हेडन, मेयर बियर तथा हरोल्ड आदि की कृतियों की ओर इशारा करके कहा।

कप्तान नेमो ने उत्तर दिया, "ये संगीतज्ञ आरफियस के समय के हैं। युग का अंतर मृतात्मा की स्मृतियों में विलीन हो

जाता है। मुझे भी उन्हीं की भांति मृत समझिए—वैसे ही जैसे तुम्हारे वे दोस्त—जो ६ फुट गहरी कब्र में गड़े हैं।"

कप्तान नेमो ने बात करना बंद कर दिया और गंभीर विचार में लीन हो गया। मैंने उसकी ओर बड़े ध्यान से देखा और उसके चेहरे की विचित्र भाव-भंगिमा का कारण समझने की कोशिश करने लगा।

एक बहुमूल्य मेज के एक कोने पर झुके कप्तान ने मेरी ओर देखा तक नहीं, मानो मेरी उपस्थिति भूल ही गया हो। इस कमरे की विविध कौतुकप्रद समुद्री चीजें देख मेरी उत्सुकता और भी बढ़ रही थी। इस कमरे के मध्य में कोई सात गज का एक सीप था, जिसमें बिजली से प्रकाशित एक जलधारा गिर रही थी। इसके चारों ओर शीशे के बहुमूल्य पात्र रक्खे थे। इनके अंदर समुद्र की बहुमूल्य वस्तुएं सजी हुई थीं। यह वस्तुएं किसी प्राकृतिक वैज्ञानिक ने न देखी होंगी।

इस कमरे में अलग एक पार्श्व में सच्चे मोतियों का संग्रह था। कुछ मोती तो कबूतर के अंडे से भी बड़े थे। उस मोती से भी अधिक मूल्यवान थे, जिसे एक यात्री टेवरनियर ने फारस के बादशाह के हाथ तीस लाख फ्रांक का बेचा था।

उन एकत्रित वस्तुओं के मूल्य का अनुमान करना असंभव है। इन विभिन्न वस्तुओं को प्राप्त करने में कप्तान नेमो ने लाखों रुपया खर्च किया होगा। मेरी समझ में यह न आता था, कि कप्तान को ऐसे संग्रहालय की पूर्ति के लिए रुपया कहां से मिलता होगा। यही सोच रहा था कि कप्तान कहने लगे, "प्रोफेसर, आप मेरा संग्रह देख रहे हैं न! एक संग्रहकर्ता को अपना संग्रह प्रिय होना स्वाभाविक है। परंतु मेरे लिए इनका और भी

महत्व है, क्योंकि मैंने यह सब स्वयं ही इकट्ठा किया है। कोई भी ऐसा समुद्र बाकी न रहा होगा, जिसे मैंने छान न डाला हो।"

"कप्तान, मैं ऐसी वस्तुओं के बीच रहने के आनंद को समझता हूं।"

"आप भी उन्हीं में से एक हैं, जो अपने लिए ऐसी वस्तुएं इकट्ठा करते हैं। यूरोप में ऐसा कोई संग्रहालय नहीं है, जहां ऐसी समुद्री वस्तुएं एकत्रित हों। परंतु मैं सारी वस्तुएं एक साथ ही नहीं दिखाना चाहता। आपकी उत्सुकता समाप्त हो जाएगी।"

मैंने कहा, "मैं आपकी गुप्त बातें जानना नहीं चाहता, परंतु इतना अवश्य जानना चाहता हूं कि आपकी नाव किस प्रकार तथा किस शक्ति से चलती है। इस कमरे की दीवारों पर अनेक यंत्र टंगे देखता हूं, पर मैं इनका प्रयोग नहीं जानता।"

"जब मैंने पहले आपसे यह कहा था कि आप इस नाव में स्वतंत्रतापूर्वक जो कुछ चाहें देख सकते हैं, तब मैं झूठा वादा नहीं कर रहा था। प्रोफेसर, अभी क्या! जब आप मेरे कमरे के यंत्रों को देखेंगे तथा मैं उनका प्रयोग बतलाऊंगा, तो आप दंग रह जाएंगे। आओ पहले, अपना कमरा देखो।"

कप्तान ड्राइंगरूम के एक तरफ का दरवाजा खोल अंदर घुस गया। मैं भी उसके पीछे-पीछे चला गया। मैं जिस कमरे में पहुंचा, वह कुछ बड़ा था। कमरे में एक पलंग, हाथ मुंह धोने वाली मेज तथा अन्य लकड़ी का सामान मौजूद था। सब सामान देख मैंने कप्तान को धन्यवाद दिया।

कप्तान ने एक दरवाजा खोलते हुए कहा, "आपके कमरे के पास ही मेरा कमरा है। मेरे कमरे का रास्ता उसी कमरे में से है, जिसमें अभी हम और आप थे।"

मैंने कप्तान के कमरे में प्रवेश किया। इसमें एक लोहे वाला पलंग, एक दफ्तर वाली डेस्क तथा कुछ अन्य सामान थे। इसमें तीव्र बिजली का प्रकाश था। इस कमरे में आवश्यकता की वस्तुओं के अतिरिक्त आराम का कोई भी सामान न था। कप्तान ने एक कुर्सी की ओर इशारा करके कहा, "बैठिए।"

मैं कप्तान की आज्ञा का पालन कर बैठ गया। उन्होंने मुझसे बातें करना शुरू किया।

१२

कमरे की दीवार पर टंगे हुए यंत्रों को दिखलाते हुए कप्तान ने कहा, 'महाशय, यह सब यंत्र इस नाव को चलाने के लिए हैं। बैठने वाले कमरे की भांति मैं यहां भी यह यंत्र अपने सामने रखता हूं। इन यंत्रों द्वारा मुझे समुद्र में नाव की वास्तविक स्थिति तथा दिशा मालूम होती रहती है। इन में से कुछ तो आप जानते ही होंगे। कितने ही नए आविष्कृत हैं। यह थर्मामीटर है। इससे हम नाव के अंदर की गरमी नापते हैं। यह बैरोमीटर है, इससे हम हवा का दबाव तथा आने वाली ऋतु के बारे में जानते हैं। इधर दीवार पर हाइग्रोमीटर है। इससे हवा की आर्द्रता नापी जाती है। इसके पास का यंत्र 'तूफानी शीशा' कहलाता है। तूफान आने से पहले इससे सूचना मिल जाती है। कंपास से दिशा का ज्ञात होता है। 'सैक्सहैंड' अक्षांश जानने के काम आता है। क्रोनोमीटर

देशांतर बताता है। वह आखिरी वाले, दिन तथा रात के शीशे है। हम लहरों के तल पर जाते हैं, तो इन शीशों से क्षितिज का ज्ञान करते हैं।"

मैंने उत्तर दिया, "हां महाशय, मैं समझ गया। यह रोज प्रयोग होने वाले समुद्री यंत्र हैं। यह चलती हुई सुई से युक्त क्या मानोमीटर है ?"

"हां, ऊपर पानी का दबाव तथा नीचे पानी की गहराई बतलाता है।"

"इन लकीरों से क्या होता है ?"

"ये पानी की गहराई के भिन्न भिन्न स्तरों का तापक्रम बतलाता है।"

"और यह दूसरे यंत्र ? इनके संबंध में मैं कोई अनुमान नहीं कर सकता।"

"इस संबंध में मैं आपको स्पष्ट कर देना चाहता हूं कि इस नाव में एक ऐसी शक्तिशाली चीज है, जिससे हम सभी भरोसे के साथ काम लेते हैं। इससे हम रोशनी तथा गर्मी पैदा करते हैं। यह चीज, जो मेरे सारे यंत्रों की जान है, बिजली है।"

"परंतु कप्तान इस नाव की चाल बड़ी तेज है। ऐसी चाल साधारण बिजली से नहीं हो सकती।"

कप्तान नेमो ने उत्तर दिया, "प्रोफेसर, मेरी बिजली दूसरों की बिजली से भिन्न है। इसके अतिरिक्त मैं अधिक बतलाना नहीं चाहता।"

"मैं जोर भी नहीं दूंगा। मैं तो सिर्फ यही जानना चाहूंगा कि इससे कौन कौन से अदभुत काम आप लेते हैं। मैं तो आपसे केवल एक प्रश्न पूछूंगा। अगर वह गैर-वाजिब हो, तो

आप उसका भी उत्तर न दीजिएगा। इस शक्ति को उत्पन्न करने के लिए जो चीज आप प्रयोग में लाते हैं, वह तो बहुत खर्च हो जाने वाली होती है। उदाहरण के लिए शायद आप जस्ता इस्तेमाल करते हों। आपको इतना जस्ता कहां से मिलता है। आपने स्थल से तो सारा संबंध समाप्त ही कर लिया है?"

कप्तान नेमो रुक कर बोला, "मैं आपके प्रश्न का उत्तर दूंगा। इस संबंध में एक बात बता देना चाहता हूं कि समुद्र के अंदर जस्ता, लोहा, चांदी तथा सोने की खानें मौजूद हैं। परंतु मैं इन खानों से भी कुछ सहायता लेना उचित नहीं समझता। मैं बिजली पैदा करने के साधन समुद्र से ही पैदा करता हूं।"

"समुद्र से ही ?"

"हां, प्रोफेसर महाशय ! मुझे यह साधन पाने में कोई भी परेशानी न हुई। यह भी संभव था कि विभिन्न तापक्रम विरोधी दिशाओं में छोड़ बिजली पैदा कर लेता, परंतु मैंने अधिक प्रयोगात्मक ढंग अपनाया है।"

"वह क्या है ?"

"समुद्री जल में क्या क्या होता है, यह तो आप जानते ही होंगे। १००० ग्राम समुद्री जल में साढ़े छियान्नवे सेंटीग्राम शुद्ध जल होता है, तथा लगभग २$\frac{३}{४}$ सेंटीग्राम क्लोरारड होता है। बाकी मैगनेशियम क्लोराइड, पोटेशियम क्लोराइड, मैगनेशियम ब्रोमाइड, मैगनेशिया सल्फेट तथा कैलशियम कारबोनेट होते हैं। आप देखें, सोडियम क्लोराइड इसमें अति उपयोगी है। मैं समुद्री जल से यही सोडियम निकाल लेता हूं। उसी में कुछ अन्य चीजें मिला कर मैं बिजली पैदा करने का

पदार्थ तैयार करता हूं। सोडियम क्लोराइड में पारा मिलाने से यह शक्ति पैदा करने वाले जस्ते का काम देता है। पारा कभी समाप्त नहीं होता, केवल सोडियम ही समाप्त होता है, जो हमें समुद्र से फिर मिल जाता है । इस प्रकार मैं जस्ते का काम इससे चलाता हूं। इसके अतिरिक्त सोडियम की शक्ति जस्ते की शक्ति से भी दूनी होती है।"

"कप्तान, आपकी परिस्थिति में सोडियम का लाभ मैं समझ गया हूं। बहुत अच्छा। यह तो समुद्र में होता है, लेकिन इसे निकालना तो पड़ता होगा। यह कैसे करते हो।"

"प्रोफेसर, इसे मैं कोयले की गर्मी से निकालता हूं।"

"कोयले से!"

"हां, आप इसे समुद्री कोयला कह सकते हैं।"

"ऐरोनेक्स महाशय, आप मुझे प्रयोग करते देखेंगे? आप जरा धैर्य धरिए। सब मालूम हो जाएगा। मैं अपने इस्तेमाल की सारी चीजें समुद्र से पा जाता हूं। समुद्र से ही बिजली पैदा होती है। बिजली से मेरी नाव को रोशनी मिलती है तथा अन्य कामों में भी प्रयोग की जाती है।"

"आप सांस लेने की हवा तो समुद्र से नहीं लेते?"

"मैं अपने इस्तेमाल के लिए हवा भी बना सकता हूं, परंतु मैं बनाना नहीं चाहता। जब जरूरत होती है, समुद्र की सतह पर चला जाता हूं। यद्यपि बिजली हमें सांस लेने के लिए हवा नहीं देती, पर बड़े-बड़े पंप इसी से चलते हैं। इन पंपों से हवा भर ली जाती है, जो हमें काफी समय तक काम देती है।"

मैंने उत्तर दिया, "सचमुच यह प्रशंसा की बात है।"

कप्तान नेमो ने पुनः कहा, "कुछ भी हो, यह तो अवश्य

है कि मैंने ही पहले-पहल ऐसी अद्भुत शक्ति का प्रयोग किया है। इस विजली से मुझे रोशनी मिलती है। आप इस घड़ी को देखें। यह विजली की है। यह निरंतर चला करती है। मैंने इसको २४ घंटे से विभाजित कर दिया है, क्योंकि मुझे न तो दिन मालूम करना है, न रात। न सूरज न चांद। जब मैं समुद्र के अंदर गहराई में जाता हूं, तो मेरे साथ यही रोशनी रहती है। देखो, इस समय ठीक सुवह के दस वजे हैं।"

"ठीक है।"

"मेरे सामने जो यह डायल है, इससे नाव की चाल मालूम पड़ती है। एक बिजली के तार से इसका चर्खी से संबंध हो जाता है। देखो, हम लोग इस समय १५ मील प्रतिघंटा की चाल से जा रहे हैं। आपने अभी मेरी नाव का सारा भाग नहीं देखा। प्रोफेसर, यदि आप मेरे साथ चलें, तो मैं आपको इस नाव का पिछला भाग भी दिखा सकता हूं।"

मैं अब तक इस नाव का जितना भाग देख चुका था, वह निम्न प्रकार था:---बीच में भोजनालय १५ फुट लंबा, उसके बाद पुस्तकालय १५ फुट लंबा, फिर वड़ा कमरा ३० फुट, कप्तान का कमरा १५ फुट, मेरा कमरा ९ फुट। इसके बाद हवा भरने का कमरा २० फुट। इस प्रकार कुल लंबाई १०४ फुट थी। इसके दरवाजे रबड़ से कसे हुए थे, जिससे उनमें समुद्र का पानी अंदर न आ सके।

मैं कप्तान के पीछे-पीछे चला। बीच नाव में एक प्रकार का कुआं मिला, उसमें ऊपर जाने के लिए एक लोहे की सीढ़ी लगी थी।

कप्तान ने कहा, "यह सीढ़ी दूसरी नाव को जाने के लिए है।"

मैंने आश्चर्य से कहा, "क्या दूसरी नाव भी है ?"

"निश्चय, बहुत ही हल्की तथा न डूबने वाली दूसरी नाव बहुत ही अच्छी है। यह नाव मछली पकड़ने या घूमने के काम आती है।"

"जब आप उस नाव में तैरना चाहते होंगे, तो आपको समुद्र की सतह पर जाना पड़ता होगा ?"

"बिल्कुल नहीं। यह नाव मेरी इस नाव के ऊपर अपने निश्चित स्थान पर पेचों से कसी हुई है। इस नाव का भी डेक है। इस नाव में बने सूराख के ठीक सामने उस नाव में भी इसी के बराबर एक सूराख है। इसी सीढ़ी द्वारा दोनों सूराख पार करके हम उस नाव में पहुंच जाते हैं। इस नाव के सूराख का दरवाजा इस नाव के लोग बंद कर लेते हैं। दूसरी नाव के सूराख का दरवाजा चर्खी के दवाव से बंद कर देता हूं। ये पेंच ढीले कर देता हूं, तब वह नाव समुद्री सतह पर तेजी से पहुंच जाती है। वहां पहुंच मैं इस के डेक के दरवाजे को सावधानी से खोल लेता हूं और अपना काम करता हूं।"

"आप ऊपर तो इस प्रकार चले जाते हैं, परंतु नीचे कैसे लौटते हैं ?"

"मैं उस नाव को नहीं लौटाता, बल्कि यही 'नाटिलस' उस नाव के पास पहुंच जाती है।"

"आपके आदेश पर ?"

"हां, वह नाव इस नाव से एक बिजली के तार द्वारा संबंधित रहती है। मैं इस तार द्वारा अपना आदेश इसको सूचित कर देता हूं।"

"वास्तव में," मैंने आश्चर्य से उत्तर दिया, "तब तो यह

बहुत ही आसान है।"

सीढ़ी से नाव के प्लेटफार्म पर पहुंच मैंने देखा कि नेड और कनसील एक १२ फुट लंबे कमरे में खाना रहे हैं। इसके बाद में बने लंबे रसोई-खाने का दरवाजा खुला। यह रसोई-खाना भंडार-घर के पास ही था। वहां सारा खाना बिजली से बन रहा था। स्टोव के नीचे प्लेटिनम के तार लगे थे। इनसे गर्मी पैदा की जाती थी। इससे एक उबालने वाला बर्तन भी गरम होता था। इस यंत्र से भाप उड़ा कर तथा उसे ठंडा कर, पीने का पानी तैयार किया जाता था। इस रसोईघर के बाहर एक नहाने का कमरा था----जिसमें गर्म तथा ठंडे, दोनों प्रकार के पानी का प्रबंध था।

रसोईघर के बाद नाव का १८ फुट लंबा सोने का कमरा था, परंतु इसका दरवाजा बंद था। इस कारण उसे मैं न देख सका। इस कमरे से दूर, अंत में एक कमरा था, जिसमें नाव को चलाने की कलें थीं। दरवाजा खोल मैं अंदर घुस गया। वहां कप्तान नेमो ने इंजन की मशीनें अपने ढंग से लगा रक्खी थीं। इसकी कलें दो भागों में विभाजित की जा सकती थीं। एक तो बिजली पैदा करने में काम आती थीं, दूसरी इस नाव को चलाने में। उस समय कमरे में भरी हुई क्लोरीन गैस जैसी बदबू से मुझे आश्चर्य हुआ। कप्तान ने मुझे नाक चढ़ाते देख लिया था।

कप्तान ने कहा, "सोडियम के कारण इसमें मामूली गैस पैदा हो जाती है, परंतु इससे ज्यादा तकलीफ नहीं होती। मैं रोज प्रातः इस नाव को स्वच्छ हवा में ले जा, यह गैस बाहर निकाल, नाव स्वच्छ हवा से परिपूर्ण कर लेता हूं।"

इस बीच मैं इस नाव की दूसरी कलों को बड़े चाव से देखता रहा।

कप्तान ने कहा, "मैं इसमें अधिक शक्तिशाली पदार्थ इस्तेमाल करता हूं। इससे भी बिजली पैदा होती है। वह पीछे जाकर बिजली के चुंबक द्वारा चर्खी तक पहुंचती है। इस चर्खी का व्यास १९ फुट है। और यह एक सेकेंड में १२० चक्कर करती है।"

"इससे कितनी चाल पैदा होती है ?"

"लगभग ५० मील प्रति घंटा।"

मुझे यह आश्चर्यजनक मालूम पड़ा। मैंने कप्तान से कहा, "कप्तान नेमो, मैं इसके परिणाम जानता हूं। उनका स्पष्टीकरण मैं नहीं चाहता। मैं जब 'अब्राहम लिंकन' पर सवार था, मैंने इस नाव की चाल देख इसका अनुमान लगा लिया था। परंतु नाव का तेज चलना ही काफी नहीं। आपको यह भी मालूम होना चाहिए, कि यह नाव किधर जा रही है, तथा हम उसको बाएं या दाहिने, ऊपर या नीचे मोड़ सकते हैं या नहीं। यह जानना भी जरूरी है कि समुद्र की गहराई में यह नाव कैसे पहुंचती, गहराई में किस प्रकार रुकती है, या समुद्र तल पर किस प्रकार आती है। यह सब भी जानना अति आवश्यक है। क्या मैं इस प्रकार के प्रश्न आप से पूछ सकता हूं ?"

कप्तान ने उत्तर दिया, "अभी नहीं, तुम्हें तो इस समुद्री नाव में रहना ही है। आओ, मेरे साथ। यहां जो बातें आप इस नाव के बारे में जानना चाहते हैं, वह सब अपने आप मालूम हो जाएंगी।"

१३

कुछ ही क्षण बाद हम लोग सिगार जला कर दीवान पर बैठ गए। कप्तान ने इस नाव का नक्शा खोला तथा मुझ को इस प्रकार समझने लगे :—

"ऐरोनेक्स महाशय, यह उस नाव का नक्शा है जिसमें आप बैठे हैं। यह एक सिलेंडर की भांति है, तथा इसके दोनों सिरे नुकीले हैं। यह बहुत कुछ सिगार से मिलती-जुलती है। इस प्रकार का एक जहाज लंदन में बनाने की कोशिश की जा रही थी। इस सिलेंडर की कुल लंबाई २३२ फुट है तथा चौड़ाई २६ फुट। यह इस प्रकार बनी है, जिससे पानी इसकी चाल में बाधा न डाल सके। इस लंबाई-चौड़ाई से आप इसका घनत्व आसानी से मालूम कर सकते हैं। इसका तल १०११ मीटर ४५ सेंटीमीटर है, तथा इसका घनत्व १५०० घन मीटर है। यह ५०,००० फुट पानी जितना स्थान घेरती है। इसका वजन १५०० टन है।

"मैंने जब इस नाव के बनाने का नक्शा बनाया था, तो यह कोशिश की थी इसका अधिकांश भाग पानी में डुबा रहे और बहुत थोड़ा बाहर। इस प्रकार यह १३५६ घनमीटर और ४८ घन सेंटीमीटर ही पानी हटाती है। उसी के अनुसार उसका वजन ही होता है। इस नाव का वजन भी मैंने इसकी लंबाई-चौड़ाई के अनुसार ही बनाया था।

"इस नाव में एक के अंदर दूसरा दो भाग हैं, जो एक अंग्रेजी के अक्षर 'टी' के आकार का, लोहे की छड़ों से जुड़ा है। इससे यह नाव और भी मजबूत हो गई है।

"यह दोनों भाग फौलाद की चद्दरों के बने हुए हैं। इसके घनत्व में ७ : ८ का अनुपात है। पहला भाग ५ सेंटीमीटर मोटी चद्दर का बना है। इसका वजन ३९४.९६ टन है। दूसरा भाग उस पहले के ऊपर ढका है। इसका वजन ६२ टन है। बाकी मशीन का तथा नाव का भार ९६१ टन है। आप समझे ?"

मैंने उत्तर दिया, "जी हां।"

कप्तान ने कहा, "जब यह नाव तैरती है, तो इसका १/१० भाग पानी के बाहर रहता है। उसका वजन १५०.७२ टन है। मैंने इतना ही पानी भरने के लिए एक टंकी बना रक्खी है। जब मैं उसमें पानी भर देता हूं, तो सारी नाव पानी में समा जाती है। यह टंकी नाव के निचले भाग में है।"

"अच्छा, तब भी तो एक कठिनाई आती होगी। जब यह नाव समुद्र में गोता मारती है, तो क्या इस नाव के यंत्रों पर नीचे से पानी के उछाल का दबाव नहीं पड़ता ? यह दबाव एक वर्ग इंच पर १ किलोमीटर, या यों कहिए कि ३० फुट गहराई में जाने में १ वायु मंडल भार होना चाहिए। और कप्तान साहब, जब तक आप इस नाव को पानी से पूरा नहीं भरते, तब यह कैसे अंदर दूर तक चली जाती है ?"

कप्तान नेमो ने उत्तर दिया, "आप अचल तथा चल में भ्रम न कीजिए, अन्यथा आप गलती करेंगे। समुद्र की तह तक पहुंचने में बहुत थोड़ा समय लगता है, क्योंकि वस्तुओं में तैरने का गुण होता है। आपने मेरा तर्क समझा ?"

"कप्तान, मैं बहुत ध्यान से सुन रहा हूं।"

"जब मैं इस नाव का वजन बढ़ाना चाहता हूं और यह

चाहता हूं, कि यह नाव पानी के अंदर डूबी रहे, तो जितनी गहराई बढ़ती जाती है, उतना ही पानी का घनत्व कम करता जाता हूं।"

मैंने कहा, "यह तो प्रकट हो गया।"

कप्तान ने कहा, "मेरी इस नाव में १०० टन तक पानी भरने वाली टंकियां हैं। मैं काफी गहराई तक नीचे जा सकता हूं। जब मैं पानी की सतह पर आना चाहता हूं, तब मैं यह पानी बाहर निकाल देता हूं, तो नाव पानी के ऊपर आ जाती है। यदि मैं चाहूं कि नाव का $\frac{1}{10}$ भाग पानी में डूबा रहे, तो मुझ को इस नाव का समस्त पानी निकाल देना पड़ता है।"

इस तर्क पर मुझे कुछ न कहना था।

मैंने फिर कहा, "कप्तान, मैं आपकी गणना मानता हूं, परंतु इसमें भी मुझे एक परेशानी दिखाई पड़ती है।"

"वह क्या ?"

"जब आप १००० गज नीचे समुद्र में जाते हैं, तो इस नाव पर १०० वायुमंडल का दबाव पड़ता है। इस गहराई से यदि आप नाव को ऊपर लाने के लिए भी अतिरिक्त टंकियां खाली करना चाहेंगे, तो पानी निकालने में जो पंप आप प्रयोग करते हैं, उन्हें १०० वायुमंडल अर्थात् १०० किलोग्राम प्रतिवर्ग सेंटीमीटर का दबाव हटाना पड़ेगा। इसके लिए काफी शक्ति की आवश्यकता पड़ेगी।"

कप्तान नेमो ने जल्दी से कहा, "यह शक्ति मुझे बिजली से प्राप्त होती है। मैं फिर आप को एक बात बता देना चाहता हूं, कि मेरी कलों की चलने की शक्ति अपार है। पंप भी महान शक्तिशाली है। आपने 'अब्राहम लिंकन' पर फेंके

गए पानी को देखा होगा। इसके अतिरिक्त टंकियां तो मैं तभी इस्तेमाल करता हूं, जब मुझे मीलों समुद्र में जाना होता है। तब मैं इन टंकियों के बजाय दूसरे तरीके भी इस्तेमाल करता हूं।"

मैंने पूछा, "कप्तान, वह तरीके कौन-से हैं ?"

"इनके बताने से मेरी नाव के सारे रहस्य आपको मालूम हो जाएंगे।"

"मैं यही जानने को बहुत आतुर हूं।"

"मेरी नाव सीधी आगे और सीधी नीचे-ऊपर, दोनों ओर चल सकती है। इस नाव के दोनों तरफ पंखे लगे हुए हैं। यह पंखे जब ऊपर-नीचे चलाता हूं, तो नाव ऊपर-नीचे चलने लगती है। जब नाव सीधी सामने चलानी होती है, तो मैं इन पंखों को नाव के समानांतर कर देता हूं। जब हम समुद्रकी अथाह गहराई से जल्दी ही ऊपर आना चाहते हैं, तो चर्खी प्रयोग में लाते हैं। चर्खी को प्रयोग में लाने के लिए नाव सीधे नीचे से ऊपर एक हवाई गुब्बारे की भांति आ जाती है।"

"कप्तान साहब, आप बहुत ही चतुर हैं; परंतु यह तो बताइए कि यह मशीन पानी में आपके बताए हुए रास्ते पर कैसे चल पाती है ?"

"चालक इस नाव के ऊपरी भाग के एक शीशे की कोठरी में बैठे रहते हैं तथा उनके सामने भी शीशे लगे रहते हैं।"

"ये शीशे पानी का इतना दबाव सहन कर सकते हैं ?"

"पूर्ण रूप से। साधारण शीशा तो एक चोट से ही टूट जाता है, परंतु यह शीशे काफी दबाव सहन कर लेते हैं। सन् १८६४ ई० में एक बार जब मैं बिजली से मछली के शिकार का अनुभव कर रहा था, तो एक इंच से भी कम

मोटी शीशे की छड़ ने १६ गुणा अधिक वायुमंडल का दवाव रोका था। अव शीशा जो मैं इस्तेमाल करता हूं, वह उससे ३० गुना अधिक मोटा है।"

"मैं अव समझा, परंतु समुद्र में अंधकार होता है। आप यह कैसे जान पाते हैं कि आप किधर जा रहे हैं ?"

"चालक के पीछे शीशे का विद्युत-रिफलेक्टर लगा रहता है। उस पर विजली की रोशनी पड़ती है, जो उलट कर आगे आधा मील तक समुद्र-तल पर फैल जाती है।"

"अब मैं समझ गया। यही वह बिजली की रोशनी है जिससे हम लोग अधिक परेशान थे। तो क्या 'स्कोशिया' जहाज को हानि अचानक ही हो गई थी ?"

"हां महाशय, विल्कुल अचानक ही। जव 'स्कोशिया' को धक्का लगा, तो मैं केवल १ फैदम ही गहराई में चल रहा था। क्या उसे बहुत हानि हुई थी ?"

"नहीं महाशय, परंतु आप यह तो वताइए कि हमारे 'अब्राहम लिंकन' को धक्का कैसे लगा ?"

"प्रोफेसर, मैंने अमेरिकी जल-सेना के उस जहाज पर बड़ी दया की थी, लेकिन उसने मेरे ऊपर हमला कर दिया। मुझे तो अपनी रक्षा करनी थी। उस जहाज को शक्ति-क्षीण करना ही मेरे लिए काफी था---जिससे वह मेरे ऊपर फिर हमला न कर सके; क्योंकि मैं जानता था कि किसी पड़ोस के बंदरगाह में उसकी मरम्मत कठिनाई से ही हो सकेगी।'

मैंने चिल्लाकर कहा, "कप्तान, आपकी यह नौका बहुत ही अच्छी है।"

कप्तान ने उत्तर दिया, "हां महाशय, मैं इस नाव को

अपने अंग की तरह ही प्रेम करता हूं। सभी जहाजों के लिए समुद्र बहुत ही भयानक स्थान है और विशेषकर यह सागर, जो अपनी गहराई के लिए प्रसिद्ध है, परंतु इस नाव के नाविकों को कोई परेशानी नहीं होती; क्योंकि इसके नष्ट होने का डर नहीं है। इस नाव के दोहरे आवरण फौलाद के समान मजबूत हैं। किसी प्रकार का खतरा नहीं हो सकता। न इस को हवा से खतरा है और न इसके बायलर के फटने का। इसमें आग भी नहीं लग सकती, क्योंकि इसके सारे यंत्र लकड़ी के नहीं, वरन फौलाद के बने हैं। कोयले के भी खत्म होने की कोई आशंका नहीं। मैं ही इस नाव को बनाने वाला इंजी-नियर तथा कप्तान हूं।"

"तो कप्तान, आप इंजीनियर भी हैं!"

"मैं इससे वैसे ही प्रेम करता हूं जैसे पिता अपने पुत्र से।"

"परंतु आपने इसे गुप्त रूप से बनाया कैसे?"

"मैंने इस नाव के अलग अलग भाग अलग अलग देशों में बनवाए और उन्हें अलग अलग पते पर मंगवाया। इसकी पतवार, बाहर का चरखी का डंडा मैन एंड कंपनी लंदन में, आवरण की लोहे की चादर लिवरपूल में तथा चरखी ग्लासगो में बनवाई थी। इसकी टंकियां पेरिस की सेल एंड कंपनी में बनी थीं। इंजन जर्मनी की ऋप कंपनी द्वारा तथा अन्य भाग स्वीडन के मेटाला के कारखाने में बने थे। इसके गणना संबंधी यंत्र न्यूयार्क में हार्ट ब्रदर्स से बनवाए गए थे। इन सबको मैंने भिन्न भिन्न नामों से बनने का आर्डर दिया था।"

"परंतु आपने इन सब भागों को एक में जोड़ा कैसे?"

"समुद्र में एक एकांत द्वीप पर मैंने कारखाना बनाया।

वहां हमारे बहादुर साथियों ने मेरी आज्ञानुसार उन सब भागों को जोड़ यह विचित्र नौका तैयार कर दी। जब यह सारी नौका तैयार हो गई, तो नाव को समुद्र में डाल, उस कारखाने में आग लगा, उसे भस्म कर दिया था—ताकि हमारा कोई निशान न बच पाए।"

"इसमें आपका बहुत अधिक रुपया खर्च हुआ होगा।"

"इसे बनवाने में ६७००० पौंड, ठीक करने में ८०,००० पौंड तथा इसकी बहुमूल्य वस्तुओं में कुल मिलाकर बीस लाख पौंड खर्च हुए थे।"

"कप्तान, एक बात मुझे और बता दीजिए।"

"प्रोफेसर महोदय, पूछिए।"

"आप बहुत ही धनाढ्य मालूम होते हैं।"

"मैं बहुत ही अमीर हूं। मैं यदि चाहूं तो अंग्रेज सरकार का सारा राष्ट्रीय ऋण तुरंत अदा कर सकता हूं।"

मैं उस विचित्र व्यक्ति की ओर ध्यान से देखने लगा। क्या वह मेरी सिधाई का लाभ उठा कर लंबी-चौड़ी बातें हांक रहा था। पर यह सब तो भविष्य ही निश्चय करेगा।

१४

प्रशांत महासागर सब समुद्रों में शांत माना जाता है। इसकी लहरें चौड़ी तथा धीमी होती हैं। ज्वारभाटा भी बहुत हल्का होता है। ऐसे समुद्र में मेरा भाग्य-चक्र मुझे ले आया था।

कप्तान नेमो ने कहा, "प्रोफ़ेसर, अब आपको यात्रा के लिए तैयार हो जाना चाहिए। अब पौने बारह बजने को हैं। चलो, समुद्र की सतह पर घूम आएं।"

कप्तान ने तीन बार बिजली की घंटी बजाई। पंपों द्वारा पानी टंकियों से बाहर निकलने लगा। मानोमीटर की सुई ने भिन्न-भिन्न दबाव प्रदर्शित किए। 'नाटिलस' ऊपर जाती मालूम हुई। थोड़ी देर बाद रुक गई।

कप्तान ने कहा, "हम लोग ऊपर आ गए हैं।"

हम सब लोग बीच के जाने-पहचाने मार्ग द्वारा 'नाटिलस' के चबूतरे पर जा पहुंचे तथा लोहे की सीढ़ियां पार कर नाव की छत पर पहुंच गए।

'नाटिलस' का चबूतरा पानी से केवल ३ फुट ऊपर था। इसके अगले तथा पिछले भाग बेलन की आकृति के थे, जिनकी तुलना सिगार से की जा सकती है। मैंने देखा कि लोहे की चद्दरें, एक के ऊपर दूसरी, थोड़ा चढ़ाव देकर लगाई गई थीं। मैं समझ गया कि यह नाव समुद्री जीव क्यों समझी जाती थी। चबूतरे के बीच, आधी डूबी हुई, एक नौका थी। कभी-कभी शीशे के दो बक्से पानी के ऊपर दिखाई पड़ते थे। एक में 'नाटिलस' के चलाने वाले बैठते थे तथा दूसरी में रास्ता दिखाने के लिए एक शक्तिशाली रोशनी थी।

समुद्र इस समय अत्यंत शांत तथा आकाश भी स्वच्छ था। क्षितिज बिल्कुल साफ दिखाई दे रहा था। चारों ओर पानी ही पानी था।

कप्तान अपने यंत्रों को ठीक कर चलने को तैयार होगया। उसने कहा, "प्रोफेसर, दोपहर हो गई है। आप अभी तैयार नहीं?"

मैंने एक बार चारों ओर समुद्र को देखा और अपने कमरे की ओर चला।

कप्तान ने कहा, "ऐरोनेक्स महाशय, हम लोग इस समय जापानी तट से ३०० मील दूर हैं। आज ८ नवंबर की दोपहर से हम लोगों की यात्रा आरंभ हो रही है।"

मैंने कहा, "भगवान हम लोगों की रक्षा करे।"

कप्तान ने कहा, "प्रोफेसर, अब आप पुस्तकों का अध्ययन करें। मैं अपना काम करने जा रहा हूं। हम लोग समुद्र-तल से ५० गज नीचे पूर्व-उत्तर की ओर जा रहे हैं। समुद्र का नक्शा मौजूद है। आप इससे सब बात समझ सकते हैं। इस बैठने के कमरे को भी आप काम में ला सकते हैं। अब मैं विदा चाहता हूं।"

कप्तान मुझे नमस्कार कर चला गया। मैं वहां अकेला बैठ विचार-मग्न हो गया। मैंने मन ही मन सोचा—पता नहीं, कप्तान किस देश का निवासी है? वह मनुष्यमात्र से घृणा करता है। क्या इसकी यह भावना कभी दूर होगी? मैं अचानक ही इस नाव में आ गया हूं। मेरी जिंदगी इसी के हाथ में है। क्या मुझे कभी मुक्ति मिलेगी? ऐसे ही विचारों में मैं एक घंटे तक मग्न रहा। फिर मेरी आंख उस मेज पर बिछे हुए नक्शे पर पड़ी। कप्तान ने जहां जाने को कहा था, मैंने वह स्थान ढूंढ़ा।

समुद्र में भी महाद्वीपों की भांति बड़ी-बड़ी नदियां होती हैं। यह समुद्र की धाराएं होती हैं, जो अपने तापक्रम या रंग के कारण एक दूसरे से भिन्न होती हैं। इन धाराओं में सब से प्रसिद्ध 'गल्फस्ट्रीम' नाम की धारा है। अब तक पांच

विशेष धाराओं का पता लगा है। पहली उत्तरी अतलांतिक, दूसरी दक्षिणी अतलांतिक, तीसरी उत्तरी प्रशांत, चौथी दक्षिणी-प्रशांत तथा पांचवीं दक्षिणी हिंद महासागरों में निरंतर प्रवाहित होती रहती हैं। कुछ विद्वानों का यह भी कहना है कि प्राचीन काल में एक छठी धारा भी थी, जो अब कैस्पियन सागर तथा अरब सागर के रूप में दो एशियाई झीलों में परिणत हो गई हैं।

इस मेज पर फैले समुद्री नक्शे में मैं जिस स्थान पर उंगली रखकर देख रहा था, और जिसको कप्तान ने अपनी इस नई यात्रा का प्रारंभ-स्थान बताया था, उस स्थान पर कुरोशियो या जापानी काली नदी के नाम की धारा अंकित थी। यह गर्म जल की धारा बंगाल की खाड़ी में सूर्य की सीधी किरणों का ताप खाकर मलक्का जलडमरूमध्य और एशिया के किनारे चूमती हुई, उत्तरी महासागर की ओर मुड़ जाती है। कपूर के तने अपने साथ बहाती हुई अल्यूटियान द्वीप-समूह के पास प्रशांतसागर में जा समाती है। 'नाटिलस' ने इसी धारा की यात्रा करने का प्रस्ताव किया था। 'नाटिलस' प्रशांत महासागर में इसी धारा के साथ-साथ गोता लगाती आगे बढ़ी। जब मैं इन विचारों में मग्न था, नेडलैंड और कनसील मेरे कमरे में प्रविष्ट हुए।

वे दोनों उस कमरे में रक्खे बहुमूल्य पदार्थों को देख चकित-से हो गए।

नेडलैंड ने उत्तेजनापूर्वक कहा, "हम लोग कहां आ गए हैं। क्या हम लोग क्वेबक के संग्रहालय में हैं?"

कनसील ने उत्तर दिया, "यह तो पेरिस के किसी बढ़िया होटल जैसा है।"

मैंने दोनों को अंदर आने का इशारा करके कहा, "आओ, मेरे मित्र ! न तो तुम लोग इस समय कनाडा में हो, और न फ्रांस में। तुम लोग इस समय 'नाटिलस' नाव में हो, तथा समुद्र के अंदर गहराई में यात्रा कर रहे हो।"

"आप जो कुछ भी कहते हैं, मैं उस पर सदा विश्वास करता हूं, परंतु यह कमरा वास्तव में आश्चर्यपूर्ण वस्तुओं से सुसज्जित हैं।"

"कनसील, तुम्हारे जैसे चतुर वर्गीकरण-विशेषज्ञ का यहां बहुत काम है।"

कनसील स्वयं ही सारी वस्तुओं का निरीक्षण कर रहा था। मुझे उसको प्रेरित करने की कोई आवश्यकता न थी।

इसी बीच नेडलैंड ने मेरी और कप्तान की बातचीत के संबंध में मुझसे सैकड़ों प्रश्न कर डाले। वह कौन है ? कहां से आया है ? कहां जाना चाहता है तथा हम लोगों को कहां ले जाना चाहता है इत्यादि। परंतु मेरे पास इन प्रश्नों का उत्तर कहां था ? जो कुछ जानता था वह नेडलैंड को बता कर मैंने उस से पूछा, "तुमने इतने समय में क्या क्या देखा। मुझे बताओ।"

"नेडलैंड ने उत्तर दिया, "मैंने न तो कुछ देखा है और न सुना। और तो क्या, मैं खलासियों तक से भी कुछ न जान पाया। क्या इस नाव की मशीन बिजली से चलती है ?"

"जी हां, बिजली से।"

नेडलैंड का विचार अब भी न बदला था। उसने कहा, "यह तो कोई भी समझ सकता है, पर यह तो बताओ कि नाव में कितने आदमी हैं ? दस, बीस पचास या सौ ?"

"नेडलैंड, जितना तुम जानते हो, उससे अधिक मैं भी नहीं जानता। इस समय 'नाटिलस' पर हमला करके उस पर विजय पाने या भाग निकलने का ध्यान छोड़ दो। यह नाव कारीगरी का एक अद्भुत नमूना है। खेद है कि हम लोगों ने अभी तक ऐसी दूसरी नाव न देखी थी। ऐसी दुर्लभ वस्तुओं के देखने के लिए विश्व के तमाम व्यक्ति हमारी ऐसी दशा में रहना स्वीकार कर सकते हैं। हमें चाहिए कि हम लोग शांत होकर, जो कुछ होता जाय, देखते रहें।"

नेडलैंड ने उत्तर दिया, "क्या देखते रहें? यहां कुछ देखने को है भी? हम लोग इस लोहे के कैदखाने के अतिरिक्त और क्या देख सकते हैं। यही कि हम लोग अंधों की भांति इधर-उधर घूमते रहें।"

नेडलैंड यह शब्द कह भी न पाया था कि एकाएक रोशनी बुझ गई। कमरे में अंधकार छा गया। हम लोग चुपचाप बैठ कर यह सोचने लगे कि देखें अब क्या होता है। हमें किसी वस्तु के खिसकने का शब्द सुनाई दिया। मानो 'नाटिलस' के ऊपर लगे हुए लौह-पत्र एक दूसरे पर खिसक रहे हों।

नेडलैंड ने कहा, "अब हम लोगों का अंत आ गया।"

थोड़ी देर बाद कमरे के दोनों तरफ दो लंबी खिड़कियों द्वारा बाहर उजेला दिखाई पड़ा, जिससे निकट का समुद्री जल प्रकाशित हो रहा था।

इन्हीं दो खिड़कियों के एक ओर हम लोग थे तथा दूसरी ओर समुद्र। मैं सोचने लगा कि कहीं ऐसा न हो कि यह शीशे टूट जाएं और हम लोगों का कमरा जलमग्न हो जाय और समुद्र में बहा ले जाय। ऐसा सोच हम लोग कांप उठे—परंतु यह

मोटे शीशे तांबे के वहुत मजबूत चौखटे में जड़े थे। हमारा भय व्यर्थ था।

'नाटिलस' के चारों ओर समुद्र एक मील तक साफ दिखाई दे रहा था। विश्व का कौन-सा चित्रकार सागर की निर्मलता और सौंदर्य का ऐसा चित्रण कर सकता है।

सागर की पारदर्शिता प्रसिद्ध है। इसकी निर्मलता साधारण पानी से अधिक होती है। खनिज तथा अकार्बनिक रासायनिक पदार्थ इसे और भी पारदर्शी बना देते हैं। समुद्र के किसी-किसी भाग में तो ७५ फैदम गहरे जल के अंदर की बालू भी साफ दिखाई पड़ती है। सूर्य की किरणें समुद्र के अंदर १५० फैदम तक घुस सकती हैं, परंतु 'नाटिलस' जिस सागर में से गुजर रही थी, उसकी लहर-लहर में प्रकाश था। यह इसी नाव की बिजली का प्रकाश था।

'नाटिलस' इस समय चलती न मालूम पड़ रही थी, क्योंकि स्थल का कहीं पता तक न था—केवल लहरों की पंक्तियां दिखाई पड़ रही थीं।

हम लोग चुपचाप आश्चर्य-मग्न उन्हीं खिड़कियों के पास खड़े रहे। इतने में कनसील ने कहा, "दोस्त नेड, तुम दृश्य देखने के लिए बहुत आतुर थे। देखो कितना सुंदर दृश्य है।"

नेडलैंड ने कहा, "निस्संदेह दृश्य बहुत ही अनोखा है। ऐसे दृश्य को कौन न देखना चाहेगा?"

मैंने कहा, "मुझे अब इस मनुष्य की जीवनचर्या का अंदाज लगा। इसने समुद्र में कैसा साम्राज्य बना रक्खा है।"

नेडलैंड बोला, "पर मुझे कोई मछली क्यों नहीं दिखाई पड़ती।"

कनसील ने उत्तर दिया, "जब हम उनके संबंध में कुछ जानते ही नहीं, तो दिखाई देना न देना बराबर है।"

"मैं मछली का शिकारी मछली के बारे में नहीं जानता ?" नेड बोला।

इस बात पर दोनों जोरों से बहस करने लगे। दोनों ही मछलियों के बारे में कुछ-न-कुछ ज्ञान रखते थे। एक मछलियों का शिकारी। दूसरा समुद्र का घुमक्कड़ और मछलियों के वर्गीकरण का विशेषज्ञ। एक दूसरे से कोई कम न था।

"मित्र नेड, तुम मछलियों के अनुभवी शिकारी हो। तुमने हजारों मछलियों का शिकार किया होगा, पर तुम इनका वर्गीकरण नहीं कर सकते।"

"जानता क्यों नहीं ? मछलियां दो तरह की होती हैं--- एक तो वे जो खाने में अच्छी होती हैं, तथा दूसरी वे जो खाने में अच्छी नहीं होतीं।"

कनसील बोला, "यह तो मरभुक्खों का वर्गीकरण है।" और उसने पचासों तरह की मछलियों के नाम गिना दिए।

एकाएक मछलियों की फौज ने 'नाटिलस' को घेर लिया और हम उन तरह-तरह की मछलियों को देखते रहे, जो एक दूसरे से रंग-रूप, चुस्ती आदि में बढ़-चढ़ कर थीं। मेरी उत्तेजना अपनी चरम सीमा पर पहुंच गई थी। मैंने इन मछलियों को जिंदा तथा अपने प्राकृतिक रूप में पहले कभी न देखा था। जितनी मछलियां इस यात्रा में देखीं, सब की किस्में बताने में असमर्थ हूं, परंतु इतना अवश्य कह सकता हूं कि इन मछलियों की किस्में चिड़ियों की किस्मों से बहुत अधिक होती हैं।

एकाएक मेरे कमरे में प्रकाश प्रकट हुआ। लोहे के पल्ले फिर बंद हो गए। वह अद्‌भुत दृश्य मेरी आंखों से ओझल हो गया। काफी समय तक वहीं चित्र मेरी आंखों के सामने नाचता रहा। थोड़ी देर वाद मेरी दृष्टि सामने टंगे यंत्रों पर पड़ी। कंपास से उत्तर-पूर्व दिशा ज्ञात हुई तथा मानोमीटर ने ५ वायुमंडल भार वताया। 'नाटिलस' की चाल १५ मील प्रति घंटा थी। इस समय हम केवल १०० फैदम की गहराई पर थे।

मैं कप्तान नेमो की प्रतीक्षा करता रहा, परंतु वह न आया। घड़ी ने पांच का घंटा वजाया। नेडलैंड और कनसील अपने-अपने अमरे को चले गए। मैंने भी शाम पढ़ते-लिखते तथा विचार करते विताई। पता नहीं कब निंद्रा ने मेरे ऊपर विजय पा ली। 'नाटिलस' काली नदी की धारा के साथ तेजी से रोशनी फैलाती और गोता मारती चली जा रही थी।

१५

मैं दूसरे दिन ९ नवंबर को लगभग १२ बजे जगा। कनसील रोज की भांति आया और कुशल समाचार पूछ कर चला गया। उसका साथी नेड अभी तक सोकर न उठा था। कप्तान नेमो की मैं कल से प्रतीक्षा कर रहा था, परंतु वह अव भी न आया था। मुझे आशा थी कि आज अवश्य आएगा।

'नाटिलस' के नाविकों जैसी पोशाक पहन मैं कप्तान के बैठने के कमरे के लिए तैयार हुआ। यह कपड़े चमकदार रेशम जैसे पदार्थ के बने हुए थे। बहुत ही मुलायम और नरम थे। मैं कप्तान के कमरे में जाकर वहां रक्खी पुस्तकों को दिन भर पढ़ता रहा। शाम हो गई थी, परंतु कप्तान आज अब भी न आया था। आज वह खिड़कियां भी न खुली थीं।

'नाटिलस' की यात्रा अब भी उत्तर-पूर्व की ओर थी। वह १२ मील प्रतिघंटा की चाल से २०-२५ फदम की गहराई में दौड़ रही थी। दूसरे दिन १० नवंबर को भी मैं, कनसील और नेड ने अकेले ही सारा दिन बिताया। कप्तान आज भी न आए थे, परंतु हम लोगों का दिन बड़ी ही स्वतंत्रता से बीता। खाना-पीना भी खूब अच्छा तथा काफी तादाद में मिल गया था। आज की यात्रा का वर्णन मैंने समुद्री घास के बने कागज पर लिख डाला।

११ नवंबर को सुबह 'नाटिलस' स्वच्छ हवा से परिपूर्ण हो गई। ऐसा ज्ञात हुआ मानो वह अब समुद्र की सतह पर आ गई थी। मैं बीच के जीने द्वारा नाव के चबूतरे पर पहुंच गया। इस समय प्रातःकाल के ६ बजे थे। सारा आकाश भूरे-भूरे बादलों से ढका था। समुद्र अब भी शांत था।

आज मैं कप्तान के आने का रास्ता देखता हुआ, समुद्री स्वच्छ हवा का रसास्वादन कर रहा था। धीरे-धीरे सूरज की किरणों से बादल साफ होने लगा। मैं धूप का आनंद ले रहा था कि किसी के आने की आवाज सुनाई दी। कप्तान का नौकर ऊपर आया। उसने अपनी भाषा में कुछ कहा। हर प्रातः कुछ शब्द इसी तरह दोहराए जाते थे। मैं न समझ पाया। नौकर

नीचे की ओर चला। मैं यही समझा कि शायद 'नाटिलस' दूसरी यात्रा के लिए जाने वाली हो; मैं भी उसके पीछे-पीछे चला गया।

पांच दिन हो गए थे। मैं उस कमरे में तथा चबूतरे पर जा, रोज कप्तान को खोजता था, पर वह अभी तक न आया था। मुझे रोज वही नौकर, उन्हीं शब्दों में कुछ बता जाता था। मेरी यह धारणा बन गई थी कि शायद कप्तान अब मुझे देखने को न मिलें।

१६ नवंबर को जब नेड और कनसील के साथ मैं अपने कमरे में आया, तो मेज पर पत्र मिला। उसमें लिखा था——

"प्रोफेसर ऐरोनेक्स,

१६ नवंबर, १८६७ ई०

कप्तान नेमो प्रोफेसर ऐरोनेक्स को कल सुबह क्रेस्पो द्वीप के जंगलों में शिकार के लिए जाने को आमंत्रित करते हैं। आशा है कि प्रोफेसर सम्मिलित होने में कोई कठिनाई अनुभव न करेंगे; यदि वह अपने साथियों के साथ आएं, तो कप्तान को और भी हर्ष होगा।

'नाटिलस' का कमांडर
कप्तान नेमो।"

नेड ने आश्चर्य से पूछा, "शिकार ?"

कनसील ने कहा, "और क्रेस्पो द्वीप के जंगलों में ?"

नेड ने फिर कहा, "यदि जंगल है, तो वहां जमीन अवश्य होगी।"

मैंने कहा, "मालूम तो कुछ ऐसा ही होता है।"

नेड ने उत्तर दिया, "हमें इसे तुरंत स्वीकार कर लेना चाहिए। एक बार हम जमीन पर पहुंचें, फिर वहां से अपने देश जाने का कुछ प्रबंध कर सकते हैं। मुझे वहां ताजा गोश्त भी खाने को मिल सकेगा।"

नक्शे में देखने से ज्ञात हुआ कि वह द्वीप ३२° ४०' उत्तरी अक्षांश तथा १६७° ५०' पच्छिमी देशांतर में स्थित है। यह एक छोटा सा द्वीप है, जिसका कप्तान क्रेस्पो ने सन् १८०१ में पता लगाया था। इसी से इसका नाम क्रेस्पो द्वीप पड़ा। इन द्वीपों का नाम स्पेन के नक्शे में 'सिलवर राक' के नाम से अंकित है। हम लोग उस द्वीप से उस समय लगभग १८ मील पर थे। 'नाटिलस' ने अपना रास्ता बदल लिया था। मैंने अपने साथियों को उस द्वीप का पता बताया।

मैंने कहा, "कप्तान कभी-कभी जमीन पर जाता होगा, तो भी किसी एकांत स्थान पर ही।"

नेडलैंड और कनसील अपने-अपने कमरे को चले गए। मैं भी खाना खाकर सो गया।

दूसरे दिन १७ नवंबर को जब मैं जगा, तो देखा कि 'नाटिलस' शांत खड़ी थी। मैं तुरंत अपनी पोशाक पहन कप्तान के कमरे को रवाना हुआ।

कप्तान नेमो वहां बैठा मेरा इंतजार कर रहा था। उसने मुझसे नमस्कार कर पूछा, "क्या आप मेरे साथ चलने को तैयार हैं?"

कप्तान ने उन आठ दिनों की अनुपस्थिति के बारे में कुछ स्पष्टीकरण न किया। मैंने भी इस बात पर कप्तान को न छेड़ा। मैंने उसे बता दिया कि मैं और मेरे दोनों साथी इस

यात्रा में चलने को तैयार हूं ।

मैंने कहा, "कप्तान, क्या मैं आपसे यह पूछ सकता हूं कि क्रेस्पो द्वीप के जंगल किस प्रकार के हैं ?"

कप्तान ने उत्तर दिया, "स्थलीय जंगल नहीं, समुद्री जंगल हैं ।"

मैंने आश्चर्यपूर्वक कहा, "समुद्री जंगल ?"

"हां, प्रोफेसर ।"

"और आप हम लोगों को वहीं ले जाना चाहते हैं ?"

"बिल्कुल वहीं, और पैदल ।"

"पैदल ?"

"हां, पर पानी के अंदर ।"

"हम लोग शिकार कैसे करेंगे ?"

कप्तान बोला, "बंदूक से ।"

मुझे लगा कि कप्तान मुझ से हंसी कर रहा है। मेरे चेहरे पर ऐसा भाव देखकर कप्तान आग्रह करके मुझे खाने के कमरे में ले गया । वहां नाश्ता तैयार था ।

कप्तान ने कहा, "मेरे साथ नाश्ता करो । मैं इसी बीच आपको सारा हाल बता दूंगा । रास्ते में जंगल मिलेगा, कोई जलपान-गृह न मिल सकेगा । इसलिए खूब पेट भरकर नाश्ता कर लीजिए। हो सकता है, हम लोगों को खाना भी देर में मिले ।"

कप्तान की भांति मैंने भी खूब नाश्ता किया । वह पहले तो चुपचाप खाता रहा, परंतु थोड़ी देर बाद उसने मुझसे कहा, "प्रोफेसर, जब मैंने आपको अपने समुद्री वन में शिकार के लिए आमंत्रित किया था, तो क्या आप समझते थे कि मैंने झूठ ही लिखा था ? जैसा आप और हम दोनों जानते हैं, मनुष्य समुद्र

के अंदर रह सकता है, केवल उसके सांस लेने का कुछ प्रबंध होना चाहिए। जो लोग समुद्र में घुमते हैं, उनकी पोशाक हम लोगों की पोशाक से भिन्न होती है। पोशाक के अतिरिक्त उनके सिर पर धातु की बनी एक प्रकार की टोपी होती है। इसमें एक नली लगी होती है। इसके द्वारा उनके सांस लेने का प्रबंध रहता है।"

"यह तो डुबकी लगाने का यंत्र होता है?"

"जी हां, रबड़ की नली से छुटकारा पाने के लिए मैंने एक यंत्र का आविष्कार किया है। यह यंत्र लोहे का बना एक संदूक-सा होता है। इसमें हवा भरी रहती है। यह गोताखोर की गर्दन के पीछे लटका रहता है। जब हम समुद्र के अंदर जाते हैं, तो यही हवा में सांस लेने का काम देती है। इसी से दो नलियां लगी होती हैं, जो गोताखोर के दोनों नथुनों में लगा दी जाती हैं। एक नली से स्वच्छ हवा जाती है तथा दूसरी से गंदी हवा बाहर निकलती है। जब हमें अधिक गहराई तक जाना होता है, तो हम तांबे की टोपी सिर पर पहनते हैं। उसमें दो नलियां लगा लेते हैं।"

"परंतु जो हवा आप नीचे ले जाते हैं, वह जल्दी ही समाप्त हो जाती होगी, क्योंकि जब ५% आक्सीजन रह जाती है तब हवा सांस लेने योग्य नहीं रहती।"

"प्रोफेसर ऐरोनेक्स, यह तो मैंने आपको पहले ही बता दिया है कि 'नाटिलस' में हवा अधिक से अधिक दबाव में जमा की जा सकती है। इस प्रकार इसकी टंकियों की हवा ९–१० घंटों तक सांस लेने योग्य रहती है।"

फिर मैंने कहा, "मुझे इस पर कोई दूसरा एतराज

नहीं है, परंतु मैं एक बात अवश्य पूछना चाहता हूं, कि आप जब समुद्र की तलहटी में होते हैं, तब रास्ते पर रोशनी किस प्रकार पहुंचते हैं ?"

"प्रोफेसर, इसके लिए भी मेरे पास एक विशेष यंत्र है। उससे मैं बिजली पैदा करता हूं तथा एक तार द्वारा उसे जलने वाले बल्ब तक पहुंचाता हूं। इस बल्ब में एक प्रकार की कारबोनिक गैस भरी रहती है। बिजली की गर्मी के प्रभाव से यह गैस चमकने लगती है और रोशनी पैदा हो जाती है। यह रोशनी साधारण रोशनी से बहुत ही तेज होती है। इस प्रकार हम सांस लेते तथा देखते हैं।"

"कप्तान, आप बंदूकें किस प्रकार की इस्तेमाल करते हैं ?"

"इसमें कोई परेशानी की बात नहीं। हमारे पास फिलिप-कोल्स एंड बरली कंपनी इंगलैंड द्वारा तैयार की हुई एक विशेष प्रकार की फेल्टन बंदूकें हैं। यह बंदूकें विशेष प्रकार की हैं, जो समुद्र के अंदर हवा से ८.५५ गुना घने पानी में चलाई जा सकती हैं। नीचे अधिक दबाव में मैं साधारण कार-तूस नहीं, दबी हुई हवा इस्तेमाल करता हूं।"

"परंतु यह हवा जल्दी ही खर्च हो जाती होगी ?"

"क्या मेरे पास हवा के भरने के लिए टंकियां नहीं हैं ? मैं इन टंकियों की हवा का प्रयोग करता हूं। वैसे तो आप स्वयं देखेंगे कि समुद्री शिकार में अधिक हवा या कारतूस इस्ते-माल ही नहीं करने पड़ते।"

"परंतु मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि इस कमजोर रोशनी तथा घने पानी के अंदर शिकार का पता लगाना तथा मारना बहुत ही कठिन होगा।"

"प्रोफेसर महाशय, ऐसा नहीं है। इन बंदूकों की कोई भी चोट खाली नहीं जाती। जानवर के छू भर जाय, वह तुरंत मर जाता है।"

"क्यों ?"

"क्यों कि इनकी गोलियां साधारण गोलियों की तरह नहीं होतीं। यह छोटी-छोटी शीशे की बोतलें होती हैं, जो दोनों तरफ से लोहे की छड़ों से ढकी होती हैं। इनके अंदर बिजली भी भर दी जाती है। जरा से ही दबाव से यह चल जाती हैं। और बड़े-से-बड़ा जीव क्यों न हो, यह उसे लग गई, तो वह मर अवश्य जाता है।"

मैंने उत्तर दिया, "मैं अब आप से कोई वाद-विवाद नहीं करना चाहता। अपनी बंदूक लेकर अभी तैयार हो रहा हूं। आप जहां जाएंगे, मैं आपके साथ जाऊंगा।"

वहां से उठकर हम और कप्तान आगे बढ़े। नेडलैंड और कनसील को भी बुला लिया। वे तुरंत तैयार हो गए। हम चारों पानी में जाने के लिए अपनी-अपनी पोशाकें पहनने को इंजन वाले कमरे के पास की कोठरी में गए।

१६

यह कोठरी वास्तव में 'नाटिलस' का अस्त्रागार तथा पोशाक-घर थी। गोताखोरी की पोशाकें तथा अन्य यंत्र दीवारों पर टंगे हुए थे। नेडलैंड उन्हें पहनना न चाहता था। मैंने

कहा, "नेडलैंड, क्रेस्पो द्वीप के जंगल समुद्री हैं, धरती के जंगल नहीं।"

"मिस्टर ऐरोनेक्स, क्या आप ये पोशाकें पहनेंगे?"

"अवश्य पहनूंगा।"

नेडलैंड ने उत्तर दिया, "आप जैसा चाहें, वैसा करें। मैं तो उन्हें नहीं पहन सकता, जब तक मजबूर ही न हो जाऊं।"

"नेड, तुम्हें इन्हें पहनने को कोई विवश न करेगा।"

"क्या कनसील इन्हें पहनेगा?"

कनसील ने उत्तर दिया, "जहां प्रोफेसर साहब जाएंगे, मैं अवश्य जाऊंगा।"

कप्तान के आदमियों की सहायता से हमने पोशाक पहनी। यह रबड़ की बनी थी। यह मुलायम और मजबूत थी। फौज के सिपाहियों जैसी मालूम पड़ती थी। इनमें कोट, पाजामा, जूते तथा दस्ताने थे। जूतों के तले बहुत वजनी थे। कोट में पीतल की पेटी जैसी लगी थी, जो पानी के दबाव से सीने की रक्षा भी करती थी।

नेमो, उसका एक बलिष्ट साथी, कनसील तथा मैं, चारों आदमियों ने यह पोशाकें पहन लीं। केवल सिर पर लोहे का टोप ही रखना बाकी था।

मैंने कप्तान से कहा, "हम लोग टोपियां पहनने से पहले अपनी बंदूकें तो देख लें।"

खलासियों ने एक बंदूक मुझे दी। मैंने उसका निरीक्षण किया। उसके कुंदे का सिरा लोहे का बना था तथा काफी बड़ा और पोला था। उसके अंदर इकट्ठी की हुई हवा बंद थी। यह हवा एक धातु की नली में जाती थी। कुंदे के मोटे

भाग में एक प्रकार की डिबिया लगी थी, जो विजली की बीस कारतूसों से भरी थी। यह कारतूसें एक स्प्रिग द्वारा बंदूक की नली में पहुंचती थीं और हवा के दबाव से फायर होता था। ज्यों ही कारतूस फायर किया जाता, दूसरा उसका स्थान ले लेता था।

मैंने कहा, "कप्तान नेमो, क्या यह बंदूक अपने आप काम करती है ? मैं स्वयं चलाकर देखूंगा। अब आप मुझे यह बताइए, कि हम लोग समुद्र की तलहटी पर किस प्रकार पहुंचेंगे।"

"प्रोफेसर, 'नाटिलस' इस समय ५ फैदम पानी के अंदर है। हम लोग अब चलने ही वाले हैं।"

"परंतु हम लोग बाहर कैसे निकलेंगे ?"

"यह तुम्हें अभी मालूम हो जाएगा।"

कप्तान ने तथा उनकी देखादेखी मैंने तथा कनसील ने भी अपनी-अपनी टोपियां पहन लीं। कोट का कालर तांबे का बना था। टोपी और कालर एक दूसरे से पेंच द्वारा कस दिए गए। मेरी गर्दन के पास हवा से भरा लोहे का संदूक लगा दिया गया। जैसे ही मेरी नाक से उस बक्स की नली जोड़ी गए, मैं उसकी हवा से सांस लेने लगा। मुझे शिकार की सारी सामग्री लालटेन आदि दे दी गई। इस पोशाक में अवगुण यह था कि यह बहुत भारी थी। इसको पहन मैं आसानी से चल फिर न सकता था। मैं ढकेलकर दूसरे कमरे में कर दिया गया। वही हाल मेरे साथियों का हुआ। मुझे अपने पीछे दरवाजा बंद होने की आवाज सुनाई दी। हम लोगों के चारों ओर घोर अंधकार छा गया।

थोड़ी ही देर बाद एक तेज सीटी सुनाई पड़ी। कोठरी में नलों द्वारा पानी भरने लगा। शरीर शीतल होता मालूम पड़ा। 'नाटिलस' के दूसरी ओर का दरवाजा खुला। धुंधली रोशनी हुई। थोड़ी ही देर बाद हम लोग समुद्र की तलहटी पर थे।

समुद्री तलहटी का दृश्य इतना सुंदर था कि उसका वर्णन करने के लिए लेखक क्या, कुशल चित्रकार भी उसे अंकित करने में असमर्थ रहेगा।

कप्तान नेमो पानी में पैदल ही आगे बढ़े। उनका साथी उनके पीछे हो लिया। कनसील और मैं उनसे थोड़ी दूर पास-पास रहे। जल के अंदर कपड़ों, जूतों, टोपी तथा हवा भरे संदूक का भार मालूम न होता था।

रोशनी से समुद्री सतह के ३० फुट नीचे की जमीन काफी प्रकाशमान थी। १२० गज तक की वस्तुएं साफ-साफ दिखाई पड़ रही थीं। चारों ओर का पानी हवा जैसा मालूम पड़ रहा था। अंतर केवल इतना था कि हवा से कुछ अधिक घना था। जल अत्यंत पारदर्शी था। मेरे ऊपर भी पानी भरा दिखाई पड़ता था। हम लोग लहरों पर नहीं—चमकदार बालू पर चल रहे थे। उस बालू पर हम लोगों के पद-चिन्ह भी बनते जाते थे। सूरज की किरणें तेजी से चमक रही थीं। मैं इस तीस फुट की गहराई में बिल्कुल साफ देख सकता था।

हम लोग लगभग १५ मिनट तक इसी चमकदार बालू पर चलते रहे।

'नाटिलस, धीरे-धीरे अदृश्य हो गई। मैंने अपना मुंह पीछे फेर कर देखा कि मेरे पदचिह्न पानी के दबाव के कारण

थोड़ी देर में लुप्त हो जाते हैं ।

थोड़ी देर बाद हम लोग एक शानदार चट्टान के पास पहुंचे । इस समय दिन के दस बजे होंगे । समुद्र की तरंगें जब ऊपर उठतीं तथा उनके ऊपर सूर्य की किरणें पड़तीं, तो जान पड़ता कि दिखाई देने वाली चट्टानें, पेड़-पौधे, विभिन्न रंगों से रंगे हुए हैं । आंखों को यह दृश्य बहुत ही सुहावना लगता था । मेरी आंखों पर जो यंत्र चढ़े थे, उनमें विभिन्न रंगों के शीशे लगे थे । इन रंगीन शीशों द्वारा रंग की परछाईं रंगीन पुष्पों, पौधों और चट्टानों को और भी रमणीय बना रही थी ।

चार फर्लांग ही हम लोग आगे बढ़े थे कि समुद्री पेड़-पौधे दिखाई देने लगे । समुद्री तलहटी पर हरे-भरे पौधे दिखाई पड़ते थे । बीच में कुछ लाल-लाल फूलों के पेड़ थे । अधिक गहराई में काले-नीले तथा भूरे रंग की पुष्पवाटिकाएं भी सुशोभित थीं ।

इसी समय घड़ी बारह के निशान पर पहुंची । हमें 'नाटिलस' को छोड़े लगभग डेढ़ घंटा हो चुका था । धीरे-धीरे सूरज की किरणें धीमी पड़ती गईं । सुनहले रंग भी अदृश्य होने लगे । मैं धीरे-धीरे और आगे बढ़ता गया । पैरों की ध्वनि मुझे यहां स्थल से अधिक तीव्र सुनाई देती थी । कारण यह था कि हवा से पानी चार गुणा अधिक अच्छा ध्वनि-चालक होता है ।

धीरे-धीरे समुद्री तलहटी ढालू हो गई । प्रकाश भी धीमा होता गया । अब हम लगभग ३०० फुट की गहराई में पहुंच गए थे । हमारे ऊपर १० गुणा वायुमंडल का दवाव पड़ रहा था, परंतु जल के अंदर होने के कारण इस दबाव का आभास

न होता था। केवल उंगलियों के जोड़ों में कुछ तकलीफ थी। पानी के भीतर इस लंबी यात्रा को देखते थकावट बिल्कुल जान नहीं पड़ती थी। चलने में पानी के कारण काफी सुविधा थी।

किरणें अब भी दिखाई पड़ रही थीं, परंतु बिल्कुल धुंधली व डूबते हुए सूरज के कारण कुछ लाल-सी हो गई थीं। रास्ता साफ दिखाई पड़ रहा था। अभी लालटेनें जलाने की आवश्यकता न थी।

मैं कप्तान नेमो से कुछ पीछे रह गया था। यह देख कप्तान रुक गए। जब हम लोग उनके पास तक पहुंचे, उन्होंने उंगली से थोड़ी दूर की एक काली वस्तु की तरफ इशारा किया।

यही क्रेस्पोद्वीप के जंगल थे।

१७

अंत में हम लोग क्रेस्पो द्वीप के जंगलों के किनारे पर पहुंच गए थे। यह वास्तव में कप्तान नेमो के साम्राज्य में सबसे अच्छे जंगल थे। वह इन जंगलों को अपना ही समझते थे। इनमें उनका हिस्सा बटाने वाला वहां था ही कौन? इस जंगल में अधिकतर झाड़ी जैसे पौधे ही थे। ज्योंही मैं अंदर घुसा, पहले तो मेरी दृष्टि इस पेड़ों की सीधी टहनियों पर पड़ी।

यह टहनियां झुकी-आड़ी, सीधी-तिरछी, सभी प्रकार की थीं। समस्त पेड़ लोहे की छड़ जैसे थे। यदि मैं किसी

पौधे को तिरछा कर झुका देता, तो थोड़ी देर पश्चात वह फिर अपनी असली अवस्था में आ जाता था।

देखने से पता चला कि इन पेड़ों की जड़ें न थीं। पेड़ वालू, सीपों या चट्टानों पर ही खड़े थे। अपने जीवन की शक्ति केवल जल से ही ग्रहण करते थे। यहां टहनियां ही टहनियां दिखाई पड़ती थीं। पत्तियां बहुत ही कम थीं। शाखाएं एक रंग की नहीं, वरन काली, भूरी, लाल-गुलाबी रंग की थीं।

एक प्रकृति विशेषज्ञ ने कहा है—'जहां जानवरों का राज्य होता है, वहां हरी वनस्पति नहीं रह सकती।'

यहां के अधिकतर वृक्ष लंबे थे। वृक्षों के नीचे घास जैसी हरियाली थी। इनकी टहनियों पर फूल खिले थे। तिति-लियों जैसी मछलियां स्थलीय चिड़ियों की तरह, एक टहनी से दूसरी टहनी पर उड़ कर बैठ जाती थीं।

लगभग एक बजे कप्तान ने रुकने का आदेश दिया। मुझे यह आदेश सुन अत्यंत प्रसन्नता हुई। मैं एक ऊंचे पेड़ के नीचे लेट गया। नीचे की नुकीली घास मेरे शरीर को तीर जैसा छेद रही थी।

थोड़ी देर का आराम मुझे अच्छा लगा। बातचीत करने के अतिरिक्त और किसी चीज की कमी न थी। बोलना बिल्कुल असंभव था। मैं केवल अपना मुंह कनसील के मुंह के पास ले जा सकता था। मैंने कनसील की आंखें देखीं। उनसे उसका संतोष प्रकट हो रहा था। वह अपनी बेढंगी पोशाक में इधर-उधर घूम रहा था।

मुझे आश्चर्य था कि इन चार घंटों की यात्रा के बाद भी भूख न लगी थी, केवल नींद मालूम पड़ रही थी। मैं

मोटे शीशे के अंदर आंखें बंद कर सो गया । कप्तान नेमो तथा उसका वीर साथी दोनों वहीं पड़ोस की चट्टान पर लेट कर सो गए ।

नहीं जानता कि मैं कितनी देर सोया । पर जब जगा तो देखा कि सूर्य क्षितिज के पास डूबता जान पड़ रहा था । कप्तान नेमो उठकर चलने को तैयार हो रहा था । मैं भी अचानक जग पड़ा तथा चलने की तैयारी करने लगा । कुछ ही कदम दूर एक भयानक समुद्री मकड़ा तिरछी आंखों से मुझे देख मेरे ऊपर झपटने को तैयार था । यह मकड़ा तीन फुट से अधिक ऊंचा था । यद्यपि मेरी पोशाक इस जानवर के काटने से बचने के लिए काफी मोटी थी, फिर भी मैं डर गया । कनसील तथा 'नाटिलस' का खलासी अभी-अभी सोकर जगे थे । कप्तान ने मकड़े को अपनी बंदूक के कुंदे से मार डाला ।

इस दृश्य से मेरे दिल में शंका हुई कि इससे भी अधिक भयानक जीव इस गहरे समुद्र में मिल सकते होंगे, और मेरी पोशाक उनके हमले से शायद न बच सके । मैंने ऐसा पहले कभी न सोचा था । यह ध्यान में आते ही मैंने अपनी रक्षा का निश्चय किया । मैं समझता था कि यहां रुकने के बाद कप्तान शिकार करके 'नाटिलस' को वापस चले जाएंगे, परंतु कप्तान 'नाटिलस' की ओर घूमने की बजाय आगे बढ़े ।

लगभग ३ बजे शाम को हम लोग दो पहाड़ियों के बीच ७५ फैदम गहराई में एक घाटी में पहुंचे । मेरी गर्दन पर बंधे संदूक के कारण हम लोग मनुष्य द्वारा निश्चित गहराई से ४५ फैदम अधिक गहराई में पहुंच गए थे ।

मैं जानता था कि हम कितनी गहराई में हैं । अब

अधिक अंधेरा मालूम पड़ता था। यहां तक कि १० फैदम दूर की वस्तु दिखाई ही न पड़ती थी। कप्तान नेमो ने अपना बिजली का लैंप जला लिया। हम सभी ने उनका अनुकरण किया। इन लालटेनों की रोशनी में ७५ फुट तक चारों ओर की चीजें चमकने लगीं।

कप्तान नेमो अब भी अंधेरी गहराई में, जंगल के अंदर घुसता चला जा रहा था। वृक्ष धीरे-धीरे कम पड़ने लगे तथा जानवर अधिक संख्या में मिलने लगे। कप्तान कभी-कभी निशाना साधते; परंतु न तो जानवर ही नजदीक आता था और न कप्तान बंदूक ही चलाते।

अंत में लगभग ४ बजे यह यात्रा समाप्त होनेवाली थी। एक चट्टान की दीवार हम लोगों के सामने आगई। दीवार इतनी ऊंची थी कि उसका पार करना कठिन था। यही क्रेस्पो का द्वीप था। कप्तान एकाएक रुक गए। हम लोग भी उन्हीं के इशारे पर रुक गए। यही कप्तान नेमो के साम्राज्य की अंतिम सीमा थी।

हम लोग वापस लौटे। हमने देखा कि जिस रास्ते से हम लोग आए थे, उसी से नहीं, किसी अन्य मार्ग से वापस जा रहे थे। इस रास्ते पर चढ़ाई अधिक थी। थोड़ी ही देर बाद प्रकाश बढ़ने लगा। सूर्य बिल्कुल क्षितिज के समीप पहुंच चुका था। जब हम लोग ३० फुट की गहराई तक वापस आ गए, तो हमें विभिन्न प्रकार की मछलियां दिखाई पड़ने लगीं, परंतु शिकार करने योग्य कोई जीव अब भी न दिखाई पडा। इसी समय कप्तान ने बंदूक चलाई। एक जीव हम लोगों से कुछ ही कदम दूर गिरता दिखाई पड़ा। यह जीव समुद्री गेंडा था। यही एक ऐसा चौपाया जानवर है, जो केवल समुद्र में ही

जीवित रह सकता है। यह जीव ५ फुट लंबा था। इसकी खाल ऊपर से भूरी तथा नीचे चांदी जैसी चमकदार थी। इतनी सुंदर खाल की कीमत ८० पौंड से कम क्या होगी। इसका गोल चेहरा, छोटे कान, गोल आंखें, बिछे हुए पंजे, बड़े-बड़े दांत तथा पूंछ अत्यंत सुंदर होती है। कप्तान के साथी ने इसको अपने कंधे पर लाद लिया। हम लोग आगे चले।

आगे चल हमें बालू के मैदान मिले। उस पर हम लोगों की छाया स्पष्ट दिखाई पड़ती थी। पानी इतना स्वच्छ था कि समुद्री सतह पर तैरते बड़े पक्षियों की छाया बालू पर साफ-साफ दिखाई पड़ रही थी।

एक बड़े पंख वाली चिड़िया हम लोगों के ऊपर उड़ रही थी। वह इस समय समुद्री सतह की लहरों से कुछ ही ऊपर थी। कप्तान के साथी ने निशाना लगाकर बंदूक चलाई। चिड़िया गिर पड़ी। तारीफ यह है कि चिड़िया शिकारी की ही गोद में आ गिरी। यह बहुत अच्छा निशाना था।

मैं बहुत थक गया था। कोई आधा मील दूर मुझे एक धीमी-धीमी रोशनी दिखाई पड़ी। अब केवल बीस मिनट की यात्रा बाकी रह गई थी। आक्सीजन के संदूक में आक्सीजन भी कुछ कम मालूम होती थी। मुझे सांस लेने में थोड़ी तकलीफ हो रही थी। हम लोग करीब बीस कदम ही आगे बढ़े थे कि कप्तान ने मुझे उठाकर समुद्र तलहटी पर लिटा दिया। कप्तान के साथी ने कनसील को भी ऐसे ही लिटा दिया। पहले तो मैं इसका कारण न समझ पाया था, परंतु कप्तान को अपनी बगल में लेटा देखकर मुझे धैर्य हुआ। हम लोग एक झाड़ी की आड़ में लेटे हुए थे। मैंने देखा कि मेरे

ऊपर फासफोरस की चमक पड़ रही थी। दूसरे अनेक जल-जंतु पास से शोर मचाते जा रहे थे।

मैं अत्यंत डरा हुआ था। मुझे दो भयानक मछलियां दिखाई दीं। वे हम पर हमला करने वाली थीं। उनके कई पूंछें थीं। बड़े-बड़े दांत तथा बड़ी-बड़ी आंखें थीं, जिनमें रोशनी चमक रही थी। यह भयानक जीव मनुष्य को पूरा-का-पूरा निगल सकता है। मैं तो जान न पाया था कि वह किस जाति का था, शायद कनसील ने कुछ अनुमान लगाया हो। मैंने उनके केवल चांदी जैसे रंग का पेट, बड़े बड़े मुंह तथा भयानक दांत देखे। हम लोग उसके लिए प्रकृति-विशेषज्ञ तो क्या, एक अच्छे शिकार अवश्य थे।

हम लोग बड़े ही भाग्यशाली थे कि इनके चंगुल से बच सके। यह खतरा किसी घने जंगल में शेर मिलने से किसी प्रकार कम न था।

आधे घंटे बाद हम लोग 'नाटिलस' पर पहुंच गए। बाहर का दरवाजा अब भी खुला था। हम लोग उसी जल-युक्त कोठरी में घुस गए। कप्तान ने बाहरी दरवाजा बंद कर दिया। उसने एक बटन दबाया। पानी के नल पानी को बाहर निकालने लगे। थोड़ी ही देर में वह कोठरी बिल्कुल खाली हो गई। अंदर का दरवाजा खुला, हम लोग उसी पोशाक वाले कमरे में दाखिल हुए।

इस कमरे में हम लोगों ने गोताखोरी की पोशाकें उतार डालीं। हम लोग थके हुए तथा अत्यंत भूखे थे। मैं अपने कमरे में वापस चला आया। समुद्र के अंदर की इस यात्रा पर मुझे अत्यंत आश्चर्य हुआ।

१८

दूसरे दिन १८ नवंबर की प्रातः जब सोकर उठा, तो सारी थकावट दूर थी। ऊपर चढ़कर 'नाटिलस' के चबूतरे पर गया। वहां कप्तान का वही नौकर रोज की भांति अपनी भाषा में कुछ कहता मिला। उसकी भाषा मैं बिल्कुल ही समझ न पाया था।

समुद्र बहुत ही स्वच्छ था। क्रेस्पो द्वीप की स्मृति तो अब धुंधली हो गई थी, पर वहां के इंद्रधनुष जैसे रंग अब भी आंखों के सामने घूम रहे थे। इन्हीं के विषय में सोच रहा था कि कप्तान नेमो पधारे। वे शायद मुझे देख न पाए थे। आते ही उन्होंने कई यंत्रों द्वारा समुद्र पर नाव की स्थिति के संबंध में कई परीक्षण किए, और फिर चुपचाप बैठ समुद्री सतह देखने लगे। इसी बीच लगभग 'नाटिलस' के बीस खलासी चबूतरे पर आए। वे शायद समुद्र में बिछे जाल को खींचने आए थे। ये लोग यूरोपियन तो जान पड़ते थे, पर न जाने किन देशों के थे। वे लोग बहुत ही थोड़ा बोलते थे, परंतु जो कुछ कहते थे, वह गंभीर तथा मुहावरेदार होता था। मैं इसमें से कुछ भी समझ न पाता था। इसी कारण मैं उनसे कोई प्रश्न करना उचित न समझता था।

रात के बिछाए हुए जाल खींच लिए गए। मैं समझता हूं कि उनमें उस रात नौ सौ से अधिक मछलियां फंसी थीं। मैंने सोचा कि अब खाने की कोई कमी न रहेगी। सब मछलियां नाव के भंडार-घर में लाई गई। कुछ तो ताजा ही खाने योग्य थीं तथा कुछ रक्खी जा सकती थीं।

मछली पकड़ना बंद कर के 'नाटिलस' की हवा बदल दी गई। ऐसा देख मैंने सोचा 'नाटिलस' दूसरी यात्रा की तैयारी में थी। मैं अपने कमरे की ओर लौटने ही वाला था कि कप्तान ने मेरी ओर घूम कर कहा, "प्रोफेसर, क्या समुद्री जीवन ही वास्तविक जीवन नहीं है? यह कभी बहुत शांत हो जाता है, कभी कभी अधिक उथल-पुथल मचाने लगता है। कल हम लोगों की भांति यह भी सोया था। आज जग पड़ा है।"

कुछ देर चुप रह कर उसने फिर कहा, "समुद्र सूर्य के प्रभाव से जग पड़ता है। इसके भी शिराएं तथा नाड़ियां होती हैं। मैं माउरी के इस कथन से सहमत हूं कि जानवरों के खून की चाल की भांति समुद्र की भी चाल है। समुद्र में गति है। इस गति को चालू रखने के लिए भगवान ने उसे उष्णता, नमक इत्यादि वस्तुएं दे रक्खी हैं। आपको ध्रुवों पर इनके प्रमाण दिखाई पड़ते हैं। प्रकृति का नियम है कि पानी सतह के अतिरिक्त और कहीं नहीं जमता।"

कप्तान यह वाक्य पूरा ही कर रहे थे कि मैं बोल उठा, "ध्रुव? क्या अब आप हम लोगों को ध्रुवों की ओर ले जाना चाहते हैं?"

कप्तान थोड़ी देर चुप रहा, फिर मेरी बात अनसुनी करके बोलने लगा, "समुद्र में काफी नमक होता है। यदि हम सारे समुद्र का नमक एक जगह इकट्ठा करें, तो साढे चार करोड़ वर्ग मील में उसका ढेर लगे। और यदि सारे विश्व में फैला दिया जाय, तो तीस फुट की एक तह बने। समुद्र के जल में नमक होने से समुद्र का जल भाप बन कर बहुत कम

उड़ता है।"

थोड़ी देर डेक का चक्कर लगाकर वे फिर बोले, "प्रोफे-सर ऐरोनेक्स, क्या आप जानते हैं कि समुद्र कितना गहरा है?"

"मैंने जो कुछ इस यात्रा में देखा है, वही जानता हूं।"

"क्या आप मुझे वही बता सकते हैं ?"

मैंने उत्तर दिया, "मैंने जो जांच की है, वह इस प्रकार है:—उत्तरी अतलांतिक महासागर की औसत गहराई ८२०० मीटर है, भूमध्यसागर की २५० मीटर, दक्षिणी अतलांतिक की १२०० मीटर तथा कहीं-कहीं १४०८१ मीटर, और कहीं इससे भी अधिक। इस प्रकार समुद्र की तलहटी तक की औसत गहराई ५ मील है।"

कप्तान नेमो उतरकर नीचे चला गया। मैं भी साथ पीछे-पीछे गया। चरखी चालू हो गई। 'नाटिलस' २० मील प्रति घंटे की चाल से दौड़ने लगी। उसके बाद कई दिन कप्तान मुझे दिखाई ही न पड़ा। कनसील और नेड मेरे पास घंटों बिताने लगे। कनसील ने अपने मित्र से शिकार वाली यात्रा का वर्णन किया। नेड को उसके साथ न जाने का अत्यंत खेद था। दिन में कई घंटों तक कमरे की खिड़कियां खुली रहतीं तथा मैं समुद्र का दृश्य देखता रहता था।

'नाटिलस' इस समय उत्तर-पूर्व दिशा में जा रही थी। हमने भूमध्य-रेखा पहली दिसंबर को पार की। इस लंबी यात्रा में मुझे माक्केमा मछलियों के अतिरिक्त और कोई विचित्र चीज दिखाई न पड़ी। तीन मील दूर मैंने क्षितिज के पास कुछ वनाच्छादित पर्वत देखे। कप्तान नेमो किसी देश के नजदीक न जाना चाहते थे, इसीलिए इसी जगह मछलियों के जाल डलवा

दिए। इन जालों में विभिन्न प्रकार की मछलियां फंसीं। उनसे हम लोगों के लिए भोजन तैयार किया गया।

इन द्वीपों के बाद ४ से ११ दिसंबर तक हम लोगों ने २००० मील की यात्रा की। इस यात्रा में छोटी मछलियों के हजारों झुंड मिले। ये ठंडे समुद्रों की तरफ से गरम समुद्रों की ओर जाते दिखाई देते थे। मैंने इनको कांच की खिड़कियों से देखा, तो पता चला कि वह एक दूसरे का पीछा करते, बड़े छोटों को खाते और आपस में लड़ते-झगड़ते तेजी से तैरते जा रहे थे।

यह यात्रा दूसरी यात्राओं से भिन्न थी। इसके दृश्य पहले से भी अधिक सुहावने थे। प्रकृति ने हमें अपने समुद्री रहस्य को दूर से देखने का ही नहीं, वरन बीच में घुस कर उसके भयानक रहस्य का पता लगाने का भी अवसर प्रदान किया था।

११ दिसंबर को दिन में मैं कमरे में बैठा एक पुस्तक पढ़ रहा था। नेड और कनसील अध-खुली खिड़की से चमकदार पानी में नजारे देख रहे थे।

'नाटिलस' लगभग ३००० फुट की गहराई में थी। इस जगह केवल बड़ी-बड़ी मछलियों का ही राज्य था। मैं पुस्तक पढ़ ही रहा था कि कनसील ने जोर से मुझे पुकारा, "स्वामी जरा जल्दी से यहां आइए।" मैं तुरंत उठकर खिड़की के पास गया और देखा, कि एक बड़ा सा काला पदार्थ बिजली के प्रकाश में पानी के बीच अचल पड़ा है। मैंने उसे ध्यान से देखा, तो मालूम हुआ कि यह कोई डूबता हुआ जहाज है।

मैं चिल्लाया, "जहाज !"

नेड ने उत्तर दिया, 'मालूम होता है डूब रहा है।"

"नेडलैंड तुम ठीक कहते हो।"

हम लोग इस समय एक ऐसे जहाज के नजदीक थे, जो अभी-अभी कुछ ही घंटे पहले डूबा मालूम देता था। उसका अग्रभाग अभी ठीक था। इसके एक ओर से पानी इसके अंदर भर रहा था। अनेक लाशें जहां-तहां झूलती दीख रही थीं। एक आदमी पतवार पर बैठा था। एक नौजवान औरत गोद में बच्चा लिए उसी के पास खड़ी थी। उसका चेहरा 'नाटिलस' की रोशनी में साफ-साफ दिखाई पड़ रहा था। पानी ने उसके नाक-नक्श को अभी बिगाड़ा न था। अपने अंतिम यत्न में उसने बच्चे को ऊपर उठाया। बच्चे की बांह मां के गले में थी। बच्चा दोनों हाथों से अपनी मां की गर्दन से लिपटा था। मां का ख्याल था शायद इस प्रकार उसका बच्चा बच जाय। खलासी भी बहुत डरे हुए दीखते थे। वह भी जहाज का यह दयनीय दृश्य देख, समुद्र में कूदने का प्रयत्न कर रहे थे; परंतु साहसी पतवारिया अब भी शांतिपूर्वक पतवार का पहिया पकड़े अपने भूरे बालों तथा गंभीर चेहरे द्वारा साहस का परिचय दे रहे थे, मानो वे डूबे जहाज को निकाल कर ले जाना चाहते हों।

कैसी दर्दनाक घटना थी! इसे देख हम लोग स्तब्ध रह गए। पतवरिए का साहस तथा उस युवती का बच्चे से प्रेम, मेरे दिल में वेदना पैदा कर रहा था। घूम कर मैंने देखा, तो 'नाटिलस' उस डूबते हुए जहाज की तरफ तेजी से जा रही थी।

जहाज के पास पहुंच 'नाटिलस' ने उसकी परिक्रमा की। मैंने देखा कि पिछले भाग पर 'फ्लोरिडा संडरलैंड' लिखा था।

१९

खिड़कियों में लगे अद्भुत शीशों से 'नाटिलस' के आगे आने वाले दृश्य सामने आने लगे। 'नाटिलस' इस समय उन सागरों से होकर गुजर रही थी, जहां सैकड़ों जहाजों का रास्ता था। इसी कारण समुद्र की तलहटी पर उनके अनेक भग्नावशेष, तोपें, बंदूकें, लंगर, जंजीरें, तमाम लोहे-लंगड़ पड़े दिखाई दे रहे थे, जिन्हें जंग खा रहा था।

हम लोग 'नाटिलस' में प्रतिदिन की भांति अपना जीवन बिताते रहे। ११ दिसंबर को हमें पोमोटाऊ का द्वीप समूह दिखाई पड़ा। यह द्वीप मूंगे के बने हुए हैं। मूंगा बनाने वाले कीड़ों के अनवरत परिश्रम के फलस्वरूप इन द्वीपों की सतह रोज थोड़ा-थोड़ा ऊपर उठती जाती है, और अंत में द्वीप की आकृति धारण कर लेती है। यह द्वीप बाद को अन्य द्वीप समूहों से मिल जाएंगे, और एक दिन आपको एक नया पांचवां महाद्वीप, न्यूजीलैंड और न्यूकैलेडोनिया से मार्कवेसास तक फैला मिलेगा।

द्वीपों की रचना के इस सिद्धांत के विषय में जब कप्तान से मैंने बात की, तो उन्होंने बहुत धैर्य से उत्तर दिया, "विश्व को नए देशों की नहीं, नए मनुष्यों की आवश्यकता है।"

आगे बढ़ती हुई 'नाटिलस' क्लेमांट टोनरे द्वीप के पास आ गई थी। यह एक बहुत ही आश्चर्यपूर्ण द्वीपों का समूह है। इसका पता 'मिनर्वा' के कप्तान बेल ने सन् १८०२ ई० में लगाया था। इस श्रेणी के द्वीप साधारण मूंगे से बने हुए द्वीपों से भिन्न होते हैं, और चूने का एक रूप पैदा करने वाले छोटे-छोटे जीव

इनका निर्माण करते हैं। ये द्वीप अंगूठी के आकार के हैं तथा इनके बीच में एक झील है, जिसे अंग्रेजी में लैगून कहते हैं। इस प्रकार के द्वीप प्रायः न्यूकैलेडोनिया के तट के पास पाए जाते हैं। तीसरे प्रकार के वह हैं, जिनमें चारों ओर मूंगे की ऊंची सीधी दीवार है। पड़ोस का समुद्र बहुत गहरा रहता है। इसी प्रकार के रियूनियन और मारिस द्वीप हैं।

अब तीसरी श्रेणी वाला क्लेमांट टोनरे द्वीप कुछ ही दूर रह गया था। इसकी विचित्र दीवारों को हम पास से देख सकते हैं। यह ९०० फुट ऊंचाई तक सीधी खड़ी थीं। हमारी नाव की बिजली के कारण उनका चूना बहुत तेजी से चमकता था।

कनसील ने पूछा, "इन दीवारों को बनने में कितना समय लगा होगा ?"

कनसील के इस प्रश्न के उत्तर में मैंने बताया कि ऐसी दीवार शताब्दी में केवल आधा इंच ही बढ़ती है।

उसने कहा, "तब तो इन दीवारों को बनने में बहुत काफी समय लगा होगा।"

"कनसील, ४,९२,००० वर्ष में यह दीवार बनी है। इसके नीचे दबे जंगलों में कोयले तथा अन्य धातुओं की खानें बनने में इससे भी अधिक समय लगता है।"

जब 'नाटिलस' समुद्र तल पर वापस आई, तब मैंने इस द्वीप के नीचे तथा जंगली भाग को देखा। आंधियों में उड़ कर पड़ोस के द्वीपों से मिट्टी, पत्तियां आकर इन चट्टानों पर जमा होने लगती हैं। कभी-कभी इस कूड़े-करकट में पास-पड़ोस के देश से बीज उड़कर इन चट्टानों पर गिर पड़ते हैं।

वे समुद्री लहरों द्वारा लाई हुई मछलियों और लताओं द्वारा ढक जाते हैं। इसी प्रकार वनस्पति पैदा होने के लिए जमीन बन जाती है। इसी से वृक्ष उत्पन्न हो जाता है, और भूमिगत पानी का वाष्पीकरण रुकने लगता है। इसी में चश्मे पैदा हो जाते हैं। वनस्पति धीरे-धीरे बढ़ने तथा फैलने लगती है। फिर दूसरे द्वीपों से हवा द्वारा उड़ाए गए कीड़े इन वृक्षों की टहनियों पर आ बैठते हैं। कछुए इसी पर अपने अंडे देते हैं। छोटे पक्षी इन्हीं छोटे-छोटे पेड़ों में अपने घोंसले बनाने लगते हैं। इसी प्रकार जीव-जंतु संख्या में बढ़ जाते हैं। प्रकृति की इस देन तथा जमीन की उर्वरा-शक्ति को देख मनुष्य इस पर आ बसते हैं। इस प्रकार छोटे-छोटे जीव-जंतुओं द्वारा इन द्वीपों की उत्पत्ति होती है।

धीरे-धीरे 'नाटिलस' का रास्ता बदलता गया तथा क्लेमांट टोनरे द्वीप दूर होता गया। १३५° देशांतर पर मकर रेखा पार कर 'नाटिलस' ने अपना रुख पश्चिमोत्तर-पच्छिम कर दिया। अब वह कर्क रेखा और मकर रेखाओं के बीच चल पड़ी। २५ दिसंबर को 'नाटिलस' न्यू हेब्रिडीज के मध्य दौड़ रही थी। इसका पता कप्तान कुक ने १७३७ ई० में लगाया था।

इस दिन क्रिसमस का त्योहार था। नेड ने अत्यंत उदासी से कहा, कि यह महान पर्व जिस प्रकार अपने देश में मनाता था, यहां न मना सकूंगा।

मैंने कप्तान नेमो को एक सप्ताह से न देखा था। एकाएक २७ दिसंबर को प्रातः उसने कमरे में प्रवेश किया। इस समय मैं समुद्री नक्शे में 'नाटिलस' का मार्ग देख रहा था।

कप्तान ने पीछे से इन नक्शों में एक स्थान पर उंगली रक्खी और कहा, "वेनीकोरो द्वीप की तरफ।"

यह द्वीप बहुत ही आश्चर्यजनक है। यह वही द्वीप है जहां पिछले वर्षों में 'ला पेरोज' नाम का जहाज टकरा कर चूर चूर हो गया था।

मैंने तुरंत पूछा, "क्या हम लोग 'वेनीकोरो द्वीप' को ही जा रहे हैं?"

कप्तान ने उत्तर दिया, "हां, प्रोफेसर।"

"क्या मैं उन स्थानों को, जहां 'बाउसोल' और 'एस्ट्रोलेब' जहाजों ने अपनी बलि दी थी, देख सकूंगा?"

"प्रोफेसर, यदि आप चाहेंगे तो अवश्य देख सकेंगे?"

"हम लोग 'वेनीकोरो' कब पहुंचेंगे?"

"प्रोफेसर, हम लोग वहीं पर आ पहुंचे हैं।"

कप्तान नेमो के साथ मैं भी 'नाटिलस' के चबूतरे पर चढ़ गया। वहां हमने चारों ओर क्षितिज को बड़े चाव से देखा। उत्तर-पूर्व की ओर लगभग ५० मील परिधि के, मूंगे की चट्टानों द्वारा घिरे हुए तथा ज्वालामुखी द्वारा निर्मित दो द्वीप दिखाई पड़े। यही 'वेनीकोरो' द्वीप था। उसकी जमीन किनारे से चोटी तक हरियाली से ढकी थी। बीच में ३००० फुट ऊंची कपोगो पर्वत की चोटी दिखाई पड़ रही थी।

'नाटिलस' इस द्वीप की चट्टानों की बाहरी परिधि एक तंग रास्ते द्वारा पार करके अंदर घुसी। यहां समुद्र ३० से ४० फैदम तक गहरा था। आदमी द्वारा बनाई गई फुलवाड़ियों के वृक्षों के नीचे कुछ जंगली मनुष्य दिखाई पड़े। वे हम लोगों को देख अत्यंत चकित हो, चीत्कार करने तथा इधर-उधर

भागने लगे । कप्तान नेमो ने मुझसे पूछा कि आप 'ला-पेरोज' जहाज के नष्ट होने के बारे में क्या जानते हैं।

मैंने कहा, "कप्तान, जो आप लोग जानते हैं, वही मैं भी जानता हूं।"

"जो हम लोग जानते हैं, आप वही बताएं।"

"बहुत अच्छा।"

तुरंत ही मैंने उस यात्रा की सरकारी रिपोर्ट संक्षेप में सुनाई। वह इस प्रकार थी :—

"सन् १७८५ ई० में १६वें लुई ने ला पेरोज तथा दूसरे कप्तान लैंगेल को विश्व-यात्रा के लिए भेजा था। वे अपनी यात्रा के लिए 'बाउसोल' तथा 'एस्ट्रोलेब' जहाज ले गए थे। उसके बाद इन जहाजों का कोई समाचार नहीं मिला।"

कप्तान नेमो ने कहा, "आप उस टूटे जहाज के जहाजियों द्वारा वेनीकोरो द्वीप में बनाए गए तीसरे जहाज का पता नहीं जानते ?"

"नहीं।"

कप्तान नेमो ने इसके बाद कुछ भी न कहा तथा मुझे अपने साथ कमरे को जाने का इशारा किया। 'नाटिलस' अब समुद्र की तरंगों में घुस पानी में समा गई थी। खिड़कियां खुल गईं। उनसे झांकने पर टूटे हुए जहाज के लोहे के लंगर, तोपें तथा अन्य वस्तुएं दिखाई पड़ रही थीं।

कप्तान नेमो ने कहा, "कप्तान ला पेरोज ने बाउसोल और एस्ट्रोलेब से यात्रा आरंभ की और पहले-पहल बोटनी की खाड़ी में लंगर डाले। वहां से उसने फ्रेंडली द्वीप, न्यूकैले-डोनिया तथा सांताक्रूज द्वीपों का अन्वेषण किया। फिर नमौका

द्वीप की ओर गए। वहीं से उनके दोनों जहाज इस अज्ञात वेनीकोरो की चट्टान के पास आ पहुंचे। 'वाउसोल' आगे-आगे था। वह वेनीकोरा के दक्षिणी किनारे से टकरा गया। एस्ट्रोलेब फिर उसकी सहायता के लिए गया। वह भी दक्षिणी किनारों से टकरा गया। पहला जहाज तुरंत ही नष्ट हो गया। दूसरा जहाज हवा के कारण कुछ दिन तक तैरता रहा। वहां के निवासियों ने इन जहाजियों का काफी सत्कार किया। जहाजी लोग द्वीप पर रुक गए। उन्होंने इन दोनों जहाजों के भग्नावशेष इकट्ठा करके एक छोटा-सा जहाज बनाया। कुछ खलासी तो इसी वेनीकोरा द्वीप में ही रहने लगे तथा कुछ बीमारी के कारण कप्तान ला पेरोज के साथ उसी छोटी नाव पर अपने देश को रवाना हुए। उन्होंने सालोमन द्वीप की तरफ अपनी यात्रा आरंभ की। वह नौका भी इसी द्वीप-समूह के मुख्य द्वीप के पश्चिमी किनारे से टकराकर चूर-चूर हो गई।"

मैंने कहा, "और आपको यह सब कैसे मालूम हुआ ?"

"मैंने यह सब स्वयं ही देखा था, और अंतिम जहाज के टूटने के बाद मुझे यह सब प्राप्त हुआ था।"

कप्तान नेमो ने एक फ्रांसीसी मुहर लगी हुई टीन का बक्सा दिखाया। उसे खोलने से मालूम हुआ कि उसके अंदर कुछ पीले-पीले कागज थे, जो अब भी पढ़े जा सकते थे। उनमें ला पेरोज के लिए कुछ आदेश थे। कागज के नीचे किनारे पर लुई १६वें के हस्ताक्षर थे।

२०

इतने समय तक 'नाटिलस' अपनी तेज चाल से दौड़ती रही, परंतु अभी तक कोई दुर्घटना न हुई थी। २२ जनवरी को हम लोग अपनी यात्रा के प्रारंभ में जापानी समुद्र से ११३४० मील पर थे। इस समय 'नाटिलस' उस भयानक तट से, जहां कप्तान कुक का जहाज १० जुलाई को चूर चूर हो गया था, कोई दो तीन मील ही दूर थी।

कोरेल समुद्र को पार करने के दो ही दिन बाद ४ जनवरी को मुझे 'पापुआ द्वीप' के तट दिखाई पड़े। इस समय कप्तान ने मुझसे बताया कि वह टोरस जलडमरूमध्य से होकर हिंद-महासागर में प्रवेश करना चाहते हैं।

टोरस जलडमरूमध्य विश्व का सबसे अधिक खतरनाक समुद्री स्थान समझा जाता है, क्योंकि इसमें अत्यंत छोटे छोटे द्वीप तथा चट्टानें हैं। यहां जहाज का चलना ही कठिन हो जाता है। कप्तान नेमो ने इसको पार करते समय सबको उचित चेतावनी दी। 'नाटिलस' अब समुद्री सतह पर धीरे-धीरे चलने लगी। इस समय मैं अपने दोनों साथियों को सूने चबूतरे पर चला गया। मेरे सामने पतवारिए का शीशे का पिंजड़ा था। कप्तान नेमो स्वयं ही 'नाटिलस' को चला रहे थे। 'नाटिलस' के चारों ओर समुद्र बड़ा भयानक था। 'नाटिलस' इस समय दक्षिण-पच्छिम से उत्तर-पूर्व की ओर ढाई मील प्रति घंटा की चाल से जा रही थी।

नेडलैंड ने मुझसे कहा, "यह सागर कैसा भयानक है।"

मैंने उत्तर दिया, "बहुत अधिक, और खासतौर से

'नाटिलस' के चलने योग्य नहीं है ।"

नेडलैंड ने कहा, "कप्तान को यह रास्ता बहुत अच्छी तरह से मालूम होगा । नहीं तो जो चूने की चट्टानें दिखाई पड़ती हैं, वे कहीं 'नाटिलस' में छू भर जाएं, तो वह चूर चूर हो जाएगी ।"

यह समय बहुत ही खतरनाक था, परंतु 'नाटिलस' साधारण गति से चली जा रही थी ।

अपना रुख बदल 'नाटिलस' सीधे पश्चिम को घूम गई और गिलबोआ द्वीप की ओर जाने लगी । इस समय नौ बजे थे । समुद्र का ज्वार उठने ही वाला था, नाव द्वीप से दो मील दूर थी तथा किनारे की ओर बढ़ती चली जा रही थी । इसी समय मुझे एकाएक धक्का-सा मालूम हुआ । 'नाटिलस' एक चट्टान से टकरा गई थी, लेकिन अकस्मात उसे कोई हानि न हुई । वह धीरे धीरे किनारे की तरफ बढ़ती चली गई । आगे चल नाव एक चट्टान में फंस गई ।

मैं बहुत चिंताकुल हुआ खड़ा था कि कप्तान नेमो शांतिपूर्वक आया ।

मैंने कहा, "अब तो आपको स्थल पर उतरना ही होगा—जिससे आप अपना नाता तोड़ चुके हैं ।"

कप्तान नेमो ने विचित्र रूप से मेरी ओर देखा, और सिर हिलाकर इंकार किया ।

फिर कहा, "नाटिलस अभी नष्ट नहीं हुई है । यह आप को अभी फिर समुद्र पर ले चलेगी । यात्रा तो अभी शुरू ही हुई है ।"

मैंने उत्तर दिया, "लेकिन कप्तान नेमो, 'नाटिलस' तो

इस समय ऊंचे ज्वार के कारण चट्टान में फंस गई है, और प्रशांत महासागर में ज्वार अधिक ऊंचे नहीं होते । नाव यदि उतारी न जा सकी तो समुद्र में तैरेगी कैसे ?"

कप्तान ने कहा, "आपका यह कहना ठीक है कि प्रशांत महासागर में ऊंचे ज्वार नहीं आते, परंतु टोरस जलडमरूमध्य में ज्वार और भाटे में पांच फुट का अंतर होता है । आज ४ जनवरी है, पांच दिन में पूरा चंद्रमा निकलेगा । मुझे आशा है कि उस दिन काफी पानी ज्वार में उठेगा, और मेरी नाव समुद्र जल में उतराने लगेगी ।"

यह कह कर कप्तान नेमो नीचे नाव में चले गए । उन का साथी भी पीछे-पीछे चला गया । नाव अब भी अचल थी ।

कप्तान के चले जाने पर नेडलैंड मेरे पास आया तथा पूछा, "कहिए साहब, यह क्या मामला है ?"

"नेड, हमें ९ जनवरी तक ज्वार का धैर्य से इंतजार करना चाहिए । चंद्रमा हम लोगों को फिर समुद्र में बहा देगा ।"

"लेकिन कप्तान न तो लंगर ही उठवाता है, और न मशीन ही चलवाता है । नाव आगे बढ़े तो कैसे ।"

कनसील ने कहा, 'ज्वार ही इस काम के लिए काफी होगा ।"

नेडलैंड ने कहा, 'महाशय, विश्वास कीजिए, यह नाव अब कभी नहीं चल सकती । मैं सोचता हूं कि अब समय आ गया है, कप्तान नेमो से विदा मांग लें ।"

मैंने कहा, "मित्र नेड, मैं अभी 'नाटिलस' से निराश नहीं हुआ हूं । मैं चार दिन बाद ही कुछ निश्चय कर सकूंगा । यदि हम

यूरोप सागर में स्थल के निकट होते, तो हमारा भाग चलना बहुत अच्छा होता, पर इन पापुअन क्षेत्रों में परिस्थिति भिन्न है। यहां भागना तभी निश्चित करना चाहिए, जब हम लोग बिल्कुल समझ लें कि 'नाटिलस' यहां से किसी भी तरह जा नहीं सकती।

नेडलैंड ने उत्तर दिया, "एक द्वीप बिल्कुल निकट है। हम लोगों को वहां जा स्थल का आनंद लेना चाहिए।"

कनसील ने कहा, "नेड, यह ठीक है। मैं भी यही चाहता हूं। स्वामी, यदि हमें चंद्रमा पर ही भरोसा है, तो हम लोग कप्तान से आज्ञा लेकर उस द्वीप को चलें।"

मैंने उत्तर दिया, "हम इस के लिए कप्तान से पूछ सकते हैं, परंतु वह इंकार कर देंगे।"

कनसील ने कहा, "पूछ कर देख लेना चाहिए।"

मेरी आशा के विरुद्ध कप्तान ने हम लोगों को उस द्वीप पर जाने की आज्ञा सहर्ष दे दी। यहां तक कि हम लोगों से लौट आने का भी वचन न लिया। परंतु न्यूगिनी द्वीप में जाना अत्यंत कठिन था, इसी कारण मैंने नेडलैंड से एक बार न जाने का अनुरोध किया। उसके विचार में 'नाटिलस' में कैदी बनकर रहना अपने को जंगली जाति के पंजे में सौंपने से बहुत अच्छा था।

दूसरे दिन ५ जनवरी को एक नाव तैयार की गई। हम लोग—मैं, कनसील और नेड—यात्रा के लिए तैयार हुए। ८ बजे सुबह हम लोग अस्त्र-शस्त्र, कुल्हाड़ी इत्यादि लेकर 'नाटिलस' से नाव में उतरे। समुद्र बिल्कुल शांत था। स्थलीय ठंडी हवा चल रही थी। नाव तेजी से द्वीप की ओर



चल पड़ो।

नेडलैंड की खुशी का ठिकाना न था। वह अपने हिसाब से जेल से भागा हुआ कैदी था, जिसे फिर लौटकर आने की आवश्यकता न थी।

नेडलैंड ने कहा, "हम लोग वहां गोश्त खाने जा रहे हैं। गोश्त ही क्या, वहां तो एक अच्छा खेल भी होगा। मैं यह नहीं कहता कि मछली अच्छी चीज नहीं। मछलियां तो यहां काफी संख्या के मिल सकती हैं, परंतु ताजे गोश्त का आग में भुना हुआ टुकड़ा कितना अच्छा होगा।"

कनसील ने कहा, "तुम मेरे मुंह में पानी ला देते हो।"

मैंने कहा, "तुम अब भी नहीं जानते कि इन जंगलों में शायद ही कोई शिकार मिले। और यदि मिला भी तो बहुत संभव है, कि शिकार कहीं शिकारी को ही न शिकार बना डाले।"

नेड ने कहा, "हम चीता खाएंगे चीता, भले ही कोई दूसरा जानवर न मिले।"

कननील बोला, "नेड बहुत प्रसन्न है।"

नेडलैंड ने कहा, "जो भी जानवर मिला, पांव और बगैर पंख का हो, या दो पंजों वाला और पंखदार हो, मेरे पहले फायर से गिर पड़ेगा।"

मैंने कहा, "तुम अभी से डींगें हांकने लगे ?"

नेडलैंड ने उत्तर दिया, "महाशय, फिक्र न कीजिए। २५ मिनट में मैं अच्छे-से-अच्छा गोश्त तैयार कर दूंगा।"

हमारी नाव ठीक साढ़े आठ बजे द्वीप की ओर रवाना हुई।

२१

जमीन पर एक बार फिर पहुंचने के ख्याल ने मुझे बहुत उत्तेजित कर रखा था। नेड तो इस जमीन पर कब्जा ही कर लेना चाहता था।

थोड़ी ही देर में हम लोग द्वीप के निकट पहुंच गए। देखने से प्रतीत होता था कि द्वीप के बनने से बहुत काफी समय लगा होगा। सारा क्षितिज जंगलों से ढका था। इस जंगल में असंख्य ऊंचे-ऊंचे वृक्ष थे। कुछ तो २०० फुट तक ऊंचे थे। इसमें बबूल, सागौन तथा नारियल के वृक्ष अधिक मात्रा में थे। इन लंबे-लंबे पेड़ों के नीचे छोटे-छोटे पौधे अपनी छटा का प्रदर्शन कर रहे थे।

नेडलैंड ने इस प्राकृतिक-सौंदर्य की कुछ भी परवाह न की। एक नारियल के पेड़ पर चढ़ कर उसने कई नारियल तोड़े। उनको फोड़ उनका दूध पिया और गोला हम सब ने खाया। यह बहुत ही स्वादिष्ट मालूम पड़ा।

नेडलैंड ने कहा, "नारियल कितना अच्छा है।"

कनसील ने उत्तर दिया, "क्या कहना है।"

"मैं सोचता हूं कि हम लोग नारियल तोड़कर ले चलें, तो कप्तान को इसमें कोई ऐतराज न होगा।"

मैंने उत्तर दिया, "मैं ऐसा नहीं समझता, क्योंकि कप्तान स्वयं तो खाएंगे नहीं।"

कनसील ने कहा, "उनके लिए यह किस काम के ?"

नेडलैंड ने उत्तर दिया, "हम लोगों के लिए तो अच्छे हैं। कप्तान नहीं खाएंगे, तो हम लोगों के लिए ज्यादा बच जाएंगे।"

नेडलैंड दूसरे नारियल के पेड़ पर चढ़ने ही वाला था कि मैंने उससे कहा, "नेड, नारियल तो बहुत अच्छे हैं; परंतु हमें अपनी नाव नारियलों से भरने से पहले देख लेना चाहिए कि इस द्वीप में इससे अधिक अच्छी वस्तुएं तो नहीं हैं। शायद यहां हरे-हरे साग तथा फल होते हों। उन्हें ले चलने से 'नाटि-लस' में उनकी बड़ी कदर होगी।"

कनसील ने कहा, "आपकी यह बात ठीक है। मैं तो यह प्रस्ताव रखता हूं कि नाव के तीन भाग—एक फलों के लिए, दूसरा साग सब्ज़ी के लिए तथा तीसरा शिकार के लिए, खाली रख छोड़ना चाहिए। हमें अभी कोई शिकार तो मिला नहीं।"

नेडलैंड ने उत्तर दिया, "कनसील, तुम्हें हताश न होना चाहिए।"

मैंने कहा, "हम शिकार के लिए चलें। वैसे तो इस द्वीप में आदमी रहते मालूम पड़ते हैं, परंतु वे लोग इक्के-दुक्के होंगे। हम तीन हैं। हम शिकार अवश्य कर लेंगे।"

नेडलैंड ने कहा, "क्या खूब!"

कनसील बोला, "यह क्या, नेडलैंड?"

नेडलैंड ने उत्तर दिया, "मैं सोचता हूं कि मनुष्य मनुष्य को कैसे खाता होगा।"

कनसील ने उत्तर दिया, "नेड, तुम क्या बात कर रहे हो! यदि तुम मनुष्याहारी हो, तब तो मुझे अपनी कोठरी में तुम्हारे साथ रहना भी ठीक नहीं है। तब एक दिन तुम मुझे भी खा सकते हो।"

"मित्र कनसील, मैं तुमसे इतना प्रेम करता हूं कि खाने की तबीयत ही न होगी।"

कनसील ने हंसकर कहा, "मैं तुम्हारे ऊपर विश्वास नहीं करता। अब हम लोगों को यहां से चल देना चाहिए। मुझे इस मनुष्याहारी के लिए कोई शिकार मारना चाहिए, अन्यथा एक दिन यह मुझे ही खा जाएगा।"

यही बातें करते हम लोग जंगल के अंदर घुसे तथा दो घंटे तक घूमते-फिरते रहे। बड़ी तलाश के बाद एक बहुत ही लाभदायक वृक्ष मिला। इस वृक्ष से खाने का बहुमूल्य पदार्थ मिला, जो कप्तान के पास न मिल सकता था। इसे हम 'रोटी-वृक्ष' कह सकते हैं। गिलबोआ द्वीप में यह बहुतायत से पाया जाता है। यह वृक्ष औरों से भिन्न था। इसकी ऊंचाई केवल ४० फुट ही थी। इस वृक्ष में गोल, ढाई इंच व्यास के फल थे। इसका छिलका बहुत ही पतला होता है। जिन देशों में गेहूं नहीं पैदा होता, वहां खाने के लिए प्रकृति ने यह पेड़ पैदा कर रक्खा है। यह वृक्ष साल में ८ महीने फल देता है तथा इसकी चोटी पर मोटी-मोटी पत्तियों द्वारा छाते जैसा तना रहता है। नेडलैंड इन फलों को खूब जानता था, क्योंकि इसे उसने पिछली यात्रा में खाया था। उन्हें देख उसकी भूख बढ़ गई। वह अब अपने को न रोक सका।

नेड ने मुझ से कहा, "मैं यदि यह फल नहीं खाऊंगा, तो मैं मर जाऊंगा।"

"नेड, यह फल जितना तुम्हें पसंद है, उतना ही मुझे भी।"

नेड ने कहा, "इसे खाने में देर नहा लगेगी।"

उसनें चट सूखी-सूखी लकड़ियां इकट्ठा करके आग जला दी। फल कोयलों पर रखकर भूना। फिर बोला, "यह देखिए कितनी अच्छी और मजेदार छोटी-छोटी रोटियां हैं। यह

पकवान की तरह स्वादिष्ट हैं। क्या आपने कभी इन्हें खाया है ?"

कनसील ने उत्तर दिया, "कभी नहीं।"

यह हमें स्वीकार करना पड़ेगा कि यह रोटियां बहुत ही स्वादिष्ट थीं। हमने बड़ी खुशी से उन्हें खाया।

मैंने कहा, "दुर्भाग्यवश यह गूदा ताजा न रह सकेगा, इसलिए इसे नाव में ले चलना व्यर्थ है।"

नेडलैंड ने कहा, "क्यों महाशय, आप तो प्रकृति-विशेषज्ञ हैं। मैं रोटी पकाने की कला जानता हूं न ? कनसील, कुछ फल इकट्ठा कर लो। जब हम लोग लौटेंगे तब इन्हें नाव पर ले चलेंगे।"

हम लोग वहां से आगे चले। दोपहर तक काफी संख्या में केला, कटहल तथा कच्चे आम तोड़े गए। उन्हें इकट्ठा करने में हमारा काफी समय खर्च हो गया था। इसका हमें अवश्य खेद था।

मैंने कहा, "नेड, अब तो तुम्हें और कुछ न चाहिए ?"

नेडलैंड ने कहा, "वाह !"

"अब तुम्हें क्या कमी है ?"

नेड ने उत्तर दिया, "इन सब चीजों से खाना पूरा कहां होता है। यह तो रेगिस्तानी खाना है, इसमें रस कहां है ?"

मैंने कहा, "नेड, तुमने जो रस की बात कही है, वह तो एक कठिन समस्या है। यहां मिलने की कोई आशा नहीं।"

नेडलैंड ने उत्तर दिया, "महाशय, हमारा शिकार अभी समाप्त तो क्या, शुरू तक नहीं हुआ। धैर्य रखिए। अभी हमें कुछ जानवर मिलेंगे, कुछ चिड़िया मिलेंगी। यदि यहां न मिलीं, तो किसी दूसरी जगह मिलेंगी।"

कनसील ने कहा, "यदि आज न मिलेंगी तो कल मिलेंगी। अब हमें ज्यादा दूर न जाना चाहिए। मैं चाहता हूं कि अब नाव को लौट चलें।"

"क्या अभी ?" नेड बोला।

मैंने कहा, "रात तक हम लोगों को लौट चलना चाहिए।"

नेड ने पूछा, "इस समय क्या बजा होगा ?"

कनसील ने कहा, "कम से कम दो बजे होंगे।"

नेडलैंड ने बड़े खेद से कहा, "स्थल पर समय कितनी जल्दी समाप्त हो जाता है।"

हम लोग जंगल के किनारे चले गए। वहां हमें कुछ ताड़ के पेड़ मिले। नेड ने पेड़ की चोटी पर चढ़कर बहुत से खजूर तोड़े। हम लोग खाने के सामान के बोझ से थके जा रहे थे, परंतु नेडलैंड को अब भी संतोष न था। नेड ने अन्य फल भी एक-त्रित किए।

सांयकाल ५ बजे हम लोग इकट्ठी की हुई साम्ग्री ले द्वीप से विदा हुए। आधे घंटे में ही 'नाटिलस' पर पहुंच गए। मेरे पहुंचने पर वहां मुझे कोई न मिला। सब सामग्री नाव में रख, मैं नीचे अपने कमरे में चला गया। शाम का खाना तैयार हुआ। उसे खाकर सो गया।

दूसरे दिन ६ जनवरी को हम लोग जगे, तो देखा कि सारी 'नाटिलस' सुनसान पड़ी थी। कोई जीव दिखाई ही न पड़ता था। हम लोगों का यात्रा का सामान जहां-का-तहां रक्खा था। हम लोगों ने उसी द्वीप को फिर लौट जाने का निश्चय किया। नेडलैंड एक योग्य शिकारी था। दुवारा शिकार के लिए जाने को अत्यंत प्रसन्न था।

सूर्य की किरणें निकलते ही हम लोग फिर रवाना हुए। समुद्र की लहरें इस समय द्वीप की ही ओर जा रही थीं। द्वीप के पास पहुंच कर हम लोग उतर गए। नेडलेंड सबसे अधिक जानकार था। अतः हमने उसी का ही पीछा करना निश्चित किया। नेड आगे-आगे भागता चला जा रहा था। हम लोग उसके कुछ पीछे चल रहे थे।

इस जंगल में चिड़ियों का मधुर गान तथा उनकी उड़ान सुनाई पड़ रही थी।

कनसील ने कहा, "अभी यहां केवल परिंदे ही हैं।"

नैडलैंड ने उत्तर दिया, "उनमें कुछ तो खाने योग्य होंगे?"

कनसील ने कहा, "मित्र नेड, ऐसा नहीं है। तोतों के शब्द के सिवाय मुझे तो कुछ भी सुनाई नहीं पड़ता।"

"मित्र कनसील, जहां और चिड़िया खाने को नहीं मिलती, वहां तोता ही सही।"

मैंने कहा, "यह चिड़िया बड़ी ही अच्छी मालूम होती है तथा खाने योग्य है।"

इस घने जंगल में तोतों का बड़ा-सा झुंड एक टहनी से दूसरी टहनी तक उड़ता दिखाई पड़ रहा था। ऐसा मालूम होता था, मानो वे मनुष्य से भाषा सीखने की प्रतीक्षा कर रहे हों। इस समय वे एक साथ घूम फिर रहे थे। कुछ तोते तो गंभीर होकर सचमुच किसी दार्शनिक समस्या का हल निकालते मालूम पड़ रहे थे।

अनेक जातियों के तोते बहुत ही सुहावने मालूम पड़ रहे थे, परंतु खाने योग्य उनमें एक भी न था। घने जंगल को पार कर आगे बढ़े, तो एक मैदान मिला। इसमें कहीं-कहीं झाड़ियां

उगी थीं। वहां बड़ी पूंछ वाले पक्षी दिखाई पड़े। उनकी चक्करदार उड़ान तथा उनके विभिन्न रंग आंखों को बहुत ही सुहावने लगते थे। मुझे उन्हें पहचानने में कोई कष्ट न हुआ।

मैं चिल्लाया, "स्वर्ग की चिड़िया!"

नेड ने कहा, "यह तीतर की जाति की होती है।"

नेडलैंड ने इनमें से एक पकड़ने का प्रस्ताव किया। बोला, "प्रोफेसर, यद्यपि मैं बंदूक के मुकाबिले में भाला अधिक अच्छा चलाता हूं, फिर भी मैं कोशिश करूंगा कि बंदूक से इनका शिकार करूं। मलाया वाले चीन के साथ इन चिड़ियों का खासा व्यापार करते हैं। वे इन्हें पकड़ने के अनेक तरीके जानते हैं। मैं उन्हे इस्तेमाल नहीं करना चाहता। कभी-कभी वे लोग पेड़ की चोटी पर जाल बिछा देते हैं, और चिड़िया प्रायः उनमें फंस जाती हैं। कुछ लोग तो इन चिड़ियों को लासे से पकड़ते हैं। कुछ लोग तो यहां तक करते हैं कि जिन चश्मों में चिड़िया पानी पीतीं हैं, उनमें जहर मिला देते हैं, परंतु हम उसे गोली से ही मारेंगे। उड़ती चिड़ियों को मारना बहुत ही कठिन है। इसमें हमारी तमाम गोलियां खराब हो सकती हैं।"

लगभग ११ बजे दोपहर तक हम लोग इस द्वीप के आधे भाग को पार कर चुके थे, परंतु कोई भी चिड़िया अभी तक हाथ न लगी थी। भूख मुझे आगे ले गई। शिकारी पीछा करने पर विश्वास करते हैं। कनसील ने दो कबूतर एक ही बार में गिरा दिए। इससे हम लोगों का नाश्ता हुआ।

नेडलैंड ने कहा, "हमें एक चौपाया जानवर चाहिए। कबूतर तो एक प्रकार का नाश्ता है। जब तक मैं बड़ा जानवर न मारूंगा, मेरी भूख न बुझेगी।

कनसील ने उत्तर दिया, "हमें अब आगे शिकार के लिए जाना चाहिए, परंतु इस बार समुद्र की ओर चलें, क्योंकि जंगलों में हम लोग बहुत देर से घूम रहे हैं।"

यही अच्छी सलाह थी। इसलिए सब मान गए। एक घंटे के बाद हम लोग फिर एक सागौन के जंगल में पहुंच गए। हमारे पैरों की आवाज से सांप इधर-उधर भागने लगे। पक्षी भी उड़ने लगे। मैं उनके निकट पहुंच कर बहुत हताश हुआ। कनसील एकाएक रुक गया तथा जोर से चिल्लाया,—"मेरी तरफ आओ। स्वर्ग की कितनी सुंदर चिड़िया है।"

मैंने कहा, "वाह, बहादुर कनसील।"

कनसील ने उत्तर दिया, "आपकी बड़ी दया है।"

"कनसील, ऐसा नहीं; इन में से एक को हाथ से पकड़ना चाहिए।"

"स्वामी, आप देखें, मैंने कोई कमाल नहीं किया।"

"क्यों कनसील ?"

"क्योंकि यह चिड़िया नशा खाए थी।"

"नशा ?"

"वह मुझे जायफल के पेड़ के नीचे मिली थी। इसी फल को खाने से इसे नशा हो गया था। मित्र नेड, देखो, कैसा नशा है इसे ?"

"मैंने ऐसा नशा कई बार खाया है। मुझे इस नशे का लोभ नहीं।"

इसी बीच मैंने उस चिड़िया का निरीक्षण किया। कनसील गलती पर न था। चिड़िया उसके फल के रस से प्रभावित थी। वह उड़ न सकती थी। चलने में भी उसे परेशानी थी।

पापुआ और उसके पास के द्वीपों में कई अच्छी चिड़ियों में से वह एक प्रकार की थी। वह बिल्कुल बड़े-से नीलम जैसी थी। ९ इंच लंबी, सिर अनुपात से छोटा, आंखें चोंच के पास थीं। बहुत ही छोटी तथा रंग अत्यंत सुंदर था। इसकी चोंच पीली, पैर और पंजे भूरे, पंख कत्थई रंग के तथा चारों ओर हरे रंग से घिरे थे। सिर हल्का पीला, गला नीला तथा दुम पर दो सींग जैसे जाल थे।

"मैं ऐसी जिंदा चिड़िया पेरिस ले जाना चाहता हूं।"

नेडलैंड ने पूछा, "क्या यह इतनी दुर्लभ है ?"

"बहुत ही दुर्लभ है, खास तौर से इन्हें जिंदा ले जाना तो और भी कठिन है।"

स्वर्ग की चिड़िया पाकर तो मुझे बड़ा संतोष था, पर नेडलैंड अभी संतुष्ट न था। भाग्यवश लगभग दो बजे दिन उसने एक सूअर का शिकार किया। आखिर गोश्त के लिए एक चौपाया मिल ही गया।

नेडलैंड अपने शिकार पर अत्यंत प्रसन्न था। यह सूअर बिजली की गोली से मारे जाने के कारण तत्काल मर गया। नेडलैंड ने तुरंत उसकी खाल निकाल कर उसे खाने के लिए तैयार कर लिया। खाकर हम लोग फिर शिकार के लिए निकल पड़े। आगे कुछ कंगारू भागते दिखाई पड़े। नेडलैंड ने चिल्ला कर कहा, "कैसा अच्छा शिकार है ? यदि खासतौर से बनाया जाय, तो 'नाटिलस' के लोगों के लिए क्या ही अच्छा भोजन होगा। परंतु कभी-कभी मैं सोचता हूं कि मैं ही सारा गोश्त खा जाऊंगा, जहाजियों को बिल्कुल न दूंगा।"

यह छोटे-छोटे कंगारू थे। यह प्रायः पेड़ों के खोखलों में

रहते हैं। इनकी चाल बहुत ही तेज होती है।

हम लोग इस शिकार से संतुष्ट थे। नेडलैंड का कहना था कि कल फिर यहां आएं और इन का सफाया किया जाय।

६ वजे शाम को हम लोग किनारे पर आ गए। हमारी नाव अपनी जगह पर खड़ी थी। 'नाटिलस' भी चट्टान की भांति इस द्वीप से दो मील दूर लहरों के ऊपर टंगी थी। नेडलैंड ने तुरंत खाना बनाना शुरू कर दिया। वह खाना अच्छा बना लेता था।

शाम का खाना बहुत अच्छा बना। दो जंगली कबूतर, साग, भूने हुए फल, आम तथा आधे दर्जन सेब थे। शराब की जगह उबाला हुआ नारियल का पानी था। यह सब चीजें बहुत ही स्वादिष्ट मालूम होती थीं।

कनसील ने कहा, "यदि हम लोग आज शाम को 'नाटिलस' को लौट कर न जाएं ?"

नेड ने कहा, "यदि हम कभी भी वहां लौटकर न जाएं तो?"

उसी समय एक पत्थर वहां आ गिरा। नेडलैंड का ध्यान भंग हुआ।

२२

मैंने घूमकर जंगल की ओर देखा। मैं खा ही रहा था कि बीच में रुक गया। नेडलैंड ने अपना काम समाप्त कर लिया था।

कनसील ने कहा, "कहां से आया यह पत्थर ? उल्का तो नहीं है।" इतने में दूसरा पत्थर फिर हम लोगों के बीच आ

गिरा। इस पत्थर से कनसील के हाथ में चोट लगी। हम सब लोग इस अचानक हुए हमले से घबरा भी गए, क्रोधित तो हुए ही।

हम लोग उठ खड़े हुए। हम अपनी-अपनी बंदूकें साध हमला करने वाले का मुकाबिला करने को तैयार हो गए।

नेडलैंड ने कहा, "पत्थर फेंकने वाले बंदर होंगे।"

कनसील ने उत्तर दिया, "बंदर तो नहीं, पर उन्हीं से मिलते-जुलते जंगली आदमी हैं।"

समुद्र की ओर इशारा करके मैंने कहा, "नाव ?" लगभग बीस जंगली आदमी तीर-कमान चढ़ाए १०० कदम दूर इकट्ठे दिखाई पड़े।

हमारी नाव हम से कोई ६० फुट दूरी पर थी। यह जंगली आदमी हम लोगों की तरफ धीरे-धीरे बढ़ते चले आ रहे थे। उन्होंने हम लोगों पर पत्थर और तीरों की वर्षा की। इस खतरे के बावजूद, नेडलैंड अपना इकट्ठा किया हुआ खाने का सामान न छोड़ना चाहता था। उसने अपने सूअर, कंगारू और फल-फूल लाद, काफी तेज दौड़ना शुरू किया।

दो ही मिनट में हम लोग किनारे पर आ गए। हम लोगों ने बड़ी ही जल्दी अपना सामान, अस्त्र-शस्त्र नाव में रख नाव को ढकेल समुद्र में बहा दिया। नाव में बैठ नाव तेजी से दौड़ाने लगे। अब तक इस द्वीप के किनारे सैकड़ों की संख्या में जंगली लोग इकट्ठे हो गए थे। हम लोग दो केबुल ही दूर पहुंचे थे, कि १०० जंगली मनुष्य धनुष ताने, शोर करते हुए कमर भर पानी तक समुद्र में घुस आए। मैं यह सोच रहा था कि शायद इन लोगों को देख कर 'नाटिलस' के आदमी

हमारी रक्षा के लिए तैयार हो गए होंगे, परंतु 'नाटिलस' के किसी भी आदमी को इनकी चिंता न थी। नाव अपनी जगह स्थिर पड़ी थी। बीस मिनट में हम लोग 'नाटिलस' के पास पहुंच गए। दरवाजा खुलवाकर उसके अंदर घुस आए।

मैं कमरे में चला गया। वहां से हमको कुछ मधुर गान सुनाई पड़ा। कप्तान नेमो बैठा वायलिन बजा रहा था।

मैंने उनसे कहा, "कप्तान !"

कप्तान ने मेरी आवाज न सुनी।

मैंने उसका हाथ पकड़ कर फिर कहा, "कप्तान !"

कप्तान मेरी तरफ घूमा।

उसने मुझ से कहा, "ओहो प्रोफेसर साहब ! कहिए, खूब अच्छा शिकार तथा बाग-बगीचों का भ्रमण किया ?"

मैंने उत्तर दिया, "कप्तान, मेरे पीछे कुछ भयानक जंगली आदमी भी आ गए हैं।"

कप्तान नेमो ने कहा, "जंगली आदमी ? आपको उन पर आश्चर्य होता है। क्या वे लोग जंगली हैं ? वास्तव में इन्हें जंगली क्यों कहते हैं ? वे और मनुष्यों से क्यों बुरे हैं ?"

"परंतु कप्तान ···।"

"परंतु महाशय, मुझे तो ऐसे ही सब जगह मिलते हैं।"

मैंने उत्तर दिया, "महाशय, यदि आप चाहते हैं कि वे 'नाटिलस' के अंदर न घुस आएं, तो आपको रक्षा का प्रबंध करना पड़ेगा।"

"प्रोफेसर, आप शांत रहें, घबराने की कोई बात नहीं।"

"परंतु यह लोग काफी संख्या में हैं।"

"कितने हैं ?"

"कम से कम सौ होंगे।" कप्तान ने अपने बाजे की घुंडियों पर हाथ रखकर कहा, "एरोनेक्स महाशय, यदि इस द्वीप के सारे निवासी एक जगह इकट्ठे हो जाएं, तब भी 'नाटिलस' को उनके हमले का डर नहीं।"

कप्तान इस समय अपना बाजा मनोयोग से बजा रहा था। वह केवल काली घुंडियों पर ही उंगली मारता था। इससे एक प्रकार के स्काटलैंड के गाने के ढंग की आवाज निकल रही थी। वह मेरी उपस्थिति भूल गया तथा बाजा बजाने में फिर मस्त हो गया।

मैं एक बार फिर नाव के चबूतरे पर चढ़ गया। रात हो चुकी थी। भूमध्य रेखा के निकट रात बहुत जल्दी होती है। संध्या भी बहुत छोटी होती है। मुझे द्वीप अब भी साफ-साफ दिखाई दे रहा था। वहां किनारे पर इकट्ठे जंगली आदमी आग जला कर नाच रहे थे। मुझे ऐसा मालूम हुआ, मानो वे लोग आसानी से हम लोगों को छोड़ने वाले न थे।

मैंने कुछ घंटे अकेले ही विचार-मग्न हो बिताए। कभी-कभी मैं उन्हीं जंगली आदमियों की याद कर घबरा जाता था, परंतु कप्तान द्वारा इस प्रकार विश्वास दिलाने पर, मुझे भी अब उतना डर न लगता था। रात बड़ी सुहावनी थी। चंद्रमा तेजी से चमक रहा था। कभी-कभी मेरे मन में यह ध्यान आता था कि यही चमकदार चंद्रमा एक दिन काफी तेज होकर समुद्र की लहरों को बहुत ऊंचा कर देगा, और मेरी 'नाटिलस' इस बंधन से मुक्ति पा समुद्र में तैरने लगेगी। आधी रात को मैंने देखा कि जंगली लोग दिखाई न पड़ते थे, शायद सो गए थे। मैं भी नीचे जा, अपने कमरे में सो गया।

रात इसी प्रकार बीत गई। 'नाटिलस' के खलासियों ने इन जंगली मनुष्यों के भय से दरवाजा बंद कर लिया था।

दूसरे दिन ८ जनवरी को सुबह उठकर चबूतरे पर गया। उजाला हो गया था। कोहरे के बीच द्वीप दिखाई पड़ा। पहले इसके किनारे दिखाई पड़े, बाद में चोटियां।

जंगली मनुष्य अब भी द्वीप के किनारे मौजूद थे। आज वह कल से अधिक संख्या में, लगभग ५-६ सौ थे। उनमें से कुछ बहुत हृष्ट-पुष्ट थे। पानी कम होने का लाभ उठा वे 'नाटिलस' से दो केबुल दूरी तक आ गए थे। यह लोग अब पहचाने जा सकते थे। यह किसी अच्छी जाति के जान पड़ते थे। ऊंचा तथा चौड़ा माथा, लंबा तथा छोटा सिर, चौड़ी नाक तथा सफेद दांत। उनके बाल ऊन जैसे घुंघराले, उनके काले शरीर पर शोभा दे रहे थे। उनके कानों में हड्डी के आभूषण खनखना रहे थे। यह लोग प्रायः नंगे थे। इनमें से कुछ औरतें भी थीं---जो कमर से घुटनों तक जंगली लताओं का घाघरा-सा पहनें थीं। उनके कुछ सरदार भी थे, जिनकी गर्दन से काली, लाल और सफेद घास के गुच्छे लटक रहे थे। करीब करीब सबके पास तीर-कमान तथा ढालें थीं---कंधों पर एक प्रकार का जाल लटक रहा था। वे रस्सी की बनी हुई पत्थर फेंकने वाली गुफनियां लिए हुए थे। उनका सरदार 'नाटिलस' के पास आ, ध्यान से उसे देखने लगा। यह सरदार उनका सबसे बड़ा सरदार जान पड़ता था। वह केले के पत्ते के विभिन्न वस्त्रों से सुसज्जित था। मैं यदि चाहता तो उसे फौरन बंदूक से मार देता, क्योंकि वह हमारी बंदूक की मार में आ गया था। परंतु मैंने ऐसा नहीं किया, क्योंकि मैं उसका जंगली

प्रदर्शन देखना चाहता था। दिन भर यह लोग 'नाटिलस' का चक्कर लगाते रहे। इस समय यह लोग शोर नहीं मचा रहे थे। मैंने उनके मुंह से 'असाई' शब्द बार-बार सुना। उनके इशारों से ऐसा मालूम पड़ रहा था, कि वह लोग हमें फिर अपने द्वीप को आने का निमंत्रण दे रहे थे, परंतु ऐसा निमंत्रण मुझे कैसे मंजूर हो सकता था।

इसीलिए हम लोग नाव छोड़कर कहीं न गए। नेड को यह बहुत खला, क्योंकि वह अपने खाने का सारा सामान एकत्र न कर पाया था। नेडलैंड ने यह समय द्वीप से लाए हुए गोश्त तथा अन्य सामान तैयार करने में व्यय किया। जंगली लोग लगभग ११ बजे दोपहर को समुद्र का पानी ऊपर चढ़ता देख, अपने द्वीप को चले गए। द्वीप के किनारे उनकी संख्या अब और बढ़ गई थी। शायद पास-पड़ोस के द्वीपों के भी लोग किनारे पर इकट्ठे हो रहे थे। यदि कप्तान की 'नाटिलस' के रुकने की संभावना सत्य मान ली जाय, तो इसके यहां ठहरने का अंतिम दिवस था। मैंने कनसील को बुलाया।

उसने पूछा, "वे जंगली कसे जान पड़ते हैं ! मुझे यह बहुत क्रूर तो नहीं मालूम पड़ते।"

"परंतु वे लोग मनुष्याहारी तो हैं ही।"

कनसील ने कहा, "मनुष्याहारी हो सकते हैं, परंतु सच्चे अवश्य हैं। जैसे एक साथ मनुष्याहारी और सच्चे होना संभव है।"

"अच्छा कनसील, मैं यह माने लेता हूं कि यह सच्चे तथा मनुष्याहारी हैं, और अपने कैदियों को सच्चाई से खाते हैं। मैं अपने

खाए जाने की परवाह नहीं करता । वे लोग हमें मार तो डालेंगे ही, क्योंकि कप्तान नेमो ने इनसे बचने का कोई प्रबंध नहीं किया ।"

समुद्र के किनारे से हम लोगों ने जो सीप, घोंघे, शंख इत्यादि एकत्र किए थे, उनमें एक शंख ऐसा था जिसके भीतर जाती हुई रेखाएं दाएं से बाएं के बजाय बाएं से दाहिने थीं ।

सोच रहा था कि इसे मैं अपने संग्रहालय में रख उसकी शोभा बढ़ाऊंगा । इतने में एक जंगली मनुष्य ने एक पत्थर फेंका । कनसील के हाथ की यह अमूल्य वस्तु टूट गई ।

मुझे इससे बड़ी ग्लानि हुई । कनसील ने मेरी बंदूक ले उस जंगली मनुष्य पर तान दी। यह मनुष्य एक डोरे में पत्थर बांधे घुमा रहा था ।

मैं कनसील को रोकना चाहता था, परंतु कनसील ने फायर कर ही दिया । गोली से इस जंगली की कलाई टूट गई और उसका हाथ लटक गया ।

मैं चिल्लाया, "कनसील, ओह तुमने क्या किया ।"

"महाशय, इन मनुष्यों ने आक्रमण करना शुरू कर दिया था । मैं क्या कर सकता था ।"

मैंने कहा, "एक शंख आदमी के जीवन से अधिक कीमती नहीं होता ।"

कनसील ने कहा, "मैंने यदि यह न किया होता तो वे बदमाश मेरे हथियार भी तोड़ डालते ।"

कुछ ही मिनट में दशा गंभीर हो गई । लगभग २० नावें 'नाटिलस' की ओर दौड़ती चली आ रही थीं । ये नावें पेड़ के तने को खोखला करके बनाई गई थीं। ये लंबी, तंग तथा चाल

में काफी तेज थीं। इन जंगलियों का संबंध यूरोपीय लोगों से अवश्य रहा होगा तथा उनके जहाज भी उन लोगों ने अवश्य देखे होंगे। पहले तो ये लोग थोड़ी दूर रहे, परंतु यह निश्चय कर कि यह नाव चल नहीं रही है, अपनी नावों को 'नाटिलस' के पास तक ले आए। मेरी बंदूक में विद्युत की गोलियां इस्तेमाल की जाती थीं। इससे इनका असर तो काफी हो सकता था, परंतु इसमें तेज आवाज न होने के कारण हम उन मनुष्यों को डराने में असमर्थ थे।

उनकी नावें 'नाटिलस' के समीप आ वाणों की वर्षा करने लगीं।

कनसील ने कहा, "ये वाण विष में बुझे हो सकते हैं।"

मैंने कहा, "कप्तान नेमो को इसकी इत्तला तो होनी चाहिए।"

मैं नीचे बैठक के कमरे में गया। वहां कोई न मिला। फिर मैंने कप्तान के कमरे का दरवाजा खटखटाया।

भीतर से आवाज आई, "अंदर आइए।" मैं अंदर चला गया। कप्तान बैठा कुछ गणित के प्रश्नों में व्यस्त था।

मैंने कहा, "आप व्यस्त हैं, शायद मैंने आपका ध्यान भंग किया है।"

कप्तान ने उत्तर दिया, "हां महाशय, पर आप किसी आवश्यक कार्य से ही आए होंगे।"

"बहुत ही आवश्यक। जंगली मनुष्यों ने इस 'नाटिलस' को नावों द्वारा चारों ओर से घेर लिया है। कुछ ही मिनट में वे लोग सैकड़ों की संख्या में आ जाएंगे।"

कप्तान ने कहा, "वे लोग नावों पर आए हैं ?"

"हां"

"हमें इस नाव की खिड़कियां बंद कर लेना अच्छा रहेगा।"

"बिल्कुल, मैं भी आपसे यही कहने आया हूं।"

"कोई बात नहीं।"

कप्तान ने बिजली की घंटी बजाई तथा यह समाचार खलासियों को दे दिया।

कप्तान ने कहा, "नावें सब अंदर आ गई हैं। सारी खिड़कियां और दरवाजे बंद हो गए हैं। अब वे लोग इसके अंदर नहीं आ सकते हैं।"

"कप्तान एक डर तो है।"

"वह क्या।"

"कल आपको नियत समय पर नाव को बाहर की हवा लेने के लिए खोलना ही पड़ेगा।"

"हां महाशय, यह तो ठीक है क्योंकि हमारी नाव ह्वेल मछली की तरह हवा अपने अंदर लेती है।"

"और उस समय जंगली मनुष्य कहीं चबूतरे पर मौजूद हुए तो आप उन्हें कैसे अंदर आने से रोकेंगे?"

"तब तो वे लोग हमारी नाव में अवश्य घुस आएंगे।"

"मेरी समझ में यही आता है।"

"आने दो। वे भी बेचारे मनुष्य हैं, उन्हें अपनी नाव में आने से क्यों रोका जाय।"

यह सुनकर मैं वापस आने ही वाला था कि कप्तान नेमो ने मुझसे बैठने के लिए कहा। उसने मुझसे मेरी यात्रा तथा शिकार के बारे में पूछा। मैंने उन्हें सारा हाल कह सुनाया। कप्तान बहुत खुश हुआ। मैंने उन्हें बताया कि इसी जलडमरू-

मध्य में आपका बहादुर नाविक डमांड द उरविल मर गया था।

कप्तान ने कहा, "वह बड़ा होशियार चालक था। बहुत ही बहादुर था। दक्षिणी बरफ के किनारे ओसीनिया की मूंगे की चट्टानों तथा प्रशांत महासागर के मनुष्यभक्षी विश्व में प्रसिद्ध हैं। वह कैसा अभागा था। इस समय अगर होता तो क्या कहना था।"

"ऐसा सोच कप्तान उदास-सा हो गया। नक्शे पर कप्तान ने उसके द्वारा की गई सारी खोज उंगली से अंकित की।

कप्तान ने कहा, "जो कुछ मैंने सागर की गहराई में किया है, वही उसने लहरों पर किया था।"

"मेरी समझ में डमांड द उरविल के लड़ाकू जहाजों तथा 'नाटिलस' में एक बात का साम्य है।"

"वह क्या।"

"उन्हीं की तरह 'नाटिलस' भी फंसी हुई है। 'नाटिलस' स्थिर नहीं है। यह पानी के अंदर चलने के लिए ही बनी है। यह वहीं चलेगी। 'द उरविल' को कठिनाई यह थी कि उन्हें अपने जहाजों को पानी की सतह पर चलाना था। 'नाटिलस' में ऐसा नहीं है। कल नियत समय पर ज्वार से समुद्र की लहरें उठेंगी और 'नाटिलस' जलमग्न सागर में उतराने लगेगी।"

मैंने कहा, "कप्तान, मुझे इसमें शक नहीं।"

कप्तान ने उठकर कहा, "कल ढाई-तीन बजे शाम को 'नाटिलस' उतराने लगेगी और हम लोग बिना किसी हानि के इस जलडमरूमध्य में छोड़ देंगे।"

यह सुन मैं अपने कमरे में चला गया।

वहां कनसील बैठा मेरी कप्तान से भेंट के नतीजे की

प्रतीक्षा कर रहा था।

मैंने कहा, "कनसील, जब मैंने कप्तान से 'नाटिलस' के खतरे में होने की कही, तो कप्तान ने बहुत ताने भरी बात की। हमें अब कप्तान पर ही भरोसा करना चाहिए। जाओ, और सुख से खाओ।"

"क्या, आपको मेरी सेवा की आवश्यकता नहीं ?"

"मेरे दोस्त, नहीं। नेडलैंड क्या कर रहा है ?"

"वह कंगारू का गोश्त तैयार कर रहा है।" कहकर वह चला गया।

मैं अकेला रह गया। अपने बिस्तर पर चला गया। देर तक नींद न आई। बाहर चबूतरे पर जंगली मनुष्य इकट्ठे थे। वे जोरों से शोर मचा रहे थे। पैरों से नावको चोट कर रहे थे। थोड़ी देर में मैं सो गया।

दूसरे दिन सुबह ६ बजे जगा। दरवाजे आज अभी तक न खुले थे। हवा भी न बदली गई थी। सुरक्षित टंकियों की कुछ आक्सीजन छोड़ दी गई। मैं दोपहर तक अपने कमरे में काम करता रहा। कप्तान आज एक क्षण के लिए भी यहां न आया था। चलने की कोई तैयारियां भी नहीं की जा रही थीं। कुछ समय तक मैंने इंतजार किया, फिर कमरे में चला गया। उस समय घड़ी में २ बज कर ३० मिनट थे। यदि कप्तान की बात सच हुई तो १० मिनट में पानी 'नाटिलस' तक ऊंचा हो जाएगा। नाव तैरने लगेगी, परंतु यदि ऐसा न हुआ, तो 'नाटिलस' महीनों यहीं रहेगी।

कप्तान नेमो २ बजकर ३५ पर कमरे में आया। उसने कहा, "हम लोग अब चलने को तैयार हैं।"

मेरे मुंह से निकला "वाह !"

कप्तान बोला, "मैंने दरवाजा खोलने का आदेश दे दिया।"

"और उन जंगली मनुष्यों का होगा क्या ?"

कप्तान ने धीरे से कहा, "क्या जंगली मनुष्य ?"

"क्या ये 'नाटिलस' के अंदर नहीं घुस आएंगे ?"

"वे इसके अंदर कैसे आ सकते हैं ?"

"जो दरवाजे आपने खुलवाए हैं, उन्हीं से।"

कप्तान नेमो ने शांतिपूर्वक उत्तर दिया, "यदि दरवाजे खुले भी हों, तब भी इसके अंदर आना आसान काम नहीं।"

मैं कप्तान की तरफ देखता रह गया।

उसने फिर कहा, "आप समझे नहीं ?"

"बिलकुल नहीं।"

"मेरे साथ आइए, आप जब देखेंगे, स्वयं समझ जाएंगे।"

मैं बीच के जीने की ओर चला गया।

कनसील और नेडलैंड उन खलासियों की ओर, जो दरवाजे खोल रहे थे, आश्चर्यपूर्वक देख रहे थे। बाहर बहुत ही भयानक शोर हो रहा था।

पल्ले बाहर की ओर खोल दिए थे। सत्तर भयानक जंगली मनुष्य दिखाई पड़े। पहले जंगली मनुष्य ने जैसे ही दरवाजे पर हाथ रखा, एक अज्ञात शक्ति ने उसे दूर फेंक दिया। वह चिल्लाता हुआ भागा।

उनमें से दस ने बारी-बारी से अंदर घुसने का प्रयत्न किया, परंतु सब उसी प्रकार फेंक दिए गए। सब चिल्लाते अपने द्वीप की ओर भागे। कनसील तो शांत था, नेडलैंड ने भी इसकी परीक्षा की। उसे भी भारी धक्का लगा।

वह चिल्लाया, "मुझे बड़े जोर का धक्का लगा !"

इससे बात मेरी समझ में आई । एक धातु के तार पर बिजली दौड़ाई गई थी । जो उसे छूता था, उसे बड़े जोर का धक्का लगता था । यदि कहीं कप्तान ने सारी बिजली की धारा उस तार पर दौड़ा दी होती, तो सब मर गए होते । उसने अपने और अपने शत्रुओं के बीच बिजली का तार फैला रखा था । उसे वे लोग पार न कर सकते थे ।

डर के मारे सारे जंगली मनुष्य नाव को छोड़ अपने द्वीप की ओर भागे ।

इसी बीच 'नाटिलस' समुद्री लहरों से ऊपर उठ गई । कप्तान की बात बिलकुल सच निकली। ठीक २ बजकर ४० पर शाम को 'नाटिलस' मूंगे की चट्टान त्याग समुद्र में चली । चर्खी धीरे-धीरे चलने लगी । धीरे-धीरे चाल बढ़ी । बिना किसी हानि के 'नाटिलस' टोरस जलडमरूमध्य को त्याग समुद्र तल पर दौड़ने लगी ।

२३

दूसरे दिन १० जनवरी को 'नाटिलस' ने समुद्र-जल के अंदर फिर अपना रास्ता अख्तियार कर लिया । इस समय वह ३५ मील प्रति घंटा की चाल से दौड़ रही थी । इस अद्भुत बिजली के यंत्र द्वारा 'नाटिलस' को गर्मी, रोशनी, चालन-शक्ति मिलती है, तथा बाहरी आक्रमणों से भी यह शक्ति इस नाव

को बचाती है। यह सब सोच इसके आविष्कारक के प्रति मेरी आदर-भावना बहुत बढ़ गई।

इस समय हम लोग सीधे पच्छिम की ओर जा रहे थे। ११ जनवरी को हम वेकेल्ल अंतरीप पर पहुंचे। चट्टानें अब भी काफी थीं परंतु अब वे दूर-दूर पड़ती जा रही थीं, उनके निशान नक्शे में बिल्कुल स्पष्ट अंकित थे।

१३ जनवरी को हम लोग द्वीप के पास पहुंच गए। इस द्वीप का क्षेत्रफल १६२५५ वर्ग मील है। इसपर कई राजाओं का राज्य था। ये राजा अपने को मगर की संतान बताते थे। ये राजा मगरों की पूजा किया करते थे। उन्हें खाना खिलाते तथा समय-समय पर छोटी-छोटी लड़कियों को भेंट देते थे। जो इनको मारने की चेष्टा करता, उसे वे लोग दंडित भी करते थे।

टिमर द्वीप दोपहर की रोशनी में साफ-साफ दिखाई पड़ा। यह द्वीप भी इस टिमर द्वीप-माला का ही एक अंग है। इसकी औरतें अपने सौंदर्य के लिए मलाया के बाजार में प्रसिद्ध हैं। यहां से 'नाटिलस' हिंदमहासागर की ओर बढ़ी। मुझे जानना था कि कप्तान अब कहां ले जाएगा—एशिया के तट की ओर या यूरोप के? परंतु इन दोनों महाद्वीपों में आबादी है। जो मनुष्य स्थल से संबंध ही न रखना चाहता हो, वह उधर कैसे जा सकता था। क्या वह दक्षिण की ओर जाएगा? या दक्षिण में गुडहोप अंतरीप से होकर हार्न अंतरीप की तरफ जा उत्तरी ध्रुव की ओर जाएगा? यह भविष्य ही निश्चय करेगा।

इस यात्रा में कप्तान नेमो समुद्र की विभिन्न गहराइयों में ताप का परीक्षण कर रहा था। इसके लिए वह कितने ही पेचीदा यंत्रों का उपयोग करता था; परंतु इनसे सही-सही पता

न लगता था, क्योंकि बिजली की धारा का प्रभाव भी उसपर रहता था, और शीशा भी अधिक दबाव में न रह सकता था।

परीक्षण के फल से ज्ञात हुआ कि समुद्र के अंदर सभी अक्षांशों में ४३ अंश गर्मी प्रति १००० मीटर की गहराई में होती है।

मैंने यह परीक्षण ध्यान से देखे। मैं प्रायः कप्तान से यह पूछता था कि आप अधिक से अधिक किस गहराई तक यह परीक्षण करेंगे? क्या यह परीक्षण कप्तान अपने साथियों के लिए कर रहा था? उससे क्या लाभ होगा? नाव तथा उसके यात्री तो एक दिन समुद्र में कहीं पर नष्ट हो ही जाएंगे। उनका कोई पता भी न ले सकेगा। कप्तान ने मुझे विश्व के सारे सागरों की विभिन्न गणनाएं समझाईं। मैंने इनसे अपने आप कुछ परिणाम भी निकाले।

दूसरे दिन, १५ जनवरी को, जब मैं और कप्तान नाव के चबूतरे पर टहल रहे थे, कप्तान ने मुझसे पूछा, "क्या आप सभी सागरों के जल का घनत्व जानते हैं?" मैंने कप्तान को बताया कि विज्ञान में इस विषयक ज्ञान में अब भी बहुत कमी है।

कप्तान ने कहा, "मैंने वे परीक्षण किए हैं। मैं दावे के साथ कह सकता हूं कि वे सही हैं।"

मैंने उत्तर दिया, "नाटिलस की दुनिया अलग ही है। यह भेद विश्व तक नहीं पहुंचते।"

कप्तान ने थोड़ी देर बाद उत्तर दिया, "प्रोफेसर, आप ठीक कहते हैं। 'नाटिलस' की अपनी ही दुनिया है। विश्व से वह इतनी ही दूर है जैसे अन्य ग्रह, जो पृथ्वी के साथ सूर्य के चारों ओर घूमते हैं। भाग्यवश मेरा पृथ्वी तथा समुद्र, दोनों से संबंध रहा है। मैं आपको अपने निष्कर्षों का फल बताऊंगा।"

"कप्तान, मुझे यह सब सुनकर बड़ा हर्ष होगा।"

"प्रोफेसर, आप जानते हैं कि समुद्र का पानी साधारण पानी से अधिक घना होता है, परंतु इसका घनत्व सब जगह एक सा नहीं रहता। यदि पानी का घनत्व एक मान लिया जाय, तो अतलांतिक महासागर का घनत्व २८००० गुणा, प्रशांत महासागर का २६००० गुण तथा भूमध्य सागर का ३०००० गुणा होगा।"

मैंने कहा, "आपने भूमध्यसागर की भी यात्रा की है ?"

मुझे आशा थी कि अब कप्तान यूरोपीय सागरों का भी परिचय देगा और नेडलैंड इन्हें सुनकर बहुत संतुष्ट होगा।

कुछ दिनों तक मैं समुद्र की विभिन्न गहराइयों के नमक का परिमाण, विद्युत-शक्ति पारदर्शिता और रंग आदि के संबंध में परीक्षण करता रहा। कप्तान ने मुझे इसमें काफी सहायता दी थी। इसके बाद कुछ दिन के लिए कप्तान फिर गायब हो गया। मैं अकेला रह गया।

१६ जनवरी को 'नाटिलस' समुद्र-तरंगों के बीच शयन करती-सी प्रतीत हो रही थी। मैंने सोचा कि काफी तेजी से इतनी दूर चलने के कारण मशीन खराब हो गई होगी। उसकी सफाई व मरम्मत में 'नाटिलस' के खलासी और कप्तान व्यस्त होंगे।

कमरे की खिड़कियां खुली थीं। बिजली बुझी हुई थी। हम लोग खुली खिड़कियों से देख रहे थे। साफ न दिखाई पड़ रहा था। समुद्र पर तूफान उठ रहे थे। काले-काले बादल छाए हुए थे। इससे दिन की रोशनी भी बहुत धुंधली थी। इसी अंधकार में बड़ी-बड़ी मछलियां हल्की छाया की भांति दिखाई पड़ रही थीं। एकाएक प्रकाश हो उठा। मैंने सोचा कि 'नाटिलस'

की बिजली फिर जला दी गई, परंतु यह मेरा भ्रम था। थोड़ी देर में पता चला कि हम लोग फासफोरस से चमकते हुए जल के अंदर यात्रा कर रहे हैं। यह प्रकाश छोटे-छोटे कीड़ों का था, जिनकी रोशनी नाव से प्रतिबिंबित हो और भी उज्ज्वल हो रही थी। यह प्रकाश हमारे साधारण प्रकाश जैसा न था। इसमें अधिक शक्ति तथा कंपन था। इस प्रकाश के नीचे 'नाटिलस' कई दिन तक चलती रही।

इसी प्रकार 'नाटिलस' चलती गई। रोज एक न एक नई विचित्र चीज दिखाई देती। दिन जल्दी-जल्दी गुजरते गए। मैं इन्हें अब गिनता भी न था।

१८ जनवरी को दिन अच्छा था। समुद्र भी कुछ शांत था। मैं चबूतरे पर चढ़ गया। रोज की भांति वही अफसर आया। उसने कुछ कहा, मैं समझ न पाया। कप्तान नेमो भी आ गया। कुछ समय तक कप्तान और इस अफसर ने अपनी भाषा में बातचीत की। कप्तान ने अफसर पर कुछ एतराज किए। अफसर ने विश्वास दिलाते हुए कुछ कहा। मैं इनके इशारे से इतना ही समझ सका। कप्तान नेमो इधर-उधर घूम रहा था। मुझे वह देख न पाया था। 'नाटिलस' इस समय तट से सैकड़ों मील दूर थी। कप्तान और अफसर दोनों दूरबीन से देख रहे थे। मैं भी कमरे में जा एक अच्छा दूरदर्शक उठा लाया। मैं उसके शीशे को सामने कर देखने ही जा रहा था कि मेरे हाथ से दूरदर्शक छीन लिया। कप्तान नेमो इस समय बहुत क्रुद्ध था। मेरा दूरदर्शक हाथ से गिर पड़ा। कुछ शांत हो उसने मुझसे कहा, "प्रोफेसर, आपको आज हमारी शर्त पूरी करनी पड़ेगी।"

"कौन सी शर्त ?"

"आपको अपने साथियों के साथ बंद करने की, और जब मैं कहूं तभी बाहर निकलने की शर्त ।"

मैंने उत्तर दिया, "वैसे तो आप इसके मालिक हैं, परंतु मैं आपसे एक बात पूछना चाहता हूं ।"

"नहीं, कदापि नहीं ।"

मुझे अब इस आज्ञा का पालन करना ही था । बहस अब व्यर्थ थी ।

मैं उसी कमरे में गया, जहां कनसील और नेडलैंड रहते थे । यह वही कमरा था, जहां हम लोग पहली रात को बंद किए गए थे । नेडलैंड बाहर जाना चाहता था, परंतु दरवाजा बंद था । वह कर ही क्या सकता था ।

कनसील ने कहा, "महाशय, यह क्या हुआ । क्या आप जानते हैं ?"

मैंने सारा हाल कह सुनाया । मेरी तरह कनसील को भी इसपर बहुत आश्चर्य हुआ । इतने में नेडलैंड ने पूछा, "यह खाना क्यों रखा है ।" मेज पर खाना रखा था ।

"क्या मैं एक बात कह सकता हूं ?" कनसील ने कहा ।

मैंने उत्तर दिया, "हां ।"

"महाशय, आप खा लीजिए । पता नहीं भेद क्या हो ।"

"कनसील तुम ठीक कहते हो ।"

हम लोग शांतिपूर्वक खाना खाने बैठे । मैंने थोड़ा खाना खाया । कनसील ने भी जबरदस्ती खाना खाया । केवल नेड ने रोज की भांति खाया । उसके बाद सब लोग आराम करने लगे।

अब बिजली का गोला बुझ चुका था । कोठरी में काफी

अंधेरा हो गया था। नेडलैंड और कनसील दोनों सोने लगे। मेरे दिमाग पर बोझ सा मालूम पड़ने लगा। मेरी आंखें बंद हुई जा रही थीं। ऐसा मालूम पड़ा मानो हम लोगों के खाने में कोई नींद की दवा मिला दी गई हो। कप्तान के रहस्य को छिपाने के लिए केवल कैद ही काफी न थी, हम लोगों को सुला देना भी आवश्यक था। इसी कारण यह सब किया गया था। खिड़कियां बंद होनी सुनाई पड़ीं। समुद्र भी शांत हो गया। इस समय 'नाटिलस' समुद्र-तल पर थी या सागर-सलिल में समा गई थी; यह कुछ मेरी समझ में न आया।

मैं नींद रोकना चाहता था, पर यह असंभव था। मेरी सांस कमजोर पड़ गई। मृत्यु की भांति ठंडी हवा मेरी ओर आई तथा मेरे होंठों को शून्य कर दिया। मेरी आंखों की पलकें आंखों के ऊपर गिर पड़ी थीं। आंखें खोले न खुलती थीं। आंखें बंद हो गईं और मैं बिल्कुल बेहोश हो गया।

२४

दूसरे दिन मैं जगा। तो मुझे देख-कर आश्चर्य हुआ कि मैं अपने कमरे में था। मेरे साथी अपने स्थानों पर पहुंचा दिए गए थे। वे लोग मुझसे अधिक नहीं जानते थे कि रात में क्या हुआ था। इस रहस्य का पता भविष्य ही बताएगा। मैंने अपने कमरे को छोड़ना चाहा, परंतु क्या मैं कैदी था? नहीं, बिल्कुल स्वतंत्र था। मैंने दरवाजा खोला तथा जीने से होकर चबूतरे पर चढ़

गया। नेडलैंड और कनसील मेग वहां इंतजार कर रहे थे। उन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ कि वे लोग अपने कमरे में थे।

'नाटिलस' अब धीरे-धीरे सागर तल-पर चली जा रही थी। इसमें कुछ परिवर्तन न हुआ था। नेडलैंड समुद्र को देख रहा था।

पश्चिमी हवा चल रही थी। इसी हवा के झोंके में नाव चली जा रही थी। 'नाटिलस' की हवा रोज की भांति फिर ताजा की गई। यह ४५ फुट की गहराई में जा रही थी। अधिक गहराई में न ले जाया जा रहा था, ताकि आवश्यकता पड़ने पर यह तुरंत समुद्र-तल पर आ सकती थी। दूसरा अफसर आज चबूतरे पर आया। उसने रोज की भांति अपनी भाषा में कुछ कहा।

कप्तान नेमो अब तक न आया था। इस नाव के आदमियों में हमें केवल रसोइया ही दिखाई पड़ रहा था।

लगभग २ बजे दोपहर मैं कमरे में बैठा अपनी डायरी ठीक कर रहा था, इतने में कप्तान ने दरवाजा खोलकर अंदर प्रवेश किया। मैंने उससे नमस्कार किया। उसने भी इशारे से उसका उत्तर दिया। मैं अपना काम करता रहा। मुझे आशा थी कि शायद वह रात की घटना का कुछ स्पष्टीकरण करेगा, परंतु उसने कुछ न कहा।

मैंने कप्तान के चेहरे की तरफ देखा। वह आज कुछ थका हुआ जान पड़ता था। आंखें लाल थीं तथा चेहरे पर वास्तविक शोक प्रकट हो रहा था। वह इधर-उधर टहलता, बैठता-उठता तथा कभी हाथ में किताब ले इधर-उधर देखता था। कभी अपने बाजे या यंत्र देखता। उसका मन शांतिपूर्वक

किसी एक वस्तु पर न लगता था।

अंत में वह मेरे पास आ मुझसे बोला, "मिस्टर एरोनेक्स, क्या आप डाक्टरी जानते हैं ?"

मैंने कुछ उत्तर न दिया।

उसने फिर कहा, "क्या आप डाक्टरी जानते हैं ?"

मैंने उत्तर दिया, "मैं डाक्टर तथा सर्जन हूं।"

मैंने पहले काफी समय तक डाक्टरी की थी।

कप्तान मेरी बातों से संतुष्ट हो गया। परंतु मैं यह न समझा था कि वह क्या चाहता है। ऐसा सोच मैंने थोड़ी देर तक कुछ न कहा।

कप्तान ने कहा, "क्या आप एक मरीज का इलाज कर सकेंगे ?"

"क्या, इस नाव में कोई बीमार पड़ गया है ?"

"हां।"

"मैं चलने को तैयार हूं।"

"आइए चलें।"

मेरा दिल तेजी से धड़क रहा था। मैं बहुत थका हुआ था। मेरी समझ में न आया कि इस बीमारी का कल रात हम लोगों को कैद किए जाने वाली घटना से क्या संबंध है।

कप्तान नेमो मुझे खलासियों के कमरों के पास एक कोठरी में ले गया। वह केवल बीमार ही नहीं, जख्मी भी था। जख्म-पट्टी खोलकर देखा। जख्म बड़ा भयानक था। सिर किसी भयंकर चोट से चूरचूर था। हड्डियां दिखाई पड़ रही थीं। सांस बहुत धीमी-धीमी चल रही थी। मैंने नाड़ी देखी, वह बहुत क्षीण थी। हाथ-पैर ठंडे हो चुके थे। मौत उसके सिर पर नाच रही थी। मैंने

उसकी मरहम-पट्टी कर दी। कप्तान की ओर घूमकर कहा, "कप्तान, यह चोट इसे कैसे आई ?"

"इससे आपको क्या मतलब ! धक्के से 'नाटिलस' का हत्था टूटकर इसके लग गया है। आप यह बताइए कि इसकी हालत कैसी है।"

मुझे उत्तर देने में संकोच हुआ।

"आप बताइए, यह आदमी फ्रांसीसी भाषा तो नहीं जानता।" मैंने अंतिम बार इस घायल आदमी की ओर देखकर उत्तर दिया, "यह आदमी दो घंटे के अंदर मर जाएगा।"

"किसी तरह नहीं बच सकता ?"

"किसी तरह नहीं।"

कप्तान नेमो ने अपने हाथ मले। उसकी आंखों में आंसू भर आए।

थोड़ी देर तक मैं भी इस मरते हुए मनुष्य को देखता रहा। मैंने उसके मुंह से अंतिम शब्द सुनकर उसके जीवन का रहस्य समझने की कोशिश की।

कप्तान नेमो ने कहा, "प्रोफेसर, आप जा सकते हैं।"

कप्तान को वहीं छोड़ अपने कमरे में चला आया। मैं दिन भर बहुत दुखी रहा। रात को बहुत थोड़ा सोया। मैंने स्वप्न में देखा कि अंतिम संस्कार के मंत्र सुनाई दे रहे थे। मैंने सोचा कि किसी अज्ञात भाषा में उसी मरे हुए व्यक्ति के बारे में प्रार्थना हो रही है !

दूसरे दिन मैं डेक पर गया। कप्तान नेमो मुझसे पहले पहुंच चुका था। जैसे ही उसने मुझे देखा, मेरे पास आया।

उसने कहा, "क्या आप समुद्र में यात्रा के लिए चल सकते हैं ?"

मैंने पूछा, "अपने साथियों के साथ ?"

"यदि वे चाहें तो चल सकते हैं।"

"हम लोग आपकी सेवा में हाजिर हैं।"

"तो गोताखोरी की पोशाकें पहनिए।"

मैंने नेडलैंड तथा कनसील से कप्तान का प्रस्ताव बताया। दोनों तुरंत तैयार हो गए।

इस समय प्रातः के आठ बजे थे। साढ़े आठ बजे हम लोग कपड़े पहन अपने-अपने सांस लेने तथा रोशनी के यंत्र ले तैयार हो गए। दरवाजा खुला। कप्तान के पास लगभग १२ खलासी भी थे। हमलोग भी कप्तान के पीछे-पीछे चले। जहां पर 'नाटिलस' खड़ी थी, हमलोग समुद्र की ३० फुट गहरी तलहटी में पैदल चलने लगे।

थोड़ी ही देर में हम लोग १५ फैदम नीचे तलहटी पर पहुंच गए। यह स्थान पहली यात्राओं की प्रशांत महासागर वाली तलहटी से भिन्न था। यहां चमकदार बालू न थी। न समुद्री झाड़ियां और जंगल ही थे। यहां मोतियों का राज्य था। कभी सीप के विषय में पहले पहल लोगों में यह मतभेद था कि इसे वनस्पति समझा जाय या जीव। १६९४ ई० तक इनके बारे में कुछ निश्चय न हो पाया था।

हम लोग आगे मूंगे की चट्टान की ओर बढ़े। यह अभी बन ही रही थी। एक दिन पूरे हिंद महासागर के एक भाग को ढक लेगी। रास्ता घनी झाड़ियों से घिरा था। ये झाड़ियां कई समुद्री पौधों के एक साथ मिल जाने से बनी थीं। कभी-कभी स्थलीय पौधों से विपरीत ये झाड़ियां, चट्टानों पर ऊपर से नीचे की ओर बढ़ती हुई दिखाई देती हैं।

इनकी टहनियां विभिन्न रंगों से रंजित होती हैं। इनपर हमारी बिजली के लैंपों की रोशनी पड़कर अत्यंत रमणीय दृश्य पैदा करती थी। ऐसा मालूम होता था मानो बड़े-बड़े लाल सागर तरंगों में तैर रहे हैं। उनपर मछलियां तेजी से तैर रही थीं, मानो चिड़ियों के झुंड उड़ रहे हैं। मेरा हाथ ज्यों ही उनकी ओर बढ़ा, सारी सजीव झाड़ियां तथा पुष्प सचेत हो उठे। श्वेत पंखुड़ियां लाल-लाल कोषों में बंद हो गईं। पुष्प भी मेरी दृष्टि से ओझल हो गए। झाड़ियां भी सितारों के रूप से ठूंठों के रूप में परिणत हो गईं। सारा सौंदर्य लुप्त हो गया।

अचानक ही हम लोग इस मोती के राज्य में आ गए। यहां के मोती फ्रांस और इटली के किनारे भूमध्यसागर में मिलने वाले मोतियों के समान थे। इनके चमकदार रंग कवि के 'खून के फूल' नाम को चरितार्थ कर रहे थे। व्यापारियों के लिए यही मोती सबसे अच्छे थे। यह मोती तीन सौ बीस रुपया प्रति सेर के भाव आसानी से बिक जाते थे। विश्व के सारे व्यापारियों का भाग्य इसी सागर के मोतियों पर निर्भर था।

कप्तान नेमो एक अंधेरी गैलरी में चला गया। मैं भी उसके पीछे-पीछे गया। मेरी रोशनी कभी-कभी अद्भुत दृश्य पैदा कर देती थी। मुझको एक दूसरा समुद्री कीट दिखाई पड़ा। इसमें भी कुछ हरी, कुछ लाल चूने की जड़ी चमक रही थी।

प्रकृति विशेषज्ञों में इस स्थान पर बड़ा मतभेद है। एक विज्ञान वेत्ता ने टिप्पणी करते हुए लिखा है, "शायद यही वह वास्तविक स्थान है जहां से मनुष्य का जीवन पत्थरों की शैया से जागृत हुआ।"

अंत में हम लोग दो घंटे की यात्रा के बाद १५० फैदम की

गहराई में पहुंच गए थे। यहां मोती-राज्य की अंतिम सीमा थी, परंतु यहां मोतियों की फुटकर छोटी झाड़ियां न थीं। वहां पर भी इनके घने जंगल थे। यहां भी असंख्य प्रस्तरगीभूत वृक्ष एक दूसरे से मिले हुए खड़े थे। हम लोग पानी में उनकी बड़ी-बड़ी ऊंची शाखाओं के नीचे चले जा रहे थे। मेरे पैरों के नीचे तरह-तरह के समुद्री पौधों के पुष्प दरी में जड़ित चमकदार जवाहरातों की तरह बिछे हुए थे।

यह अवर्णनीय दृश्य था। थोड़ी देर बाद कप्तान रुक गया। हम लोगों ने भी कप्तान का ही अनुसरण किया। हमने देखा कि जहाजी कप्तान के चारों ओर आधा गोला बनाकर खड़े हो गए। हमने देखा चार आदमी एक लंबा बक्स अपने कंधों पर लिए चले आ रहे हैं।

इस समय हम लोग समुद्री जंगलों की ऊंची-ऊंची झाड़ियों से घिरे हुए एक बड़े मैदान में खड़े थे। बिजली के जलते हुए लैंपों से हम लोगों के प्रतिबिंब जमीन पर बहुत बड़े-बड़े दिखाई पड़ रहे थे। मैदान के चारों ओर अंधियारा छाया हुआ था। प्रकाश बहुत साधारण था। मोतियों पर पड़ती रोशनी की प्रतिच्छाया झलक रही थी।

नेडलैंड और कनसील मेरे समीप खड़े थे। मैं चारों ओर देख रहा था, परंतु मेरी समझ में न आ रहा था कि हम लोग यहां क्यों इकट्ठे हुए हैं। थोड़ी दूर पर मोतियों की झाड़ियों के झुंड यहां भी दिखाई पड़ रहे थे। उसी जगह पास में मोतियों का एक क्रास बना हुआ था।

कप्तान के इशारे पर एक आदमी अपनी कमर से तबली निकालकर उस क्रास के पास एक गड्ढा खोदने लगा।

अब मैं समझ गया था, यह जगह एक कब्रिस्तान है। यह गड्ढा एक कब्र है तथा यह लंबी चीज उस आदमी का मृतक शरीर है, जो कल रात को मर गया था। कप्तान नेमो तथा उसके साथी यहां उसका अंतिम संस्कार करने आए हैं। इस अथाह गहराई में मोतियों के बीच ये लोग आराम करते हैं। मेरा मस्तिष्क दुख से उत्तेजित हो उठा। जो कुछ हो रहा था, मैं देख पाने में समर्थ न था।

कब्र खोदी जाने लगी। कहीं-कहीं मछलियां कूद रही थीं। कभी-कभी समुद्र के अंदर गड़े धातु से तबली लड़ कर आवाज पैदा करती थी। थोड़ी देर में कब्र इतनी गहरी तथा चौड़ी हो गई जिसमें वह शरीर रखा जा सकता था।

कपड़ा ले, उसमें लपेटकर मृतक शरीर इस जलयुक्त कब्र में धीरे से रख दिया गया। कप्तान तथा उसके साथी और हम लोग सीने पर हाथ बांधकर खड़े हो गए तथा झुक-झुक कर कुछ गीत पढ़े।

इसके बाद वह खोदी हुई मिट्टी, मोती, हीरे-जवाहरात, उसीके ऊपर डालकर कब्र बंद कर दी गई। यह सब काम समाप्त कर कप्तान तथा उसके साथी और हम सब लोग एक जगह इकट्ठे हुए। फिर कब्र की परिक्रमा कर हाथ झुकाकर उससे विदा मांग चल दिए।

हम लोग 'नाटिलस' की ओर रवाना हुए तथा उन्हीं झाड़ियों, जंगलों में होकर ऊपर चढ़ते हुए लगभग १ बजे 'नाटिलस' के पास पहुंच गए।

मैं अपने कपड़े बदल चबूतरे पर चला गया। पीछे से कप्तान भी वहीं आ गया। हम लोग प्रार्थना कर लैंप के कमरे के पास बैठ गए।

मैंने उठकर कहा, "मुझे यह पहले से मालूम हो गया था कि वह आदमी मर गया है। मैंने यह स्वप्न देखा था।"

"अब वह अपने साथियों के साथ मोती के कब्रिस्तान में आराम कर रहा होगा।"

कप्तान अपना मुंह हाथों से ढक थोड़ी देर चुप रहा। फिर कहा, "यही हमारा समुद्री लहरों में सैंकड़ों फुट गहरा कब्रिस्तान है।"

"कप्तान आपके मुर्दे शांतिपूर्वक इसी में शार्क मछलियों से सुरक्षित सोते तो रहते हैं?"

कप्तान ने गंभीरता से उत्तर दिया।

"शार्कों और आदमियों—दोनों से सुरक्षित।"

२५

इस दृश्य ने मेरे हृदय पर बड़ा प्रभाव डाला था। आगे चलकर कप्तान नेमो ने अपना जीवन इसी प्रकार अथाह सागर की तलहटी में ही व्यतीत किया। और उसका कब्रिस्तान भी इसी सागर-सलिल में ही है। अब तक किसी भी समुद्री जंतु ने 'नाटिलस' के किसी भी जहाजी को न उनके जीवन में सताया और न मृत्यु के बाद ही। कप्तान में मनुष्य मात्र को चुनौती देने के लिए वही अदम्य तथा भयानक शक्ति थी। उसने विश्व के धोखों से परेशान हो ऐसी जगह शरण ली थी, जहां वह अपनी सहज बुद्धि का स्वत्रतंतापूर्वक उपयोग कर सकता था।

मेरी राय में कप्तान नेमो का यह स्वभाव हो गया था ।

वास्तव में गत रात हम लोगों को कोठरी में बंद करना, मेरे हाथों से बलपूर्वक दूरदर्शक छीना जाना तथा उस खलासी को 'नाटिलस' के अज्ञात धक्के से पहुंची मारक चोट, कप्तान के स्वभाव का दूसरा पहलू था । कप्तान नेमो को मनुष्यमात्र से विच्छेद के कारण संतोष न था । उसकी 'नाटिलस' केवल उसकी स्वतंत्रता की भावना को तो पूर्ण करती ही थी, साथ ही साथ उसकी नाव बदला लेने का एक भयानक अस्त्र भी थी ।

मेरे लिए कप्तान नेमो ने बंधन न रखा था । इसका मूल कारण यह था कि वह जानता था कि 'नाटिलस' से भाग जाना असंभव है । हम लोग उसके सम्मानित नहीं, साधारण कैदी थे । केवल अपनी व्यवहार-बुद्धि के कारण वह हमें अतिथि कहा करता था । नेडलैंड ने स्वतंत्रता पाने की आशा अब भी न छोड़ी थी ।

अवसर मिलने पर वह अवश्य ही स्वतंत्र होने का प्रयत्न करेगा । करूंगा मैं भी, परंतु मुझे 'नाटिलस' छोड़ने में थोड़ा दुख अवश्य होगा, क्योंकि तलहटी में छिपे हुए उन समस्त रहस्यों का अध्ययन मैं अवश्य करना चाहूंगा, जिन्हें मनुष्य ने अभी तक नहीं देखा है । मैंने अभी तक देखा ही क्या है ? अभी तो केवल ६००० समुद्री मील की यात्रा की है ।

मैं जानना चाहता था कि 'नाटिलस' अब आबाद देश की ओर जा रही थी । और मुझे कैद से छुटकारा पाने के लिए अनेक अवसर मिलेंगे ।

२१ जनवरी, सन् १८६८ ई० को दोपहर को 'नाटिलस'

का एक अधिकारी सूर्य की ऊंचाई नापने के लिए चबूतरे पर आया। मैं भी वहीं पहुंचा।

वह अधिकारी अपने यंत्र से परीक्षण कर ही रहा था कि 'नाटिलस' का वही हृष्ट-पुष्ट खलासी, जो क्रेस्पो द्वीप की यात्रा में मेरे साथ गया था, लालटेनों के शीशे साफ करने के लिए आया। ध्यानपूर्वक देखने पर पता चला कि बिजलीघरों की भांति शीशे के तालों द्वारा इनकी रोशनी सौ गुणा तेज की गई थी। बिजली का लैंप भी रखा था, इनमें रोशनी वायुशून्य जगह में पैदा की जाती थी, जिससे इसकी स्थिरता में कमी न आने पाए। इस वायुशून्यता से ग्रेनाइट भी कम खर्च होता है। कप्तान ने इस प्रकार का प्रबंध कर रखा था, क्योंकि उसके लिए यह धातु दुर्लभ थी। अब 'नाटिलस' अपनी समुद्री यात्रा के लिए तैयार थी। मैं नीचे कमरे में चला गया। खिड़कियां खोल दी गईं, 'नाटिलस' सीधे पश्चिम की ओर भागने लगी।

इस समय हम लोग हिंद महासागर का विहार कर रहे थे। इसका क्षेत्रफल १,२००,०००,००० एकड़ है। तथा इसका पानी इतना स्वच्छ है कि अधिक से अधिक गहराई पर भी साफ-साफ दिखाई पड़ता है। 'नाटिलस' इस समय साधारण रूप से १०० और २०० फैदम की गहराई में दौड़ रही थी। इस प्रकार हम कई दिन तक चलते रहे। मुझे सागर से प्रेम है। जिनको ऐसा प्रेम नहीं उन्हें एक-एक घंटा भी बहुत बड़ा मालूम हो सकता है। परंतु प्रातः की चबूतरे की सैर, कमरे की खिड़कियों द्वारा सागर-जल का निरीक्षण, पुस्तकें पढ़ना तथा रोज के संस्मरण डायरी में लिखने में, मेरा सारा समय बीत जाता था। मैं जरा भी खाली न रहता था। 'नाटिलस'

के प्रत्येक मनुष्य का स्वास्थ्य बहुत अच्छा रहता था। हम लोगों के लिए यह जलवायु बहुत अनुकूल था। एक ही ताप-क्रम में रहने के कारण खांसी और जुकाम की कोई आशंका ही न थी।

कई दिनों तक समुद्री चिड़ियां दिखाई पड़ती रही थीं। कभी-कभी इनका शिकार भी होता था, जिसे पकाकर हम लोग अपना पेट भर लेते थे।

बड़ी-बड़ी चिड़ियों में एल्बेट्रास मुख्य है, जो प्रायः स्थल से दूर समुद्र पर उड़ा करती है, तथा थक जाने पर समुद्र-तल पर ही आराम भी कर लेती है। इसकी आवाज गधे जैसी होती है।

कभी-कभी जाल में समुद्री कछुए भी आ जाया करते थे। इनका शरीर भारी तथा पीठ और पेट मोटे होते हैं। यह जीव अपनी नाक के रास्ते से काफी हवा एकत्र करके कभी-कभी बहुत समय तक समुद्र में रह सकते हैं। इन कछुओं का गोश्त तो अच्छा नहीं होता, परंतु इनके अंडे अवश्य स्वादिष्ट होते हैं।

हमें ऐसी बहुत-सी मछलियां मिलीं जो हमने पहले न देखी थीं। इन मछलियों के ऊपर कछुओं की भांति ढक्कन होता है और यही इनकी असली हड्डी होती है।

२१ से २३ जनवरी तक 'नाटिलस' २२ मील प्रति घंटे की चाल से २४ घंटे में २५० मील चली। यहां मछलियां अधिक दिखाई पड़ने के कारण 'नाटिलस' की बिजली का प्रकाश तेज रखा गया था। मछलिया इसी कारण 'नाटिलस' के साथ दौड़ने की कोशिश करती थीं।

२४ जनवरी को प्रातः मुझे कीलिंग द्वीप दिखाई पड़ा। यह बड़े-बड़े नारियल के पेड़ों से शोभायमान था। इस द्वीप को डारविन तथा कप्तान फिट्जराय ने भी देखा था। 'नाटिलस' कुछ दूर तक इसी द्वीप के तट के साथ-साथ विचरण करती रही। हमारे जाल में सैकड़ों प्रकार के समुद्री जंतु आ जाते थे।

थोड़ी ही देर में यह द्वीप अदृश्य हो गया। हम लोगों की यात्रा उत्तर-पूर्व भारतीय प्रायद्वीप की ओर होने लगी।

एक दिन नेडलेंड ने मुझसे कहा, "यह देश बड़ा ही सभ्य है तथा पापुआ द्वीप से भी बहुत अच्छा है। इस देश में सड़कें, रेलें और अंग्रेजी, फ्रांसीसी तथा हिंदू शहर हैं। थोड़ी ही दूर पर अपने देश का एक न एक आदमी भी अवश्य मिल जाएगा। यहां भागने का अच्छा अवसर है।"

मैंने उत्तर दिया, "नेडलैंड, ऐसा ठीक नहीं। 'नाटिलस' अब यूरोप के आबाद देशों की ओर वापस जा रही है। हम लोग वहीं चलें। एक बार हम अपने यूरोपीय सागरों में पहुंचें, तब देखेंगे। परंतु मुझे आशा नहीं कि कप्तान नेमो हम लोगों को जाने की आज्ञा देंगे।"

"क्या हम कप्तान की बिना आज्ञा नहीं जा सकते?"

मैंने नेडलैंड की बात का उत्तर न दिया। सच बात तो यह है कि मैं इस सुवर्ण अवसर का सदुपयोग करके समुद्र की यात्रा करना चाहता था।

कीलिंग द्वीप के पास पहुंचकर हम लोगों की चाल कुछ धीमी पड़ गई। हमारा रास्ता अब बिल्कुल भिन्न तथा अधिक गहराई में था। इसी प्रकार हम लोग दो मील तक नीचे चले

गए। परंतु हिंद महासागर की गहराई का कुछ पता न चला। इन गहरे समुद्रों में तापक्रम शून्य से लेकर ४° तक होता है।

२५ जनवरी को 'नाटिलस' गहराई छोड़ सागर की सतह पर आ गई। अब यह ह्वेल की भांति मालूम पड़ती थी। आज मैंने तीसरा पहर चबूतरे पर ही व्यतीत किया।

चार बजे शाम को एक स्टीमर पच्छिम की ओर जाता दिखाई पड़ा। इसका मस्तूल दिखाई दे रहा था। 'नाटिलस' तो स्टीमर देख सकती थी पर स्टीमर 'नाटिलस' को न देख सकता था। यह पी० एंड टी० कंपनी का स्टीमर था, जो लंका से आस्ट्रेलिया के सिडनी नगर को जा रहा था।

दूसरे दिन १६ जनवरी को 'नाटिलस' ने ८२° देशांतर पर भूमध्य रेखा पार कर उत्तरी गोलार्द्ध में प्रवेश किया। आज शार्क मछलियों के झुंड हमारे साथ-साथ तैरते रहे। यह जीव बड़े ही भयानक होते हैं। इन्हीं के कारण हिंद महासागर खतरनाक माना जाता है। कभी-कभी ये कमरे की खिड़की के शीशे से इतनी जोर से टकरा जाते थे, कि मेरा दिल कांप उठता था। नेडलैंड चाहता था कि इन मौकों पर समुद्री सतह पर जा उनका शिकार करे। इन भयानक जीवों को देख 'नाटिलस' अपनी चाल बढ़ा इन जीवों को पीछे छोड़ देती थी।

२७ जनवरी को हम लोगों ने बंगाल की खाड़ी में प्रवेश किया। यहां कुछ मुर्दे समुद्रतल पर तैरते दिखाई पड़ते थे। यह भारतीय गांवों के मुर्दे थे, जो हिंदुओं द्वारा अपनी प्रथा के अनुसार पवित्र गंगा को समर्पित कर दिए जाते हैं। गंगा इन्हें बहाकर समुद्र तक पहुंचा देती है। शार्क इनको क्षणों में निगल जाते हैं।

७ बजे शाम को 'नाटिलस' आधी डूबी, आधी पानी के ऊपर 'क्षीर सागर' में विहार करने लगी। जहां तक दृष्टि जाती थी, सागर में दूध ही दूध दिखाई पड़ता था। क्या यह चंद्रमा की निकट किरणों का प्रभाव था? परंतु ऐसा नहीं हो सकता, क्योंकि आज उजियाले पक्ष की दूज थी, और चंद्रमा क्षितिज में जा चुका था। सारा सागर श्वेत था तथा बादल काले। एक दूसरे का विचित्र विरोधाभास प्रकट हो रहा था।

कनसील को अपनी आंखों का धोखा जान पड़ा। उसने मुझसे इसका कारण पूछा। मैंने कहा, "यहां समुद्र की धारा ही सफेद है। यह इसी भाग में पाई जाती, इसी कारण इसे 'क्षीर सागर' भी कहते हैं।"

कनसील ने कहा, "परंतु यह कैसे हो गया है? क्योंकि समुद्र का जल दूध में बदल तो नहीं गया।"

"नहीं, नहीं। यह सफेद रंग, जिससे तुम बहुत चकित हो, एक प्रकार के कीड़ों के कारण है। ये बाल की भांति होते हैं, और यहां करोड़ों की संख्या में पानी के साथ तैरते हैं। ये एक दूसरे का पीछा करके मीलों चले जाते हैं।"

"कई मील!"—कनसील ने पूछा।

"हां, परंतु इनकी संख्या जानने की कोशिश न करो। क्योंकि तुम ऐसा न कर सकोगे। क्षीर सागर लगभग ४० मील तक चला गया है।"

कनसील मेरी बात सुन न पाया था। वह इन चालीस मीलों में करोड़ों कीड़ों की गिनती का हिसाब लगता रहा।

मैं यह विचित्र दृश्य देर तक देखता रहा। कई घंटों तक 'नाटिलस' इस क्षीर-सागर में बहती रही।

आधी रात के समय 'नाटिलस' बंगाल की खाड़ी को पार-कर आगे बढ़ी। अब सागर का रंग नीला हो गया, परंतु पीछे दूर सफेद रंग अब भी दिखाई पड़ रहा था।

२६

२८ फरवरी की दोपहर को 'नाटिलस' जब फिर समुद्री सतह पर आई, तो वहां से लगभग आठ मील पच्छिम में स्थल दिखाई पड़ा। पहले-पहल मुझे २०० फुट ऊंचे विचित्र प्रकार के पर्वत दिखाई पड़े। जब पता लगाया तो मालूम हुआ कि भारतीय प्रायद्वीप के दक्षिण लंका द्वीप के पास थे।

यह द्वीप विश्व का सबसे अच्छा उपजाऊ स्थान है। मैं इस द्वीप के संबंध में पुस्तकें पुस्तकालय ढूंढने गया। इसी बीच कप्तान नेमो तथा उसका नौकर पुस्तकालय में आए।

कप्तान ने मेरी ओर देख मुझसे कहा, "प्रोफेसर, यह लंका द्वीप है, और मोती की बहुतायत के लिए प्रसिद्ध है। क्या आप इसके मोती निकालने के कार्य को देखना चाहेंगे?"

"कप्तान, मैं अवश्य देखूंगा।"

"महाशय, यह आसानी से हो सकता है। परंतु हम लोग मोती निकालने के स्थान को ही देख सकेंगे, मोती निकालने वालों को नहीं, क्योंकि मोती निकालने की ऋतु अभी आरंभ नहीं हुई है। हम मनार की खाड़ी की ओर 'नाटिलस' को ले चलेंगे। यहां से थोड़ी दूर है। हम लोग रात तक वहां पहुंच जाएंगे।"

कप्तान ने नाव के अधिकारी से अपनी भाषा में कुछ कहा। वह वहां से बाहर चला गया। तुरंत ही 'नाटिलस' सागर में समा ३० फुट की गहराई में दौड़ने लगी।

मैंने मनार की खाड़ी नक्शे में देखी। यह लंका के तट के उत्तर-पच्छिम स्थित मनार द्वीप के कारण बनी है। यहां पहुंचने के लिए हमें लंका का सारा पच्छिमी तट घूमकर यात्रा करनी पड़ेगी।

कप्तान नेमो ने कहा, "प्रोफेसर, मोती निकालने का काम बंगाल की खाड़ी, हिंद महासागर, चीन और जापान के समुद्र, पनामा की खाड़ी तथा कैलिफोर्निया की खाड़ी में किया जाता है, परंतु लंका जैसा काम कहीं भी नहीं होता। हम लोग थोड़ी ही देर में मनार की खाड़ी पहुंच जाएंगे। वहां पर मार्च के महीने तक कोई भी गोताखोर नहीं आता। इसके बाद ३० दिनों में वे अपना-अपना काम कर डालते हैं। यहां करीब ३०० नावें होती हैं। एक नाव पर १० खेने वाले तथा १० गोताखोर जाते हैं। यह गोताखोर दो भागों में विभाजित हो जाते हैं। ५ गोताखोर एक बार समुद्र में कूद डुबकी लगाकर मोती इकट्ठा कर लाते हैं। दूसरी बार दूसरे ५ गोताखोर जाते हैं। यह लोग लगभग ४० फुट तक गहराई में चले जाते हैं। तथा पैरों के बीच एक-एक पत्थर दबाकर उसे एक डोरी से नाव में बांध देते हैं।"

"यह तरीका तो बहुत ही पुराना है, जिसे वे अब तक इस्तेमाल करते हैं?"

मैंने फिर कहा, "हम लोगों की गोताखोरी की पोशाक तो इनके बहुत ही लाभ की होगी?"

"हां, ये गोताखोर समुद्र के अंदर अधिक देर तक नहीं रह सकते। मुझे जहां तक मालूम है, ये ४० से लेकर ८७ सेकंड तक अंदर रहते हैं। और इतने पर भी जब ये नाव में लौटते हैं, तो इनके कान व नाक से खून बहने लगता है। एक गोताखोर औसतन ३० सेकंड समुद्र के अंदर रह सकता है। इसी समय में वह इन मोतियों से अपना झोला भर लाता है। इन बेचारों का जीवन-काल घट जाता है, दृष्टि बहुत क्षीण हो जाती है, शरीर पर जख्म हो जाते हैं तथा बहुतों को पक्षाघात भी हो जाता है।"

"यह तो बड़ा ही कष्टदायक उद्योग है और केवल अमीरों के लोभ और अहंभाव के लिए किया जाता है? परंतु कप्तान, एक दिन में एक नाव कितने मोती निकाल लाती है?"

"४० से ५० हजार तक। लोग तो यहां तक कहते हैं कि अंग्रेज सरकार ने अपने गोताखोरों से १८४४ ई० में २० दिन में सात करोड़ साठ लाख मोती निकलवाए थे।"

"तो इन गोताखोरों की अच्छी तनख्वाहें भी होंगी?"

"बहुत कम, प्रोफेसर साहब। पनामा में इनको एक सप्ताह में केवल एक डालर दिया जाता है। कभी-कभी वे लोग ठेके पर भी निकालते हैं। तब उन्हें प्रति मोती वाले सीप का एक तांबे का 'साल' सिक्का दिया जाता है।"

"जो अपने मालिकों को मालदार बनाते हैं उन्हें केवल एक 'साल'! कितना अन्याय है! पूंजीपतियों द्वारा श्रमिक का इस प्रकार शोषण होता है?"

कप्तान ने कहा, "आपको तथा आपके साथियों को मनार की खाड़ी में यह दृश्य देखने को मिलेगा। यदि कोई मोती

निकालने वाला सीजन से पहले आ गया, तो आप लोग मोती निकालने का काम भी देख सकेंगे।"

"कप्तान, बिल्कुल ठीक।"

"प्रोफेसर ऐरोनेक्स, आप शार्क से नहीं डरते ?"

मैं स्वीकार करता हूं कि मैंने अभी तक कोई शार्क निकट से देखा ही नहीं।"

कप्तान नेमो ने कहा, "परंतु मुझे तो वह अवसर मिलते हैं और वहां आपको भी मिलेंगे। हम लोग हथियार लेकर शार्क के शिकार के लिए चलेंगे। कल तड़के फिर मिलेंगे। नमस्कार।"

कप्तान नेमो यह कहकर कमरे से बाहर चले गए।

मैं मन ही मन सोचने लगा। अगर मुझे स्वीटजरलैंड में रीछ के शिकार के लिए आमंत्रित किया जाय, तो मैं तुरंत स्वीकार कर लूंगा। यदि अतल्स के मैदान में शेर का या भारतीय जंगलों में चीते के शिकार के लिए आमंत्रित किया जाय, तो मैं कहूंगा, वाह ! शेर और चीते का शिकार ! परंतु शार्क के शिकार के लिए कहा जाय, तो मैं एक दिन का समय सोचने के लिए मांग लूंगा। शार्क की भयंकरता की कल्पना से मेरे माथे पर पसीना आ गया।

मैंने अपने आप कहा, मुझे सोचने का समय अवश्य मांगना चाहिए। समुद्र की तलहटी में यात्रा करना, जहां कि शार्कों का मिलना निश्चित ही है, बहुत ही खतरनाक है। वैसे तो अंदमान द्वीप के लोग एक छुरे से ही शार्क पर आक्रमण कर देते हैं, परंतु उनमें से बहुत कम ही वापस आते होंगे।

मैं शार्क के शरीर की कल्पना करने लगा। उसका मुंह इतना भारी तथा दांत इतने तेज होते हैं कि वह मिनटों में

आदमी के टुकड़े कर डालता होगा। यह सोच मुझे डर लगा। मैंने सोचा, अच्छा, कनसील अभी तक न आया है और न आएगा ही। मैं कनसील के न आने का बहाना कर दूंगा। और नेड शायद यात्रा में आना पसंद ही न करे। वह शायद तुरंत इनकार कर दे। मैं यह सोच तथा द्वीप के विवरण की पुस्तक के पन्ने उलट ही रहा था कि नेड और कनसील कमरे में आ पहुंचे।

नेडलैंड ने कहा, "कप्तान नेमो ने मुझे एक अच्छा अवसर दिया है।"

मैंने कहा, "तो तुम जानते हो ?"

कनसील ने कहा, "हां, कप्तान ने हम लोगों को आपके साथ लंका का मोतीक्षेत्र देखने के लिए कल आमंत्रित किया है।"

"क्या उन्होंने तुमसे और कुछ नहीं बताया ?"

नेड ने उत्तर दिया, "जिस यात्रा के बारे में आपसे बताया है वही मुझसे। इसके अतिरिक्त और कुछ नहीं बतलाया।"

"तब तुमको पूरा हाल नहीं बताया।"

"नहीं महाशय, कुछ नहीं। आप तो मेरे साथ जाएंगे ही।"

"निश्चय ही, यह यात्रा तो तुम्हारी ही पसंद की है।"

"हां, यह तो निश्चय ही बहुत विचित्र है।"

"उतनी ही खतरनाक भी।"

नेडलैंड ने कहा, "खतरनाक क्यों ? मोतियों के क्षेत्र की यात्रा खतरनाक ?"

मुझे यह स्पष्ट हो गया कि कप्तान नेमो ने इन लोगों से शार्कों के बारे में न बताया था, परंतु मुझे तो अवश्य बताना चाहिए।

नेड ने प्रश्न किया, "महाशय, मुझे पहले आप यह बताएं कि मोती होता क्या है ?"

"नेड, कवि तो मोती को सागर के आंसू कहता है। चीन के लोग इसे जमी हुई ओस की बूंद कहते हैं। औरतें इसे जवाहरात में गिनती हैं। इसे वे नाक, कान तथा गले में पहनती हैं। रसायन विशेषज्ञ इसे फास्फेट तथा चूने और कारबोनेट का मिश्रण कहते हैं। कुछ प्रकृतिविशेषज्ञों के विचार में यह सीप का एक भाग है, जो कुछ दशाओं में पैदा होता है। मोती कई रंग के नीले, हल्के नीले, लाल, सफेद तथा बैंगनी होते हैं। यह स्काटलैंड, वेल्स, आयरलैंड, सैक्सोनी, बोहेमिया और फ्रांस के चश्मों में पाया जाता है।"

नेड ने उत्तर दिया, "मैं वहां जाकर देखूंगा।"

कनसील ने पूछा, "क्या एक सीप में कई मोती हो सकते हैं ?"

मैंने उत्तर दिया, "हां, ऐसा लिखा तो है, परंतु मुझे ऐसा विश्वास नहीं।"

कनसील ने पूछा, "यह मोती निकाले कैसे जाते हैं ?"

"मोती कई प्रकार से निकाले जाते हैं, परंतु आमतौर से मोती के सीप किनारे की समुद्री लताओं पर डाल दिए जाते हैं। १० दिन बाद वे सड़ जाते हैं, फिर उन्हें समुद्री जल की बड़ी-बड़ी टंकियों में डाल दिया जाता है। तब सीप के दोनों पल्ले निकाल दिए जाते हैं। अंदर का मुलायम भाग अलग करके उबाला जाता है, जिसमें से बहुत-से छोटे-बड़े मोती निकाले जाते हैं।"

कनसील ने पूछा, "क्या इनकी कीमत इनके आकार पर निर्भर होती है ?"

मैंने उत्तर दिया, "केवल आकार पर ही नहीं, उनकी बनावट, रंग तथा उनके अच्छे लगने पर भी कीमत में अंतर हो जाता है। सबसे अच्छे मोती सफेद होते हैं। यह प्रायः अर्द्ध पारदर्शक तथा गोल या अंडाकार आकृति के होते हैं। जो गोल होते हैं वे आभूषणों में तथा अंडाकार कान के झुमकों में प्रयुक्त होते हैं। इसके अतिरिक्त जो अधिक कीमती होते हैं, वे अलग ही बेच लिए जाते हैं। जो बहुत छोटे होते हैं, वे वजन से बिकते हैं। वे दवा तथा अन्य कार्यों में काम आते हैं।"

"इन मोतियों का इनके आकार के हिसाब से विभाजन करना भी कठिन होता होगा ?"

"कुछ ऐसा कठिन नहीं। यह सब चलनी द्वारा आसानी से हो जाता है।"

कनसील ने कहा, "प्रोफेसर, मुझे बताइए कि मोतियों से क्या आय हो जाती होगी ?"

"जिस पुस्तक को हम पढ़ रहे हैं, उसपर यदि विश्वास किया जाय तो लंका को इस व्यवसाय से ३० लाख शार्क प्रति वर्ष की आय होती है।"

कनसील मेरी बात काटकर बोला, "शार्क या फ्रांक ?"

मैंने उत्तर दिया, "हां फ्रांक, ३० लाख फ्रांक; परंतु अब आय घटकर दो तिहाई ही रह गई है। यही हाल अमेरिका के मोती-क्षेत्रों का है।"

कनसील ने पूछा, "क्या इस पुस्तक में बहुमूल्य मोतियों का हाल नहीं लिखा ?"

"हां, इसमें लिखा है कि रोम के सम्राट् सीजर ने अपनी प्रेमिका सरविलिया को ४८०० पौंड का एक मोती दिया था।"

नेडलैंड ने कहा, "मैंने तो यहां तक सुना है कि प्राचीन काल में एक महिला सिरके में मोती डालकर पिया करती थी।"

कनसील ने कहा, "वह शायद क्लियोपैट्रा होगी।"

"हां, वही होगी।"

कनसील ने कहा, "मित्र नेड, यह तो बड़ी बेजा बात है। सिरके के एक छोटे से गिलास की कीमत ६०,००० पौंड।"

नेड ने उत्तर दिया, "मुझे अत्यंत खेद है कि मैंने उस औरत से शादी नहीं की।"

कनसील ने हंसकर कहा, "क्लियोपैट्रा के पति नेडलैंड!"

नेडलैंड ने गंभीरतापूर्वक उत्तर दिया, "कनसील, मेरी तो शादी हो गई होती। मेरी गलती नहीं, जो मैं अकेला हूं। मैं तो अपनी सुंदर प्रेमिका के लिए एक मोतियों का हार लाया था; परंतु उसने पता नहीं क्यों, दूसरे के साथ शादी कर ली। वह हार तो मुझे डेढ़ डालर का ही मिल गया था। और प्रोफेसर, यदि आप मेरी बात मानें, कि जिन मोतियों का वह हार बना था, वह प्रथम श्रेणी से भी अच्छे थे।"

मैंने हंसकर कहा, "वह कांच के बनावटी मोती रहे होंगे और उनमें मोम भरा होगा।"

नेडलैंड ने उत्तर दिया, "शायद इसी कारण वह मुझसे शादी न कर सकी, दूसरे के साथ कर ली।"

"यदि मोतियों का मूल्य देखा जाय, तो जितने आपके कप्तान नेमो के पास हैं, उतने किसी बड़े राजा के यहां भी न निकलेंगे।"

कनसील ने उसी कमरे के शीशे के केस में रखे एक मोती की

ओर इशारा करके कहा, "इसके विषय में आप क्या कहते हैं ?"

"हां, इसकी कीमत २० लाख फ्रांक से कम न होगी।"

"हां, बीस लाख फ्रांक। और इसे उठा लेने के कष्ट के अतिरिक्त इसमें कप्तान का और कुछ न लगा होगा।"

नेडलैंड ने कहा, "कौन जानता है कल की यात्रा में हमें इस प्रकार के मोती मिलें।"

कनसील ने कहा, "वाह !"

नेड ने कहा, "क्या नहीं।"

"इस 'नाटिलस' के लाखों का धन मेरे किस काम का है?" मैंने कहा।

नेडलैंड ने कहा, "'नाटिलस' में नहीं सही, किंतु बाहर ?"

मैंने उत्तर दिया, "नेड, तुम ठीक कहते हो, यदि हम यूरोप या अमेरिका में लाखों रुपए का एक ही मोती ले जाएं, तो हमारी यह यात्रा सफल मानी जाय।"

नेड ने कहा, "मैं भी यही समझता हूं।"

कनसील ने कहा, "लेकिन क्या यहां गोता लगाना खतरनाक है ?"

मैंने कहा, "यदि सावधानी से लगाया जाय तो कोई खतरा नहीं है।"

नेडलैंड ने कहा, "कुछ समुद्री पानी पेट में जाने के अतिरिक्त और क्या खतरा है?"

मैंने कहा, "नेड, तुम ठीक कहते हो। क्या तुम शार्क से डरते हो ?"

नेड ने उत्तर दिया, "एक पेशेवर शिकारी को शार्क से क्या डर ? मेरा यही रोज का काम है।"

२७

शनैः-शनैः रात हो गई। मैं बिस्तर पर जा सोया। रात-भर मैंने शार्क के ही स्वप्न देखे।

दूसरे दिन सुबह ४ बजे ही रसोइए ने मुझे जगा दिया। मैं फौरन उठ गया। कपड़े पहनकर कमरे में गया। कप्तान नेमो वहां बैठा मेरा इंतजार कर रहा था।

"मिस्टर ऐरोनेक्स, क्या आप यात्रा के लिए तैयार हैं ?"

"मैं तैयार हूं।"

"तो मेरे साथ चलिए।"

"कप्तान, मेरे साथियों का क्या होगा ?"

"क्या वे लोग मेरा इंतजार कर रहे होंगे ?"

"क्या हम लोगों को गोताखोरी की पोशाकें पहननी होंगी ?"

"अभी नहीं ! मैं 'नाटिलस' को तट पर नहीं ले जाना चाहता। मनार की खाड़ी अभी थोड़ी दूर है। मैंने नाव तैयार करने के लिए आदेश दे दिया है। नाव हमें ठीक स्थान तक पहुंचा देगी। इससे हमें काफी दूर पैदल नहीं चलना पड़ेगा। उसी नाव में हम लोगों की गोताखोरी की पोशाकें होंगी। समुद्र के अंदर की यात्रा प्रारंभ करते समय हम पहन लेंगे।"

कप्तान मेरे साथ चबूतरे पर चढ़ गया। नेडलैंड और कनसील वहां पहले से ही मौजूद इस मनोरंजक यात्रा की तैयारी में लगे थे। 'नाटिलस' के पांच नाविक अपने हाथों में डांड लिए नाव पर हम लोगों का इंतजार कर रहे थे। हम लोग उसपर बैठ गए। नाव तेजी से चलने लगी।

रात बहुत अंधियारी थी। आसमान में काले-काले बादल

छाए हुए थे। एक भी तारा दिखाई न दे रहा था। स्थल कहीं दिखाई न पड़ा। केवल एक हल्की सफेद लाइन तीन चौथाई क्षितिज में दक्षिण-पच्छिम से उत्तर-पच्छिम तक दिखाई पड़ रही थी। अब मेरी नाव लंका द्वीप के पच्छिमी किनारे की ओर मनार की खाड़ी के पच्छिम में चली जा रही थी।

गहरे पानी के नीचे लगभग ३० मील लंबे मैदान में भी मोती के सीप बिखरे पड़े थे। कनसील, नेड तथा मैं नाव में बैठ दक्खिन की ओर जा रहे थे। नाविक नाव धीरे-धीरे चला रहे थे। कप्तान बैठा कुछ सोच रहा था।

लगभग साढ़े पांच बजे सूर्य की रोशनी में किनारे का ऊपरी भाग साफ-साफ दिखाई पड़ने लगा। पूर्व की ओर बिल्कुल समतल था, परंतु दक्खिन का भाग कुछ ऊपर उठा था। किनारा कोहरे के कारण साफ-साफ नहीं दिखाई पड़ रहा था। हम लोग अब भी वहां से ५ मील दूर थे। न कोई नाव दिखाई पड़ी और न कोई गोताखोर ही। शायद हम लोग मोती निकालने के सीजन से एक मास पूर्व ही आ गए थे।

सुबह ६ बजे एकाएक दिन निकल आया। मुझे स्थल साफ-साफ दिखाई देने लगा। कुछ पेड़ इधर-उधर दिखाई दिए। नाव अब मनार द्वीप के निकट पहुंच गई थी। कप्तान नेमो अपनी जगह से उठ समुद्र देखने लगा।

मोती के सीप काफी संख्या में इसी जगह मिलते हैं। कप्तान के इशारे पर फौरन लंगर डाल दिया गया।

कप्तान ने कहा, "प्रोफेसर, अब हम लोग अपने निश्चित स्थान पर आ गए। एक महीने बाद यहां सैकड़ों नावें इकट्ठी हो जाएंगी। इसी जगह गोताखोर खूब मोती निकालते हैं।

"यह खाड़ी इसी कार्य के लिए बहुत उपयुक्त है, क्योंकि तूफानों से रक्षित है। हम लोग अब अपनी-अपनी गोताखोरी की पोशाकें पहनकर चलें।"

मेरे तथा मेरे दो साथियों सहित कप्तान नेमो ने गोताखोरी की पोशाकें पहन लीं। नाविकों में से किसी को साथ न जाना था।

हम लोगों की वर्दियां कस दीं गईं। सांस लेने के यंत्र पहना दिए गए। लैंप की कोई आवश्यकता न थी। तांबे का टोप पहनने के पहले मैंने कप्तान से प्रकाश के बारे में पूछा।

कप्तान ने कहा, "इसकी कोई आवश्यकता नहीं। हम लोग अधिक गहराई में न जाएंगे। वहां तक सूर्य की रोशनी काफी मात्रा में पहुंचती है। इसके अतिरिक्त बिजली की तीक्ष्ण रोशनी से किनारे के निवासी दौड़ पड़ेंगे।"

मैंने फिर पूछा, "कप्तान, हमारे ये शस्त्र और बंदूकें?"

"बंदूकें किसके लिए? क्या पहाड़ी लोग छुरे से रीछ का शिकार नहीं कर लेते? हम छुरे अपनी-अपनी कमर में कसे हुए हैं ही।"

मैंने अपने साथियों की ओर देखा। साथी भी तैयार खड़े थे। नेडलैंड के पास एक भाला भी था।

हम लोग सीधे पानी में उतर पड़े। पांच फुट बाद बालू मिली। कप्तान ने हाथ का इशारा किया। हम लोग ढाल पर उसके पीछे-पीछे चल दिए। थोड़ी देर बाद हम लोग सागर-सलिल में समा गए। हम शांत थे।

सूर्य की रोशनी यहां तक आ रही थी। सारी वस्तुएं साफ-साफ दिखाई पड़ रही थीं। दस मिनट में ही हम लोग १६ फुट पानी की गहराई में पहुंच गए। यहां की जमीन समतल थी।

सूर्य तेजी से ऊपर चढ़ रहा था। जमीन भी धीरे-धीरे बदल रही थी। बालू की बजाय चट्टानें आ रही थीं। पानी बहुत स्वच्छ था। उसमें केंकड़े तथा कछुए दौड़ते नजर आ रहे थे।

सात बजे तक हम लोग मोतियों के मैदान के किनारे पहुंच गए। यहां मोती के सीप लाखों की संख्या में थे। बहुत-से जीव भी बहुमूल्य चट्टानों में चिपके थे।

सीप के दोनों पल्ले बराबर होते हैं। ये बाहर से देखने में बहुत भद्दे लगते हैं। इसमें से कुछ सीप हरे रंग के धागे से बंधे से होते हैं। यह नए सीप हैं। बहुत से सीप काले धागे से बंधे होते हैं। यह १० साल या उससे अधिक पुराने हैं। ये पांच इंच तक लंबे होते हैं।

नेडलैंड अपने झोले बहुमूल्य मोतियों से भर लेना चाहता था। प्रकृति ने जहां सीप की सृष्टि का प्रबंध किया है, वहां उनके विनाश के भी साधन पैदा कर दिए हैं।

परंतु हम लोग रुके नहीं। कप्तान अपने जाने हुए रास्तों पर चलता गया। हम लोग उसके पीछे-पीछे चले गए। जमीन धीरे-धीरे ऊंची होने लगी। कहीं-कहीं तो यदि हम हाथ उठाते थे, तो समुद्री-सतह से ऊपर हो जाते थे। कहीं-कहीं चट्टानें हमको चारों ओर से घेर लेती थीं तथा उनपर समुद्री जीव रेंगते दिखाई देते थे।

इसी बीच हम लोगों के सामने एक चौड़ी गुफा दिखाई पड़ी। यह समुद्री लताओं द्वारा ढकी थी। इस गुफा में बहुत अंधियारा था, क्योंकि सूर्य की रोशनी यहां साफ-साफ न पहुंचती थी।

कप्तान नेमो के पीछे-पीछे हम लोग जा रहे थे। हमारी

आंखें वहां के लिए बिल्कुल अभ्यस्त न थीं। कप्तान हमें इस गहरी समुद्री गुफा में क्यों ले आया था ? यह हमें आगे मालूम होगा। थोड़ी दूर सीधे नीचे उतरने के बाद हम लोग एक कुएं के भीतर गहरे गड्ढे के पास पहुंच गए।

वहीं कप्तान नेमो रुक गया। उसने एक ऐसी वस्तु की ओर इशारा किया, जिसे मैंने पहले कभी न देखा था। यह एक बहुत ही बड़ा सीप था तथा एक बहुत बड़ी चमकदार चट्टान में रेशों द्वारा चिपका था। यह इस खोह में अकेला बढ़ रहा था। इस सीप का वजन लगभग ६०० पौंड होगा।

कप्तान नेमो इस विशाल सीप से परिचित था, क्योंकि वह यहां पहली बार न आया था। मेरी समझ में यह आया कि शायद कप्तान मुझे यही विचित्रता दिखाने के लिए ही लाया था।

सीप के दोनों पल्ले खुले थे। कप्तान नेमो ने अपना छुरा इन दोनों के बीच घुसेड़ दिया, जिससे वह दोनों बंद न हो सकें। तब उसने हाथ से उसका ठीक तरह से परीक्षण किया।

उसमें मुझे एक मोती नारियल के बराबर दिखाई पड़ा। वह गोल था। इसकी कीमत भी काफी होगी। मैंने उसे उठाने के लिए हाथ बढ़ाया, परंतु कप्तान ने मुझे ऐसा करने से मना कर दिया। कप्तान ने अपना छुरा जल्दी से खींच लिया। दोनों पल्ले बंद हो गए।

मैं अब कप्तान नेमो का तात्पर्य समझ गया। इस मोती के सीप में बंद होने से यह आसानी से बढ़ सकता था। केवल कप्तान नेमो ही इस बड़े सीप को जानता था। शायद संग्रहालय में रखने के लिए वह उसे बड़ा कर रहा था। मैंने मोती का मूल्य कम से कम एक करोड़ फ्रांक आंका।

दस मिनट बाद कप्तान नेमो एकाएक रुक गया।

गुफा छोड़ हम लोग आगे बढ़े। कप्तान नेमो ने इशारे से हम लोगों को अपने पास बुलाया। पहले तो मेरे मन में शार्क का ध्यान आया। परंतु यहां कोई समुद्री जीव दिखाई न पड़ा, एक मनुष्याकृति दिखाई दी। यह एक जिंदा गरीब भारतीय गोताखोर था, जो सीजन से पहले ही मोती इकट्ठा करने आ गया था। मैंने अपने सिर के कुछ ही फुट ऊपर उसकी नाव खड़ी देखी। वह नाव से तुरंत ही नीचे कूद पड़ा।

वह नाव से एक रस्सी द्वारा बंधा था, और उसी रस्सी द्वारा एक चौकोर पत्थर उसके पैरों में बंधा था, इस पत्थर की मदद से वह नीचे आसानी से जा सकता था। यही उसका सारा सामान था। वह तीन फैदम नीचे उतर गया। वहां घुटनों के बल बैठ गया तथा सीपों से झोला भरकर ऊपर चला गया। थोड़ी देर बाद फिर उसी प्रकार नीचे चला गया। यही उसके मोती-सीप निकालने का तरीका था। इस एक बार के काम में उसे ३० सेकेंड से अधिक न लगता था।

वह गोताखोर मुझे न देख सका था। हम लोग एक चट्टान की छाया में छिपे हुए थे। और वह यह समझ भी कैसे सकता था कि हम लोग वहां से उसके सारे कारनामे देख रहे थे।

उसने कई फेरे किए। कोई दस ही सीप एक बार में ला पाता था; क्योंकि जिस बंधन से वे चट्टानों से बंधे थे, उसे उसको फाड़ना पड़ता था। उसको यह भी ज्ञात न था कि उनमें से कितने सीपों में से मोती निकलेंगे—जिनके लिए वह अपनी जान खतरे में डाल इन्हें ढूंढ रहा था।

मैं उसका काम देखता रहा। करीब आधे घंटे तक उसे

कोई खतरा न हुआ। उसके बाद अचानक झुकते ही वह ऊपर की ओर उछला और समुद्र की सतह पर पहुंचने की कोशिश करने लगा। मैं उसके डर का कारण समझ गया। एक बड़े जीव की छाया उसके ऊपर दिखाई पड़ रही थी। यह शार्क था तथा आंखें और मुंह फैलाए उसकी ओर झपटने का प्रयत्न कर रहा था। वह नाविक एक ओर हट गया तथा अपनी जान बचाई। फिर भी क्या उसे चोट न आई थी ? शार्क की पूंछ ने तो उसे जमीन पर गिरा दिया। एक ही दो सेकेंड में शार्क इस भारतीय को खाने ही वाला था कि कप्तान नेमो हाथ में छुरा लिए उस शार्क पर झपटा, और थोड़ी ही दूर रुककर उसके हमले की प्रतीक्षा करने लगा। जैसे ही शार्क उस गोताखोर पर झपटा कि कप्तान ने एक किनारे से शार्क के पेट में चाकू झोंक दिया, परंतु इससे शार्क का अंत न हुआ। शार्क और कप्तान का युद्ध काफी देर तक होता रहा।

शार्क की चोटों से खून के चश्मे बह रहे थे। सागर लाल रंग का हो गया था। इससे नीचे कुछ न दिखाई पड़ता था। युद्ध अभी जारी था।

मैं कप्तान की मदद के लिए जाना चाहता था, किंतु मारे डर के हिल न सका।

मैं खड़ा कप्तान की लड़ाई की पैंतरेबाजी देख रहा था। इतने में कप्तान जमीन पर गिर पड़ा। अब शार्क अपने शिकार को खाने ही वाला था कि नेडलैंड भाला लेकर बिजली की भांति उसकी ओर दौड़ा, तथा शार्क के कलेजे पर प्रहार किया। यही शार्क की आखिरी सांस थी। कप्तान बाल-बाल बच गया।

इसी बीच कप्तान सीधे उस भारतीय के पास गया। जल्दी से उसके पैर में बंधी पत्थर वाली डोरी काटकर उसे गोद में ले, एक बड़ी छलांग भरी और पानी की सतह पर आ गया। हम लोग भी कप्तान के पीछे आ, उसकी नाव पर इकट्ठे हुए।

हम लोगों ने उस गोताखोर के शरीर की काफी मालिश की। धीरे-धीरे उसे होश आया। उसने आंखें खोलीं। हम लोगों को देख शायद वह डर गया। कप्तान नेमो ने तुरंत ही अपने कोट के थैले से निकाल एक मोतियों से भरा झोला उसे दे दिया। इसे पाकर वह अत्यंत प्रसन्न हुआ। हम लोगों को देखकर उसके आश्चर्य का अंत न था।

कप्तान के इशारे पर हम लोगों ने फिर डुबकी लगाई। तथा वहां से आधे घंटे में ही 'नाटिलस' वाली नाव पर पहुंच गए।

वहां हम लोगों ने अपनी-अपनी गोताखोरी की पोशाकें उतारीं।

कप्तान ने सबसे पहले यही कहा, "नेड, तुमको धन्यवाद।

नेडलैंड ने उत्तर दिया, "यह तो आपके उपकारों का छोटा सा बदला है।"

कप्तान ने कहा, "चलो 'नाटिलस' को चलें।"

नाव आगे बढ़ी। थोड़ी ही देर में वह मृतक शार्क उतराकर ऊपर आ गया। इसकी लंबाई लगभग २५ फुट थी। उसका एक तिहाई शरीर तो मुंह ही था, जिसके अंदर दांतों की छह पंक्तियां थीं। इससे प्रकट होता था कि वह वयस्क था।

इसी बीच हमारी नाव के करीब तमाम शार्क एकत्र हो गए, परंतु हम लोगों से कोई छेड़छाड़ न की। हम लोग साढ़े

आठ बजे 'नाटिलस' के निकट पहुंच गए। वहां मनार की खाड़ी की यात्रा के संबंध में बातें बहुत देर तक होती रहीं।

बातचीत में दो विषय मुख्य थे। एक तो कप्तान का अदम्य साहस, और दूसरे उसके द्वारा एक मानव की रक्षा के लिए अपने प्राणों का संकट में डालना। बार-बार यह प्रश्न उठा। "कप्तान ने ऐसा क्यों किया ? क्या वह स्वयं भारतीय है ?"

जब मैंने उनसे कई बार पूछा तो कप्तान ने उत्तर दिया, "प्रोफेसर, वह भारतीय ऐसे देश का निवासी था, जो काफी समय से पद्दलित रहा था। मैं भी जब तक जिंदा हूं उसी का एक अंग हूं।"

२८

२९ जनवरी के दिन लंका-द्वीप क्षितिज में छिप गया था, तथा 'नाटिलस' अब मालदीव तथा लक्कादीव के बीच के जलखंड में दौड़ रही थी।

इस समय हम लोग जापान के समुद्र—जहां से यात्रा शुरू हुई थी, से १६२२० मील पर थे।

३० जनवरी को 'नाटिलस' जब समुद्र-तल पर अपनी हवा बदलने आई, तो हमने चारों ओर देखा, परंतु कहीं भी अब स्थल न दिखाई पड़ता था। इस समय 'नाटिलस' अरब और भारत के बीच स्थित ओमन सागर की ओर जा रही थी। पर उस समय मुझे पता न था कि हम लोग कहां जा रहे हैं।

मैंने कहा, "नेड, कप्तान जहां चाहेंगे, हमें जाना ही होगा।"

नेड ने उत्तर दिया, "परंतु वह स्थान बहुत दूर न होगा, क्योंकि फारस की खाड़ी में निकलने का कोई रास्ता नहीं। यदि एक बार हम उसमें घुसे, तो हमें फिर लौटकर उसी स्थान पर आना पड़ेगा।"

"नेड, यह तो ठीक है, परंतु यदि फारस की खाड़ी से कप्तान लाल सागर को जाना चाहेंगे, तो बाब-एल-मैनडेब जलडमरूमध्य से होकर रास्ता है।"

नेड ने उत्तर दिया, "मुझे आपको कुछ बताना नहीं है, क्योंकि आप स्वयं जानते हैं कि लाल सागर में घुसकर भी तो आगे रास्ता नहीं है। क्योंकि स्वेज जलडमरूमध्य को काट कर नहर अब तक नहीं बन पाई है, यदि वह होती भी तो भी सागर में गुप्त रहने वाली हमारी 'नाटिलस' उस नहर में से होकर कैसे जा सकती है। कप्तान को भय होगा कि उसका यह रहस्य और लोग भी समझ जाएंगे; परंतु लाल सागर यूरोप जाने का रास्ता नहीं है।"

"मैं यह नहीं कह रहा हूं कि हम लोग यूरोप जा रहे हैं।"

"फिर आप क्या समझते हैं?"

"मैं तो यह समझता हूं कि मिश्र तथा अरब के किनारों का भ्रमण करके 'नाटिलस' फिर हिंद महासागर को वापस चली आएगी तथा वहां से गुडहोप अंतरीप की ओर जा सकती है।"

नेडलैंड ने पूछा, "एक बार गुडहोप अंतरीप पहुंचकर फिर कहां जाएगी?"

"फिर इसके बाद वह अतलांतिक महासागर को जा सकती

है । नेड, क्या तुम समुद्री यात्रा से थक गए ? क्या तुम इन समुद्री रहस्यों को देखकर परेशान हो गए ?"

"मिस्टर ऐरोनेक्स, क्या आप यह नहीं जानते कि हम लोग यहां 'नाटिलस' में तीन महीने से कैद हैं ?"

मैंने कहा "नेड, नहीं मैं नहीं जानता और न जानना ही चाहता हूं । मैं दिन या घंटे नहीं गिनता ।"

नेड ने कहा "परंतु यह कैद कैसे समाप्त होगी ?"

मैंने कहा, "इसका अंतिम समय अपने आप आ जाएगा । इसके अतिरिक्त हम लोग कर ही क्या सकते हैं, बेकार में बहस कर के ? मान लो कोई भाग निकलने का अवसर मिला, तो हम लोग उसी समय सोचेंगे कि इस स्वर्ण अवसर का कैसे उपयोग किया जाय । परंतु ऐसा मौका आएगा नहीं, क्योंकि मुझे विश्वास है कि कप्तान यूरोपीय समुद्रों में कभी न जाएगा ।"

मुझे तो 'नाटिलस' से अब इतना प्रेम हो गया था कि मैं इस नाव को अपनी ही समझने लगा था ।

६ फरवरी को 'नाटिलस' से अदन दिखाई पड़ने लगा । दूसरे दिन हमने बाब-एल-मैनडेब जलडमरूमध्य में प्रवेश किया । बाब-एल-मैनडेब फारसी का शब्द है, इसका हिंदी में अर्थ है अश्रुद्वार । यह बीस मील चौड़ा तथा ३० मील लंबा है । यह 'नाटिलस' का एक ही घंटे का रास्ता है । इसमें काफी स्टीमर चलते रहते हैं । इस कारण 'नाटिलस' को अपना रहस्य छिपाने के लिए अथाह सागर में जाना पड़ा ।

हम लोग दोपहर तक लालसागर में पहुंच गए । यह एक विचित्र प्रकार का समुद्र है । न इसमें काफी पानी ही बरसता है, न कोई नदी ही गिरती है । यह सागर एक झील की भांति है

तथा इसका पानी गर्मी पड़ने के कारण काफी तादाद में भाप बनकर उड़ जाता है। इन अवस्थाओं में कोई दूसरा सागर होता, तो वह अब तक सूख गया होता। यह सागर ६०० किलो-मीटर लंबा तथा २४० किलोमीटर चौड़ा है। मुझे पता न था कि कप्तान इस सागर में क्यों आया था।

'नाटिलस' कभी समुद्र तल पर चलती, कभी जहाज को देख अंदर गोता लगाती चली जा रही थी।

अब हम लोग अफ्रीका के तट पर आ गए थे। इधर सागर अधिक गहरा था। झांड़ियां और चट्टानें साफ साफ दिखाई पड़ रही थीं, तथा लीब्रिया के तट पर ज्वालामुखी से बने छोटे-छोटे द्वीप तथा-चट्टानें अपनी-अपनी छटा का प्रद-र्शन कर रहे थे। यहां तट पर लगे फूल समुद्री जल के छिड़-काव से सदैव ताजे तथा खुशबूदार दिखाई पड़ रहे थे। इसके अतिरिक्त नये-नये किस्म के समुद्री जीव 'नाटिलस' की रोशनी में चमक रहे थे। यह दृश्य अत्यंत सुहावना था। यहीं हमें पहले-पहल स्पंज दिखाई पड़ा। यह न तो वनस्पति ही है और न जीव ही। दोनों के बीच प्रकृति की एक नयी कला है। स्पंज की ३०० किस्में होती हैं, जो भिन्न-भिन्न सागरों तथा नदियों में पाई जाती हैं; परंतु खासतौर से भूमध्यसागर के यूनानी द्वीप पुंज, सीरिया तट तथा लाल सागर में पाई जाती हैं। इन्हीं से अच्छा मुलायम स्पंज बनाया जाता है। जो कभी-कभी काफी महंगा भी बिक जाता है। लालसागर में लगभग सभी किस्म के स्पंज पाए जाते हैं।

१० फरवरी की दोपहर में जब चबूतरे पर हवा खा रहा था, कप्तान आया। उसने मुझसे नमस्कार किया तथा

आदर से एक सिगरेट देकर बोला, "प्रोफेसर, क्या लाल सागर आपको अच्छा लगता है ? क्या आपने इसकी विचित्रताएं—मछलियां, स्पंज के झुंड तथा मूंगे के जंगल देखे हैं ? क्या आप ने इसके तट के शहर देखे हैं ?"

मैंने उत्तर दिया, "जी हां, देखे हैं। आमतौर से 'नाटिलस' से इन्हें समझने में बड़ी सहायता मिली है, क्योंकि इसके अंदर उसकी सारी सामग्री मौजूद है ।"

"हां महाशय, मेरी नाव लाल सागर के भयानक तूफानों, लहरों और चट्टानों से बिलकुल नहीं डरती," कप्तान बोला।

मैंने कहा, "वास्तव में यह समुद्र बड़ा ही बुरा है, परंतु प्राचीन इतिहासकारों ने तो इसकी बड़ी तारीफ लिखी है ।"

"तारीफ ! यूनानी और लैटिन इतिहासकारों ने तो ऐसा नहीं लिखा । उन्होंने लिखा है कि इस सागर में सैकड़ों जहाज नष्ट-भ्रष्ट हो जाते हैं। यहां तक कि रात में इस सागर में चलने की कोई हिम्मत ही न करता था। उन्होंने इसे भयानक तूफानयुक्त बताया है ।"

मैंने उत्तर दिया, "यह हो सकता है, क्योंकि उन्होंने इसकी सैर थोड़े की होगी ।"

कप्तान ने मुस्कराकर उत्तर दिया, "हां, ठीक है। परंतु आजकल के लोग समुद्री यात्रा के विषय में उनसे आगे नहीं हैं। भाप की शक्ति समझने में उन्हें शताब्दियां लग गईं । कौन जानता है कि 'नाटिलस' जैसी दूसरी पनडुब्बी आगामी १०० वर्ष में भी बन पाएगी या नहीं !"

मैंने फिर कहा "यह सत्य है, यह नाव इस संबंध में कई

शताब्दियां आगे है, परंतु क्या ही दुर्भाग्य होगा, यदि यह नाव अपने आविष्कारक के साथ अज्ञात रूप में नष्ट हो जाय।"

कुछ समय तक कप्तान चुप रहा, उसने कुछ भी उत्तर न दिया। फिर उसने कहा, "आप इस लाल सागर के खतरों पर पुराने इतिहासकारों की राय के बारे में कह रहे थे।"

मैंने कहा, "यह ठीक है, परंतु क्या उन्होंने उन खतरों को नमक-मिर्च लगाकर नहीं लिखा है ?"

"मिस्टर ऐरोनेक्स, ऐसा है भी, और नहीं भी है। क्योंकि हम लोगों की भांति किसने इसे देखा है। खासतौर से प्राचीन समय की नावों के लिए, जो न तो आज की भांति इतनी अच्छी ही बनी थीं और न उनमें भाप ही इस्तेमाल में आती थी। इन प्राचीनकाल की नावों के लिए बहुत खतरे थे। वे नावें साधारण खोखलों की बनी होती थीं। इनमें चलाने, रोकने तथा घुमाने के कोई यंत्र न होते थे। यह समुद्री धाराओं के साथ चलती थीं। उन्हें धाराओं के बारे भी में विशेष ज्ञान न था। ऐसी नावों का नष्ट हो जाना स्वाभाविक ही था। परंतु आजकल के स्टीमर तथा पनडुब्बियों के विषय में क्या कहना है। वे विरुद्ध हवा होते हुए भी सारे सागरों में बिना किसी खतरे के चला करती हैं।"

मैंने कहा, "मैं यह स्वीकार करता हूं कि आपने नाविकों के दिलों पर विजय पाली है, परंतु आपने तो इस सागर के बारे में काफी अध्ययन किया होगा। आप यह बताइए कि इसके नाम की उत्पत्ति कहां से हुई ?"

"वैसे तो इसके विषय में कई कहानियां प्रचलित हैं, परंतु चौदहवीं शताब्दी के एक इतिहासकार का यह कहना है कि

इसराइल देश के रहने वालों के कारण इसका 'लालसागर' नाम पड़ा। इसीमें मूसा अपने साथियों के साथ नष्ट-भ्रष्ट हो गया था।"

"मुझे इससे संतोष नहीं। मैं आपकी राय चाहता हूं।"

"मेरी राय तो यह है कि यह हिब्रू शब्द 'एडरम' का अनुवाद है और प्राचीनकाल के लोग उसके पानी के रंग के कारण 'एडरम' या लाल सागर कहते थे।"

"परंतु मुझे अभी तक तो कोई ऐसा रंग दिखाई नहीं दिया।"

"ठीक है। परंतु आप जैसे-जैसे गहराई में जाएंगे, आपको यह पानी लाल मिलता जाएगा। मुझे टार की खाड़ी याद है। इसका जल खून की भांति लाल है।"

"आप इस लाल रंग का कारण छोटे-छोटे कीड़े बतलाते हैं?"

"हां, यह कीड़े लाल रंग के होते हैं तथा '०३९३७ वर्ग इंच में चालीस हजार के करीब मिलते हैं। हम लोग जब टार में पहुंचेंगे, तो आपको यह कीड़े अणुवीक्षण यंत्र से दिखाई पड़ेंगे।"

"आप इस सागर में 'नाटिलस' पर कई बार आए होंगे। अभी आपने इसे 'इसराइल के रहने वालों का रास्ता' कहा है; तो आपको क्या इसके ऐतिहासिक चिन्ह मिले हैं?"

"चिन्ह न मिलने का एक बहुत अच्छा कारण है?"

"वह क्या?"

कप्तान बोला, "जिस जगह मूसा अपने साथियों के साथ निकला था, वह स्थान इस समय काफी बालू से ढका है। मेरी 'नाटिलस' की यात्रा के लिए उस स्थान पर पर्याप्त मात्रा में जल नहीं है।"

"वह स्थान कहां है ?"

"वह स्थान वहीं पर है जहां लालसागर ने मृतसागर की ओर बढ़कर गहरा मुहाना बना दिया है। इससे यह तो निश्चत ही है कि इसराइल वाले अपने गतव्य स्थान को जाने के लिए इस रास्ते से अवश्य जाते होंगे, और फराओं की सेना इसी स्थान पर नष्ट हुई थी। यदि इस स्थान की खुदाई की जाय, तो मिश्र के बने अनन्य अस्त्र-शस्त्र तथा यंत्र यहां पर मिलेंगे।"

मैंने कहा, "यह निश्चय ही है कि पुरातत्ववेत्ता कभी न कभी इसे अवश्य खुदवाएंगे, और स्वेज नहर खुद जाने के बाद इस पर नया शहर बसाएंगे। परंतु यह नहर 'नाटिलस' के लिए तो बिलकुल बेकार होगी।"

कप्तान ने उत्तर दिया, "परंतु सारे विश्व के लिए यह बहुत लाभप्रद होगी। दुर्भाग्यवश मैं आप लोगों को लेकर स्वेजनहर में होकर न चल सकूंगा। फिर भी हम परसों तक भूमध्यसागर में पहुंच जाएंगे।"

मैंने चकित हो कहा, "भूमध्यसागर में ?"

कप्तान बोला, "इसमें आपको क्या आश्चर्य !"

"वैसे तो मुझे 'नाटिलस' के किसी कार्य पर आश्चर्य नहीं होता। परंतु इसकी इतनी तेज चाल पर, कि यह परसों तक अफ्रीका का चक्कर काट कर और गुडहोप अंतरीप होकर भूमध्य सागर में पहुंच जाएगी, इसमें मुझे अवश्य आश्चर्य है।"

"प्रोफेसर, यह आपको किसनेब ताया कि 'नाटिलस' अफ्रीका का चक्कर काटकर गुडहोप अंतरीप होकर भूमध्यसागर को जाएगी ?"

"जब तक 'नाटिलस' जमीन पर या स्थलडमरूमध्य पर न चल सके।"

"या इसके नीचे-नीचे न चल सके।"

"नीचे नीचे ?"

कप्तान नेमो ने कहा, "निश्चय ही, प्रकृति ने ऐसा प्रबंध कर रखा है।"

"क्या वहां नीचे-नीचे कोई रास्ता है ?"

"वहां एक सुरंग है जिसे हम 'अब्राहम सुरंग' कहते हैं। यह स्वेज से शुरू होकर पेलुसियम की खाड़ी में समाप्त होती है।"

"परंतु यह स्थलडमरूमध्य तो बालू का है।"

"कुछ ही गहराई तक, लगभग १५० फुट तक। इसके बाद चट्टानें हैं।"

"परंतु क्या आप मुझे बताएंगे कि आपने इसका पता कैसे लगाया ?"

"पता लगाने वाला हर एक चीज का पता लगा लेता है। प्रोफेसर, इस सुरंग का पता मुझे तर्क से लगा। मैंने देखा कि लाल-सागर और भूमध्यसागर में कुछ मछलियां एक ही जाति की हैं। यदि इन दो सागरों में कोई संबंध नहीं, तो यह कैसे हो सकता ? और यदि कोई संबंध है, तो ये मछलियां जरूर एक सागर से दूसरे सागर में तैरकर पहुंचती होंगी। यही सोच मैंने स्वेज के पास काफी संख्या में मछलियां पकड़ीं। उनकी पूंछों में एक-एक धातु की अंगूठी जैसी पहनाकर उन्हें लालसागर में छोड़ दिया। कुछ महीनों बाद सीरिया तट पर मुझे वही मछलियां मिलीं। मुझे निश्चय हो गया कि इन दोनों सागरों में कोई जल-संबंध अवश्य है। बाद को मैंने 'नाटिलस' द्वारा इसकी खोज की। इसके अंदर

जाकर देखा। शीघ्र ही आप भी मेरे साथ प्राचीन अरबों द्वारा निर्मित इस सुरंग में होंगे।"

२९

मैंने कप्तान की इस बातचीत के संबंध में नेडलैंड और कनसील से कहा कि हम दो दिन बाद भूमध्यसागर में पहुंच जाएंगे। इसपर दोनों को बहुत आश्चर्य हुआ।

नेड बोला, "एक समुद्री सुरंग दो सागरों के बीच का रास्ता हो, यह तो कभी नहीं सुना!"

कनसील ने उत्तर दिया, "दोस्त नेड, क्या 'नाटिलस' के बारे में आपने कभी सुना था? नहीं। फिर भी 'नाटिलस' है। इसलिए इतनी जल्दी तुम्हें हंसी न उड़ानी चाहिए।"

"हम देखेंगे! आखिरकार हमें कप्तान के इस रास्ते पर विश्वास अवश्य करना चाहिए। ईश्वर करे, हम लोग उसी रास्ते में होकर भूमध्यसागर पहुंचें।"

हमारी नाव ने डुबकी ले ली। वह अरब सागर के किनारे-किनारे चलने लगी। १० फरवरी की दोपहर को 'नाटिलस' फिर समुद्री सतह पर आ गई। मैं, कनसील और नेडलैंड के साथ चबूतरे पर चढ़ गया। पूर्वी तट कोहरे से ढका था।

नाव के दोनों तरफ झांक-झांक कर हम लोग बातें कर रहे थे। इतने में नेडलैंड को कोई चीज दिखाई पड़ी।

उसने पूछा, "प्रोफेसर, क्या आपको कोई चीज दिखाई दे रही है?"

"हां नेड, समुद्रतल पर मुझे एक लंबा काला शरीर दिखाई पड़ रहा है।"

कनसील ने कहा, "दूसरी 'नाटिलस' है ?"

"नहीं, मुझे तो कोई समुद्री जीव मालूम पड़ता है ?"

कनसील ने पूछा, "क्या लालसागर में ह्वेल मछलियां भी हैं ?"

मैंने उत्तर दिया, "हां, कभी-कभी मिलती हैं।"

नेडलैंड ने कहा, "परंतु यह ह्वेल नहीं। मेरा और ह्वेल का बहुत दिन का साथ है, मैं गलती नहीं कर सकता।"

कनसील ने कहा, "धैर्य रखो; 'नाटिलस' उसीकी ओर जा रही है।"

नेडलैंड मुझे देखकर चिल्लाया "वाह, यह तो चलता है, गोता लगाता है। यह कोई जीव हो सकता है ?"

कनसील ने कहा, "यह यूनानी दंतकथाओं में वर्णित सीरेन तो नहीं है ? सीरेन का नाम मैंने सुन रखा था। इसके बारे में एक कहानी प्रसिद्ध है कि यह समुद्री जीव है, जिसका आधा भाग औरत का और आधा मछली का होता है।"

मैंने कनसील से कहा, "यह एक विचित्र जीव है। इसकी कुछ किस्में लालसागर में मिलती हैं। यह डुगांग मछली न हो !"

नेडलैंड इसका शिकार करना चाहता था। उसने कहा, "महाशय, मैंने ऐसे जीव का शिकार कभी नहीं किया।"

इसी बीच कप्तान ने चबूतरे पर कदम रखा। नेडलैंड का ध्यान उस जानवर को मारने का देख कप्तान ने उससे कहा, "क्या तुम इस जीव को मार कर अपने शिकार की संख्या एक ओर बढ़ाना चाहते हो ? देखो, कहीं पछताना मत !"

" नहीं पछताऊंगा ।"

"तो कोशिश करो, परंतु निशाना चूक न जाय। कभी-कभी यह अपने शिकारी पर झपट उसकी नाव तोड़ डालता है। परंतु नेडलैंड के लिए यह डर नहीं, क्योंकि वह होशियार शिकारी है। इसका गोश्त बहुत अच्छा होता है। नेडलैंड को गोश्त पसंद भी है।"

नेडलैंड ने कहा, "इसका गोश्त बहुत ही गर्म और स्वादिष्ट होता है और राजा महाराजाओं के लिए ही होता है। इसका शिकार इतना अधिक किया जाता है कि यह बहुत कम रह गए हैं।"

सात खलासी बुलाए गए। नाव डेक से निकाल समुद्र पर लगा दी गई। मैं, नेड और कनसील अपनी-अपनी जगह पर बैठ गए। पतवार संभाली, ६ नाव खेने वाले चले। मैंने पूछा, "क्या कप्तान आप नहीं आ रहे ?"

कप्तान ने सिर हिला-कर 'नहीं' किया।

नाव तेजी से चली और थोड़ी ही देर में उस जीव के पास पहुंच गई। यह जीव २४ फुट से कम लंबा न था। बिल्कुल चुपचाप पड़ा था, जैसे सो रहा हो। इस समय इसको पकड़ना बड़ा आसान था।

नाव उस जीव से थोड़ी दूरी पर रोक दी गई। नेड अपना भाला लेकर तैयार हो गया। ज्योंही नेडलैंड ने भाला चलाया, जीव सरसराता हुआ पानी में घुस गया। भाला पानी पर ही लगा।

नेडलैंड ने गुस्से में कहा, "बदमाश, मेरा निशाना चूक गया। नहीं, उसे चोट लगी है, क्योंकि उसका खून दिखाई

पड़ रहा है। परंतु तुम्हारा भाला उसके शरीर में नहीं फंसा है।"

थोड़ी देर बाद जीव फिर ऊपर आया। नाव इसके पीछे फिर तेजी से दौड़ाई गई। बार-बार नेडलैंड उसपर वार करने को तैयार होता परंतु जीव समुद्र में गोता लगा जाता। नेडलैंड बहुत क्रुद्ध हुआ। कसमों और गालियों की झड़ी लगा दी। लगभग एक घंटा तक बराबर पीछा किया गया परंतु वह न मिला। कभी-कभी तो ऐसा जान पड़ता था कि पलटकर हमला कर बैठेगा।

नेड ने अपने साथियों को सचेत किया। डुगांग नाव से बीस कदम पर रुक गई और हम लोगों पर झपट पड़ी। हमारी नाव पलटते-पलटते बची। पतवारियों की चतुरता से फिर ठीक हो गई। हम लोग एक दूसरे के ऊपर गिर पड़े। वह नाव का सिरा अपने मुंह में दबाए हुए लोहे की प्लेट चबा रही थी।

नेडलैंड ने इतनी देर में उसे कई चोटें पहुंचाईं तथा बहुत होशियारी से उसका मुकाबला किया। डुगांग ने जैसे ही फिर हमला करना चाहा, नेडलैंड ने उसके कलेजे में भाला घुसेड़ दिया। अब क्या था? जीव अपनी अंतिम सांस लेने लगा। थोड़ी ही देर में मरकर ऊपर उतराने लगा।

हम लोग उसे 'नाटिलस' तक ले गए, परंतु इसे नाव के ऊपर चढ़ाने में बड़ी दिक्कत पड़ी। इसका भार लगभग दस हजार पौंड था। खलासियों ने इसे काटकर कई टुकड़े कर डाले। उसी दिन रसोइए ने इसका स्वादिष्ट गोश्त बनाया। हम लोगों ने इसे खूब प्रेम से खाया।

दूसरे दिन ११ फरवरी को 'नाटिलस' को फिर अच्छे-अच्छे शिकार मिले। कई प्रकार की मिश्री समुद्री चिड़ियों के झुंड दिखाई पड़े। जैसे-जैसे हम लोग स्वेज की ओर पहुंचने लगे, सागर के पानी का नमकीनपन कम होने लगा।

'नाटिलस' कभी तैरती थी, कभी डुबकी लगा जाती थी। इसी प्रकार संध्या को ६ बजे टार की खाड़ी को पार किया। टार की खाड़ी का पानी कुछ-कुछ लाल रंग का था।

८बजे से ९ बजे रात तक 'नाटिलस' पानी के अंदर ही रही। हम लोग स्वेज के अब बहुत निकट थे। कमरे की खिड़कियों से चट्टानें चमकती दिखाई पड़ रही थीं। आगे का रास्ता धीरे-धीरे तंग होता जा रहा था। सवा नौ बजे 'नाटिलस' फिर समुद्र-तट पर आ गई। मैं चबूतरे पर चढ़ गया। कप्तान की सुरंग द्वारा आने का बड़ा कौतूहल था।

थोड़ी ही देर बाद लगभग एक मील दूर एक पीली रोशनी दिखाई पड़ी। कप्तान ने बताया कि यह स्वेज का प्रकाश वाला जहाज है। अब सुरंग बहुत दूर नहीं है। इसमें घुसना आसान काम नहीं है। परंतु मैं पतवारिए के कमरे में स्वयं जाता हूं और पतवारिए को बताता रहता हूं। आप अब नीचे जाएं क्योंकि अब 'नाटिलस' समुद्र के अंदर घुस जाएगी। जब तक सुरंग में रहेगी, ऊपर न निकलेगी।

मैं कप्तान के पीछे-पीछे चला गया। खिड़कियां बंद कर दी गईं। टंकियां पानी से भर दी गईं तथा 'नाटिलस' ३० फुट सागर में समा गई। मैं कमरे में घुसने ही वाला था कि कप्तान ने मुझे रोक लिया।

कप्तान ने कहा, "प्रोफेसर, क्या आप मेरे साथ पतवारिए के कमरे में चलेंगे ?"

"मैं यही चाहता था, परंतु आपसे कह न सकता था।"

"तो आइए। आप इस सुरंग के बारे में यात्रा में सबकुछ समझ जाएंगे।"

कप्तान नेमो मुझे बीच वाले जीने पर ले गया। हम लोग चालक के कमरे को पहुंच गए थे। यह आठ फुट लंबा तथा छह फुट चौड़ा कमरा था। इसके बीच में एक ऊंचा-सा पहिया लगा था। वह पतवार थी। उसी के सहारे नाव चलती थी। इसके सामने एक शीशा लगा था, जिसमें चारों ओर का दृश्य दिखाई पड़ता था। यह कमरा अंधेरा था, परंतु इसमें पीछे की ओर एक तीक्ष्ण प्रकाश था।

कप्तान नेमो ने कहा, "अब मेरा वह रास्ता आ रहा है।"

बिजली के तार से यह कमरा इंजन के कमरे से संबंधित कर दिया गया। अब कप्तान चाल तथा दिशा दोनों पर नियंत्रण कर सकता था। उसने एक बटन दबाया, 'नाटिलस' की चाल धीमी पड़ गई।

हम एक बड़ी दीवार से लगभग तीन फुट दूर, पर उसीके सामानांतर चले जा रहे थे। कप्तान नेमो ठीक कंपास के पास बैठा दिशा का ज्ञान कर रहा था। इसी प्रकार हम लोग करीब १ घंटा चलते रहे। कप्तान के इशारे पर पतवारिया 'नाटिलस' का रुख ठीक कर देता था।

दस बजकर १५ मिनट रात को कप्तान ने पतवार अपने हाथ में ले लिया। एक काली तंग गैलरी-सी हम लोगों के सामने आ गई। 'नाटिलस' ने इसमें साहस के साथ प्रवेश किया। जल-

प्रवाह के कारण घरघराहट का शब्द सुनाई पड़ रहा था। लालसागर से भूमध्यसागर की ओर ढाल जान पड़ता था। यहां 'नाटिलस' बहुत धीरे-धीरे चल रही थी। दो दीवारों के बीच का दृश्य बड़ा ही भयानक था। मेरा दिल जोर से धड़क रहा था।

१० बजकर ३५ मिनट पर कप्तान ने पतवार पतवारिए के हाथ में थमा दी तथा मेरी ओर घूमकर कहा, "लो, हम लोग भूमध्यसागर में आ गए।"

३०

१२ फरवरी को प्रातः 'नाटिलस' फिर समुद्र तल पर आ गई। मैं चबूतरे पर चढ़ गया। नेडलैंड और कनसील भी वहीं पहुंच गए। आज रात मेरे साथी खूब सोए थे। नेडलैंड ने पूछा, "कहिए, प्रकृति विशेषज्ञ महाशय, भूमध्यसागर कहां है?"

"मित्र नेड, अब हम भूमध्यसागर में ही हैं।"

कनसील ने कहा, "क्या आज रात, कुछ ही मिनट में हम लोग सुरंग पार कर आए?"

नेड बोला, "मुझे विश्वास नहीं होता।"

मैंने कहा, "नेड, देखिए तो दक्षिण की ओर निचला किनारा मिस्र का ही तट है।" इसके अतिरिक्त कप्तान नेमो ने सुरंग में स्वयं नाव चलाई थी। और जब 'नाटिलस' इस तंग रास्ते से गुजर रही

थी, मैं स्वयं पतवारिए के कमरे में वैठा था । क्या तुम पोर्ट-सईद बंदरगाह नहीं देखते ?"

नेडलैंड ध्यान से देखने लगा।

उसने कहा, "हां, ठीक है। प्रोफेसर आप सही कहते हैं। आपका कप्तान वहुत होशियार है। हम लोग अब भूमध्यसागर में ही हैं। अब अच्छा समय है। हम लोग भाग चलें कि कोई जान न पाए।

मैं नेड की बात समझ गया था, उससे इस पर बात कर लेना ही अच्छा था, क्यों कि वह यही चाहता था। हम तीनों बिजलीघर के नजदीक जाकर बैठ गए। यहां हम लोगों पर लहरों की फुहार न पड़ती थी। मैंने कहा, "जो कुछ कहना चाहते हो, अब कहो।"

नेड ने कहना शुरू किया, "हम आप से जो कहना चाहते हैं वह बिल्कुल साधारण है। अब हम लोग यूरोप आ गए हैं। और इसके पहले कि कप्तान हमें अन्य कहीं ले जाय, हम लोग 'नाटिलस' छोड़ दें।"

मैं यह जानता था कि नेडलैंड से बहस करने में मुझे ही हारना पड़ेगा। फिर भी मैं अपने साथियों की स्वतंत्रता के मार्ग में रुकावट न डालना चाहता था। और साथ ही साथ इस अधूरी यात्रा में 'नाटिलस' को भी न छोड़ना चाहता था। क्योंकि मैं प्रति दिन समुद्री तलहटी के रहस्यों का अध्ययन करता था। मैं सोचता था कि शायद ऐसा मौका मुझे फिर न मिल सके। इसी कारण मैं इस अधूरी यात्रा में 'नाटिलस' का त्याग करने के विचार से सहमत न हो पाता था।

मैंने उत्तर दिया, "मित्र नेड, मुझे साफ-साफ बताओ कि तुम को यह जीवन अच्छा नहीं लगता ?"

"मैं स्पष्ट कहे देता हूं कि मुझे इस समुद्री यात्रा पर खेद नहीं, परंतु अब मैं यह चाहता हूं कि यह यात्रा समाप्त हो जानी चाहिए ।"

"मैं यह नहीं कहता कि यह यात्रा कब और कहां समाप्त होगी, परंतु इतना अवश्य है कि जब यह सारे समुद्र की यात्रा कर चुकेगी तब अवश्य समाप्त होगी । यह इस विश्व का नियम है; जो शुरू होता है उसका अंत अवश्य होता है ।"

कनसील ने कहा, "मैं समझता हूं कि विश्व के सारे समुद्रों की यात्रा करने के बाद कप्तान नेमो हमें छोड़ देंगे ।"

मैंने कहा, "नेड, मैं झूठी अटकल नहीं लगाना चाहता । कप्तान से मुझे कोई डर नहीं है । छोड़ दिए जाने की आशा भी नहीं । मैं समझता हूं कि मैं 'नाटिलस' का रहस्य समझ गया हूं । कप्तान यह कभी न पसंद करेगा कि मैं बाहर जाकर इस रहस्य का प्रचार करूं ।"

नेड ने कहा, "फिर आप क्या आशा करते हैं कि ६ महीने में ऐसा अवसर आएगा ? हमें इस मौके से लाभ अवश्य उठाना चाहिए ।"

"हम ६ महीने में कहां होंगे, शायद यहां हों या चीन में । आप जानते हैं कि 'नाटिलस' तेज चलती है । वह भयंकर समुद्रों से भी नहीं डरती ।"

नेडलैंड ने उत्तर दिया, "आप भविष्य की बात करते हैं, मैं वर्तमान पर विश्वास करता हूं । हम लोग यहां आगए हैं । हमें इसका फायदा अवश्य उठाना चाहिए ।"

मैंने देखा कि नेडलैंड का तर्क ठीक था। मुझे इसका उत्तर कुछ न सूझा।

नेडलैंड ने कहा, "यदि कप्तान आपको अभी छोड़ देने को तैयार हो, तो आप उसे स्वीकार करेंगे ?"

मैंने कुछ उत्तर न दिया।

नेडलैंड ने फिर कहा, "मुझे और आपको ही निर्णय करना है। मैं तो अपनी बात कह चुका, अब आप जो कहना चाहते हों कहें।"

"नेडलैंड, मेरा उत्तर यह है कि मैं गलत हूं, तुम सही हो। हम लोगों को कप्तान नेमो के आश्रित न होना चाहिए। कप्तान नेमो चाहता है कि हम लोग कभी स्वतंत्र न हों, परंतु हमारा लाभ इसीमें है कि जैसे ही मौका मिले, हम 'नाटिलस' को त्याग अपने देश भाग चलें।"

नेड बोला, "अंधेरी रात में 'नाटिलस' जब कभी किसी यूरोपीय तट पर पहुंचे, वहीं अच्छा मौका होगा।"

"आप भागेंगे कैसे ? तैर कर ?"

"हां, यदि 'नाटिलस' समुद्र-तल पर हुई और किनारा बहुत विकट हुआ, तो हम लोग एक नाव ले लेंगे। मैं नाव चलाना जानता ही हूं। नाव के बोल्ट खोल देंगें, वह समुद्र सतह पर पहुंच जाएगी। पतवारिए भी इसे न देख सकेंगे।"

"तो ऐसे अवसर की प्रतीक्षा करो। पर यह न भूलना कि भागने में असफल होना बहुत ही घातक होगा।"

"यह हम नहीं भूलेंगे।"

"परंतु क्या आप चाहेंगे कि आपके इस षड्यंत्र को कोई न समझ सके ? क्या कप्तान यह नहीं समझते कि हम

लोगों ने अपने देश जाने की भावना का परित्याग अभी नहीं किया ? और क्या वे सारे यूरोपीय सागर में हम लोगों पर नियंत्रण न रखेंगे ?"

कनसील ने कहा, "मेरा भी यही ख्याल है।"

नेड ने कहा, "देखा जाएगा।"

"नेडलैंड, अब हम इस विषय पर वार्तालाप समाप्त कर देना चाहते हैं। जिस दिन आप तैयार हों, हम लोगों को सूचना दे दें। हम लोग आपके साथ चल देंगे। यह सब मैं आप ही के ऊपर छोड़े देता हूं।"

यहीं पर बात समाप्त हो गई। दूसरे दिन १४ फरवरी को मैं कप्तान के साथ उसके कमरे में बैठा था। वह नक्शा देखने में व्यस्त था। मैं खिड़कियों से समुद्र के दृश्य का आनंद ले रहा था।

अचानक पानी में एक आदमी दिखाई पड़ा। वह एक गोताखोर था। कमर में एक चमड़े का झोला लटकाए बड़ी तेजी से तैर रहा था। कभी कभी समुद्री-सतह पर सांस लेने चला जाता था, थोड़ी देर बाद फिर गोता लगा अंदर चला आता था। मैंने कप्तान से कहा, "एक आदमी ! किसी टूटे हुए जहाज का आदमी है। इसकी प्राण-रक्षा अवश्य की जानी चाहिए।"

वह आदमी 'नाटिलस' के निकट आ गया तथा उसका चेहरा शीशे में दिखाई पड़ने लगा। उसने हम लोगों की ओर ध्यान से देखा। कप्तान नेमो ने हाथ से उसको इशारा दिया। उसने भी उसका जवाब हाथ के ही इशारे से दिया। फिर तुरंत वह सागर की सतह पर चला गया।

कप्तान ने मुझ से कहा, "प्रोफेसर, आप परेशान न हों यह मनपान अंतरीप का निकोलस है, इसका उपनाम पेसे है। यह बहुत प्रसिद्ध व्यक्ति है। बहुत ही अच्छा तैराक तथा गोताखोर है। यह स्थल से अधिक जल में रहता है। यह काफी दूर तक एक द्वीप से दूसरे द्वीप तक यात्रा किया करता है।"

"कप्तान आप इसे जानते हैं ?"

"बहुत अच्छी तरह।"

यह कह कर कप्तान नेमो एक सेफ की ओर गया। यह सेफ लोहे की थी तथा इस पर एक पीतल की ताली लगी थी। इसमें 'नाटिलस' का नाम तथा "सदा सचल" अंकित था।

मेरी उपस्थिति के बावजूद भी कप्तान ने उसे खोला। मैंने देखा कि यह सोने की ईंटों से भरी थी। इतना धन कहां से आया था ? कप्तान नेमो इसे क्या करता होगा ?

मैं कुछ भी न बोला, देखता रहा। कप्तान ने यह ईंटें एक एक करके निकालीं और गिनकर ठीक से उसी में रख दीं। सेफ अच्छी तरह लपेट कर बांधी गई तथा ग्रीक लिपि में कप्तान ने उस पर कोई पता लिख दिया। मैंने अनुमान किया कि सेफ में कोई २०,००० पौंड सोना होगा।

यह काम करके कप्तान ने एक बटन दबाया। चार आदमी आ गए। उन्होंने सेफ ढकेल कर कमरे के बाहर कर दी। बाद को सुना कि यह लोहे वाले जीने से गरारियों द्वारा ऊपर ले जाई गई थी।

कप्तान नेमो ने कहा, "प्रोफेसर, क्या आपको कुछ कहना है ?"

"नहीं कप्तान।"

"महाशय, अब मैं जा रहा हूं।" यह कहकर कप्तान नेमो कमरे से चला गया। मैं भी आश्चर्यचकित हो अपने कमरे में चला गया तथा विचार करता रहा। इस गोताखोर का इस सेफ से क्या संबंध !

'नाटिलस' फौरन समुद्रीसतह पर आ गई। फिर चबूतरे पर मुझे कुछ ध्वनि सुनाई पड़ी। मेरी समझ में आया कि यह लोग नाव खोल कर समुद्र पर जाना चाहते होंगे।

'नाटिलस' के किनारे पर आवाज हुई और फिर बंद हो गई।

दो घंटे बाद फिर वही शब्द तथा वही चाल सुनाई पड़ी। नाव फिर वापस आ गई। 'नाटिलस' सागर में फिर समा गई। इस प्रकार सोना अपने पते पर पहुंचा दिया गया। मुझे यह जान बड़ा ही आश्चर्य हुआ।

दूसरे दिन सारा हाल मैंने नेडलैंड और कनसील को बताया। मेरे साथियों को मुझसे कुछ कम आश्चर्य न था। नेडलैंड ने पूछा, "यह सोना कप्तान को मिला कहां से ?"

इसका कोई संतोषजनक उत्तर हमारे पास न था। मैं नाश्ता करके कमरे में चला गया। वहां अपना काम करने लगा। काफी गर्मी लगी। मैंने अपना कोट उतार डाला। धीरे-धीरे गर्मी बढ़ती गई। थोड़ी देर में इतनी गर्मी हो गई कि मेरा मस्तिष्क ठीक से काम न कर पाता था।

मैंने मन में विचार किया कि नाव में आग तो नहीं लगने वाली।

मैं कमरे से बाहर जा रहा था कि कप्तान नेमो कमरे में घुसा। उसने बैरोमीटर देखा। उसको ठीक किया तथा कहा, ४७° (सेंटीग्रेड)।

मैंने उत्तर दिया, "कप्तान मुझे काफी गर्मी लग रही है। यदि गर्मी और अधिक बढ़ी तो असह्य हो जाएगी।"

कप्तान बोला, "जब तक हम लोग न चाहेंगे, गर्मी न बढ़ेगी।"

"इसे आप चाहें तो क्या कम भी कर सकते हैं ?"

"यह बाहरी गर्मी है। हम लोग उबलते हुए पानी में तैर रहे हैं।"

मैंने चकित होकर कहा, "क्या यह भी संभव है ?"

कप्तान बोला, "देखिए।"

खिड़कियां खुल गईं। मैंने देखा, 'नाटिलस' के चारों ओर का पानी सफेद है तथा इसके ऊपर गंधकीय धुआं चक्कर लगा कर ऊपर उड़ रहा है। ऐसा मालूम होता था कि मानो पानी उबाला जा रहा हो। मैंने खिड़की के एक शीशे पर हाथ रख रक्खा। शीशा इतना गर्म था कि मुझे फौरन हाथ खींच लेना पड़ा।

मैंने पूछा, "हम लोग कहां हैं ?

कप्तान ने उत्तर दिया, "हम लोग सैंटोरिन द्वीप के पास उस जल मार्ग में हैं जो नेआ-कामनी को पाली-कामनी से पृथक करता है। मैं चाहता हूं कि तुमको समुद्री ज्वालामुखी के विस्फोट का विचित्र दृश्य दिखाऊं।"

मैंने कहा, "क्या इन द्वीपों का बनना समाप्त हो गया है ?"

कप्तान ने उत्तर दिया, "ज्वालामुखी के इन क्षेत्रों पर कभी कोई चीज समाप्त नहीं होती। जमीन के अंदर की अग्नि सदैव काम किया करती है। देखिए, इन लहरों के नीचे क्या हो रहा है ?"

मैं खिड़की के सामने गया, 'नाटिलस' इस समय विश्राम कर रही थी। गर्मी असह्य हो रही थी। पानी लोहे और नमक के कारण सफेद होने के बजाय लाल हो गया था। कमरा पूरीतौर से बंद न होने की कारण गंधक की बदबू कमरे में भर गई। सामने लाल-लाल चमकदार लौ दिखाई पड़ी। यह बिजली के से कहीं तेज थी। मैं पसीने से तर था और मेरी सांस रुक रही थी।

मैंने कप्तान से कहा, "हम लोग अब इस उबलते हुए पानी के अंदर नहीं रह सकते।"

कप्तान नेमो ने उत्तर दिया, "नहीं, ऐसी गुस्ताखी अब न होगी।"

आदेश दिया गया और पंद्रह ही मिनट में 'नाटिलस' समुद्र की सतह पर आगई।

मेरे दिमाग में यह बात आई कि यदि नेड इसी सागर में भागने की कोशिश करता, तो हम लोग जिंदा न बचते।

३१

अब हम भूमध्य सागर में आ गए थे। यहां एक तरफ संतरा, एलंडा, नागफली, समुद्री ताड़ पर्वतों का सारा वातावरण सुगंधित कर रहे थे। दूसरी ओर जमीन के अंदर की आग इन्हें झुलसाने पर लगी थी। अपूर्व युद्ध था। शायद वरुण और अग्नि दोनों अपना-अपना साम्राज्य बढ़ाने के लिए तुले थे।

यह प्रदेश बीस लाख वर्ग किलोमीटर था, परंतु दुर्भाग्यवश मैंने इसकी एक झलक ही देखी। कप्तान नेमो इस यात्रा भर में केवल एक बार मेरे पास आया। शायद उसे इसका अधिक ज्ञान न था। मेरे अनुमान से इस समुद्र में 'नाटिलस' ६०० लीग चली होगी और इसे २४ घंटे में पार किया।

मुझे यह ज्ञात था कि यह सागर चारों ओर से महाद्वीपों से घिरा है। कप्तान इनसे बच कर चलना चाहता था। इसकी लहरें और ठंडी हवाएं हमें अपने देश की याद दिला रही थीं, परंतु कप्तान को यहां हमारे जैसी स्वतंत्रता न थी। 'नाटिलस' अफ्रीका और यूरोप लांघ गई।

भूमध्य सागर में 'नाटिलस' को समुद्र तल पर आ हवा ताजा करनी थी।

'नाटिलस' की चाल तेज होने के कारण मैंने इस सागर में भिन्न-भिन्न प्रकार की मछलियां देखीं। इनकी लंबाई ३ फुट से १२ फुट तक थी। इनके नाम चिड़ियों के नामों पर थे। चिड़ियों की ही भांति तेज दौड़ती थीं। ये मछलियां 'नाटिलस' के साथ-साथ घंटों तक दौड़ती रहती थीं।

भूमध्यसागर के पश्चिमी क्षेत्र में प्राकृतिक विचित्रता नहीं, जल की विचित्रता के दृश्य अधिक दिखाई पड़े। वास्तव में यह सागर अत्यंत खतरनाक है। अलजीरिया के तट के किनारे तक कितने ही टूटे जहाज दिखाई पड़े। इनमें से अनेक समुद्र की तलहटी में पड़े थे। प्रशांत महासागर के सामने लंबाई-चौड़ाई में भूमध्य-सागर एक बड़ी झील के समान है। इसका पानी एक-सा नहीं रहता। किसी दिन शांत है तो किसी दिन इतना तूफानी कि बड़े से बड़े जहाज को अपने झोंके से नष्ट-भ्रष्ट कर देता है।

इस तेज यात्रा में असंख्य टूटे जहाज दिखाई पड़ रहे थे। इनमें से कुछ तो तूफान से नष्ट हुए थे तथा कुछ चट्टान से टकराकर। कुछ तो ऐसे दिखाई पड़े कि वे लंगर डाले खड़े समुद्री ज्वार का इंतजार कर रहे हों। इतने में हवा का झोंका आया, जहाज सीधे सागर में समा गया। 'नाटिलस' ने जब अपनी तीव्र रोशनी से इन्हें प्रकाशित किया, तो मालूम पड़ा कि उनके कप्तान 'नाटिलस' को सलामी देने का आदेश अपने अपने जहाजों को दे रहे थे। इस सागर का इतिहास यही होगा, कि इसमें इतने अच्छे-अच्छे जहाज डूबकर समाप्त हो गए तथा इतने मनुष्यों की जानें गईं।

रात को 'नाटिलस' ने बड़ी तेज चाल से अपनी यात्रा तय की। १८ फरवरी को सुबह ३ बजे ही जिब्राल्टर जलडमरूमध्य के फाटक पर आ पहुंची।

इस सागर में दो धाराएं प्रवाहित थीं, जिसे लोग बहुत पहले से जानते हैं। यह अतलांतिक महासागर का पानी भूमध्यसागरीय क्षेत्र में पहुंचाती है। परंतु दूसरी धारा को लोग अभी समझ नहीं पाए हैं। यह तर्क द्वारा ही सिद्ध हो जाती है। अतलांतिक धारा तथा भूमध्य सागर में गिरने वाली नदियों द्वारा लाया गया जल यहीं एकत्रित होता है; पर यहां एकत्र होते हुए जल के अनुपात से भाप नहीं बनती। इससे यह सिद्ध हो गया है कि भूमध्य सागर का आकार प्रति वर्ष कुछ न कुछ बढ़ना चाहिए, परंतु ऐसा नहीं है। इससे यह स्पष्ट है कि इस सागर में एक नीचे की धारा अवश्य है जो भूमध्य सागर का अधिक जल जिब्राल्टर जलडमरूमध्य द्वारा अतलांतिक सागर की ओर ले जाती है।

मेरे इस तर्क से 'नाटिलस' ने लाभ भी उठाया। वह इस तंग रास्ते में तेजी से घुस गई। मैंने प्लिनी और एवियेनस द्वारा वर्णित द्वीप में बने हुए हरकुलिस के मंदिर के खंडहर की एक झलक भी देखी और कुछ ही मिनट बाद 'नाटिलस' अतलांतिक महासागर पर विहार करने लगी।

३२

अब हम अतलांतिक सागर में आ गए थे। यह ढाई करोड़ वर्ग मील में फैला हुआ है। यह ९ हजार मील लंबा तथा बीच में २७०० मील चौड़ा है। पृथ्वी की अधिकतर नदियां इसीमें गिरती हैं। सभी देशों के जहाज इसमें चलते हैं, तथा यह दो भयानक अंतरीपों—हार्न और टॅपेस्ट-में समाप्त होता है।

'नाटिलस' अब तक साढ़े तीन महीने में लगभग १०,००० लीग (३०,००० मील) की यात्रा कर चुकी थी। अब भी पता नहीं था कि हम लोग कहां जा रहे हैं तथा भविष्य में हमें क्या-क्या देखने को मिलेगा।

'नाटिलस' जिब्राल्टर जलडमरूमध्य को पार करने के बाद एक बार फिर सतह पर आई। हम लोगों को फिर सुबह की ठंडी-ठंडी हवा मिलने लगी। मैं, कनसील और नेड फौरन चबूतरे पर चढ़ गए। १२ मील के अंतर पर स्पेन प्रायद्वीप का एक सिरा, बिनसेंट अंतरीप, दिखाई पड़ा। काफी तेज हवा चल रही थी। समुद्र भी ठीक न था। चबूतरे पर ठहरना असंभव था।

कुछ देर हवा खाने के बाद हम लोग नीचे उतर आए।

मैं अपने कमरे में वापस चला गया। कनसील भी अपनी कोठरी में चला गया, परंतु नेडलैंड मेरे साथ रहा। भयानक भूमध्यसागर में नेडलैंड भागने का प्रयत्न न कर पाया था, परंतु अब उसे धीरज न था।

मेरे कमरे का दरवाजा ज्यों ही बंद हुआ, नेडलैंड शांति-पूर्वक मेरे पास आकर बैठ गया।

मैंने कहा, "मैं समझ गया! परंतु तुम्हारे पास शिकायत की कोई गुंजाइश नहीं है। 'नाटिलस' इतनी तेजी से जा रही है कि इसको छोड़ना मूर्खता है। उदास होने की आवश्यकता नहीं। हम लोग पुर्तगाल के किनारे-किनारे जा रहे हैं। फ्रांस और इंगलैंड यहां से दूर नहीं। यदि 'नाटिलस' जिब्राल्टर को पार कर दक्षिण की ओर मुड़ती हुई जाती दिखाई पड़ेगी, तो हम लोग आपके साथ हो लेंगे। हो सकता है हम लोग कुछ दिन में इससे अच्छी जगह पहुंच जाएं, जहां से भागने में और आसानी हो।"

नेडलैंड ने कहा, "जो कुछ आशा है, आज ही रात को है।"

मैं नेडलैंड को उत्तर देना चाहता था, परंतु कुछ न कह सका।

नेडलैंड ने कहा, "आपने अवसर का जिक्र किया था, आज वह समय है। हम लोग आज रात स्पेन से थोड़ी ही दूर होंगे। रात भी अंधियारी होगी, और आपने मेरे साथ चलने का वायदा भी किया है।"

मैं अब भी शांत था। नेडलैंड उठकर मेरे और निकट आ गया तथा कहने लगा, "आज रात को ९ बजे के लिए मैंने कनसील से भी कह दिया है। उस समय कप्तान भी सो जाएंगे। जहाज का कोई भी आदमी हम लोगों को न देख सकेगा। मैं

और कनसील बीच वाले जीनों पर चले जाएंगे। आप वाचनालय में ही रहिएगा। मैं आपको इशारा दूंगा। नाव में सारे आवश्यक यंत्र रख लिए हैं। थोड़ा खाना भी रख लिया है। मैंने पेंच खोलने वाला रिंच भी ले लिया है। आज रात के लिए हमारी सारी चीजें तैयार हैं।"

"परंतु समुद्र बहुत भयंकर है।"

नेडलैंड ने उत्तर दिया, "यह ठीक है, परंतु हमें स्वतंत्रता के लिए इतना तो खतरा लेना चाहिए; इसके अतिरिक्त नाव बहुत अच्छी है। थोड़ी दूर तक तो हवा असर नहीं कर सकती। कौन जानता है कि हम कल सैकड़ों मील आगे नहीं निकल जाएंगे। यदि परिस्थितियों ने साथ दिया, तो १० या ११ बजे तक हम लोग कहीं-न-कहीं भूमि के निकट पहुंच जाएंगे। भगवान का नाम ले आज रात को···।"

नेडलैंड चला गया। मैं अकेला रह गया। थोड़ी ही देर में टंकियां पानी से भरी जाने लगीं। 'नाटिलस' थोड़ा-थोड़ा पानी के अंदर समाने लगी।

आज का दिन मुझे अत्यंत दुखद लगा। मैं एक समस्या में उलझ गया था। एक ओर कैद से मुक्ति पाने की इच्छा तथा अपने देश से प्रेम, दूसरी ओर इस विचित्र यात्रा को आधा ही छोड़ने का दुख। मैं बहुत परेशान था।

मैं दो बार कमरे में गया। कंपास देख कर पता लगाना चाहता था कि 'नाटिलस' तट की ओर जा रही है या दूर। 'नाटिलस' अब भी पुर्तगाल के तट को चूमती हुई उत्तर की ओर जा रही थी।

अब मुझे तैयारी करनी ही चाहिए थी। मेरा सामान तो

केवल मेरी डायरी ही थी । मैं मन ही मन सोच रहा था कि हम लोगों के भाग जाने से कप्तान का क्या नुकसान हो सकता है । यदि कप्तान को इसका पता चल ही गया, तो वह क्या करेगा ? परंतु वह मुझे भाग जाने के लिए कोई दोष न दे सकता था ।

कप्तान कई दिनों से मुझे दिखाई न पड़ा था। यदि यह स्थल से संबंध नहीं रखता, तो वह इतने दिन क्या करता रहा ।

प्रतिदिन की भांति मेरे कमरे में ही खाना आया। मैंने आज खाना कम खाया और सात बजे तक निबट चुका था । मुझे नेडलैंड के साथ नाव छोड़कर जाने में केवल दो ही घंटे रह गए थे ।

अंतिम बार मैं फिर उस कमरे को देखना चाहता था—जिसमें रोज काफी घंटे व्यय करता था । मैंने फिर उसमें प्रवेश किया। मैंने एक बार फिर उसकी समस्त विचित्रताएं देखीं । आज उस कमरे को सदैव के लिए छोड़ रहा था । यहां जीवन का काफी समय व्यतीत हुआ था । उन खिड़कियों से सागर की विचित्रता देखना चाहता था, परंतु दुर्भाग्यवश खिड़कियां बंद थीं ।

कमरे में चारों ओर घूम कर देख रहा था । दरवाजे के पास जाकर कप्तान के कमरे का दरवाजा खोला । कप्तान यदि उसमें होता, तो मुझे अवश्य देखता । कमरे में शांति थी । दरवाजे के नकट गया, कमरा खाली था । दरवाजे में धक्का दिया और कमरे के अंदर प्रवेश किया ।

एकाएक घड़ी ने आठ की घंटी बजाई । मुझे ऐसा मालूम हुआ कि मानो कोई अदृश्य मनुष्य मेरे दिल की बात को जान

रहा था। यहीं सोच मैं कमरे से बाहर चला आया।

मैंने यंत्रों को देखा, हमारा रास्ता इस समय सीधे उत्तर की ओर था। नाव साधारण चाल से ६० फुट की गहराई में चली जा रही थी। इस प्रकार परिस्थितियां नेडलैंड के भागने के पक्ष में थीं।

मैं अपने कमरे में चला गया तथा अपनी पोशाक पहन तैयार हो गया। नेडलैंड के इशारे का इंतजार करने लगा।

नौ बजने में कुछ मिनट बाकी थे। मैं कप्तान के दरवाजे में कान लगाए नेडलैंड की आवाज को ध्यान से सुन रहा था। परंतु कुछ भी सुनाई न पड़ा। मैं अपना कमरा छोड़ बड़े कमरे को चला गया। वहां धीमी रोशनी हो रही थी। इस कमरे में वाचनालय वाला दरवाजा खोला। वहां भी कोई न था, धीमी रोशनी जल रही थी। वाचनालय के अंदर भी बीच वाले जीने के दरवाजे के पास नेडलैंड के इशारे का इंतजार करने लगा। धीरे-धीरे चर्खी की चाल धीमी पड़ गई। अंत में चर्खी रुक गई। 'नाटिलस' का यह रुकना नेडलैंड की इस अज्ञात यात्रा के लिए लाभदायक था या हानिकारक? मैं कुछ भी न कह सकता।

मुझे एकाएक धक्का-सा लगा। 'नाटिलस' अब रुक गई थी। मुझे और भी अधिक उत्तेजना थी, परंतु नेडलैंड का इशारा मुझे अब तक न मिला था। मैं चाहता था कि नेडलैंड के पास जा उससे वह अज्ञात यात्रा न करने के लिए कहा जाय, क्योंकि 'नाटिलस' का संचालन अब बदल रहा था।

इसी बीच सैलून का दरवाजा खुला, कप्तान नेमो अंदर प्रविष्ट हुआ।

. उसने मुझे देखकर कहा, "वाह प्रोफेसर, मैं आपको तलाश कर रहा था। क्या आप स्पेन का इतिहास जानते हैं ?"

मस्तिष्क की ऐसी परिस्थिति में कोई भी व्यक्ति, जो इतिहास का चाहे प्रवीण भी होता, एक भी शब्द न कह सकता था।

कप्तान नेमो ने कहा, "क्या आपने मेरा प्रश्न सुना। क्या आप स्पेन का इतिहास जानते हैं ?"

मैंने उत्तर दिया, "बहुत थोड़ा।"

वह एक कोच पर लेट गया। मैं भी उसकी बगल में एक दूसरी कोच पर लेट गया। रोशनी मेरी पीठ की ओर थी। कप्तान चार्ल्स द्वितीय के उत्तराधिकारी के युद्ध का वर्णन करने लगा, और एक घटना बताई जब जहाज सोना लादे हुए अमेरिका से आ रहे थे और इसी वीगो की खाड़ी में डूब गए थे।

कप्तान ने कहा, "ऐरोनेक्स महाशय, इस समय हम लोग वीगो की ही खाड़ी में है। क्या आप इसकी विचित्रताएं देखना चाहते हैं ?"

कप्तान उठा और मुझसे अपने साथ चलने को कहा। मैं कप्तान के पीछे-पीछे चला। सैलून में अंधकार था, परंतु खिड़कियों से समुद्र चमकता दिखाई पड़ रहा था। मैं देखने लगा।

'नाटिलस' के चारों ओर आध मील के घेरे में समुद्र बिजली की रोशनी से चमक रहा था, जिसमें बालू साफ और स्पष्ट दिखाई पड़ती थी। कुछ खलासी गोताखोरों की पोशाकें पहने बड़े-बड़े बक्सों को कुल्हाड़ी से तोड़ रहे थे। इन्हीं पीपों और बक्सों से सोना-चांदी की ईंट निकालते थे।

बालू में छितरे हुए खलासी लोग इन्हें इकट्ठा करके 'नाटिलस' में आ रख जाते थे और फिर वापस चले जाते थे। इस क्षेत्र में अथाह सोना-चांदी भरा था।

मैं समझ गया कप्तान यहां इसी हेतु से आया था। कप्तान ने हंसते हुए कहा, "प्रोफेसर, आप ख्याल भी कर सकते थे कि यहां समुद्र में इतनी बहुमूल्य वस्तुएं मिलती हैं।"

मैंने उत्तर दिया, "हां, मैं जानता हूं कि सागर-तल की बालू में लगभग बीस लाख टन चांदी है।"

"ठीक है, परंतु इस चांदी के निकालने में इससे पैदा की गई रकम से अधिक खर्चा हो जाता है। और मुझे केवल इस चांदी को उठाने का ही कष्ट करना पड़ता है। मुझे सिर्फ इसी वीगो की खाड़ी में ही नहीं, हजारों अन्य स्थानों पर भी, जहां जहां भूतकाल में जहाज डूबे हैं यह सोना-चांदी मिल जाता है। यह मेरे समुद्री नक्शे से अंकित है। अब आप समझ गए होंगे कि मैं इतना मालदार कैसे हूं।"

मैंने कहा, "मुझे केवल एक बात का दुख होता है कि हजारों की संख्या में अभागे मनुष्यों का धन खो जाता है। यह यदि उनके पास रहता, तो अधिक लोगों में विभाजित रहता और उनमें से हर एक को अलग-अलग लाभ होता, परंतु समुद्र में डूबने से वे सदैव के लिए इसे खो देते हैं तथा यह सारा धन एक जगह इकट्ठा हो जाता है।"

मैं ऐसी बातें कह तो गया, पर सोचा कप्तान को बुरी लगी होंगी? कप्तान ने उत्तर दिया, "खो जाता है तो क्या आप समझते हैं इस तरह धन खो जाता है, और मैं इसे इकट्ठा कर लेता हूं? क्या आप समझते हैं कि यह सोना-चांदी मैं अपने लिए

उठाता हूं ? यह कौन कहता कि मैं उसका उचित उपयोग नहीं करता ? क्या आप यह समझते हैं कि मैं दुखी मनुष्यों के दुख को नहीं समझता ? या पद्दलित जातियों या देशों को अत्याचार से मुक्ति प्राप्त कराने का उपयोग नहीं समझता ? या ऐसे सताए हुओं का बदला लेने में सहायता नहीं करता। क्या आप नहीं समझते ?"

यह कहकर कप्तान नेमो चुप हो गया। मैंने अनुमान कर लिया कि संसार के बंधनों से मुक्ति पाकर स्वतंत्र रहने के संबंध में उसका चाहे जो भी उद्देश्य हो, परंतु वह था एक उदार व्यक्ति। उसके दिल में मनुष्य मात्र के लिए प्रेम तथा दया थी। उसका खजाना सताई हुई जातियों तथा दुखी व्यक्तियों को ही दान दिए जाने के लिए था।

अब मैं समझ गया था कि जब 'नाटिलस' क्रीट सागर में थी, तब वह धन कहां भेजा गया था।

३३

दूसरे दिन १९ फरवरी को प्रातः नेडलैंड ने मेरे कमरे में प्रवेश किया। मैं उस समय बहुत ही संतुष्ट था।

उसने मुझसे कहा, "कहिए महाशय।"

मैंने कहा, "जैसे ही हम लोग इस नाव से भागना चाहते थे, कप्तान नेमो ने उसे रोक दिया। उसका अपने बैंकर से कुछ काम था।"

"इस बैंकर से मेरा तात्पर्य इस समुद्र से है, जहां यह धन और भी सुरक्षित रहता है।"

मैंने फिर नेडलैंड से कल शाम का सारा दृश्य इस आशा से कह सुनाया कि शायद इसी लालच में वह 'नाटिलस' से भागने का ध्यान छोड़ दे। परंतु इसका फल केवल इतना हुआ कि उसे इस रहस्यपूर्ण स्थान को न देखने का खेद हुआ।

उसने कहा, "कोई बात नहीं, यह एक उपाय है जो विफल रहा। दुबारा हम अवश्य सफल होंगे तथा वह समय आज रात को ही आएगा।"

मैंने पूछा, "नाटिलस का रुख क्या है ?"

नेडलैंड ने कहा, "मैं नहीं जानता। दोपहर तक हमें पता चल जाएगा।"

नेडलैंड कनसील के पास चला गया। मैं भी कपड़े पहन सैलून को चला गया। कंपास ठीक से काम न कर रहा था। यूरोप हम लोगों से दूर छूटा जा रहा था।

हमने पता लगाने का बहुत प्रयत्न किया। साढ़े ग्यारह बजे टंकियां खाली होने लगीं और 'नाटिलस' समुद्री सतह पर आ गई। मैं चबूतरे पर चढ़ गया। नेडलैंड मुझसे पहले ही वहां पहुंच गया था।

हम लोगों ने चारों ओर देखा। चारों ओर जल ही जल था। दूर तक स्थल नहीं दिखाई पड़ रहा था। बड़ी दूर कुछ नावें दिखाई दीं। बादल छाए थे, तूफान-सा आ रहा था।

नेड अत्यंत क्रोधित था। उसे क्षितिज के उस पार स्थल दिखाई पड़ रहा था।

दोपहर को एकाएक सूर्य का प्रकाश हुआ। समुद्र अत्यंत

क्षुब्ध था, इसी कारण हम लोग नीचे आ गए। खिड़कियां बंद कर दी गईं।

एक घंटे बाद मैंने पता चलाया तो 'नाटिलस' यूरोप के समुद्र तट से १५० लीग दूर थी—अब भगाने की कोशिश करना व्यर्थ था। नेडलैंड को वहां की स्थिति बताने पर वह और भी अधिक क्रुद्ध हो गया।

सच बात तो यह है, मैं बिल्कुल दुखी न था। मुझे तो एक परेशानी से छुटकारा मिल गया था। अपना काम फिर शांति-पूर्वक करने लगा था।

रात को ११ बजे कप्तान नेमा की मेरे से भेंट हुई। उस ने पूछा, क्या तुम बैठे बैठे थक गए हो। ने इसका नकारात्मक उत्तर दिया।

"प्रोफेसर, मुझे आपको एक विचित्र यात्रा के बारे में बताना है।"

"वह क्या है कप्तान ?"

"अभी तक आपने समुद्र-तल को प्रकाश में देखा है। क्या आप इसे अंधेरी रात में देखना चाहते हैं ?"

"अवश्य देखना चाहता हूं।"

कप्तान बोला, "मैं आपको पहले ही बताए देता हूं कि इस यात्रा में थकान अधिक होगी। आपको बहुत दूर जाना पड़ेगा तथा पहाड़ की चढ़ाई भी चढ़नी पड़ेगी, और वहां सड़कें भी ठीक नहीं हैं।"

"आपकी बातों से मुझे बहुत इच्छा होने लगी है, अब देर क्यों।"

फिर आइए प्रोफेसर, हम लोग चलें और गोताखोरी की पोशाकें पहनें।"

मैं जब पोशाकों वाले कमरे में पहुंचा, तो देखा कि वहां न तो कोई मेरा साथी था और न कोई खलासी ही, मैंने और कप्तान ने नेडलैंड और कनसील के बारे में भी न पूछा।

कुछ मिनट में हम लोगों ने अपनी-अपनी पोशाकें तथा श्वासयंत्र धारण कर लिए, परंतु इस बार बिजली का लैंप हम लोगों ने न लिया। मैंने इस बात की ओर कप्तान का ध्यान भी न दिलाया। उसने उत्तर दिया, "लैंपों का वहां कोई काम नहीं है।"

मुझे मालूम हुआ कि मैं ठीक से सुन न पाया था, परंतु मैं अपने शब्दों को दोहरा न सका, क्योंकि कप्तान ने अपनी धातु की टोपी पहन ली थी। किसीने मेरे हाथ में लोहे की नोकदार छड़ी पकड़ा दी। कुछ ही मिनट बाद हम लोग अतलांतिक सागर में १५० फैदम की गहराई में पैदल यात्रा करने लगे।

आधी रात हो रही थी। समुद्र-जल में काफी अंधकार था। कप्तान नेमो ने दूर एक लाल बिंदु की ओर इशारा किया। यह एक तीव्र ज्योति थी जो 'नाटिलस' से दो मील पर चमक रही थी। मैं इस अग्नि के बारे में न समझ पाया। कुछ भी हो, इससे मेरा रास्ता धुंधला २ दिखाई पड़ता था। मैं समझ गया था कि इन परिस्थितियों में बिजली के लैंप की कोई आवश्यकता न थी।

मैं और कप्तान नेमो सीधे उसी प्रकार उस ओर बढ़े जा रहे थे। समतल मैदान धीरे धीरे कुछ ऊंचा होने लगा। चलने में हमें बहुत मेहनत पड़ रही थी। हम छड़ी के सहारे

चल रहे थे। हम लोगों की प्रगति बहुत धीमी थी। पैर समुद्री लताओं और पत्थरों के बीच कीचड़ में फंस जाता था।

जैसे-जैसे हम लोग आगे बढ़ रहे थे, सिर के ऊपर कुछ थपथपाहट की आवाज सुनाई पड़ती थी। कभी-कभी यह आवाज अधिक तेज हो जाती थी। मैं तुरंत इसका कारण समझ गया, समुद्री सतह पर तेजी से वर्षा हो रही थी। यह सोच मुझे ध्यान हुआ कि शायद मेरी पोशाक पानी में भीग गई हो, और हमारे अंदर के कपड़े भी भीग गए हों, परंतु ऐसा न था।

आधा घंटा यात्रा के बाद मैं चट्टानों के बीच चलने लगा। इनपर सैकड़ों छोटे-छोटे जीव जुगनू जैसे चमक रहे थे। कभी-कभी मेरा पैर फिसल जाता था। मैं कई बार गिरते-गिरते बचा। पीछे घूमकर देखा तो 'नाटिलस' का प्रकाश अब भी टिमटिमा रहा था।

जिस लाल रोशनी की ओर हम लोग जा रहे थे, वह इस बीच एकाएक धधक उठी। क्षितिज लाल रंग से रंजित हो गया। समुद्र के अंदर की इस अग्नि से मेरे आश्चर्य की सीमा नहीं रही।

मेरा रास्ता धीरे-धीरे प्रकाशयुक्त होता गया। यह सफेद रोशनी पहाड़ की ८०० फुट की ऊंचाई से चमक रही थी। परंतु मैं जो रोशनी देख रहा था, वह वास्तविक रोशनी का प्रतिबिंब मात्र था। असली रोशनी पहाड़ के उस पार थी।

कप्तान नेमो इस पथरीले पथों से गुजरता चला जा रहा था। वह इस अंधियारे रास्ते से भली भांति परिचित था। मैं भी उसी के विश्वास पर पीछे-पीछे चला जा रहा था।

इस समय सुबह का एक बजा था। हम लोग पर्वत के

पहले ढाल पर थे, परंतु ऊपर जाने का रास्ता घने जंगलों के मध्य होकर था। यह बड़ा ही कठिन था।

यात्रा शुरू किए दो घंटे हो गए थे। वृक्षों के झुंड हम लोग पार कर चुके थे। पहाड़ की चोटी अब सिर्फ १०० फुट दूर रह गई थी। कुछ झाड़ियां इधर-उधर खड़ी थीं। इन चट्टानों में गहरी खोहें थीं, जिनमें शोर सुनाई पड़ता था। मैं जब कभी किसी जीव के सामने से निकलता या किसी खोह से तीव्र स्वर सुनता। तो मेरा खून जम जाता था। इस अंधकार में सैकड़ों चमकदार स्थान दिखाई पड़ते थे। यह भयानक जानवरों की चमकदार आंखें थीं। हम लोग रुके नहीं। कप्तान नेमो इन जानवरों से परिचित था, अतः वह इनपर कुछ ध्यान न देता था। मैं उस पहले पठार पर पहुंचा, जहां कि हजारों आश्चर्य-जनक चीजें हम लोगों की प्रतीक्षा कर रही थीं। यहां पर बड़े-बड़े पत्थर के ढेर थे। जो महल, मंदिरों-से मालूम पड़ रहे थे। इनपर समुद्री लताएं और समुद्री फूलों के वृक्ष उगे थे।

विश्व के किस भाग को यह सागर निगल गया था ? मैं कहां था ? कप्तान नेमो मुझे कहां ले आया था ? मैं यह कुछ भी न जानता था। मैं कप्तान से एक प्रश्न पूछना चाहता था, परंतु मायूस था समुद्र के अंदर इन पोशाकों में बात करना असंभव था। मैंने कप्तान का हाथ पकड़कर रोकना चाहा, परंतु उसने अपना सिर हिलाकर चोटी की ओर इशारा किया, मानो कह रहा था—"ऊंचे ! और ऊंचे !"

मैं उसके पीछे-पीछे चला गया। कुछ ही मिनट में हम लोग उस चोटी पर पहुंच गए। ऊपर पहुंच मैंने चारों ओर देखा। यह पर्वत केवल ७०० या ८०० फुट ऊंचा था। इसके दूसरी ओर

इस पर्वत से दूनी गहराई का अतलांतिक सागर था। यह एक ज्वालामुखी पर्वत था। चोटी पर ५० फुट चौड़ा एक मुंह था, जिसमें से जल-धारा उबल-उबलकर निकल रही थी, जो सागर के वक्षस्थल को आग के प्रवाह का रूप दे रही थी। इस प्रकार यह ज्वालामुखी एक मशाल की भांति नीचे के मैदान को उज्ज्वल कर रहा था।

मैंने आपको बताया कि यह ज्वालामुखी लावा उगल रहा था, आग नहीं; क्योंकि सागर में आक्सीजन का अभाव होता है, तथा आग आक्सीजन के बिना जल नहीं सकती। मुझे वहां एक ध्वस्त-सा शहर दिखाई दिया। इसकी छतें टूट गई थीं। मंदिर के कंगूरे टूटकर गिर गए थे। मेहराबें अलग-लग हो गई थीं। खंभे जमीन पर लुढ़के पड़े थे। मकान की कारीगरी के चिन्ह अब भी दिखाई पड़ रहे थे। इसके अतिरिक्त कुछ विशाल खंडहर थे। एक विशाल कब्रिस्तान तथा मंदिर दिखलाई पड़ रहा था।

इस प्रकार अनेक ऐसी वस्तुएं थीं जिनसे यह सिद्ध होता था कि पहले यहां समुद्र तट पर कोई बंदरगाह होगा। संभवतः यह शहर सागर में डुब चुका था।

मैं इस समय कहां था ? यद्यपि मैं नहीं जानता, जानने की तीव्र इच्छा थी। मैं कप्तान से कुछ पूछना चाहता था। इस कारण अपनी टोपी उतार डालना चाहता था। परंतु कप्तान नेमो मेरे पास आया तथा इशारे से मुझे ऐसा करने से रोका, फिर वहीं से एक सफेद पत्थर का टुकड़ा उठाया और उसे एक बड़ी काली चट्टान पर फेंका। वहां दिखाई पड़ा, उस पर 'एटलांटिस' शब्द अंकित था।

मेरे दिमाग में एक बिजली सी दौड़ गई। एटलांटिस प्राचीन लेखक थिओपोंपस द्वारा वर्णित नगर, प्लेटो का एटलांटिस; वह देश जिसके अस्तित्व पर इतिहासकार अविश्वास करते थे; जिसकी परंपरा की खिल्ली उड़ाते थे; वह एटलांटिस मेरी आंखों के सामने है। क्या ही अद्‌भुत बात है! यूरोप, एशिया तथा लीबिया तथा हरक्युलिस के परे वह भाग है, जहां महान शक्तिशाली लोग रहते थे। इन्हींके विरुद्ध प्राचीन यूनानियों ने प्रथम युद्ध किया था।

आज मैं उसी देश के एक पहाड़ की यात्रा कर रहा था। उन खंडहरों को छू रहा था, जो भूगर्भ विशेषज्ञों से दूर थे। मैं उन जगहों की सैर कर रहा था, जहां प्रथम मानव के संबंधी यात्रा करते थे। अपने पैरों से उन पूर्वपुरुषों की हड्डियां कुचल रहा था। मेरा भाग्य मुझे कैसी विचित्र चीजें दिखा रहा था।

मैं इस पर्वत के उस पार जाना चाहता था। उधर जाकर अफ्रीका से अमरीका को जोड़ने वाले देश का भ्रमण करना चाहता था। हो सकता है कि एक दिन ज्वालामुखी से निकला हुआ लावा इसे समुद्रीसतह पर पहुंचा दे। इसके अंदर से ऐसा शब्द सुनाई पड़ता था, जिससे मालूम होता था कि जमीन के अंदर कुछ हो अवश्य रहा है। यहां से भूमध्यरेखा तक के सारे मैदान में कुछ आंतरिक शक्तियां काम करती मालूम पड़ती थीं। कौन जानता है, कभी कहीं इसकी चोटी अतलांतिक सागर की सतह पर न आ जाएगी ?

जिस समय मैं यह सोच रहा था, तब देखा कप्तान नेमो एक खंडहर के पास बैठ गया। क्या वह उस जगह की पुरानी स्मृतियों को याद कर रहा था ? अथवा उनसे मनुष्य के भाग्य का

रहस्य पूछ रहा था ? क्या कप्तान अपनी पुरानी स्मृति को पुनः ताजा करने के लिए वहीं रहना चाहता था, क्योंकि उसके लिए कोई नई बात नहीं थी। मैंने उसके यहां रुकने का कारण पता लगाने की क्या-क्या कोशिश नहीं की ?

हम लगभग उसी स्थान से लावा के प्रकाश में मैदान देखते रहे। कभी-कभी लावा एकदम तेज हो जाता था। अंदर का कंपन कभी-कभी पर्वत से दूर तक तीव्र कपकपाहट और उथल-पुथल पैदा कर देता था। पानी के कारण यह शब्द दूर तक साफ-साफ सुनाई पड़ते थे।

इसी बीच चंद्रमा उदित हुआ तथा उसकी पीली-पीली ज्योति जलमग्न महाद्वीप पर चमकने लगी। यह तो केवल रोशनी थी, इसका क्या असर था, यह कहना बहुत कठिन था। कप्तान उठ खड़ा हुआ। उसने अंतिम बार मुझे मैदान की ओर चलने का इशारा किया। मैं उसके पीछे-पीछे चल दिया।

हम लोग बहुत तेजी से उतरे। ज्यों ही मैंने खनिज जंगल पार किए 'नाटिलस' की रोशनी एक तारे की भांति चमकती दिखाई पड़ी। कप्तान सीधे उसी रोशनी की ओर बढ़ा।

३४

दूसरे दिन २० फरवरी को मैं बहुत देर बाद सोकर उठा। कल रात की थकावट के कारण ११ बजे तक सोया। उठते ही जल्दी से अपनी पोशाक पहनी। मुझे 'नाटिलस' की गति की

दिशा जानने की इच्छा थी। ज्ञात हुआ कि हम लोग दक्षिण की ओर ५० फैदम गहराई में २० मील प्रति घंटे की चाल से जा रहे हैं।

कनसील कमरे में प्रविष्ट हुआ। मैंने अपनी रात वाली यात्रा का सारा हाल उसको बताया। खिड़कियां इस समय खुली थीं। उसे भी इस डूबे हुए देश की झलक दिखाई पड़ी। वास्तव में 'नाटिलस' एटलांटिस मैदान पर ५ ही फैदम नीचे की गहराई में गुब्बारे की भांति उड़ती चली जा रही थी। हम लोगों को ऐसा प्रतीत होता था मानो डाकगाड़ी के डिब्बे में बैठे हों।

इन्हीं दृश्यों में से गुजरते हुए मैंने कनसील से एटलांटिस देश का इतिहास बतलाया तथा इस राष्ट्र के सारे युद्धों का वर्णन किया; परंतु कनसील इन ऐतिहासिक बातों पर ध्यान न दे रहा था। मुझे फौरन ही इसका कारण मालूम हो गया।

सामने समुद्र में सैकड़ों मछलियां उसके ध्यान को आकर्षित कर रही थीं। कनसील जैसे ही मछलियां देखता था, उसकी वर्गीकरण मनोवृत्ति उभर आती थी। ऐसी अवस्था में मैं उस के साथ मछलियों का अध्ययन करने लगा।

कभी-कभी तंग पहाड़ियों के बीच गुजरना पड़ता था। उस समय 'नाटिलस' अपनी चाल धीमी कर देती थी। जब कभी कोई अलंघ्य वस्तु सामने आ जाती थी, तो 'नाटिलस' गुब्बारे की भांति ऊपर उठकर उसे पार करती और फिर अपने साधारण मार्ग पर आ दौड़ने लगती थी। इसके अतिरिक्त 'नाटिलस' अपने पतवारिए के इशारे पर चल रही थी।

लगभग ४ बजे शाम कीचड़ तथा प्रस्तरीभूत वृक्ष धीरे धीरे कम पड़ने लगे तथा चट्टानें, लावा और गंधकीय शीशे

अधिक दिखाई पड़ने लगे। मेरी समझ में आया कि शायद मैदान समाप्त होकर पहाड़ी भाग आने वाला है। 'नाटिलस' थोड़ा ऊपर उठी, सामने दक्षिण की ओर एक ऊंची दीवार दिखाई पड़ी। यह द्वीप था या कोई देश। इस दीवार की चोटी समुद्री सतह से ऊपर उठी हुई थी।

मुझे अपनी परिस्थिति का कुछ भी ज्ञान न था, परंतु यह दीवार एटलांटिस की दीवार की अंतिम सीमा अवश्य थी। रात्रि मेरे निरीक्षण में बाधा न डाल सकी। कनसील अपनी कोठरी को चला गया। मैं खिड़कियों के और अधिक पास रहना तथा समुद्र की छटाओं का अवलोकन करना चाहता था, परंतु दुर्भाग्य से खिड़कियां बंद हो गईं।

इस समय 'नाटिलस' उस दीवार के पास पहुंच गई। मैं यह समझ न पाया था कि आगे क्या होगा। 'नाटिलस' अचल हो गई। मैं सोने चला गया।

दूसरे दिन ८ बजे दिन को मैं फिर सैलून को वापस आया। मैंने मानोमीटर देखा। 'नाटिलस' अब समुद्र-सतह पर आ गई थी। मुझे चबूतरे पर पैरों की आहट सुनाई पड़ी। मैं चबूतरे की तरफ खिड़कियों के पास चला गया। मुझे आशा थी कि इस समय दिन होगा और चबूतरे पर उजाला होगा, परंतु मैं अंधकार में घिरा था। हम कहां थे? क्या मैंने कोई गलती की? क्या अब भी रात है? नहीं, क्योंकि कोई तारा चमकता न दिखाई पड़ता था और रात में भी इतना घनघोर अंधेरा नहीं होता।

मैं न समझ सका कि क्या करूं। इतने में किसी ने मुझसे कहा, "क्या आप प्रोफेसर हैं?"

मैंने उत्तर दिया, "वाह कप्तान नेमो ! हम लोग कहां हैं ?"

"जमीन के अंदर ।"

"जमीन के नीचे और 'नाटिलस' अब भी चल रही है ?"

कप्तान ने कहा, "हां, चल रही है ।"

"परंतु मैं नहीं समझ पाता कैसे ?"

"थोड़ा इंतजार करो । मेरी लालटेन जलने वाली है । तब यदि आप चाहेंगे तो आप को बताया जाएगा ।"

मैं चबूतरे पर चढ़ इंतजार करने लगा । अंधकार के कारण मैं कप्तान को भी न देख सकता था । मुझे सिर के ऊपर अब भी गोल दायरे में प्रकाश का अनुमान हो रहा था। इसी बीच लैंप जल पड़े । इनकी चमक चारों ओर फैल गई ।

बिजली जलते ही मेरी आंखें चकाचौंध से बंद हो गईं । मुझे एकाएक मालूम पड़ा कि 'नाटिलस' किनारे पर शांत खड़ी है । जिस सागर में वह थी, वह चारों ओर दीवार से घिरी एक झील है । उसका व्यास दो मील था । उससे ऊपर से नीचे एक १२०० फुट ऊंची सुरंग बनती थी । उसके ऊपरी भाग पर एक छिद्र था, जिससे दिन जैसा कुछ प्रकाश दिखाई पड़ रहा था । इस गुफा का अंदरूनी भाग मैंने ध्यान से देखा। मैं सोचने लगा कि यह आदमी द्वारा बनाई हुई है या प्रकृति द्वारा ? मैं कप्तान नेमो के पास गया ।

मैंने कहा, "हम लोग कहां हैं ?"

उसने उत्तर दिया, "प्रोफेसर, रात के समय 'नाटिलस' एक मार्ग द्वारा ज्वालामुखी के कारण उत्पन्न इस झील में आ पहुंची । उस समय आप सो रहे थे । यह ज्वालामुखी का मुंह है। पहले इसमें लावा धुआं और अग्नि भरी थी, परंतु

अब इसी मुहाने से इसके अंदर मनुष्य को जिंदा रखने योग्य शुद्ध वायु आती है।"

"तो क्या इस ज्वालामुखी पर्वत के मुंह में स्थित छेद से दूसरा कोई नहीं आ सकता?"

"मैं जितना ऊपर जा सकता हूं उतना दूसरा नहीं, क्योंकि लगभग १०० फुट तक तो पहाड़ की तलहटी ठीक है। परंतु इसके ऊपर किनारे ऐसे हैं जो पार नहीं किए जा सकते।"

"समझ गया। आप इस झील में सुरक्षित हैं परंतु दूसरा कोई इसमें यात्रा नहीं कर सकता। परंतु कप्तान, आप यह तो बताइए 'नाटिलस' को ऐसे बंदरगाहों की क्या आवश्यकता?"

"नहीं प्रोफेसर, मेरी नाव को बिजली चाहिए और बिजली बनाने के लिए उसकी सामग्री चाहिए। इस सामग्री के लिए सोडियम चाहिए और सोडियम निकालने के लिए कोयला चाहिए। कोयला तो कोयले की खानोंमें ही मिल सकता है। ये खानें इसी समुद्र में हैं। सारे जंगल जो समुद्र में धंस गए हैं तथा जो खनिज में परिवर्तित होकर कोयला हो गए है, वही मेरी कोयले की खाने हैं?"

"कप्तान, तो आपके आदमी यहां कोयले की खानों का भी काम करते हैं?"

"बिल्कुल, ये खानें समुद्र के अंदर न्यूकैसल की खानों की भांति फैली हुई हैं। मैं कोयला भी पृथ्वी की खानों से नहीं लेता। मेरे आदमी गोताखोरी की पोशाक पहन फावड़े हाथ में ले, समुद्री खानों से कोयला निकाल लाते हैं। मैं जब

इस कोयले को जलाता हूं, तो उसमें से भी तो ज्वालामुखी के मुंह की भांति धुआं निकलता है।"

"क्या मैं आपके साथियों को इस कार्य को करते देख सकूंगा ?"

"कमसे कम इस समय नहीं, क्योंकि इस समय मुझे समुद्री यात्रा पूरी करने की जल्दी है। इसीलिए मुझे अपनी संचित सामग्री पर ही संतोष करना पड़ेगा। यह काम तो हम एक दिन में कर सकते हैं। इतने में इस झील की हमारी यात्रा समाप्त हो जाएगी। ऐरोनेक्स महोदय, यदि आप इस झील का भ्रमण करना चाहते हों, तो इस अवसर का लाभ उठा लीजिए।"

मैंने कप्तान को धन्यवाद दिया तथा उन दो साथियों की खोज में चला गया, जो अब भी अपने कमरे में बैठे थे। मैंने उन्हें बुला लिया।

वे लोग चबूतरे पर आ गए। कनसील को समुद्र देखकर कोई आश्चर्य न हुआ, परंतु नेडलैंड बहुत परेशान हुआ। उसे भय था कि कहीं इस गुफा के अंदर दूसरी गुफा न हो।

नाश्ता करके हम लोग १० बजे दिन के समय किनारे पर उतरे।

कनसील ने कहा, "लो, हम एक बार फिर जमीन पर आ गए।"

नेडलैंड ने कहा, "मैं इसे जमीन नहीं कहता। हम लोग जमीन के अंदर हैं।"

पहाड़ी ढाल के नीचे झील के पानी के बीच बालू का किनारा था। वह अधिक से अधिक ५०० फुट चौड़ा होगा। इस पर झील का चक्कर लगाना आसान था। बीच-बीच ज्वाला-

मुखी से निकले हुए चिकने पत्थर बिछे थे, जो लालटेनों की रोशनी में चमक रहे थे। हम लोगों के चलने से बरीक खनिज-धूल के बादल से उड़ने लगते थे।

चारों तरफ ज्वालामुखी के छोटे-छोटे मुहाने दिखाई पड़ रहे थे। मैंने अपने साथियों से पूछा, क्या आप लोग उस दृश्य की कल्पना कर सकते हैं, जब यह स्थान उबलते हुए लावा से भरा होगा, और जब पिघले हुए पत्थरों की चमकदार धारा इस गुफा से उफनकर बाहर निकल रही होगी। कनसील ने उत्तर दिया, "जी हां, कल्पना तो अवश्य कर सकता हूं किंतु आप यह तो बताएं कि इस विशाल भट्टी ने अपना काम क्यों बंद कर दिया और पिघले लावा के स्थान पर शांत जल कैसे आ गया।"

"कनसील, किसी विस्फोट के फलस्वरूप लावा के द्वारा वह रास्ता बन गया होगा। इसी से 'नाटिलस' इस के अंदर आई है। और इसीसे अतलांतिक महासागर का पानी इस पहाड़ के अंदर आ गया होगा। फिर इस आग और पानी में भयानक युद्ध हुआ होगा। यह तो स्पष्ट ही है कि विजय जलदेवता की हुई। तब से कई शताब्दियां बीत गई हैं। इस समय यह ज्वालामुखी एक शांतिपूर्ण खोह में परिवर्तित हो गया।

हमारी चढ़ाई जारी रही। कभी-कभी रास्ते में बड़े-बड़े गड्ढे पड़ते थे, जिन्हें हमें पार करना ही था। ऊपर लटकते हुए पत्थर के ढोंके बड़े भयानक थे। कभी-कभी तो हमें हाथ और घुटनों के बल चलना पड़ता था। कनसील की होशियारी तथा नेड की शक्ति की सहायता से यह सारी बाधाएं दूर हो जाती थीं।

लगभग १० फुट की ऊंचाई पर जमीन की किस्म बदल गई। यह जमीन पर्तदार काली वैसाल्ट की चट्टानों जैसी थी। कहीं-कहीं के दृश्य तो बड़े सुहावने लगते थे। कहीं-कहीं गंधक की तहें जमी हुई थीं। इस खोह के ऊपरी मुंह के ऊपर तेज चमकदार रोशनी चमक रही थी।

मेरी चढ़ाई लगभग २५० फुट ऊंचाई पर एक अगम्य व्यवधान के कारण रुक गई। यहां पर गुफा की बनावट गुंबज की भांति थी। और हम लोगों को बार-बार उसके घेरे का चक्कर काटकर ऊपर चढ़ना पड़ रहा था। यहां पर अनेक वनस्पतियां दिखलाई पड़ीं।

हम लोग अब एक झाड़ी के निकट पहुंच गए थे। इन पौधों ने अपनी मजबूत जड़ों से चट्टान को जकड़ रक्खा था। इसी बीच नेडलैंड ने चिल्ला कर कहा, "वह देखो शहद की मक्खियों का छत्ता।"

ऐसे स्थान पर मधुमक्खियों के होनेपर मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ। नेडलैंड ने दोहराकर कहा, "हां, मक्खियों का छत्ता, देखो कितनी मक्खियां भिनभिना रही हैं।"

मैंने देखा एक वृक्ष के तने में बड़ा सा खोल था, जिसके बाहरी भाग पर हजारों की संख्या में मधुमक्खियां एकत्र थीं।

नेडलैंड इस छत्ते का शहद लेना चाहता था। मैं भी उसकी जिद के सामने इंकार न कर सका। नेडलैंड ने कुछ सूखी पत्तियां चकमक की लौ से जलाईं। इन पत्तियों पर गंधक की तह चढ़ी हुई थी।

धुआं जब छत्ते की ओर जाने लगा, तब भिनभिनाहट

धीरे-धीरे कम पड़ गई तथा सारी मक्खियों ने छत्ता खाली कर दिया। इस छत्ते से कई सेर शहद निकाला जिसे नेडलैंड ने एक बर्तन में भर लिया।

रास्ता चक्करदार था। सारी झील स्पष्ट दिखाई देती थी। उसकी सतह बिल्कुल शांत थी, 'नाटिलस' भी बिल्कुल शांत खड़ी थी। चबूतरे पर तथा किनारे पर जहाज के खलासी अपना-अपना काम करते दिखाई पड़ते थे।

इस समय हम लोग पहली तह की सबसे ऊंची चट्टान का भ्रमण कर रहे थे। मैंने देखा जीवित प्राणियों की प्रतिनिधि केवल ये मक्खियां ही न थीं, वरन् अंधियारे में परिंदे भी इधर से उधर उड़कर चहचहा रहे थे। कुछ अपने घोंसलों से शिकार की तलाश में निकले थे। बड़े-छोटे सभी प्रकार के थे। मैं केवल अनुमान ही कर सकता था कि नेडलैंड इन शिकारों को देखकर अपने पास बंदूक न होने का कितना खेद करता होगा। उसने कई बार पत्थर फेंककर मारे। कई बार तो उसके प्रयत्न असफल रहे, परंतु अंत में उसने एक चिड़िया को चोट पहुंचा ही दी। वह जमीन पर आ गिरी। नेडलैंड ने उसे अपने झोले में रख लिया।

इसके बाद अधिक ऊपर चढ़ना संभव नहीं था और हमें नीचे किनारे पर उतरना ही पड़ा। हमारे ऊपर एक कुएं के मुंह की भांति ज्वालामुखी का मुख था। इस जगह से आसमान साफ-साफ दिखाई पड़ रहा था। पहाड़ की चोटी को छूते हुए मुझे बादल दिखाई पड़े।

एक अच्छी गुफा देखकर हम सब वहीं बालू पर लेट

गए। बालू में अभ्रक बहुत मात्रा में थी और खूब चमक रही थी।

यात्रा के बारे में हम लोग देर तक बातें करते रहे।

कप्तान नेमो शायद अपनी नाव के लिए यहां सोडियम लेने ही आया था। मुझे अब आशा हुई कि शायद यह यूरोप और अमेरिका के तटों की तरफ जाएं, जिससे नेडलैंड अपने भाग जाने के अपूर्ण प्रयत्न को सफल बना सके।

इस गुफा में हम लोग लगभग १ घंटा लेटे रहे तथा बातें करते-करते मैं तो सो गया।

एकाएक कनसील ने चिल्ला कर कहा, "वह देखो देखो!" सिर उठाकर मैंने पूछा, "क्या है?"

कनसील, "पानी ऊपर चढ़ा आ रहा है। मैं उठा। पानी तेजी से हम लोगों की ओर आ रहा था। हम लोग जल्दी ही वहां से उठकर भागे। थोड़ी देर में हम लोग ऊंचाई पर सुरक्षित स्थान पर आ गए।"

कनसील ने पूछा, "आखिर बात क्या है? क्या कोई नई चीज है।" मैंने उत्तर दिया, "नहीं, ऐसी कोई बात नहीं है। यह केवल समुद्र का ज्वार था, जो हम लोगों से ऊपर आ गया था। बाहर सागर की सतह ऊपर उठी होगी। और उसीके अनुसार झील का पानी भी ऊपर उठा था। हम लोग पानी से भीगकर ही बच गए। चलो, हम लोग 'नाटिलस' चलें तथा वहां अपने कपड़े बदलें।"

४५ मिनट की चक्करदार यात्रा के बाद हम लोग 'नाटिलस' पर आ पहुंचे। खलासी अब सोडियम इकट्ठा कर चुके थे तथा 'नाटिलस' अब यहां से चलने के लिए तैयार थी।

परंतु कप्तान नेमो ने चलने का आदेश न दिया। शायद वह रात की प्रतीक्षा कर रहा था, जिससे अंधेरे में चुपचाप अपने समुद्री रास्ते से निकल सके।

दूसरे दिन 'नाटिलस' इस गुफा को छोड़ समुद्र की सतह से कुछ नीचे तैरने लगी।

३५

'नाटिलस' की दिशा न बदली। वह दक्षिण की ओर ही दौड़ रही थी। यूरोपीय सागरों की ओर वापस जाने की हमारी सारी आशाएं समाप्त हो गईं।

उस दिन 'नाटिलस' ने अतलांतिक सागर का विशिष्ट भाग पार किया। गल्फ स्ट्रीम की विशाल गर्म पानी की धार से आप परिचित ही होंगे। यह फ्लोरिडा की खाड़ी से निकल कर स्पिटज बरगन की ओर जाती है। मेक्सिको की खाड़ी के कुछ ही आगे लगभग ४४ डिग्री उत्तरी अक्षांश के पास इसकी दो शाखाएं हो जाती हैं। पहली नार्वे और आयरलैंड के किनारे की तरफ जाती है। यही प्रधान धारा है। दूसरी दक्षिण की ओर झुक जाती है तथा अफ्रीका के किनारे चूमती हुई एंटिलस की ओर वापस आ जाती है।

यह दूसरी धारा अपने गर्म जल को वृत्ताकार धारा से अतलांतिक महासागर के जिस ठंडे भाग को घेरती है, वह सारगासो सागर के नाम से प्रसिद्ध है। उस गर्म धारा को



सारगासो सागर के चारों ओर एक चक्कर लगाने में पूरे तीन वर्ष लगते हैं।

यह सारगासो सागर लगभग पूरे जलमग्न एटलांटिस देश को ढके है। यहां तक कि कुछ लेखक यह भी स्वीकार करते हैं कि जो जड़ी-बूटी इस सागर से मिलती है, वह डूबे हुए देश की ही उपज है। अधिक संभावना इस बात की है कि यह जड़ी-बूटियां यूरोप और अमेरिका से बहकर गल्फ स्ट्रीम द्वारा आती हों। कोलंबस के जहाज जब यहां पहुंचे थे, तो इन्हीं वनस्पतियों से उसकी चाल में बाधा पड़ी थी, तथा इसी कारण खलासियों को यह बहुत ही भयानक लगता था।

'नाटिलस' का कप्तान अपने खलासियों को इन वनस्पतियों में उलझने न देना चाहता था। फलस्वरूप वह 'नाटिलस' को गहराई में चलाने लगा। हम लोगों के ऊपर एंडीज या राकी पर्वत के वृक्षों के तने आमेजन तथा मिसीसिपी के झाड़-झंखाड़ तैरते नजर आते थे। कहीं-कहीं जहाजों के मस्तूलों तथा पेंदी के वजनी टुकड़े पौधों के जाल में फंसे इस प्रकार डूबे हुए थे कि उनका सागर की तह पर जाना असंभव था। एक दिन वह समय अवश्य आएगा जब कि सारा कूड़ा-करकट पानी के प्रभाव से खनिज पदार्थ बन जाएगा और अंत में कोयले का रूप ले लेगा।

२४ घंटे इस विचित्र समुद्र में बिता कर हम खुले समुद्र में अपनी साधारण चाल से चल निकले।

२३ फरवरी से १२ मार्च अर्थात् १९ दिन तक, 'नाटिलस' १०० लीग की लगातार गति से हम लोगों को घुमाती रही। कप्तान नेमो निश्चय ही अपनी समुद्री यात्रा पूरी करना चाहता

था। मुझे कोई शक नहीं रह गया। हार्न अंतरीप घूम कर वह दो बारा प्रशांत महासागर पहुंचना चाहता था। नेडलैंड यह देख कर बहुत डरा। इस महान अथाह सागर में द्वीपों से दूर 'नाटिलस' छोड़ना संभव न था, और न कप्तान नेमो की इच्छा का विरोध करने का ही कोई साहस कर सकता था।

अब उसके आदेश शिरोधार्य करने के सिवाय और उपाय ही न था। मेरी समझ में आया कि मैं जो चीज चाहता था, वह शक्ति से नहीं, वरन अनुरोध से ही संभव थी। मैं यदि 'नाटिलस' के गुप्त रहस्यों को लेकर जाना चाहता हूं, तो कप्तान कदापि राजी न होंगे। कप्तान नेमो ने पहली भेंट में यह स्पष्ट कर दिया था कि 'नाटिलस' के समुद्र के अंदर रहने के रहस्य को छिपाने के लिए यह आवश्यक है कि हम लोग सदैव के लिए 'नाटिलस' में कैद रखे जाएं।

पिछले चार महीने हमने सब लोगों से व्यवहार बहुत नम्र रखा। क्या हमारे व्यवहार से प्रसन्न होकर कप्तान अपना निश्चय कुछ ढीला करेगा? यही सब मैं अपने मन में सोचता विचारता रहा तथा कनसील से भी इस पर राय मांगी। वैसे तो मैं जल्दी हताश न होता था, फिर भी मैं समझता था कि दिन प्रतिदिन मेरे अपने देश के साथियों तक पहुंचने का अवसर कम हो रहा था, क्योंकि कप्तान नेमो दक्षिण अतलांतिक सागर की ओर बढ़ता चला जा रहा था।

इन १९ दिनों में कोई विशेष बात न हुई। कप्तान भी बहुत कम दिखाई पड़े।

इस यात्रा में अधिकतर हम लोग सागर की सतह पर ही रहे। समुद्र छोड़ दिया गया। गुडहोप अंतरीप के निकट एक

बार कुछ जहाज दिखाई पड़े थे। एक दिन एक ह्वेल मछली का शिकार करने वाली नावों ने हमें एक बड़ी, विशेष प्रकार की ह्वेल समझ पीछा किया था, परंतु कप्तान नेमो उन्हें अधिक समय न गंवाने देना चाहता था। इसलिए सागर में डुबकी लगा कर उनको छुट्टी दे दी।

रास्ते में उड़नेवाली मछलियों के झुंड दिखलाई पड़े। यह आकाश में काफी ऊंचाई तक चक्कर लगाकर फिर सागर-जल में कूद पड़ते थे। १३ मार्च तक नाव उसी भांति चलती रही।

प्रशांत महासागर से अब तक हम लोग १३००० लीग आ चुके थे। इस समय हम लोग उस स्थान पर थे, जहां अमरीकी जहाज 'कांग्रेस' के कप्तान पार्कर ने अधिक से अधिक गहराई में प्रयोग किए थे; परंतु ७००० फैदम से अधिक गहराई तक काफी चेष्टा करने के बाद भी न पहुंच पाए थे। कप्तान नेमो सारे तथ्यों को सिद्ध करने के लिए, 'नाटिलस' को सागर की तलहटी तक ले जाना चाहते थे। मैं अपनी डायरी लिखने में व्यस्त था। सैलून की खिड़कियां खुल गईं। अथाह गहराई में जाने के लिए आवश्यक यंत्र कार्य करने लगे।

'नाटिलस' की बनावट में यद्यपि बड़ी कारीगरी से काम लिया गया था, परंतु एक सीमा से अधिक गहराई में जाने के लिए टंकियों को भरना ही काफी न था। कप्तान ने लंबी गहराई तक जाने के लिए एक अभूतपूर्व आविष्कार किया था। 'नाटिलस' में समुद्री सतह से ४५ डिग्री का कोण बनाते हुए कई पंखे लगे थे। उनके प्रयोग से 'नाटिलस' सागर में घुसने लगी। कप्तान सैलून में बैठे मानोमीटर देख रहे थे। यह यंत्र बहुत तेजी से चल रहा था। हम लोगों ने तुरंत ही

वह सतह पार की जहां तक साधारण मछलियां आदि जीवित रह सकती हैं। नदियों तथा समुद्री सतह पर तो सभी मछलियां रह सकती हैं, गहरे सागर में थोड़ी ही जीवित रहती हैं।

मैंने मानोमीटर पर दृष्टि डाली। हम लोग ३,००० फैदम गहराई में थे। हम लोग अभी एक ही घंटा चले थे। 'नाटिलस' अब भी नीचे की ओर घुसती चली जा रही थी। जल शांत तथा पारदर्शी था। एक घंटे बाद हम लोग ६५०० फैदम अर्थात् सवा तीन लीग गहराई में पहुंच गए, परंतु अब भी तलहटी के कोई निशान न दिखाई पड़े।

७००० फैदम की गहराई में मुझे पानी के अंदर काली-काली पहाड़ी चोटियां दिखाई पड़ने लगीं। यह कितनी ऊंची थीं, यह बतलाना कठिन है। समुद्र की गहराई का अभी कोई पता न था।

अधिक दबाव पड़ने के बावजूद 'नाटिलस' नीचे चलती ही गई। बोल्टों के पास जोड़ों की चद्दरें कांप रही थीं। लोहे के छड़ झुके जा रहे थे। 'नाटिलस' इस दबाव में अवश्य ही टूट-फूट जाती, यदि इसमें उपयोग की हुई लोहे की चद्दरें असाधारण न होतीं। मुझे कुछ जीव अब भी दिखाई पड़ रहे थे।

८००० फैदमगहराई में वायुमंडल से ऊपर उड़े हुए गुब्बारे की भांति 'नाटिलस' समुद्री जीवों के निवास योग्य क्षेत्र पार कर गई थी। मैंने चिल्ला कर कहा, "यह कैसा अच्छा दृश्य है। यह वह भाग है जहां मनुष्य अभी तक पहुंच ही नहीं पाया। कितनी अच्छी चट्टानें तथा गुफाएं हैं परंतु जीवन से हीन। इस दृश्य का मैं केवल स्मरण ही कर सकता हूं।"

कप्तान ने पूछा, "क्या आप स्मरण रखने से कुछ और अधिक चाहते हैं।"

"इससे आपका क्या तात्पर्य है।"

"इस भाग के फोटो लेना कठिन नहीं है।"

मुझे इस आश्चर्यजनक बात का उत्तर देने का समय न मिला। कप्तान के आदेश पर कैमरा लाया। खिड़कियों से पानी बिजली के प्रकाश से साफ-साफ नजर आ रहा था। सूर्य भी ऐसे साफ दृश्य को चमकाने में समर्थ नहीं हो सकता। 'नाटिलस' कप्तान के आदेश पर चर्खी तथा पंखों की सहायता से अचल कर दी गई। कैमरा सागर की तलहटी की ओर किया और चित्र लिए।

चित्र जब तैयार हुए तो मैं दंग रह गया। चारों ओर चमकदार ग्रेनाइट था। मैं इस विश्व की नींव के इस दृश्य का पूरी तरह वर्णन करने में असमर्थ रहा। कप्तान नेमो अपना सारा काम समाप्त करके मुझ से बोला, "प्रोफेसर, अब हम लोग फिर ऊपर को चलें क्योंकि 'नाटिलस' को इस दबाव में देर तक रखना संभव नहीं। मजबूती से पकड़ लो।" मैं यह न समझ पाया था कि मुझे यह चेतावनी क्यों दी गई।

कप्तान के इशारे पर चर्खियां अपना काम करने लगीं। पंखे ऊपर की ओर उठा दिए गए। 'नाटिलस' गुब्बारे की भांति पानी को तेजी से चीरती हुई ऊपर को उठने लगी। इस समय विशेष दृश्य न दिखाई पड़ रहा था। कुछ ही मिनट में 'नाटिलस' ४ लीग ऊपर उठ पानी की सतह पर आ गई।

३६

१३ और १४ मार्च की बीच की रात को 'नाटिलस' ने दक्षिण का रास्ता लिया। मैंने सोचा था कि एक बार हार्न अंतरीप को देख हम लोग पच्छिम की ओर मुड़ जाएंगे, और प्रशांत महासागर को पहुंच पृथ्वी की परिक्रमा करेंगे। परंतु ऐसा न हुआ, 'नाटिलस' ठीक दक्षिण की ओर दौड़ती रही। यह कहां जा रही थी। क्या ध्रुव को जा रही थी ? यह कितनी मूर्खता का काम था !

बहुत दिनों से नेडलैंड ने अपने भागने की योजना मुझसे न बताई थी। उसका उत्साह ठंडा न हुआ था। मेरी समझ में वह अपना क्रोध एकत्र कर रहा था। ज्यों ही वह कप्तान को देखता, उसकी आंखें मारे क्रोध के लाल हो जाती थीं। मुझे भय था, नेड उस क्रोध का प्रदर्शन कहीं कप्तान पर न कर दे। १४ मार्च को कनसील और वह, मुझे मेरे कमरे में तलाश करने आए। मैंने उनके आने का कारण पूछा।

नेड बोला, "आप से एक बात पूछना चाहता हूं कि इस 'नाटिलस' में कितने आदमी होंगे ?"

"यह मैं नहीं कह सकता, परंतु कम से कम दस अवश्य होंगे, और यही दस हम तीनों को दबा रखने के लिए काफी होंगे। इसीलिए मैं तुम से शांत रहने के लिए कहता हूं।"

कनसील ने कहा, "हमें भागने का ध्यान ही त्याग देना चाहिए। कप्तान नेमो सदैव तो दक्षिण की ओर नहीं चल सकता। उसे कहीं न कहीं रुकना ही पड़ेगा। यदि एक बार बर्फीली चट्टानों में रुका, तो उसे दूसरी बार सभ्य देशों में भी

रुकना आवश्यक होगा। उसी समय नेडलैंड की तरकीब काम में लाई जा सकेगी।"

नेडलैंड ने अपना सिर हिलाया तथा अपने माथे पर हाथ फेर कर कमरे से उठकर चला गया।

यह निश्चय है कि 'नाटिलस' का एकाकी जीवन नेडलैंड को न भाता होगा, क्योंकि वह स्वतंत्र तथा कामकाजी जीवन का अभ्यासी था। वह जिन चीजों में दिलचस्पी रखता था वह यहां दुर्लभ थीं। एकाएक एक ऐसा अवसर आगया जिससे नेडलैंड बहुत खुश हुआ।

जब हम लोग चबूतरे पर बैठे थे, नेडलैंड को एक ह्वेल मछली दिखाई पड़ी। 'नाटिलस' से ५ मील दूर ध्यान से देखने देखने पर एक काला पदार्थ नीचे से ऊपर आता दिखाई पड़ा। नेडलेंड ने चिल्लाकर कहा, "यदि मैं नाव पर इसका शिकार करता तो मुझे इस काम में कितना आनंद आता। यह बड़े किस्म की ह्वेल है। देखो, इसके सूराखों से किस कदर पानी तथा भाप निकलती है। दुख यही है कि मैं इस लोहे की कोठरी में बंद हूं।"

मैं बोला, "क्या तुमने अभी अपनी पुरानी मछली मारने की आदत नहीं छोड़ी ? तुमने इन सागरों में कभी भी शिकार न किया होगा।"

"कभी नहीं; मैंने आर्कटिक सागर तथा डेविस जलडमरू-मध्य में ही शिकार किया है।"

"तब इन दक्षिण की मछलियों से आप परिचित नहीं हैं ?"

"मैंने अभी १८६५ में ही ऐसी ह्वेल मछली का शिकार ग्रीनलैंड के पास किया था।"

नेडलैंड फिर चिल्लाया, "वह देखो वह इधर ही आ रही है। वह मेरी ओर ही आ रही है। वह समझती है कि मैं उसको हानि नहीं पहुंचा सकता।"

नेड ने फिर कहा, "क्या यह मछलियां उत्तरी सागर की मछलियों जैसी बड़ी हैं ?"

"करीब उन्हीं के बराबर।"

"मैंने १०० फुट लंबी ह्वेल मछलियां देखी हैं।"

"मैं आपकी इस बात को नहीं काट सकता।"

"लेकिन प्रोफेसर, एक बात जो शायद आप न जानते हों कि पहले-पहल यह और भी तेज चलती थीं।"

"क्योंकि तब इनकी पूंछें दूसरी मछलियों जैसी थीं तथा दाहिने से बाएं और बाएं से दाहिने पानी को फाड़ती थीं। परंतु प्रकृति ने उन्हें इतना तेज चलते देख उनकी पूंछों को झुका दिया है और वे अब ऊपर से नीचे को पानी फाड़ती हैं। इससे उनकी चाल कम पड़ती जा रही है।"

"और जब मैं यह कहूंगा कि उस समय यह मछलियां ३०० फुट लंबी और हजारों पौंड वजनी होती थीं, तब तो आप कतई विश्वास नहीं करेंगे।"

नेड ने उत्तर दिया, "इन्हें तो मैंने भी देखा है।"

"मैं आपकी बात पर विश्वास करने के लिए तैयार हूं, क्योंकि इतना तो मैं जानता हूं कि यह १०० हाथियों के बराबर होती हैं तथा वजनी होने पर भी तेजी से भागती हैं।"

कनसील ने पूछा, "क्या ये जहाजों को डुबा सकती हैं।"

मैंने उत्तर दिया, "जहाजों के बारे में तो मैं विश्वास नहीं करता, परंतु यह कहा जाता है कि १८२० में ठीक इन्हीं दक्षिणी

सागरों में एक ह्वेल एक बड़ी नाव पर आगई थी और वह नाव फौरन डूब गई थी।"

नेड ने कहा, "एक बार हम लोगों की नाव को ह्वेल ने पूंछ मारी थी, जिससे मैं ओर मेरे साथी २० फुट ऊपर उछल गए थे और वह ह्वेल इस ह्वेल से छोटी थी।" नेड ने आगे देख कर फिर चिल्ला कर कहा, "वह एक ह्वेल नहीं, १०-२० हैं। पूरी टोली है, मेरे हाथ-पैर बंधे हैं। मैं तो कुछ कर भी नहीं सकता।"

नेडलैंड कुछ और न कहकर कप्तान से शिकार करने की अनुमति लेने नीचे चला गया। थोड़ी ही देर बाद दोनों चबूतरे पर आगए।

कप्तान नेमो ने एक मील दूर सागर में क्रीड़ा करती हुई ह्वेल मछलियों की टोली को देखकर कहा, "यह तो आस्ट्राल ह्वेल हैं, और इनका शिकार भाग्यशाली शिकारी के लिए ही संभव है।"

"पर लालसागर में तो ऐसी भयंकर मछलियों का शिकार करने की अनुमति आपने दे दी थी।"

कप्तान बोला, "उस समय तो हमारे खलासियों को गोश्त की आवश्यकता थी। इसका तो केवल शिकार ही करना है। यह शिकार तो मनुष्य के लिए एक क्रीड़ा है। फिर व्यर्थ में मैं इन्हें न मरवाना चाहूंगा, इन निर्दोष जीवों को व्यर्थ में मारना बड़ा पाप है। इनके वैसे ही काफी दुश्मन हैं।"

कप्तान का यह भाषण नेडलैंड के लिए व्यर्थ था, क्योंकि वह तो खिलाड़ी था। नेडलैंड इस समय अत्यंत क्रोधित था। दांत पीसकर उसने मेरी ओर पीठ फेर ली।

कप्तान ने मुझसे कहा, "मैंने सच कहा है, इनके काफी दुश्मन हैं। आप आठ मील दूर कुछ काले-काले पदार्थ हिलते-डुलते देखते हैं ?"

मैंने उत्तर दिया, "हां।"

"वे ही कैचलाट नाम की मछलियां हैं। मैंने इन्हें कभी-कभी दो-दो तीन-तीन सौ के झुंड में देखा है। यह झुंड बहुत ही भयानक होते हैं।"

नेडलैंड जल्दी से हम लोगों की ओर मुड़ा। मैंने कहा, "कप्तान ह्वेल के लिए तो अब भी समय है।"

"क्या जरूरत; 'नाटिलस' ही इनको भगाने के लिए काफी है। इसमें लोहे का एक पंखा लगा है। वह नेडलैंड के भाले से अच्छा है।"

नेडलैंड चुपचाप खड़ा रहा। कैचलाट पर नाव के पंखे से आक्रमण हो, ऐसा कभी नहीं सुना गया। कप्तान ने कहा, "मैं आपको ऐसा शिकार दिखाऊंगा, जो आपने अभी तक न देखा हो।"

कैचलाट ७५ फुट से भी अधिक लंबे होती हैं तथा इनके सारे शरीर के एक तिहाई भाग में सिर ही सिर होता है। इनके दांत ह्वेल से अधिक तेज होते हैं। इनमें से पच्चीस तीन-तीन इंच लंबे तथा दो-दो पौंड वजनी होते हैं। फ्रोडेल के कथनानुसार यह देखने में बहुत अच्छे होते हैं। इसका बायां अंग बिल्कुल बेकार होता है। केवल दाहिनी आंख से ही यह देखती हैं।

इस बीच झुंड निकट आता दिखाई पड़ा। उन्होंने ह्वेल मछलियों को देख लिया था और उन पर आक्रमण करने ही

वाली थीं। यह स्पष्ट ही जान पड़ता था कि वे ही जीतेंगी भी, क्यों कि ह्वेल से वह अधिक देर तक जल के अंदर रह सकती हैं।

ह्वेल का पीछा करने का यही ठीक समय था। 'नाटिलस' ह्वेल के निकट आ सागर में समा गई। कप्तान पतवारिए के कमरे में चले गए। चर्खी की गति तेज हुई और साथ ही साथ 'नाटिलस' की चाल भी तेज हो गई।

ह्वेल और कैचलाट की मुठभेड़ शुरू हो गई। 'नाटिलस' इनको भगाना चाहती थी। पहले तो वे कुछ भी न डरीं परंतु बाद में चोट लगने से अपने को बचाने लगीं। कैसा भीषण युद्ध था। नेडलैंड स्वयं उत्तेजित होकर तालियां बजाने लगा। 'नाटिलस' इस समय भाले का ही काम कर रही थी। यह उस झुंड में घुस दोनों पक्षों को अलग-अलग कर देती थी। कैचलाट मछलियों की पूंछों की मार का 'नाटिलस' पर कोई प्रभाव न पड़ता था।

'नाटिलस' इस समय अपने पतवारिए के इशारे पर नाच रही थी। ह्वेलों के साथ गोता लगाती तथा उन्हीं के साथ फिर ऊपर आ जाती। कैचलाट मछलियों को सामने से तथा पीछे से ठोकर मारती तथा भगाने का प्रयत्न कर रही थी।

लगभग १ घंटा तक युद्ध होता रहा परंतु कैचलाट न भागे। उन्होंने कई बार 'नाटिलस' को चूर चूर करने की कोशिश की। अंत में कैचलाट का झुंड समाप्त हो गया। मुझे प्रतीत हुआ कि हम लोग सागर सतह पर जा रहे हैं। खिड़कियां खोल दी गईं तथा हम लोग चबूतरे पर चढ़ गए।

सागर कटे-फटे कैचलाटों से पटा पड़ा था। किसी भयानक विस्फोट से भी इतने शरीर इस प्रकार काट-पिट नहीं सकते थे।

कुछ भाग कर क्षितिज के पास जा छिपे थे। कई मील चारों ओर सागर लाल रंग से रंग गया था। 'नाटिलस' इस रक्त-सागर में तैर रही थी।

कप्तान नेमो भी हम लोगों के पास आ गए। कप्तान ने कहा, कहिए मिस्टर नेड क्या हाल है ? नेड ने उत्तर दिया, परंतु निश्चय ही यह बड़ी ही दर्दनाक घटना है। मैं तो शिकारी हूं, कोई कसाई नहीं। यह तो कसाइयों का काम है। कप्तान ने उत्तर दिया, यह तो शरारती जानवरों का कत्ल है, और नाटिलस कोई कसाई की छुरी नहीं।

नेड बोला, "मेरा भाला मुझे पसंद है।"

कप्तान ने उत्तर दिया, "अपना शस्त्र तो हर एक को पसंद होता है।" मुझे शक था कि नेडलैंड कोई हिंसा का काम न कर बैठे जिसका फल बुरा हो। परंतु उसका क्रोध उसको एक ह्वेल दिखाई पड़ने पर खत्म हो गया।

युद्ध में एक ह्वेल भी मारी गई थी। वह एक पंखे में आ गई थी। कप्तान ने 'नाटिलस' को ठीक इसी मछली के पास पहुंचा दिया। दो खलासी उस पर चढ़ लगभग दो-तीन टन दूध निकाल लाए। मुझे इस पर अत्यंत आश्चर्य हुआ।

कप्तान ने इस दूध का एक प्याला मुझे भी दिया। यह अब भी गर्म था। मुझे उसे पीने में पहले थोड़ी हिचक हुई, जिस पर कप्तान ने मुझे बताया कि इसमें तथा गाय के दूध में कोई अंतर नहीं है। मैंने उसे पिया तथा मुझे भी यही मालूम पड़ा। इसमें से कुछ सुरक्षित रख दिया गया। इसका मक्खन तथा दही खाने के साथ इस्तेमाल करने के लिए बनाया गया।

मैं समझता हूं इस दिन नेडलैंड की भावना कप्तान के

प्रति और अधिक दूषित हो गई। मैंने भी उसके एक एक कार्य को देखते रहने का निश्चय किया।

३७

'नाटिलस' दक्षिण की ओर चलती गई। १४ मार्च को सागर की सतह पर बर्फ तैरती दिखाई दी। 'नाटिलस' भी सतह पर चल रही थी। नेड आर्कटिक (उत्तरीय ध्रुव) सागर में शिकार कर चुका था। उसने बर्फ की चट्टानों के दृश्य देखे थे, परंतु कनसील और मेरे लिए ये नए थे।

दक्षिण की ओर हम लोग जितना ही आगे बढ़ते गए, उतने ही ये बर्फ के टुकड़े अधिक संख्या में तैरते दिखाई पड़ने लगे। इन पर ध्रुवीय-पक्षी हजारों की संख्या में दिखाई देते थे। 'नाटिलस' को ह्वेल समझ इसके ऊपर जाते थे और चोंच से इसकी प्लेटों पर आघात करते थे।

इस यात्रा में कप्तान नेमो प्रायः चबूतरे पर रहा। इन टुकड़ों में कोई कोई तो सैंकड़ों मील लंबे तथा दो-दो तीन-तीन सौ फुट ऊंचे थे। कभी कभी तो क्षितिज बिल्कुल इनसे ढका मालूम पड़ता था। अक्षांश पर रास्ता बिल्कुल बंद हो गया। कप्तान नेमो ने बड़ी होशियारी से एक तंग रास्ता ढूंढ निकाला तथा यह जानते हुए कि वह पीछे से बंद है, हिम्मत से प्रविष्ट हुए।

तापक्रम बहुत नीचा था। थर्मामीटर ने शून्य से ३ डिग्री कम तापक्रम बताया। 'नाटिलस' के लोग ध्रुवीय रीछों की खालों

के वस्त्र पहने हुए थे तथा नाव का अंदर का भाग विद्युत-यंत्रों द्वारा गर्म किया हुआ था। इस कारण हम लोगों को जाड़ा न मालूम होता था। यदि 'नाटिलस' कुछ ही फुट सागर सतह से नीचे चली आती, तो उसे तापक्रम आवश्यक मात्रा में मिलता। दो महीने पहले यदि हम लोग यहां आए होते, तो यहां सूर्य का प्रकाश मिलता, परंतु अभी कुछ ही घंटे हुए कि रात हो गई थी। धीरे-धीरे अंधकार बढ़ रहा था। आगे आने वाले ६ महीने तक बराबर रात ही रहेगी।

१५ मार्च को हम लोगों ने न्यूशेटलैंड और न्यू आर्कने द्वीप पार किए। कप्तान ने मुझे बताया कि यहां पहले सील जाति के बहुत से जीव रहा करते थे, परंतु अंग्रेज और अमरीकी शिकारियों ने इन्हें मार कर समाप्त कर दिया है और अब यह स्थान प्रायः जीव-शून्य हो गया है।

१६ मार्च को लगभग ८ बजे प्रातः 'नाटिलस' ने दक्षिण ध्रुवीय वृत्त पार किया। हमारे चारों ओर बर्फ ही बर्फ दिखाई पड़ रही थी। क्षितिज भी बर्फ से ही ढका था, परंतु कप्तान अब भी दक्षिण की ओर ही बढ़ता चला जा रहा था।

वैसे तो यह यात्रा मुझे दुखदाई नहीं लगी। इन देशों की सुंदरता पर मुझे अत्यंत आश्चर्य है। बर्फ अब और भी अधिक बढ़ गई थी। 'नाटिलस' जब सागर के अंदर ही थी तभी सागर की शांति भंग हो गई, बर्फ की खड़खड़ाहट बहुत जोरों से सुनाई पड़ने लगी। भयानक तूफान आगया था। 'नाटिलस' दूसरे जहाजों की भांति तूफान के कारण एक जगह खड़ी हो गई।

१६ मार्च को बर्फ के मैदान ने सारा रास्ता बंद कर

दिया, पर कप्तान इससे भी न रुका, उसने जोर से टक्कर मार बर्फ में प्रवेश किया। 'नाटिलस' ने बर्फ में भाले की भांति प्रवेश किया। भयानक शब्द के साथ बर्फ तोड़ती हुई वह आगे बढ़ी। बर्फ के टुकड़े टूट कर आकाश में ऊपर उड़े और हमारे चारों ओर ओले-से बरसने लगे। 'नाटिलस' के लिए एक छोटी सी नहर बन गई। बड़ी कठिनाइयों से नाव आगे बढ़ती गई।

१८ मार्च को 'नाटिलस' काफी परिश्रम के बाद भी आगे न बढ़ सकी। आगे एक अचल बर्फीला पहाड़ खड़ा था। पानी का कहीं पता न था, चारों ओर बर्फ का ही राज्य था। कहीं ऊंचे, कहीं नीचे तथा कहीं कहीं पर समतल, बर्फ के ही मैदान थे।

'नाटिलस' रुकने के लिए बाध्य थी। नेडलैंड ने एक दिन मुझसे कहा, "यदि कप्तान और आगे जाएंगे तो!"

"अच्छा है नेड, इसी में कप्तान की बुद्धिमता है।"

नेड बोला, "आप का कप्तान वैसे तो शक्तिशाली है ही, परंतु प्रकृति ने तो यह हद बना रखी है, इसे तो यहां रुकना ही पड़ेगा, वह चाहे या न चाहे।"

"यह तो ठीक है, फिर भी मैं यह जानना चाहता हूं कि इस बर्फीली दीवार के पीछे क्या है?"

कनसील ने कहा, "साहब, आप ठीक कहते हैं। दीवारें वैज्ञानिकों को क्रुद्ध करने के लिए ही बनी हैं।"

नेड बोला, "यह तो सभी को मालूम है कि दीवार के पीछे क्या है।"

मैंने पूछा, "क्या?"

"बर्फ ही बर्फ, इसके अतिरिक्त कुछ भी नहीं।"

मैंने कहा, "नेडलैंड, क्या आप यह निश्चित रूप से जानते हैं कि इसके पीछे क्या है। मुझे तो यह पता नहीं, इसी कारण मैं आगे जाकर देखना चाहता हूं।"

नेडलैंड ने उत्तर दिया, "प्रोफेसर, आप तथा कप्तान नेमो आगे जाने जा ख्याल छोड़ दीजिए, क्योंकि आप बर्फीली दीवार तक आ चुके हैं। यही काफी है। अब कप्तान मंजूर करे या नहीं, हमें तो लौट चलना चाहिए।"

मैं भी समझ गया कि नेडलैंड की बात सच है, परंतु लौटकर जाया ही कैसे जा सकता था, जब तक 'नाटिलस' चलाई न जाय और चलने का रास्ता न मिले।

काफी परिश्रम के बावजूद भी 'नाटिलस' बर्फ को तोड़ न सकी और अचल खड़ी रही। परंतु आगे न बढ़ने पर, पीछे की ओर ही कोशिश करने पर कुछ हल निकल ही सकता था; परंतु पीछे जाना भी असंभव था—क्योंकि पीछे से भी बर्फ इसे घेरे हुए थी। और यदि काफी समय तक यहां 'नाटिलस' खड़ी रही तो इसके ऊपर भी बर्फ जम जाएगी।

कप्तान ने कुछ मिनट तक परिस्थिति का अध्ययन करके मुझसे कहा, "प्रोफेसर, इसे आप क्या समझते हैं ?"

"कप्तान, मैं समझता हूं कि 'नाटिलस' अब फंस गई है।"

"मुझे विश्वास है कि न तो आगे जा सकते हैं और न पीछे ही वापस लौट सकते हैं। इसी को हम लोग फंस जाना कहते हैं।"

'प्रोफेसर, क्या अब 'नाटिलस' स्वतंत्र न हो सकेगी। आप का ऐसा विचार है ?"

"आसानी से नहीं, क्योंकि जाड़ा अधिक बढ़ रहा है।

बर्फ पिघलने की कोई आशा नहीं।"

"वाह प्रोफेसर, आप तो सदैव एक-सी ही बात करते हैं। आपको तो बंधन और परेशानियां ही दिखाई पड़ती हैं; परंतु मैं आपको बताए देता हूं कि 'नाटिलस' न केवल स्वतंत्र ही हो जाएगी, बल्कि आगे भी बढ़ेगी।"

मैंने पूछा "और आगे दक्षिण" ?

"हां, यह दक्षिणी ध्रुव तक जाएगी, जहां विश्व की सारी देशांतर रेखाएं मिलती हैं। आप तो जानते ही हैं कि मैं 'नाटिलस से जो चाहूं, काम ले सकता हूं।"

"हां मैं जानता हूं कि हिम्मत वाला मनुष्य परेशानियों की ओर हिम्मत से आगे बढ़ता है। परंतु क्या यह जोखिम लेना निरी मूर्खता नहीं है ? क्या आपने यह दक्षिणी ध्रुव पहले से देख रखा है ?"

कप्तान ने उत्तर दिया, "नहीं प्रोफेसर, हम लोग अब ही पहले-पहल उसको देखेंगे।"

मैंने ताने से कहा, "मैं आप पर विश्वास करता हूं। हम लोग यह दीवार तोड़ डालेंगे। और यदि न टूटे, तो इसके ऊपर होकर हम लोग निकल जाएंगे।"

कप्तान नेमो ने जोर से कहा, "इसके ऊपर से नहीं, इसके नीचे से।"

'नाटिलस' की विषेशताओं तथा कप्तान की कार्य-कुशलता को ध्यान में रख, अंत में मेरी समझ में सारी बातें आ गईं। मैंने सोचा उसके यही अदभुत गुण इस क्षेत्र में काम देंगे।

कप्तान ने हंस कर कहा, "अब मैं समझ गया, आप सब चीजें समझने लगे। आगे चलकर मानना पड़ेगा कि जो एक

साधारण जहाज के लिए असंभव है, 'नाटिलस' के लिए वह आसान है। यदि आगे भूमि आजाए तो यह वहां रुक जाएगी, परंतु यदि ऐसा नहीं होता, वहां जल ही रहता है, तो 'नाटिलस' वहां अवश्य जा सकती है, क्योंकि जल पर 'नाटिलस' का साम्राज्य है।"

मैंने कहा, "यह ठीक है। वैसे सागर की सतह बर्फ से ढकी है, परंतु गहराई में बर्फ नहीं होगी, क्योंकि वहां के तापक्रम तथा सतह के तापक्रम में अंतर होता है और यदि मैं भूलता नहीं, तो इस दीवार के पांच भाग डूबे हैं तथा एक भाग ही ऊपर है।"

कप्तान बोला, "हां, करीब २ ऐसा ही है, क्योंकि जितने फुट बर्फीले पहाड़ सागर के ऊपर होते हैं, उसके तीन गुणा सागर के नीचे। इस प्रकार यदि यह बर्फ के पहाड़ ३०० फुट ऊपर ऊंचे हैं, तो नीचे ९०० फुट 'नाटिलस' के लिए है ही क्या। 'नाटिलस' सागर में समाकर आवश्यक तापक्रम में चलने लगेगी जिससे इसे इस ठंड से मुक्ति मिल जाएगी।"

कप्तान ने फिर कहा, "दिक्कत केवल एक बात की है कि 'नाटिलस' को सागर के अंदर कई दिन तक रहना पड़ेगा, जिससे इसे हवा ताजा करने में दिक्कत पड़ेगी।"

"मैंने उत्तर दिया, पर 'नाटिलस' के अंदर इतनी बड़ी-बड़ी टंकियां जो हैं। उनमें हम हवा भर लेंगे, जो हम लोगों की जरूरत भर की आक्सीजन देती रहेंगी।

कप्तान ने मुस्करा कर कहा, "वाह प्रोफेसर, आपने खूब सोचा परंतु मैं नहीं चाहता कि आप मुझे दोषी ठहराएं, इसी कारण सारी कठिनाईयां पहले ही कह देना चाहता हूं।"

"क्या और भी कठिनाई होगी ?"

"केवल एक बात यह संभव है, और वह भी दक्षिणी ध्रुव में। कहीं ऐसा न हो तो सारे का सारा समुद्र जमा हुआ ही हो। ऐसी परिस्थिति में समुद्र की सतह पर जाना कठिन हो जाएगा।"

"परन्तु आप यह क्या भूल गए कि 'नाटिलस' के शक्तिशाली अग्रभाग तेज पंखों से सुसज्जित हैं। हमारे पंखे ऊपर उठने के लिए बर्फ काट सकते हैं।"

"आज आप बहुत अच्छी बातें कर रहे हैं।"

मैंने कहा, "कप्तान, इसके अतिरिक्त हम लोग इन ध्रुवों पर खुला हुआ सागर क्यों न तलाश करें, तथा जबतक हमारी आशा इसके विपरीत न सिद्ध हो जाय, मैं तो यही समझूंगा कि ध्रुवबिंदु पर या तो कोई देश है या बर्फ से रहित सागर।"

कप्तान ने कहा, "मैं भी यही समझता हूं। अब मैं इतनी आपत्तियां कर चुकने के बाद चाहूंगा कि आप इनके स्पष्टीकरण के लिए अपनी दलीलें पेश करें।"

कप्तान नेमो सच कहते थे। मैं तो कप्तान को ध्रुव की ओर जाने के लिए बाध्य कर रहा था—कप्तान नेमो मुझसे इस विषय में ज्यादा अवश्य जानता होगा—परंतु वह मुझसे हंसी कर रहा था।

इसी बीच कप्तान के इशारे पर एक अधिकारी आया। उन दोनों ने अपनी अबोध भाषा में बातचीत की। इस अधिकारी को कप्तान की योजना पर कुछ भी आश्चर्य न हुआ, शायद वह इसे पहले से जानता था।

इस योजना को कार्यान्वित करने के लिए तैयारियां होने

लगीं। 'नाटिलस' के शक्तिशाली पंप ढकी टंकियों में हवा दबा-दबा कर भरने लगे। लगभग ४ बजे कप्तान ने मुझे सूचित किया कि चबूतरे की खिड़कियां बंद होने जा रही हैं। मैंने उस बर्फीली दीवार पर अंतिम दृष्टि डाली। आकाश साफ था, वायुमंडल भी ठीक था। तापक्रम शून्य से १२° कम था। हवा चल रही थी, परंतु ठंडक इतनी मालूम न पड़ रही थी।

लगभग दस आदमी 'नाटिलस' के चारों तरफ अपनी २ तबलियां लेकर उतर गए थे तथा बाहर की बर्फ तोड़ने लगे। थोड़ी देर में 'नाटिलस' बर्फ से मुक्ति पा गई। यह सब काम जल्दी हुआ था, क्योंकि आशंका थी कि कहीं नई बर्फ फिर से न घेर ले। हम सब लोग अंदर चले गए। पानी की टंकियां भी पानी से भरदी गईं तथा 'नाटिलस' समुद्र में समा गई।

मैं तथा कनसील कमरे में अपनी २ जगह पर जा बैठे। खिड़कियों से दक्षिणी-सागर की गहराई देखी। थर्मामीटर का पारा चढ़ा। मानोमीटर की सुई ने भी अपना काम शुरू कर दिया।

९०० फुट की गहराई में हम लोग बर्फीली दीवार के नीचे पहुंच गए, परंतु 'नाटिलस' इससे भी नीचे चली गई, वह ४०० फैदम की गहराई में पहुंच गई। कनसील ने कहा, अब हम इसे अवश्य पार कर डालेंगे। मैंने उत्तर दिया, मैं भी यही समझता हूं।

'नाटिलस' नीचे-नीचे सीधे दक्षिणी ध्रुव की ओर जा रही थी तथा ध्रुव तक पहुंचने में केवल ५०० लीग से अधिक पार करना ही शेष रह गया था। 'नाटिलस' २६ मील प्रति घंटा की चाल से जा रही थी। यदि यही चाल ४० घंटे तक

और रहे तो हम जल्दी ही ध्रुव प्रदेश पहुंच जाएंगे।

काफी देर रात तक तो हम लोग सुंदर दृश्य देखते रहे। समुद्र 'नाटिलस' की रोशनी से चमक रहा था। मछलियां इस सागर में रुकती न थीं। केवल इसमें से होकर दक्षिणी ध्रुव की ओर जाने के लिए निकल भर जाती थीं।

लगभग दो बजे रात मैं और कनसील आराम करने चले गए। कप्तान शायद पतवारिए के कमरे में रहा होगा।

दूसरे दिन १९ मार्च को ५ बजे प्रातः मैं फिर सैलून में अपनी जगह पर जा बैठा। 'नाटिलस' इस समय धीरे-धीरे पानी की टंकियों को खाली कर समुद्र की सतह की ओर जा रही थी। इसकी चाल उस समय धीमी थी।

मेरा दिल जोरों से धड़क रहा था, क्योंकि हम लोग ऊपर उठ ध्रुवीय वायुमंडल में पहुंचने वाले थे। पर नहीं, ऐसा नहीं हुआ, एक टक्कर से मालूम हुआ कि 'नाटिलस' अब भी बर्फीली दीवार के नीचे है। इस टक्कर कि आवाज से मालूम हुआ अब भी ऊपर लगभग १०० फुट बर्फ है। यह दीवार किनारे की अपेक्षा बीच में अधिक ऊंची थी।

'नाटिलस' ने इस दिन कई बार आ ऊपर टक्कर मार कर बर्फ की ऊंचाई का अनुमान किया, परंतु हर बार दीवार से ही टक्कर लगी।

शाम को ८ बजे का समय था। चार घंटे पहले हवा बदल जानी चाहिए थी, परंतु अभी वह अवसर न आ पाया था। मुझे ज्यादा परेशानी हवा के कारण न थी और न कप्तान ने अभी अपनी अतिरिक्त टंकियां ही खोली थीं।

मुझे ठीक से नींद न आई। आशा और भय, एक के

बाद एक, मेरे हृदय को घेरे थे। मैं कई बार उठा। लगभग ३ बजे प्रातः बर्फीली दीवार का अंतिम भाग दिखाई दिया। अब यह २५ फैदम अर्थात् १५० फुट मोटी रह गई थी। दीवार धीरे-धीरे बर्फ के मैदान में परिवर्तित होने लगी और पर्वत मैदान के रूप में परिणत हो रहा था।

मैं बराबर मानोमीटर की ओर ही देखता रहा। हम लोग अब भी ऊपर बिजली से चमकते सागर-सतह की ओर चढ़ते चले जा रहे थे। दीवार का अब ढाल आ गया था। वह पतली होती जा रही थी।

अंत में ६ बजे प्रातः १९ मार्च को सैलून की खिड़कियां खुलीं। कप्तान नेमो प्रविष्ट हुआ। उसने कहा, "लो, खुला सागर आ गया।"

३८

मैं दौड़कर चबूतरे पर चढ़ गया। हां, वास्तव में खुला सागर था। कहीं कहीं बर्फ और बर्फ के पहाड़ों के छोटे-छोटे टुकड़े तैरते दिखाई पड़ रहे थे। इसके अतिरिक्त सागर चारों ओर अपनी छटा फैलाए था। हवा में चिड़ियों का तथा पानी में मछलियों का राज्य था। यह सारे जीव-जंतु गहरे नीले या हलके हरे रंग के थे। वायु में शून्य से तीन डिग्री अधिक तापक्रम था।

मैंने कप्तान से पूछा, "क्या हम लोग ध्रुव प्रदेश में हैं?"

कप्तान ने उत्तर दिया, "मैं स्वयं नहीं जानता, दोपहर को यंत्रों से इसका पता लगाऊंगा।" मैंने भूरे आकाश की ओर देख कर कहा, क्या इस कोण में सूर्य दिखाई पड़ेगा। कप्तान ने उत्तर दिया, चाहे जितना कम दिखाई पड़े, पर मेरे मतलब के लिए पर्याप्त होगा।

लगभग 'नाटिलस' से १० मील दूर एक अकेला ६०० फुट ऊंचा द्वीप दिखाई पड़ा। वैसे तो सब कुछ साफ दीखता था। परंतु समुद्र के अंदर चट्टानें होने की आशंका थी।

एक घंटे बाद हम एक छोटे द्वीप के पास पहुंचे तथा दो घंटे में इस द्वीप का चक्कर लगाया। यह द्वीप ४ से ५ मील के क्षेत्र में फैला था तथा एक जल खंड द्वारा एक प्रदेश से अलग होता था। इस विस्तृत प्रदेश के बारे में मुझे कुछ भी पता न था।

'नाटिलस' किनारे से लगभग तीन केबुल दूर खड़ी हो गई। इस किनारे पर कुछ चट्टानों का ढेर लगा था। 'नाटिलस' की नाव लगा दी गई। कप्तान और उसके दो साथी हाथों में कुछ यंत्र लेकर तथा कनसील और मेरे साथ नाव पर बैठ गए। नाव चलने लगी। इस समय सुबह के दस बजे थे। कुछ ही बांस लगाने के बाद नाव बालू से टकराकर रुक गई। कनसील कूदने ही वाला था कि मैंने उसे रोक दिया। नेडलैंड मुझे न दिखाई पड़ा। शायद वह अपनी गलती को मंजूर न कर दक्षिणी ध्रुव पर न जाना चाहता था।

मैंने पूछा, "क्या कप्तान, इस जमीन पर सबसे पहले पैर रखने का श्रेय आपको ही है?"

कप्तान ने उत्तर दिया, "हां प्रोफेसर, और मुझे यह कहने में

संकोच भी नहीं है, क्योंकि इस जमीन पर किसी आदमी के पैरों के निशान नहीं बने हैं।"

यह कहकर कप्तान धीरे से बालू पर कूद गया। उत्सुकता से उसका कलेजा धक-धक कर रहा था। वह एक छोटी अंतरीप पर चढ़ गया तथा सीने पर दोनों हाथ बांध शांति पूर्वक खड़ा हो गया, मानो इस दक्षिणी भाग का कब्जा ले रहा हो। इसी दशा में खड़े रहने के पांच मिनट बाद हम लोगों की ओर घूमा और मुझे पुकार कर कहा, "प्रोफेसर, आप कब तैयार होंगे।"

मैं तथा कनसील भी नाव से उतर कप्तान के पास चले। कुछ दूर तक जमीन लाल रंग की थी जैसे वह कुटी हुई ईंटों की बनी हो। इसकी ज्वालामुखी से उत्पत्ति स्पष्ट झलक रही थी। कहीं-कहीं पर हल्के-हल्के धुएं के चक्कर अंदर की अग्नि की शक्ति का परिचय दे रहे थे। मैंने एक पहाड़ी पर चढ़कर देखा, लेकिन कई मील चारों ओर कोई ज्वालामुखी दिखाई न पड़ा।

इस एकांत देश में वनस्पति जितनी ही कम थी, उतना ही हवाई जीवन अधिक था। अनेक तरह के हजारों पक्षी चहचहा आकाश में उड़ रहे थे तथा अन्य चट्टानों पर बैठे हम लोगों को घूर-घूर कर देख रहे थे। इस देश में छोटी-छोटी या तेज बोलने वाली चिड़िया अधिक संख्या में थीं। इसमें सफेद तिकोनी चोंच वाले कबूतर तथा चार साढ़े चार गज चौड़े पंख वाले समुद्री गीध थे। बड़े और छोटे किस्म की बतखें भी थीं।

लगभग आधा मील दूर जमीन घोंसलों से भरी हुई थी।

वहीं से ये चिड़िया उड़-उड़ कर आती थीं। कप्तान नेमो ने सैकड़ों चिड़ियां मारीं, क्योंकि उनका काला गोश्त उसे बहुत पसंद था। उनका शरीर गिलहरी के बराबर था। ऊपर सलेटी रंग तथा पेट सफेद था और गले में पीली धारियां पड़ी थीं। वे पत्थरों से भी मारी जा सकती थीं। वे उड़ कम पाती थीं।

कोहरा अब भी छाया हुआ था और ११ बजे दोपहर तक भी सूर्य न निकला था। इससे मुझे बड़ी चिंता थी, क्य कि उसके बिना कोई भी परीक्षण संभव न था। मैं कैसे तय कर सकता था कि हम लोग ध्रुव प्रदेश में आ गए हैं।

जब कप्तान मुझे मिले, वह एक चट्टान के सहारे झुके आकाश की ओर देख रहे थे। वे भी परेशान मालूम पड़ रहे थे। यह महान शक्तिशाली मनुष्य सागर को तो अपना साम्राज्य बनाए था, पर सूर्य पर उसका कोई अंकुश न था।

१२ बज गए, परंतु सूर्य की एक किरण भी न दिखाई पड़ी। यह भी न पता चल रहा था कि सूर्य किस जगह छिपा है। धीरे-धीरे कोहरा बर्फ में परिवर्तित हो गया। कप्तान ने कहा, हमें कल तक इंतजार करना चाहिए।

यह कह कर कप्तान और सब लोग 'नाटिलस' में घुस आए। हम लोगों की अनुपस्थिति में जाल बिछाकर मछलियां पकड़ी गईं थीं। दक्षिणी ध्रुवीय सागर तूफान या अन्य समुद्री जीवों के भय से भागी मछलियों को शरण देने के लिए प्रसिद्ध है।

दूसरे दिन तक बर्फ का तूफान चलता रहा। चबूतरे पर जाना असंभव-सा हो गया। अपने सैलून से मैं चिड़ियों का चीत्कार सुन रहा था। क्षितिज में सूर्य की लालिमा दिखाई पड़ी। 'नाटिलस' १० मील और दक्षिण की ओर चली गई।

२० मार्च को वर्फ का गिरना बंद हो गया। ठंडक कुछ बढ़ गई। तापक्रम शून्य से २° नीचे उतर गया। कोहरा कुछ हटा, मुझे आशा हुई कि शायद आज मैं अपनी इच्छानुसार का परीक्षण कर सकूंगा।

कप्तान नेमो अभी तक न दिखाई पड़ा। मैं तथा कनसील नाव पर चढ़ कर फिर स्थल को चले गए। यह स्थल भी ज्वालामुखी ही था। लावा तथा अन्य लक्षण तो दिखाई पड़ रहे थे, परंतु मुंह का तो कहीं पता ही न था। उस जगह की भांति यहां भी पक्षियों का राज्य था। हमारे पहुंचने पर भी वे न उड़े, क्योंकि उन्होंने मनुष्य का दर्शन अब तक न किया था। कनसील ने कहा, "अच्छा है नेडलैंड हमारे साथ नहीं है।"

"क्यों, ऐसा क्यों।"

"क्योंकि उसने इन सब को मार डाला होता।"

सुबह का आठ बज गया। सूर्य दीखने में अब चार ही घंटे रह गए थे। हम लोग एक चौड़ी खाड़ी की ओर बढ़े।

दो मील आगे चलकर हम लोग अंतरीप के निकट रुक गए। यह इस खाड़ी की दक्षिणी हवाओं से रक्षा कर रहा था। इसके पीछे मुझे दो सील मछलियों की आवाज सुनाई पड़ी।

मैं बोला, "या तो वे लड़ रही हैं या खेल रही हैं।"

हम लोग काली चट्टानों को पार कर गए। इस तरफ बर्फ के कारण पत्थर चिकने हो गए थे। मैं फिसल-फिसल कर गिर पड़ता था। कई बार चोट आगई। कनसील मुझे उठा लेता था।

कनसील बोला, "आप थोड़ा चलें, आपके पैर की झनझनाहट दूर हो जाएगी।"

मैं जब चोटी पर पहुंचा, तो मुझे उधर चौड़ा मैदान दिखाई

दिया। यह मैदान सील और दूसरी मछलियों से भरा हुआ था। वे सब उछल-कूद रही थीं।

इस समय ११ बजे कप्तान नेमो के परीक्षण का समय आ रहा था, परंतु सूर्य निकलने की अब भी आशा न थी। क्षितिज पर घने बादल थे।

पहाड़ी चोटी की ओर जाते हुए मैं तंग रास्ते पर चल दिया। साढ़े ग्यारह बजे तक हम लोग स्थल के उस भाग पर पहुंच गए, जहां से हम इस यात्रा के लिए रवाना हुए थे। कप्तान भी दूसरी नाव से वहां आ गया था। मुझे कप्तान एक टीले पर अपने यंत्र लिए खड़ा दिखाई पड़ा। वह टकटकी लगाए उत्तर की ओर देख रहा था।

मैं भी उसके पास जा चुपचाप खड़ा हो गया। १२ बजे, पर कल की भांति आज भी सूर्य न निकला। बड़ी परेशानी की परिस्थिति थी। यदि कल तक परीक्षण न किया जा सका, तो फिर पता न चल सकेगा कि हम लोग ध्रुव पर आ गए या नहीं।

आज २० मार्च है। कल २१ मार्च होगी, कल ही संक्रांति होगी। कल ही सूर्य ६ माह के लिए क्षितिज में छिप जाएगा और ६ मास की ध्रुव-रात्रि प्रारंभ हो जाएगी। सितंबर से २१ दिसंबर तक यह उत्तरी गोलार्ध में रहता है। मैंने अपना डर कप्तान को बताया।

उसने कहा, "प्रोफेसर, आप ठीक कहते हैं। यदि कल तक मैं यह परीक्षण न कर सका तो ६ महीने तक न कर सकूंगा। संयोग से ही २१ मार्च को इस भाग में आ पहुंचा हूं। और यदि कल सूर्य निकला, तो मैं दोपहर को आसानी से परीक्षण

कर सकूंगा ।"

"क्यों कप्तान ?"

"जिस समय सूर्य तिरछा होता है, उस समय उसकी ऊंचाई नापना कठिन होता है, क्योंकि यंत्रों से गलती हो सकती है ।"

"फिर आप कैसे नापेंगे ?"

कप्तान ने उत्तर दिया, "मैं अपना क्रोनोमीटर प्रयोग में लाऊंगा, और २१ मार्च की दोपहर को यदि उत्तरी क्षितिज सूर्य के गोले को ठीक-ठीक काटेगा, तो सिद्ध हो जाएगा कि हम लोग दक्षिणी ध्रुव में हैं ।"

मैंने कहा, "यह ठीक है; परंतु यह बात भी गणित के अनुसार बिल्कुल ठीक नहीं होगी, क्योंकि संक्रांति ठीक १२ बजे से नहीं होती ।"

"ठीक है, परंतु इसमें अधिक गलती की संभावना नहीं है और यही हम चाहते भी हैं ।"

नेडलैंड नाव में लौट आया। मैं तथा कनसील ५ बजे तक इस दृश्य का आनंद उठाते रहे । फिर मैं खाना खाकर सोने चला गया ।

दूसरे दिन फिर मैं सुबह उठकर चबूतरे पर गया । कप्तान वहां पहले से ही बैठे थे ।

कप्तान ने कहा, "आज मौसम कुछ अच्छा है । शायद आज मैं परीक्षण कर सकूं, । नाश्ता करके हम लोग वहीं स्थल पर चल कर अपने परीक्षण करने के स्थान को चुन लेंगे ।"

यह निश्चय करके मैं नेडलैंड के पास गया तथा उसे अपने साथ चलने के लिए राजी करने लगा, परंतु नेडलैंड जिद्दी था, उसने इंकार कर दिया । मैंने भी बाध्य न किया ।

हम लोग नाश्ता कर नाव पर सवार हो गए। 'नाटिलस' आज रात ४० मील और दक्षिण आगई थी। यह उस १६०० फुट ऊंची चोटी से काफी दूर थी। हम लोगों के अतिरिक्त नाव में कप्तान, उसके दो खलासी, कुछ यंत्र क्रोनोमीटर, टेलिस्कोप तथा बैरोमीटर आदि और थे।

रात में हमें काफी संख्या में ह्वेल तथा दूसरे जीव-जंतु दिखाई पड़े। ९ बजे मैं अपने स्थान पर पहुंच गया। आकाश साफ था। बादल दक्षिण की ओर उड़े जा रहे थे और ठंडे पानी की सतह से कोहरा उठ रहा था। कप्तान नेमो उस चोटी की ओर बढ़ा, जिसे वह परीक्षण-स्थल बनाना चाहता था। चढ़ने में काफी परेशानी थी, फिर भी कप्तान बड़ी हिम्मत से उस पर चढ़ता ही गया।

उस चोटी तक पहुंचने में हम लोगों को दो घंटे लगे। इस चोटी से उत्तर की ओर क्षितिज दूर तक फैला दिखाई पड़ा, ठीक नीचे सफेद चमकदार मैदान था। ऊपर कुछ पीला-पीला कोहरे रहित आकाश था। उत्तर में क्षितिज की ओर सूर्य का आग-सा गोला चमक रहा था। थोड़ी दूर 'नाटिलस' दैत्य की भांति सो रही थी। हमारे पीछे दक्षिण-पूर्व की ओर काफी चौड़ा स्थल था, जिस पर कहीं-कहीं चट्टानें तथा बर्फीले पहाड़ों के समूह थे।

चोटी पर पहुंच कप्तान नेमो ने बैरोमीटर से उसकी ऊंचाई मालूम की, क्योंकि इस ऊंचाई को भी उन्हें अपने परीक्षण में ध्यान में रखना था। पौने बारह बजे सूर्य का सुनहरा गोला दिखाई दिया। यह गोला केवल प्रकाश परिवर्तन से ही देखा जा सकता था।

कप्तान नेमो ने एक यंत्र हाथ में लिया और उसे ठीक करके देखा । सूर्य धीरे-धीरे क्षितिज के नीचे जा रहा था । मैंने क्रोनोमीटर लिया । मेरा दिल उत्तेजना के कारण तेजी से धक-धक करने लगा । यदि ठीक दोपहर को यह आधा गोला लुप्त हो गया, तो सिद्ध होगा हम लोग दक्षिणी ध्रुव में हैं ।

मैंने चिल्ला कर कहा, "१२ बज गया ।"

कप्तान ने उत्तर दिया, "दक्षिणी ध्रुव !" यह कहकर झट से मुझे शीशा दे दिया। मैंने देखा सूर्य क्षितिज द्वारा दो बराबर भागों में विभाजित था ।

मैंने उस चोटी पर सूर्य की अंतिम किरणें देखीं, और देखीं ढाल पर धीरे-धीरे चढ़ती हुई परछाइयां । उसी समय कप्तान ने कंधे पर हाथ रखकर घोषणा की, "मैं कप्तान नेमो, २१ मार्च सन् १८६८ को ९०° दक्षिणी ध्रुव पर पहुंचा । विश्व के छठे महाद्वीप के इस केंद्रीय भाग का अधिकार अपने हाथ में लेता हूं ।"

"कप्तान, किसके नाम पर ?"

"अपने नाम पर ।"

यह कह कर कप्तान ने एक सुनहरा निशान बना, काला झंडा वहां फहरा दिया, और उसकी छाया में वहीं बैठ गया। सूर्य की अंतिम किरणें सागर-क्षितिज को गोद में खिला रही थीं । वह बोला—

"हे सूर्य ! लुप्त हो जाओ और चमकदार सितारे की भांति इस स्वतंत्र सागर के नीचे शयन करो । मेरे इस नए राज्य पर ६ महीने की रात का काला आवरण फैलाओ ।"

दूसरे दिन २२ मार्च को ६ बजे सुबह से ही वहां से विदा होने की तैयारियां प्रारंभ हो गईं। सूर्य की लालिमा समाप्त हो चुकी थी। रात हो रही थी, जाड़ा भी काफी था। आर्कटिक देश का ध्रुवीय सितारा आकाश में चमक रहा था।

थर्मामीटर ने शून्य से १२ डिग्री कम तापक्रम का संकेत किया। मंद-मंद हवा बहने लगी। हम स्वच्छ जल पर बढ़ने लगे। सागर चारों ओर जमता प्रतीत हो रहा था। सागर तल पर जगह-जगह काले-काले धब्बे दिखाई पड़ने लगे। नई वर्फ बनने पर यही हाल होता है। इन ६ महीने के कठिन शीत और रात्रि में दक्षिणी क्षेत्र बिल्कुल जम जाता है। ह्वेल मछलियां अब कहां चली गईं। शायद वे वर्फीली दीवार में चली गई हों। यहां के समुद्री जीव बर्फ में सूराख करके अंदर जल में चले जाते हैं तथा उसी सूराख से सांस लेने ऊपर आ जाते हैं। चिड़िया उड़कर उत्तर की ओर चली जाती हैं।

इसी बीच पानी की टंकियां भरी जाने लगीं तथा 'नाटि-लस' धीरे-धीरे सागर में समाने लगी। नीचे जा वह एक हजार फुट पर रुक, १५ मील प्रति घंटा की चाल से उत्तर की ओर दौड़ने लगी। शाम तक वह बर्फीली दीवार के नीचे-नीचे ही चलती रही।

किसी डूबे पदार्थ से टक्कर लग जाने के भय से खिड़कियां आज बंद ही रहीं। फलस्वरूप आज दिन भर मैं अपनी डायरी ही लिखता रहा। मैं अब ध्रुव के बारे में ही सोच विचार कर रहा था। कैसी आसानी से हम लोग वहां पहुंच गए तथा अब

वापस जा रहे हैं। इस साढ़े पांच मास की यात्रा में हमने कितने आश्चर्यजनक स्थान देखे तथा लगभग १४००० लीग समुद्र के अंदर की यात्रा की। रात भर मेरी यात्रा की स्मृति मेरे मस्तिष्क में स्वप्न की भांति घूमती रही।

३ बजे सुबह झटके से मैं जाग पड़ा। उठकर बिस्तर पर बैठ गया तथा ध्यान से सुनने लगा। एकाएक मैं बीच कमरे में जा गिरा। 'नाटिलस' भी टक्कर से काफी पीछे लौट आई थी।

मैं नाव के बीच में होकर सैलून को गया। वहां सारा सामान अव्यवस्थित पड़ा था। कुर्सियां तथा मेजें भी उलट-पुलट गई थीं, परंतु छत से अभी प्रकाश आ रहा था। 'नाटिलस' इस समय बिल्कुल शांत खड़ी थी।

अंदर मैंने कुछ पैरों की आवाज सुनी, परंतु कप्तान नेमो नहीं आया। मैं सैलून से बाहर जाने ही वाला था कि नेडलैंड और कनसील प्रविष्ट हुए।

मैंने जल्दी से पूछा, "क्या बात है?"

कनसील ने उत्तर दिया, "मैं तो आपसे ही पूछने आया था।"

नेडलैंड ने कहा, "मैं भली भांति जानता हूं कि क्या हुआ है। 'नाटिलस' के टक्कर लग गई है। अब यह यहीं टिक गई तथा टोरस जलडमरूमध्य की भांति यहां से भी आसानी से न निकल सकेगी।"

मैंने पूछा, "नाव सागर की सतह पर तो है?"

कनसील ने कहा, "हम लोग तो यह भी नहीं जानते।"

मैंने कहा, "यह तो पता लगाना आसान है। मैंने मानोमीटर देखा। 'नाटिलस' इस समय १८० फैदम गहराई में थी।

मैंने कहा, "इसके क्या माने ।"

कनसील ने कहा, "हमें कप्तान नेमो से पूछना चाहिए ।"

नेडलैंड ने पूछा, "परंतु वह मिलेगा कहां ?"

मैंने अपने दोनों साथियों से कहा, "मेरे साथ आओ ।"

हम लोग सैलून से रवाना हुए । वाचनालय में, जीने पर या नौकरों के कमरे में कोई भी न मिला । मैंने सोचा कि कप्तान शायद पतवारिए के कमरे में होगा । प्रतीक्षा करने के सिवाय और हो ही क्या सकता था । हम लोग फिर सैलून को लौट आए ।

२० मिनट बाद कप्तान नेमो ने सैलून में प्रवेश किया । शायद उसने हम लोगों को देखा न था । उसके चेहरे पर चिंता थी । उसने कंपास तथा मानोमीटर को देखा । फिर उस समुद्री नक्शे पर उस जगह उंगली रखी, जहां हम लोग मौजूद थे ।

मैं दखल न देना चाहता था । थोड़ी ही देर बाद वह स्वयं मेरी ओर घूमा । मैंने पूछा, "कप्तान, क्या कोई दुर्घटना हुई है ?"

उसने उत्तर दिया, "नहीं प्रोफेसर, अचानक ही ऐसा हो गया है ।"

"तो क्या तुरंत ही कोई खतरा है ?"

"हां ।"

"नाटिलस के टक्कर लग गई ?"

"हां ।"

"कैसे ?"

"मनुष्य की अयोग्यता के कारण नहीं, प्राकृतिक दृष्टि से मेरे चलाने में कोई गलती नहीं हुई है । मैं मनुष्य के नियमों का उल्लंघन कर सकता हूं परंतु प्रकृति के नियमों का नहीं ।"

कप्तान नेमो ने यह उत्तर केवल कुछ कहने के बहाने दिया था। मैंने पूछा, "आखिर इसका कारण क्या है ?"

कप्तान ने उत्तर दिया, "एक बड़ा बर्फ का टुकड़ा, पूरा पहाड़ का पहाड़, उलट पड़ा है। जब कभी बर्फीले पहाड़ टक्कर से या गर्म पानी से नीचे-नीचे कट जाते हैं तो इनकी चुंबकीय शक्ति ऊपर उठाने लगती है, तब सारा का सारा पहाड़ उलट जाता है। यही इस समय हो गया था। इन्हीं उलटे हुए बर्फीले पहाड़ों में से एक में से 'नाटिलस' में टक्कर लग गई।"

"क्या 'नाटिलस' अपनी टंकियों की सहायता से अपना संतुलन ठीक नहीं कर सकती ?"

"यही तो इस समय किया जा रहा है। आपको पंपों का शब्द सुनाई पड़ता होगा। मानोमीटर की सुई को भी देखिए। 'नाटिलस' ऊपर उठ रही है तथा बर्फ का वह पहाड़ भी साथ ही साथ। यह अपने नियमों के साथ उठ रहा है। जब तक इस बर्फ के पहाड़ को कोई चीज ऊपर उठने से न रोकेगी, तब भी मेरी परिस्थिति ऐसी ही रहेगी।"

मैंने 'नाटिलस' की सारी अवस्था समझने का प्रयत्न किया परंतु कप्तान मानोमीटर की ओर ही टकटकी लगाए देखता रहा। बर्फ हटने से अब तक 'नाटिलस' १५० फुट ऊपर उठ आई थी, परंतु अब भी परिस्थिति जैसी की तैसी थी।

धीरे से 'नाटिलस' को एक और ठोकर लगी। अब 'नाटिलस' की स्थिति कुछ ठीक हो रही थी। धीरे धीरे ऊपर की ओर से 'नाटिलस' समतल होने लगी। दस मिनट और बीते।

मैंने कहा, "'नाटिलस' अब सीधी हो गई।"

सैलून से बाहर जाते हुए कप्तान ने कहा, "हां।"

"क्या हम लोग फिर तैरने लगेंगे ?"

"निश्चय ही ।"

कप्तान बाहर गया । 'नाटिलस' का ऊपर चढ़ना बंद हो गया । वह अब बर्फीली दीवार के थोड़े ही अंतर पर थी । 'नाटिलस' अब ठीक चलने लगी ।

"हम लोग खूब बचे ।"

"यदि परिस्थिति शीघ्र न सुधरती तो चट्टान और दीवार के बीच दब कर मर जाते ।"

सैलून की खिड़कियां खुल गईं तथा शीशे से बाहर की चीजें दिखाई पड़ने लगीं । 'नाटिलस' की रोशनी इस समय पानी में थी, परंतु इसके चारों ओर ३० फुट दूरी पर चमकदार बर्फ की दीवार थी । नीचे और ऊपर भी उसी प्रकार की दीवार थी । नीचे वही टूटा हुआ बर्फ का पहाड़ था । 'नाटिलस' लगभग एक लंबे-चौड़े बर्फीले बक्स के अंदर पानी में कैद थी ।

सैलून की रोशनी बुझा दी गई, फिर भी प्रकाश काफी था । यह रोशनी बाहर के लैंप की थी, वह बर्फ की दीवारों से टकराकर और चमक रही थी ।

"वाह कितना सुंदर दृश्य है ।"

"हां, बहुत ही सुंदर है । है न नेड ?"

"हां, है तो अद्भुत, यह तो मुझे मानना ही पड़ेगा । मुझे विश्वास है कि यहां हम लोग वह चीजें देख रहे हैं, जिन्हें भगवान ने हम लोगों के देखने के लिए कदापि नहीं बनाया । नेड-लैंड ठीक कहता है । वास्तव में यह बहुत सुंदर हैं ।"

एकाएक कनसील की चिल्लाहट सुन मैं पीछे को घूमा ।

"क्या बात है ।"

"मालिक आप अपनी आंखें बंद कर लें", इतना कहकर कनसील ने चट से अपने हाथों से अपनी आंखें बंद कर लीं।

"हो क्या गया कनसील ?"

"मेरी आंखें चमक से चकाचौंध हो गई हैं। मैं अंधा हो गया हूं।"

मैंने अपने पास खिड़की से देखा, परंतु मेरी आंखें बाहर की चमक सहन न कर सकीं। मैं अब, समझ गया था कि कनसील को क्या हो गया।

अब सैलून की खिड़कियां बंद हो गईं। फिर कुछ देर बाद मेरा दर्द शांत हो गया। और मैंने अपने हाथ आंखों पर से हटा लिए।

"यदि देखा न होता तो मुझे विश्वास न आता।"

"मैं अब भी विश्वास नहीं करता।"

कनसील ने कहा, "हम लोग जब प्रकृति की इतनी छटा देखकर अपने देश जाएंगे, तो वह मुझे अच्छा नहीं लगेगा।"

कनसील के मुंह से ऐसे शब्द निकलने से मेरे उत्साह की सीमा न रही। परंतु नेडलैंड पर अब भी जूं तक न रेंगी थी।

उसने कहा, "मित्र कनसील, परेशान मत हो; तुम्हें अपना देश देखने को ही न मिलेगा।"

इस समय सुबह के ५ बजे थे। उसी समय 'नाटिलस' को एक ओर झटका लगा, शायद इसका पंख किसी बर्फ के टुकड़े से टकरा गया था। इस सुरंग में नाव खेना अत्यंत कठिन था। मैंने सोचा कि कप्तान शायद चक्कर लगाकर या सुरंग के मोड़ों के साथ साथ चलकर इसे पार करेगा। किसी प्रकार से भी हमारी आगे की यात्रा रुक न सकेगी, परंतु 'नाटिलस'

मेरे विचार के विरुद्ध धीरे-धीरे पीछे की ओर हटने लगी।

कनसील ने कहा, "क्या हम लोग पीछे वापस जा रहे हैं ?"

मैंने उत्तर दिया, "हां, इस सुरंग में आगे रास्ता न होगा।"

कनसील बोला, "फिर क्या होगा ?"

मैंने कहा, "इससे क्या; हम लोग पीछे जा इससे बाहर निकल दक्षिणी रास्ते से चले जाएंगे।"

मैंने कह तो दिया, परंतु इसमें मुझे उतना विश्वास न था जितना कि मैंने प्रकट किया था। थोड़ी देर में 'नाटिलस' पीछे की ओर तेजी से चलने लगी।

नेडलैंड ने कहा, "इसमें तो बड़ी देर लगेगी।"

"दो घंटे इधर या उधर, इससे क्या अंतर पड़ता है? हम लोग बाहर पहुंच तो जाएंगे ही।"

नेडलैंड ने कहा, "तो ठीक है।"

मैं कुछ समय तक सैलून तथा वाचनालय में इधर-उधर घूमता रहा। मेरे साथी भी शांत थे। फिर मैं कौच पर बैठ एक पुस्तक हाथ में लेकर पढ़ने लगा।

१५ मिनट बाद कनसील ने मेरे पास आकर कहा, "क्या आप बहुत ध्यान से पढ़ रहे हैं ?"

मैंने उत्तर दिया, "बड़ी मनोरंजक पुस्तक है।"

पुस्तक थोड़ी देर तक पढ़ने के बाद मैं फिर टहलने लगा नेड और कनसील भी चलने को तैयार हो गए।

मैंने कनसील के कंधे पर हाथ रख कर कहा, "ठहरो, जब तक सुरंग पार न हो जाएं, हम लोग एक ही साथ रहेंगे।"

कनसील ने कहा, "जैसा आप कहें।"

हम लोगों ने कुछ घंटे वहीं बिताए। मैं बार बार सामने

दीवार पर लटकते यंत्र को देखता रहा। मानोमीटर से ज्ञात हुआ कि हम लोग ९०० फुट की गहराई में हैं तथा कंपास से मालूम हुआ कि हम लोग पश्छिम की ओर जा रहे हैं। गति-सूचक यंत्र ने २५ मील प्रति घंटा की चाल बताई। यह चाल इस तंग सुरंग में बहुत थी। कप्तान नेमो जानता था कि जल्दी से कुछ काम न बनेगा। फिर भी इस समय एक एक मिनट शताब्दी-सा पार हो रहा था।

सवा आठ बजे फिर पीछे से एक धक्का लगा। मेरा चेहरा फीका पड़ गया। मेरे साथी मेरे पास आए। मैंने कनसील का हाथ अपने हाथ में ले लिया। हम लोग डरे हुए एक दूसरे से पूछताछ करने लगे। उसी समय कप्तान सैलून में प्रविष्ट हुआ। मैंने पूछा, "क्या दक्षिण की ओर रास्ता बंद है ?"

"हां, बर्फीला पहाड़ टूट कर गिर पड़ा है, उसी से रास्ता बंद हो गया है।"

"तो हम लोग बंद हो गए ?"

"हां, अवश्य।"

४०

'नाटिलस' पूर्णतया बर्फ से घिर गई। हम लोग बिलकुल कैद हो गए। नेडलैंड ने मेज पर जोर से चोट की। कनसील शांत खड़ा रहा। मैंने कप्तान की ओर देखा। वह सीने पर

हाथ बांधे चुपचाप खड़ा था। 'नाटिलस' स्थिर खड़ी थी।

कप्तान ने कहा, "महाशय, इस अवस्था में मरने के दो ही कारण हो सकते हैं।"

कप्तान इस समय गणित के प्रोफेसर की भांति खड़ा मानो अपने शिष्यों को एक प्रश्न समझा रहा था। उसने कहा, "हम लोग या तो डूब कर मर सकते हैं या हवा की कमी के कारण। भूख से मरने की कोई संभावना नहीं, क्योंकि खाना काफी मौजूद है।"

मैंने उत्तर दिया, "हम लोग हवा के कारण क्यों मर सकते हैं। टंकियों में हवा तो मौजूद ही है?"

कप्तान ने कहा, "ठीक है, परंतु टंकियों की हवा दो दिन और चल सकती है। ३६ घंटे वैसे ही हमें जल के अंदर चलते-चलते हो गए। 'नाटिलस' की हवा अब गर्म हो गई है। उसे ताजा करने की इसी समय आवश्यकता है। ज्यादा से ज्यादा ४८ घंटे तक टंकियों की हवा और काम दे सकती है।"

"तब तो हमें ४८ घंटे के पहले यहां से बाहर निकल चलना चाहिए।"

"मैं इस दीवार में घुसकर निकलने की कोशिश करूंगा।"

मैंने पूछा, "किस तरह से?"

"सूराख करने से ही पता चलेगा। मैं 'नाटिलस' को नीचे लिए जा रहा हूं। मेरे खलासी गोताखोरी की पोशाकें पहन कर पता लगाएंगे कि दीवार किस जगह कम मोटी है।"

कप्तान बाहर चला गया। कुछ सनसनाहट की आवाज सुनाई पड़ी। टंकियां पानी से भरी जाने लगीं। 'नाटिलस' धीरे-धीरे डूबने लगी और १७५ फैदम गहराई में जा बर्फ पर

रुक गई ।

मैंने कहा, "मेरे मित्र, परिस्थिति अब बहुत गंभीर होगई है। अब हम लोगों की हिम्मत और शक्ति का परिचय चाहिए।"

नेडलैंड ने कहा, "मैं जितना अच्छा भाला चलाता हूं उतना ही फावड़ा भी। यदि मुझसे कप्तान का कुछ कार्य बन सकता है, तो मैं तैयार हूं।"

"नेड, आओ तुम्हारी सहायता से वह इंकार न करेगा।"

मैं नेडलैंड को लेकर गोताखोरी की पोशाक पहनने के कमरे में गया। मैंने कप्तान से नेड की राय बताई। कप्तान ने उसे स्वीकार कर लिया। दूसरे खलासियों के साथ ही नेडलैंड भी अपनी समुद्री पोशाक पहन कर तैयार हो गया। हर एक ने टंकियों में भरी ताजा हवा से युक्त सांस लेने के यंत्र भी पहन लिए। नेडलैंड जब अपनी पोशाक पहन चुका तो मैं सैलून को चला गया तथा कनसील के पास बैठ कर परिस्थिति का अध्ययन करने लगा।

कुछ ही क्षण बाद लगभग एक दर्जन आदमी बर्फ पर चलते दिखाई पड़े। नेडलैंड अपने लंबे कद के कारण दूर से पहचाना जा सकता था। कप्तान भी उन्हीं के साथ था।

काम तुरंत शुरू कर दिया गया और काफी तेजी से चालू किया गया। 'नाटिलस' के चारों ओर खोदने के बजाय कप्तान ने करीब ८ गज दूर खुदवाया, तथा उसके दूसरे साथी भी उसी परिधि में चारों ओर खोदने लगे। यह टुकड़े चूंकि घनत्व में पानी से कम होते थे, इसलिए पानी में तैरते समय उनका ऊपर का भाग मोटा तथा निचला भाग पतला रहता था। परंतु जब तक नीचे की मोटाई कम न की जाए, तब तक कोई

काम न हल हो सकता था। दो घंटे के काम के बाद नेडलैंड थक कर चला आया। उसके साथी भी आ गए। अब हमारी टोली चली।

मैं जब दो घंटे काम करके खाना खाने तथा आराम करने के लिए लौटकर आया, तो 'नाटिलस' का वातावरण बिलकुल भिन्न था। सांस लेने के यंत्र भी दूसरे प्रकार की हवा दे रहे थे। 'नाटिलस' काफी कार्बोनिक एसिड गैस से युक्त थी। हवा ४८ घंटे से बदली न गई थी और उसके जीवन-तत्व कमजोर पड़ रहे थे। १२ घंटे में हम लोगों ने लगभग १ गज मोटी वर्फ की सिल्ली अर्थात ६०० घन गज तोड़ डाली थी। यदि यह मान लिया जाय कि इसी गति से हम लोग इसे तोड़ते रहे तो भी ५ दिन ४ रातें और लग जाएंगी।

मैंने अपने साथियों से कहा, "५ दिन और ४ रातें; पर की टंकियों में केवल दो दिन के लिए ही हवा है।"

नेडलैंड ने कहा, "अब हम लोग इसी कब्र में कैद रहेंगे, हवा बाहर निकलने की कोई आशा नहीं।"

सच ही है, कौन कह सकता है कि इससे निकलने में कम से कम कितना समय लगेगा। क्या पता जब तक 'नाटिलस' सागर-सतह पर पहुंचे, हम लोग हवा की कमी के कारण मर नहीं जाएंगे? क्या उसके भाग्य में इसी बर्फ की कब्र में ही इसके यात्रियों के साथ नष्ट होना लिखा था। परिस्थिति बहुत भयानक थी, परंतु सारे यात्रियों तथा कर्मचारियों ने मरते दम तक अपना कर्तव्य पूरा करने का निश्चय कर लिया था। रात को मेरे अनुमान के अनुसार १ गज मोटा और टुकड़ा काटा गया, लेकिन जब मैं खोदने के लिए अपनी पोशाक पहन रहा

था तो मुझे मालूम पड़ा कि इस जल का तापक्रम ६ से ७ डिग्री शून्य से नीचे पहुंच गया है तथा जिस पानी के पास खुदाई का काम नहीं हो रहा था, उसके भी जम जाने के लक्षण दिखाई पड़ने लगे। इस नए भयानक खतरे से बचने की आशा ही क्या हो सकती थी, और हम इस पानी को जमने से रोक भी कैसे सकते थे।

मैंने इस नए खतरे को अपने साथियों से नहीं बतलाया। उस शक्ति को क्यों चोट पहुंचाई जाय, जो वे इस आवश्यक काम में व्यय कर रहे थे ? परन्तु जब मैं नाव में वापस आया तो इस गंभीर घटना को कप्तान नेमो से बताया।

उसने कहा, "मैं जानता हूं। यह एक और खतरा है, परंतु मैं इसे दूर नहीं कर सकता। केवल बचने का एक उपाय है कि हम लोग उस जमने के काम से जल्दी काम करें, जिससे हम लोग पानी जमने से पहले अपना काम समाप्त करदें।"

"तो यही किया जाय।"

शाम तक बर्फ एक गज और खोद डाली गई। जब मैं 'नाटिलस' को वापस पहुंचा तो उसमें और अधिक कार्बोनिक एसिड गैस भरी थी। क्या इस गैस से मुक्ति पाने का कोई तरीका है ? आक्सीजन जल से प्राप्त की जा सकती थी, परंतु अब तो सारी 'नाटिलस' में यह गैस समा गई है। इसे समाप्त करने के लिए इस नाव को कास्टिक पोटाश से भरना पड़ेगा तथा उसे बराबर हिलाना पड़ेगा। परंतु यह वस्तु यहां समुद्र में तो कदापि मिल ही नहीं सकती थी, और इसके बजाय दूसरी वस्तु इस्तेमाल में न आ सकती थी।

शाम को हवा की सुरक्षित टंकियां खोलनी ही पड़ीं; इसके

बिना हम लोगों का होश में रहना ही असंभव था।

दूसरे दिन २६ मार्च को फिर मैंने अपना खोदने का काम शुरू कर दिया। चट्टान का निचला हिस्सा तथा दीवारों का अंतिम भाग धीरे-धीरे मोटा हो, एक दूसरे के निकट आ रहा था। मुझे एक बार फिर निराशा हो गई। मेरी कुल्हाड़ी मेरे हाथ से जमीन पर गिर पड़ी। खुदाई से क्या लाभ, हमें हवा की कमी से या जमे हुए पानी के बीच दबकर मर जाना ही था। ऐसी मौत तो किसी को भी न नसीब हुई होगी। मुझे मालूम हो रहा था, मानो हम एक भयानक जीव के मुंह में हैं तथा वह जीव अपना मुंह बंद ही करने वाला है। इस समय कप्तान नेमो मेरे पास आया। मैंने उसके कंधे पर हाथ रखकर चारों तरफ की जेल की दीवार की ओर इशारा किया। बाईं दीवार सामने ४ गज बढ़ आई थी। कप्तान मेरी बात समझ गया और मुझे अपने साथ आने को कहा। हम लोग फिर नाव में चले गए। मैं अपनी गोताखोरी की पोशाक उतारकर कप्तान के साथ सैलून में चला गया।

उसने कहा, "हमें कोई विशेष तरीका अपनाना होगा अन्यथा हम लोग सीमेंट जैसे इस जमे हुए पानी के बीच बंद हो जाएंगे।"

"हां ठीक है, पर किया क्या जाय?"

"यदि 'नाटिलस' इस दबाव को सहन करने की कुछ शक्ति रखती तो कुछ होता।"

"तो क्या होता ?"

उसने कहा, "पानी का यह जमना ही मुझे सहायता देगा। क्या आप यह नहीं समझते कि पानी जम जाएगा तो

इससे चारों ओर की बर्फ टूटेगी ? क्या आप यह नहीं समझते की पानी का जमना मेरी समस्या को हल करेगा न कि मुझे हानि पहुंचाएगा ?"

"परंतु कप्तान, 'नाटिलस' चाहे जितनी मजबूत हो, फिर भी इतने भार को सहन न कर सकेगी और दबकर चपटी हो जाएगी।"

"मैं यह जानता हूं । हमें प्रकृति पर विश्वास न करना चाहिए । अपने आप कोई सूझ निकालनी चाहिए और पानी का जमना रोकना चाहिए।"

मैंने पूछा, "कप्तान, हवा कितने दिनों के लिए काफी है ?"

कप्तान ने उत्तर दिया, "परसों तक टंकियां खाली हो जाएंगी।" मुझे इस उत्तर पर आश्चर्य हुआ। २२ मार्च को 'नाटिलस' जल के अंदर आई थी। आज २६ मार्च है। हम लोग अभी पांच दिन ही टंकियों पर निर्भर रहे और हवा कम पड़ गई। इस समय मेरे दिल में डर पैदा हो गया था तथा फेफड़ों में कष्ट हो रहा था।

कप्तान को एक युक्ति सूझी। एकाएक उसके मुंह से निकला, "उबलता हुआ पानी।"

मैंने कहा, "उबलता हुआ पानी ?"

"हां, हम लोग तो एक छोटी सी जगह में बंद हैं। उबलते हुए पानी की धाराएं यदि 'नाटिलस' के पंपों द्वारा इस पानी में छोड़ी जाएं तो इसका तापक्रम नहीं घटेगा।"

मैंने कहा, "प्रयत्न करके देखा जाय।"

"मैं अवश्य करके देखूंगा।"

तापक्रम शून्य से ७ डिग्री कम था। कप्तान मुझे रसोई में ले गया। वहां पीने का पानी बनाने के लिए बर्तन चढ़े थे। उनमें सागर का ठंडा-ठंडा पानी डालकर उबाला जाने लगा तथा पंपों द्वारा उबला हुआ पानी समुद्र में छोड़ा जाने लगा। यह क्रिया लगभग ३ घंटे तक जारी रही। अब तापक्रम १ डिग्री बढ़ गया। दो घंटे बाद तापक्रम २ डिग्री और बढ़ा।

मैंने कप्तान से कहा, "सफलता मिलेगी।"

उसने उत्तर दिया, "मेरा भी यही ख्याल है। अब हम दबने से न मरेंगे, केवल हवा की कमी से मरने की आशंका है।"

रात में तापक्रम शून्य से १ डिग्री ही कम रह गया, इससे अधिक तापक्रम न बढ़ा। सागर का पानी कम से कम शून्य से २ डिग्री कम पर ही जम सकता है। इसलिए इसके जमने की और अधिक आशंका न रह गई।

दूसरे दिन २७ मार्च को १८ फुट बर्फ और निकाली गई, परंतु अब भी १२ फुट बाकी थी।

मैंने कनसील को कहते सुना, "मैं यदि अपनी हवा प्रोफेसर को दे सकूं तो बहुत अच्छा हो।"

कनसील के त्याग की बात सुनकर मेरी आंखों में आंसू आ गए। मेरी हालत खराब थी फिर भी काम करने को मैं तैयार था, क्योंकि जिंदा रहने भर के लिए तो अब भी हवा थी। हम सांस अब भी ले रहे थे।

काफी काम किया, फिर भी ६ फुट बर्फ रह गई। अब हम सागर से केवल ६ फुट दूर थे, परंतु हवा की टंकियां करीब-करीब खाली हो गई थीं। जितनी हवा बाकी थी वह काम करने वालों के लिए थी, 'नाटिलस' के लिए जरा सी

भी हवा न थी ।

मैं जब 'नाटिलस' में आया, तब मैं अधमरा-सा हो गया था । दूसरे दिन सांस दिक्कत से चलने लगी । सिर में दर्द था तथा नशा-सा सवार था । साथियों का भी यही हाल था। कुछ खलासियों के गले में खरखराहट प्रारंभ हो गई थी ।

आज हमारी इस हवा-शून्य स्थान की कैद का छठा दिन था । खुदाई का काम बहुत धीरे-धीरे होरहा था । इस बात से कप्तान बहुत परेशान था । वह अपना कष्ट तो अनुभव न करता था, दूसरों की प्राण रक्षा की योजनाएं बना रहा था तथा उन्हें कार्यान्वित कराने में जुटा था ।

उसने नाव को बर्फ से हटाने का आदेश दिया । वह हिली, परंतु आगे काफी खुदी हुई बर्फ पड़ी थी । पानी की टंकियां भरी जाने लगीं । 'नाटिलस' खुदे हुए सूराख में घुसने लगी । इस समय नाव के सारे खलासी नाव पर आ गए तथा दरवाजे बंद कर लिए गए । 'नाटिलस' इस समय ३ फुट से भी कम बर्फ की तह पर थी । इस तह में भी हजारों सूराख कर दिए गए थे ।

टंकियों की टोटियां खोल दी गईं। 'नाटिलस' में १०० घन गज पानी धंस आया । 'नाटिलस' का वजन २,००,००० पौंड और बढ़ गया ।

हम लोग अपना-अपना दर्द भूल मुक्ति की आशा लगाए थे। हमने अंतिम प्रयत्न भी कर लिया था । 'नाटिलस' कुछ हिली तथा नीचे पहुंची । बर्फ कागज के फटने जैसी आवाज करके टूट गई तथा सागर में समा गई ।

कनसील ने मेरे कान में कहा, "हम लोग संकट पार कर

आए हैं।"

मैं उसका कुछ भी उत्तर न दे सका। आशा से मैंने कनसील का हाथ जोर से दबाया। 'नाटिलस' एकाएक तेजी से बम के गोले की भांति अंदर घुसी, मानो वह वायुशून्य स्थान में घुसी हो।

अब बिजली की सारी शक्ति पंपों में लगा दी गई, जो टंकियों से पानी बाहर फेंकने लगे। थोड़ी ही देर में हम लोगों का नीचे जाना बंद हो गया। हम लोग अब ऊपर की ओर चढ़ने लगे। सारी चर्खियां 'नाटिलस' को कंपित कर उत्तर की ओर तेजी से ले जा रही थीं।

मैं अधमरा एक कोच पर पड़ा हवा के अभाव में तेजी से सांस ले रहा था। मेरा चेहरा पीला तथा होंठ नीले थे। सारी इंद्रियां शिथिल हो रही थीं। न कुछ दिखाई दे रहा था और न सुनाई ही पड़ता था। समय का भी मुझे कुछ ज्ञान न रह गया था। मैं अब हाथ-पैर भी हिलाने में असमर्थ था।

मैं न समझ पाया था कि मेरा यह हाल कितनी देर तक रहा; परंतु इतना अवश्य जानता था कि मृत्यु का कार्य शुरू हो गया है। मैं मर रहा था। एकाएक मुझे कुछ होश आया। मेरे फेफड़ों में हवा के कुछ बुलबुले घुसे। क्या अब चट्टान के नीचे की यात्रा समाप्त कर हम सागर-सतह पर आ गए थे?

नहीं, मेरे साथी नेडलैंड और कनसील अपना मोह त्याग कर मेरी जान की रक्षा कर रहे थे। एक यंत्र में कुछ हवा रह गई थी, अपने सांस लेने के बजाय उन्होंने इसे मुझे दे दिया था। मैं उस यंत्र को हटा देना चाहता था, परंतु वे मेरा हाथ पकड़ उस यंत्र को मेरी नाक में लगाए थे। मैं इस समय ठीक

से सांस लेने लगा।

मेरी दृष्टि घड़ी पर पड़ी। दिन के ११ बजे थे। आज २८ मार्च को 'नाटिलस' तेजी से ४० मील की चाल से जा रही थी।

कप्तान कहां था? क्या वह मर गया था? और उसके सारे साथी भी उसी के साथ मर गए थे?

इस समय मानोमीटर से ज्ञात हुआ कि हम लोग सागर-सतह से केवल २० फुट नीचे थे। क्या इसे हम नहीं तोड़ सकते थे?

'नाटिलस' इसका भी प्रयत्न कर रही थी। मेरी समझ में आया कि 'नाटिलस' के पीछे का भाग नीचा तथा आगे का ऊंचा कर दिया गया था। 'नाटिलस' ने बर्फ पर नीचे से चोट की तथा तुरंत ही इसे तोड़ डाला। 'नाटिलस' फिर पीछे हटी। फिर तेजी से टक्कर ली। अब की बार बर्फ बिल्कुल टूट गई तथा 'नाटिलस' साधारण रूप से चलने लगी। खिड़कियां खोल दी गईं। शुद्ध हवा 'नाटिलस' में तेजी से आ घुसी।

४१

मुझे यह पता न था कि मैं चबूतरे पर कैसे आया। शायद नेडलैंड मुझे यहां लाया था, परंतु अब मैं ठीक तौर से सांस ले रहा था। मेरे दोनों साथी कुछ नशीली दशा में मेरे पास थे। काफी समय के बाद हवा मिली थी। साथियों ने उसका



उपयोग किया, परंतु एकदम कर ही क्या सकते थे। हमारे फेफड़े हवा से भर गए। हम समुद्री हवा का आनंद लेने लगे।

कनसील ने कहा, "वाह, कितनी अच्छी आक्सीजन है। अब आपके सांस लेने में दिक्कत न होगी। अब हर यात्री के लिए आक्सीजन काफी है।"

नेडलैंड कुछ न बोला, परंतु उसने अपना मुंह बड़े जोर से फैलाया। कितनी अच्छी हवा है। हमारी शक्ति जल्दी से लौट आई। हमने चारों ओर देखा, किंतु चबूतरे पर हमी लोग थे। खलासियों या कप्तान में से कोई भी न था।

'नाटिलस' के नाविक सचमुच ही बड़े जीवट के थे। उन्हें अंदर की हवा से ही संतोष था। एक भी व्यक्ति चबूतरे पर हवा खाने न आया था। पहले-पहल जब मुझे होश आया और मैं बोला, तो मैंने अपने साथियों को धन्यवाद दिया। नेडलैंड और कनसील ने ही मेरी जान बचाई थी। उनके काम के लिए केवल यह धन्यवाद के दो शब्द ही काफी न थे।

नेडलैंड ने उत्तर दिया, "धन्यवाद की आवश्यकता नहीं। मुझे क्या श्रेय है, कुछ भी नहीं। आपका जीवन हम लोगों से बहुमूल्य है, अतः इसकी रक्षा की गई।"

मैंने उत्तर दिया, "नहीं नेडलैंड, यह अधिक कीमती नहीं। एक सभ्य-शरीफ आदमी से बढ़कर कोई नहीं होता, और आप काफी सभ्य हैं। और कनसील, तुम्हें भी काफी परेशानी उठानी पड़ी।"

"सच्ची बात तो यह है कि मुझे कोई विशेष कष्ट नहीं था। मुझे कुछ हवा चाहिए थी, वह मैं भी इस्तेमाल कर ही डालता,

और आप उस समय मरने के करीब थे। उस समय मेरा यही धर्म था।"

मैंने उत्तर दिया, "मेरे मित्र, हम लोग एक दूसरे के हमेशा के साथी हैं। मैं तुम्हारा बहुत कृतज्ञ हूं।"

नेडलैंड ने उत्तर दिया, "उसका मैं लाभ उठा लूंगा।"

कनसील ने कहा, "क्या ?"

नेडलैंड ने कहा, " जब मैं 'नाटिलस' को छोडूंगा, तो आप लोगों को साथ ले चलूंगा।"

कनसील ने कहा, "वह मुझे याद है; परंतु क्या हम ठीक रास्ते पर जा रहे हैं ?"

मैंने उत्तर दिया, "हां ठीक, हम लोग सूर्य की ओर जा रहे हैं, और सूर्य यहां से उत्तर में है।"

नेडलैंड ने कहा, "यह तो ठीक है। यह अब भी निश्चय करना बाकी है कि हम प्रशांत महासागर की ओर जा रहे हैं या अतलांतिक की, अथवा एकांत समुद्रों में या आबाद में।"

इसका मैं उत्तर न दे सका। मैं डरता था कि कहीं कप्तान हम लोगों को उस विशाल सागर की ओर तो नहीं ले जाएगा, जिसके एक तरफ एशिया का तट तथा दूसरी तरफ अमेरिका का तट हो।और इस प्रकार वह पृथ्वी की यात्रा पूरी करना चाहता हो, और उस सागर को लौट आए जहां 'नाटिलस' को पूर्ण स्वतंत्रता मिल सके। और यदि वह आबादी से दूर प्रशांत महासागर में चला गया, तो नेडलैंड की सारी योजना व्यर्थ हो जाएगी। मुझे इस बात का पता लगाना बहुत आवश्यक था। 'नाटिलस' इस समय काफी तेजी से जा रही थी। उसने अब ध्रुव वृत्त पार कर अपना मुंह हार्न अंतरीप की ओर घुमाया।

३१ मार्च को सायंकाल ७ बजे हम लोग अमेरिका की ओर चल पड़े।

अब मेरी सारी तकलीफ दूर थी। बर्फ के नीचे की कैद भी मस्तिष्क से ओझल हो चली थी। अब भविष्य का ही ध्यान था। कप्तान नेमो अब तक न सैलून में ही दिखाई पड़ा और न चबूतरे पर ही। रोज स्थिति का पता लगाया जाता था तथा नक्शे पर अंकित किया जाता था; इससे 'नाटिलस' की दिशा का ठीक-ठीक ज्ञान हो जाता था। आज शाम को 'नाटिलस' अतलांतिक के रास्ते से उत्तर की ओर चलने लगी। इस से मुझे और संतोष हुआ। मैंने अपने परीक्षण का फल नेडलैंड और कनसील को बताया। नेडलैंड ने कहा, "यह तो अच्छी खबर है, परंतु यह तो बताओ यह कहां जा रही है।"

"नेडलैंड, मैं यह नहीं कह सकता।"

"क्या इसके कप्तान दक्षिणी ध्रुव के बाद उत्तरी ध्रुव को जा रहे हैं, और उधर से उस प्रसिद्ध दक्षिणी-पच्छिमी मार्ग से लौटेंगे?"

कनसील ने कहा, "उसको यह भी करने से रोक कौन सकता है।"

नेडलैंड ने कहा, "हम लोग पहले ही उसका साथ छोड़ देंगे।"

कनसील ने कहा, "कुछ भी हो, कप्तान बहुत बड़ा साहसी तथा वीर आदमी है। मुझे उससे मिलने का कोई खेद नहीं है।"

नेडलैंड ने कहा, "और खासतौर से जब हम लोग उसे छोड़ देंगे।" दूसरे दिन दोपहर से कुछ ही समय पहले जब 'नाटिलस' समुद्र-सतह पर आई तो मुझे पच्छिमी किनारा दिखाई पड़ा। यह टेराडेलफ्यूगो था। नाविकों ने इसकी झोंपड़ियों से धुआं

निकलते देख इसका यह नामकरण किया था। यह टेराडेलफ्यूगो टापुओं का समूह है, जो ३० लीग लंबा तथा ८० लीग चौड़ा है। किनारा मुझे कुछ नीचा मालूम पड़ा, परंतु दूरी पर ऊंचे-ऊंचे पर्वत थे। यह ६५०० फुट ऊंचा सारमियंटो पर्वत था। इसकी चोटी बहुत नुकीली है। कभी कोहरे से ढकी, कभी खुली रहती है। इससे अच्छी-बुरी ऋतु का आभास आसानी से हो जाता है।"

"तब तो यह एक अच्छा बैरोमीटर है।"

नेडलैंड ने कहा, "प्रोफेसर, यह एक प्राकृतिक बैरोमीटर है। मैं जब मैगेलन जलडमरूमध्य को पार करता था, तो इस से मुझे सही ऋतु ज्ञात हो जाती थी। इससे मुझे कभी भी भ्रम न हुआ था।"

इस समय इसकी चोटी हमको बिलकुल स्वच्छ नजर आ रही थी। यह अच्छी ऋतु की भविष्यवाणी थी, जो सत्य भी प्रतीत हो रही थी।

'नाटिलस' तेजी से चली जा रही थी। शाम को फाकलैंड द्वीप पुंज को पहुंची। इन्हीं की चोटियां मुझे कल दिखाई पड़ रही थीं। समुद्र भी यहां कम गहरा था। मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि यह दो बड़े द्वीप कई छोटे-छोटे द्वीपों से घिरे मैगेलन द्वीप हों।

जब फाकलैंड द्वीप की ऊंची-ऊंची चोटियां क्षितिज से लुप्त हो गईं, तब 'नाटिलस' १०-१५ फैदम की गहराई में डूब गई तथा अमेरिका के किनारे जा पहुंची। कप्तान नेमो न दिखाई पड़ा था।

३ अप्रैल तक 'नाटिलस' इस पैटागोनिया भाग में चलती रही। कभी समुद्र के ऊपर और कभी अंदर चलती थी। 'नाटिलस' इस बड़े मुहाने को पार कर ४ अप्रैल को पैरा-गुए देश से ५० मील दूर रह गई। वह अब भी उत्तर की ओर

दक्षिणी अमेरिका के किनारे चली जा रही थी। अब तक 'नाटिलस' जापान सागर में १६००० लीग यात्रा कर चुकी थी।

लगभग ११ बजे दिन को हम ३७ डिग्री देशांतर पर मकर रेखा को पार कर फ्रीओ अंतरीप के पास पहुंचे। नेडलैंड की इच्छा के विरुद्ध कप्तान नेमो आबादी के निकट ब्राजील देश के पास नहीं जाना चाहता था। इसलिए 'नाटिलस' बहुत तेजी से चली जा रही थी। 'नाटिलस' की चाल इतनी तेज थी कि कोई भी मछली या चिड़िया उसके साथ न चल पाती थी।

इसकी यही गति कई दिन तक रही और ९ अप्रैल की शाम को दक्षिणी अमेरिका का पूर्वी किनारा सेनराक अंतरीप दिखाई पड़ा। परंतु 'नाटिलस' सतह से काफी नीचे सागर के अंदर जा रही थी। इस जगह साढ़े तीन मील ऊंची केपवार्ड द्वीप की पहाड़ चोटी डूबे हुए एटलांटिस देश को घेरे खड़ी थी। इसका निचला भाग भी पहाड़ी ही है, जिसका दृश्य अत्यंत रमणीक है। मैंने वाचनालय के नक्शे में इनको देखा। दो दिन तक 'नाटिलस' गहरे सागर में ही चली, परंतु ११ अप्रैल को एकाएक ऊपर उठी। उस समय आमेजन नदी के मुहाने की जमीन दिखाई पड़ी।

भूमध्य रेखा पार कर ली। यहां से २० मील पर गाइना प्रदेश था। यहां फ्रांसीसियों का राज्य है और हमें शरण मिल सकती थी, परंतु हवा इतनी तेज थी कि साधारण नाव इसमें चल न सकती थी। नेडलैंड भी यह समझ गया होगा, क्योंकि वह मुझ से कुछ बोला नहीं। 'नाटिलस' से भाग निकलने का असफल प्रयत्न मैं करना भी नहीं चाहता था, क्योंकि इससे परिस्थिति और भी गंभीर हो सकती थी। मनोरंजक पुस्तकें पढ़ कर मैंने

अपना दिल बहलाने का प्रयत्न किया। 'नाटिलस' ११ और १२ अप्रैल को सागर-सतह पर तैरती रही। इस दिन जाल में काफी मछलियां थीं। इसमें कुछ बड़ी तथा कुछ छोटी थीं। कई-कई तो ४० पौंड तक वजनी थीं। कनसील ने भी एक मछली पकड़नी चाही। उस पर जोर से झपटा। मैं उसे रोकने ही वाला था कि उसने लपक कर उसे दोनों हाथों ने पकड़ लिया। उसने तुरंत कनसील को फेंक दूर दिया। कनसील के पैर ऊपर उठ गए तथा उसका आधा शरीर शून्य हो गया। उसने चिल्लाकर कहा, "मालिक, मुझे बचाओ।"

नेडलैंड और मैंने उसे उठा लिया। उसके शरीर पर मालिश की गई। जब वह होश में आया तो उसने कहा, "बड़ी भयानक मछली थी।"

मैंने उत्तर दिया, "हां, यह बिजली का-सा जोर का धक्का देने वाली मछली थी, जिसने तुमको इतनी जोर से धक्का दिया था।"

कनसील ने उत्तर दिया, "स्वामी, आप विश्वास रखें मैं इस से बदला ले लूंगा।"

"कैसे ?"

"मैं उसे खा जाऊंगा।"

उसने उस जाति की मछली उसी शाम को खाई, परंतु उसका गोश्त अच्छा न था।

दूसरे दिन १२ अप्रैल को दिन में 'नाटिलस' मारोनी नदी के मुहाने के पास डच किनारे पर पहुंच गई। यहां कुछ समुद्री गौएं दिखाई पड़ीं। यह बहुत सीधा शांत जानवर है। यह १८से २१ फुट तक लंबा तथा ८०० पौंड तक वजनी होता है। मैंने

कहा, "इन्हीं जानवरों की कमी के कारण समुद्र में विषैले पौधे काफी मात्रा में उग आते हैं।"

इसके बावजूद भी 'नाटिलस' के खलासियों ने अपने खाने के लिए इनमें से ६ गौएं पकड़ ही लीं। इनका गोश्त भेड़ और बकरी के गोश्त से अच्छा होता है। वे आसानी से पकड़ ली गईं। हजारों पौंड गोश्त सुखा कर इकट्ठा कर लिया गया। इनका शिकार कर 'नाटिलस' तट की ओर आगे बढ़ी। वहां सागर तल पर समुद्री कछुए सोते हुए दिखाई दिए। इनका शिकार करना कठिन था, क्योंकि इनके ऊपर मजबूत ढक्कन होता है, जिसमें भाला छिदाना कठिन होता है। 'नाटिलस' के यात्रियों ने कुछ मछलियों की पूंछों में अंगूठियां पहना कर उन्हें डोरी से बांधे रखा। ज्यों ही यह कछुए इन मछलियों को खाते, नाविक डोरियां खींच लेते थे।

इसी प्रकार नाविकों ने बहुत से कछुए पकड़ लिए। इनमें से कुछ तो गजों लंबे तथा चार सौ पौंड वजनी थे। शिकार के कारण 'नाटिलस' आमेजन नदी के निकट किनारे के पास रही, परंतु रात होते ही चटपट दूर चली गई।

४२

कई दिनों तक 'नाटिलस' अमेरिका के तटों से दूर दूर चलती रही। कप्तान मैक्सिको की खाड़ी या एंटिलस के सागरों को न जाना चाहता था। वैसे तो इन सागरों की गहराई १००

फैदम है, परंतु इसमें काफी द्वीप हैं तथा स्टीमर चलते हैं। इसलिए कप्तान इनमें यात्रा न करना चाहता था।

१६ अप्रैल को लगभग ३० मील दूर मार्टिनीक और गुआडालप दिखाई पड़े। उनकी ऊंची-ऊंची चोटियां बड़ी अच्छी लगती थीं। नेडलैंड अपनी योजना को कार्यान्वित करना चाहता था। वह चाहता था कि किसी द्वीप में पहुंचे या नाव लेकर भागे। इसके अतिरिक्त और हो ही क्या सकता था, परंतु वह यात्रा तभी अधिक सफल होती, यदि कप्तान के बिना जाने ही नेडलैंड कोई नाव हथिया सकता। खुले समुद्र में यह संभव न था।

मेरी, कनसील तथा नेडलैंड की इस विषय पर काफी बातचीत हो चुकी थी। हम लोग 'नाटिलस' में ६ महीने से कैद थे। हम लोग अब तक १७ हजार लीग यात्रा कर चुके थे। नेडलैंड ने एक प्रस्ताव रखा कि कप्तान से स्पष्ट बात करली जाय, कि हम लोगों को कब तक इस नाव में कैद रखेगा।

परंतु यह व्यर्थ था। कप्तान नेमो से इसकी आशा करना मूर्खता थी। हमें अपने पर ही भरोसा करना था, क्योंकि कुछ समय से वह गंभीर हो गया था। बहुधा आराम करता रहता और हम लोगों से मिलना-जुलना बंद कर रक्खा था। पहले वह मुझे समुद्री विशेषताओं को बड़े चाव से समझाता था। परंतु अब उसने मुझे स्वतः अध्ययन के लिए छोड़ दिया था और सैलून में आता ही नहीं था। उसमें यह क्या परिवर्तन हो गया और किस कारण ? शायद नाव में हम लोगों की उपस्थिति उसे न भाती हो।

मैंने नेडलैंड से मामले को पहले से समझ लेने के लिए

आगाह किया। यदि यह प्रयत्न विफल रहा तो कप्तान के दिल में शंका हो जाएगी और फिर हम लोगों की दशा और भी दयनीय हो जाएगी ।

इन सागरों में ५ फैदम गहराई में ही कितने दिलचस्प पदार्थ मैंने देखे। यदि मैं इस यात्रा पर न आता और 'नाटिलस' १००० और २००० फैदम की गहराई में न उत्तरी होती, तो इतने दृश्य देखने को कहां मिलते ।

२० अप्रैल को'नाटिलस' ७०० फैदम की गहराई में उतर आई। यहां निकट की जमीन पर पत्थरों के ढेर बिछे थे। ऊंची २ समुद्री पहाड़ियों की चोटियां दिखाई पड़ती थीं, जिनकी काली काली गुफाओं में 'नाटिलस' की रोशनी न पहुंच सकती थी। इन चट्टानों पर विविध समुद्री लताओं का बिछावन-सा बिछा था। इतने में कनसील ने चिल्ला कर हमारा ध्यान खिड़की की ओर खींचा। मैंने उसकी ओर देखा। नेडलैंड खिड़की की ओर झपटा। उसने चिल्लाकर कहा, "ओह कितना भयानक जीव है।"

यह आक्टोपस नाम का समुद्री दैत्य था यह ३२ फुट लंबा था और तेजी से दौड़ता चला आ रहा था। अपनी हरी हरी बड़ी आंखों से घूर कर देख रहा था। इसके आठ पैर सिर के पास से शुरू होकर पीछे तक थे तथा इसकी लंबाई से दोगुणा थे। इसके शरीर पर लगभग २५० बड़े-बड़े छेद दिखाई पड़ते थे। इसका वजन लगभग ४०,००० या ५०,००० पौंड रहा होगा। शायद जीव 'नाटिलस' की उपस्थिति के कारण क्रुद्ध हो गया था। अचानक हम लोग इसके पास आ पहुंचे। हम इस की जांच के अवसर को हाथ से जाने न देना चाहते थे।

एकाएक 'नाटिलस' रुक गई, धक्के से इसके सारे जोड़ हिल गए। मैंने पूछा, "क्या हम लोग कहीं फंस गए ?"

नेडलैंड ने उत्तर दिया, 'नाटिलस' अब भी पानी में है और अवश्य चलेगी।"

'नाटिलस' तैर अवश्य रही थी, परंतु आगे न बढ़ पाती थी, क्योंकि इसकी चर्खी के पंखे काम न कर रहे थे। एक ही मिनट बाद कप्तान नेमो ने अपने एक अधिकारी के साथ सैलून में प्रवेश किया।

मैंने उसको कुछ समय से न देखा था। वह कुछ असंतुष्ट सा मालूम हो रहा था। मुझ से कुछ न बोला। वह खिड़की की ओर गया तथा आक्टोपस को देख अपने अधिकारी से कुछ कहा। वह बाहर चला गया। तुरंत ही खिड़कियां बंद कर दी गईं। मैं भी कप्तान की ओर गया। मैंने कहा, "कितने आक्टोपस हैं ?"

कप्तान ने उत्तर दिया, "प्रोफेसर, हम उनसे आमने-सामने लड़ेंगे।"

मैंने कहा, "आमने-सामने !"

कप्तान ने कहा, "हां, चर्खी इसीलिए रोक दी गई है।"

"आप क्या करने जा रहे हैं ?"

"एक कठिन प्रयास। बिजली की गोलियों और कुल्हाड़ियों से मैं इस पर आक्रमण करूंगा।"

नेडलैंड बीच में बोला, "और यदि आप मेरी सहायता से इंकार न करें तो मैं अपने भाले से भी वार करूं।"

कप्तान ने कहा, "मिस्टर लैंड, मैं आपकी सहायता स्वीकार करता हूं।"

मैंने कहा, "हम सब लोग आपके साथ चलेंगे।"

यह कह कर मैं भी कप्तान के पीछे-पीछे बीच के जीने की ओर चला गया। वहां लगभग १० आदमी कुल्हाड़ियां लिए तैयार खड़े थे। कनसील और मैंने भी एक-एक कुल्हाड़ी ले ली। नेडलैंड ने अपने भाले को ऊंचा उठा लिया। इस समय 'नाटिलस' सागर-सतह पर आ गई। एक खलासी सब से नीचे के जीने पर खिड़की का एक बोल्ट खोल रहा था। तब तक एकाएक खिड़की जोर से ऊपर उठ गई। इसी की दराज में तुरंत ही आक्टोपस का एक लंबा पैर चमका। कप्तान नेमो ने उसे अपनी कुल्हाड़ी से काट डाला। इसी समय हम लोग चबूतरे पर पहुंचने के लिए भीड़ लगाए थे कि एक आक्टोपस के दो पैर खिड़की से अंदर आए और एक खलासी को उठा ले गए।

कप्तान नेमो जोर से चिल्लाया तथा उसके ऊपर झपटा। हम लोग भी उसी के पीछे दौड़े। कितना भयानक दृश्य था। आक्टोपस बेचारे खलासी को पकड़े था तथा वह जोर से सहायता के लिए चिल्ला रहा था। बेचारा खलासी पानी में अदृश्य हो गया। अब उसे उस भयानक जीव से कौन छुड़ाए। जीता लौटेगा भी या नहीं, यह कौन जानता था। कप्तान नेमो उस आक्टोपस के शरीर पर चढ़ गया तथा उसका दूसरा पैर भी काट डाला। 'नाटिलस' का प्रथम अधिकारी भी आक्रमणकारी दैत्य के साथ बहादुरी से मोर्चा ले रहा था। खलासी भी अपनी-अपनी कुल्हाड़ियों से युद्ध में जुटे थे।

भयानक बदबू आ रही थी। मैंने सोचा शायद उस आदमी की रक्षा हो, क्योंकि उस पकड़ने वाले आक्टोपस के सात पैर काटे जा चुके थे। एक ही बाकी रह गया था। इसी समय

कप्तान और उसका प्रथम अधिकारी उसकी ओर फिर झपटे। इसी बीच दैत्य ने अपनी पेट की थैली में इकट्ठा किया हुआ काला पदार्थ उगला। इससे हम लोग अंधे-से हो गए। जब यह बादल समाप्त हुए, तब दैत्य हमारे उस साथी के साथ लुप्त था। इस समय हम लोग जितने क्रोध से युद्ध कर रहे थे, इसका तो अनुमान ही नहीं किया जा सकता। 'नाटिलस' पर और दूसरे आक्टोपस भी आक्रमण कर रहे थे। नेडलैंड बार-बार अपना भाला उनकी हरी-हरी आंखों में घुसेड़ता था, पर इस से होता क्या था। अपने साथी को हम छुड़ा ही न सके। मेरा दिल भय से कितना धड़क रहा था। इसी बीच नेडलैंड के ऊपर आक्टोपस ने आक्रमण किया। मैं उसकी सहायता के लिए झपटा, परंतु कप्तान नेमो मेरे सामने था। नेडलैंड ने लगभग सारा भाला उसके दिल में घुसेड़ दिया। यह मल्लयुद्ध लगभग १५ मिनट तक होता रहा, तदुपरांत चोट खाए हुए सारे आक्टोपस मोर्चा छोड़ कर सागर लहरों में लुप्त हो गए। कप्तान खून से लथपथ लैंड के पास शांत खड़ा सागर की ओर देख रहा था, जो उसके एक साथी को निगल गया था। उसकी आंखों में आंसू आगए।

४२

२० अप्रैल का वह भयानक दृश्य हममें से किसी को भी न भूला था। यथार्थ में तो ऐसे दर्दनाक दृश्य को चित्रित करने में महान कवि विक्टर ह्यूगो ही सफल हो सकता था।

मैं कह चुका हूं कि कप्तान नेमो सागर की ओर देखकर रोने लगा था। उसका दुख महान था, क्योंकि वह इस यात्रा में दूसरा व्यक्ति था जो मर गया था। और इसकी मृत्यु भी कितनी भयानक तथा इसकी अंतिम क्रिया भी आक्टोपस द्वारा सागर में डुबा लेने के कारण उस मोती के कब्रिस्तान में न हो सकी थी।

कप्तान नेमो अब अपने कमरे में वापस चला गया। फिर कुछ समय तक वह मुझे दिखाई न पड़ा। उसका दुख, कमजोरी तथा कष्ट उसकी नाव 'नाटिलस' की चाल से ही मालूम हो रहे थे, क्योंकि 'नाटिलस' उसकी इच्छा की चेरी थी। चर्खी भी बहुत कम प्रयोग में लाई जा रही थी, परंतु इसके अंतर से उसके एक निवासी के समुद्र में समा जाने पर आंसू न बह रहे थे।

इसी प्रकार १० दिन गुजर गए तथा १ मई तक 'नाटिलस' ने अपना रास्ता न निश्चित किया। इस समय 'नाटिलस' बहामा चैनेल के पास समुद्र की सबसे बड़ी धारा गल्फ स्ट्रीम में थी। इसकी मछलियां, तापक्रम तथा किनारे दूसरों से बिलकुल भिन्न हैं। वास्तव में यह एक धारा है, जो अतलांतिक सागर में स्वतंत्र रूप से बहती है तथा इसका पानी समुद्र के पानी से अलग रहता है और सागर-जल से भी अधिक खारी होता है। इसकी औसत गहराई ३००० फुट तथा चौड़ाई ६० मील है। इसकी चाल १ घंटे में ३ मील से भी अधिक हो जाती है। यह सारे विश्व की अन्य नदियों से भिन्न है।

इस धारा के निकलने का स्थान बिस्के की खाड़ी है। इस की कप्तान मारे ने खोज की थी। यहां इसके पानी का रंग हल्का

तथा तापक्रम कम रहता है। यहां से यह दक्षिण की ओर मुड़ कर अफ्रीका के किनारे को गर्म करती हुई अतलांतिक सागर को पार कर ब्राजील के किनारे सेनराक अंतरीप को पहुंचती है। यहां से इसकी दो शाखाएं हो जाती हैं, जिनमें से एक एंटिलस सागर के तापक्रम को गर्म करने चली जाती है। गल्फस्ट्रीम का काम विभिन्न सागरों के जलों के तापक्रम में समानता लाना तथा ध्रुवीय पानी में गरम देशों के जल का मिश्रण करना है। यह अपना काम यहीं से आरंभ करती है। मैक्सिको की खाड़ी में अधिक गर्म होकर यह न्यूफाउंडलैंड की ओर चली जाती है। वहां डेविस जलडमरूमध्य की ठंडी धारा से मिल कर के महासागर में प्रवेश करती है। लगभग ४३ डिग्री देशांतर पर दो भागों में विभाजित हो जाती है। इसमें से एक उत्तरी-पूर्वी हवाओं के झोंकों से बिस्के की खाड़ी को लौट आती है तथा दूसरी आयरलैंड और नार्वे के किनारे किनारे चली जाती है। इसका तापक्रम ४० डिग्री कम हो जाता है तथा वह ध्रुव सागर में विलीन हो जाती है।

इसी धारा के प्रवाह में 'नाटिलस' अपनी चर्खी सनसनाती हुई चली जा रही थी। बहामा चैनेल से निकल कर गल्फ-स्ट्रीम १४ लीग चौड़े तथा १५० फैदम गहरे क्षेत्र में ५ मील प्रति घंटा की चाल से बहती है। जैसे यह उत्तर की ओर बढती है, इसकी चाल मंद होती जाती है। परंतु इसकी चाल इतनी ही रहनी चाहिए, क्योंकि यदि इसकी दिशा और चाल में परिवर्तन हुआ, तो यूरोप का जलवायु कैसा होगा, इसका अनुमान तक भी नहीं किया जा सकता।

दोपहर को मैं और कनसील चबूतरे पर गए। मैं कनसील

को गल्फस्ट्रीम की विशेषताएं बताने लगा। जब सारा हाल बता चुका तो कनसील को हाथ डुबा कर पानी परखने को कहा। कनसील ने हाथ डुबाकर देखा, परंतु गर्मी या सर्दी का कुछ भी आभास न होने पर उसे आश्चर्य हुआ।

मैंने उससे कहा, "मैक्सिको की खाड़ी में गल्फस्ट्रीम का तापक्रम हमारे शरीर के तापक्रम जैसा ही होता है। गल्फस्ट्रीम एक बड़ी भट्टी है, जिससे यूरोपीय तटों को अपार गर्मी मिलती है। इसे थोड़ा न समझो, कल्पना करो कि अमेरिका की आमेजन अथवा मिसूरी नदियों में लोहा भरा है, यदि गल्फस्ट्रीम की सारी गर्मी एकत्र की जाय, तो वह निरंतर इन नदियों में भरे लोहे को पिघली अवस्था में रखने के लिए पर्याप्त होगी। धारा की चाल ५ फुट प्रति सेकेंड है। इसका पानी चारों ओर के पानी से भिन्न है तथा नमक की अधिकता के कारण इसका रंग गहरा नीला है। इसके चारों ओर समुद्र का पानी हरा है। यह धारा अनेक जीवित चीजें भी अपने साथ बहा लाती है। सभी प्रकार की मछलियां तथा अन्य भयानक जीव इसकी गर्म धारा में आसानी से विहार करते रहते हैं। रात को तो यहां तक होता है कि इसका चमकदार पानी बिजली की रोशनी को भी मात कर देता है। तूफानी ऋतु में तो कहना ही क्या।

८ मई को हम हैटेरस अंतरीप के पास उतरी कैरोलीनयंस तक ही पहुंचे थे। यहां गल्फस्ट्रीम १५ मील चौड़ी तथा १०५ फैदम गहरी है। इस पर 'नाटिलस' इधर उधर झूमती चली जा रही थी, मानो बिना पतवारिए के चल रही हो। मैंने सोचा कि इस समय भाग निकलने का अच्छा मौका है। क्योंकि इसके चारों ओर निकट ही आबाद द्वीप हैं तथा समुद्र

में भी न्यूयार्क और बोस्टन से मैक्सिको खाड़ी के बीच सैकड़ों स्टीमर चलते हैं। दिन रात छोटी-छोटी नावें किनारे के एक स्थान से दूसरे स्थान को व्यापारी सामान लाती ले जाती हैं, कोई न कोई हम लोगों को अवश्य ही स्थल पर पहुंचा देगी। यहां से संयुक्तराष्ट्र अमेरिका ३० मील ही दूर है। यही सबसे अच्छा अवसर है।

परंतु एक ही कारण नेडलैंड की योजना के सफल होने में बाधक था, वह था बुरा मौसम। यह ऐसा देश है जहां प्राय: तूफान आया करते हैं। ऐसे तूफान में चलना कोई बुद्धिमानी न थी, वरन् काल को निमंत्रण देना था। नेडलैंड स्वयं यह बात जानता था परंतु वह बहुत अधीर हो रहा था। कैद उसको अब न भाती थी। भाग चलने के अतिरिक्त उसके दर्द का कोई दूसरा इलाज न था।

उस दिन उसने मुझ से कहा, "महाशय, इसका अंत कब होगा। मैं जानना चाहता हूं अब क्या परिस्थिति है, क्योंकि कप्तान नेमो अब स्थल से दूर उत्तर की ओर चला जा रहा है। मैं आपसे कहता हूं कि मैं दक्षिणी ध्रुव से ही भर पाया; अब मैं उत्तरी ध्रुव में जाने को तैयार नहीं।"

"परंतु नेड, किया ही क्या जा सकता है; ऐसी ऋतु में चला भी कैसे जाय ?"

"मुझे अपनी पुरानी बातें याद हो आई हैं। कप्तान को स्पष्ट बता दिया जाय। आपने अपने देश के करीब कुछ नहीं कहा, परंतु मैं ऐसा नहीं कर सकता। मैं अपने देश को पास आया देखकर उसे अवश्य कहूंगा। जब अपनी दशा पर विचार करता हूं तो मुझे बहुत क्रोध आता है। मेरे रोंगटे खड़े हो जाते हैं।

मैं आप से सत्य कहता हूं, कि मैं समुद्र में कूद पड़ूंगा । मैं इसमें नहीं रह सकता, काफी तंग आ गया हूं ।"

नेडलैंड का सारा धैर्य समाप्त हो चुका था । उसकी प्रौढ़ प्रकृति अनिश्चित कैद के लिए असह्य थी । उसका चेहरा दिनों-दिन उतरता ही जाता था तथा क्रोध बढ़ता जाता था । मैं उसके कष्ट का अनुमान ही कर सकता था । मुझे भी रोग ने घेर लिया था । सात महीने हो गए थे, मैंने स्थल के बारे में एक बात भी न सुनी थी । आक्टोपसों से युद्ध के बाद मुझे सारी चीजें भिन्न ही दिखाई पड़ती थीं ।

"नेड, तुम चाहते हो कि मैं कप्तान से पूछूं कि हम लोगों के बारे में उसका क्या ख्याल है ?"

"हां, आप ही पूछें ?

"वैसे तो कप्तान यह पहले ही स्पष्ट कर चुके हैं ?"

"हां ठीक है, परंतु निश्चय करने के लिए अंतिम बार पूछ लिया जाय । आप मेरी तरफ से कह दीजिए ।"

"परंतु मुझे अब वे मिलते कहां हैं । वह तो मुझ से दूर-दूर भागते हैं ।"

"उनसे मिलने का यह कारण आप बता सकते हैं ।"

"अच्छा, मैं कप्तान से पूछूंगा ।"

नेडलैंड ने पूछा "कब ?"

"जब मैं उनसे मिलूंगा ।"

"प्रोफेसर, क्या आप चाहते हैं कि मैं उनसे मिलूं ?"

"नहीं नहीं, यह आप मेरे ऊपर छोड़ दें, कल तक ।"

नेड ने कहा, "कल नहीं, आज ही ।"

मैंने उत्तर दिया, "बहुत अच्छा, मैं उनसे आज ही मिल

लूंगा ।"

मैं अकेला रह गया। नेडलैंड से जो वादा किया था उसे तुरंत ही पूरा करना चाहता था; क्योंकि मेरी यह आदत है कि मुझे जो काम करना होता है, उसे जल्दी से जल्दी कर डालता हूं। टालने में मुझे विश्वास नहीं।

मैं अपने कमरे में घुसा। मुझे मेरे कमरे के पास कप्तान के कमरे में किसी के चलने-फिरने की आहट मिली। यह अवसर हाथ से न निकलने देना चाहता था। मैंने दरवाजा खटखटाया, परंतु कोई उत्तर न मिला। फिरसे प्रयत्न करने पर दरवाजा खुल गया। कप्तान कमरे में मौजूद था। वह मेज पर झुका कुछ कर रहा था। मेरी आवाज उसने सुनी न थी। मैंने मिलने का निश्चय ही कर लिया था। पास पहुंचा तो उन्होंने एकाएक सिर उठा कर मेरी ओर देखा।

"आप कैसे ? आप क्या चाहते हैं ?"

"आपसे ही कुछ कहना है।"

"परंतु मैं इस समय काम में व्यस्त हूं।"

कप्तान की इस भेंट से मुझे कोई उत्साह न मिला, फिर भी मैंने निश्चय कर लिया कि अपने काम को स्थगित नहीं कर सकता। इसी कारण मैंने शांतिपूर्वक कहा, "कप्तान, मैं जिस विषय पर आपसे बात करना चाहता हूं, वह टल नहीं सकती।"

कप्तान ने व्यंग में उत्तर दिया, "कहिए महाशय, क्या है। क्या आपने कोई नया आविष्कार किया है, जिसे मैं नहीं समझ सका ? क्या सागर का कोई और रहस्य आपको मालूम हुआ ?"

इन बातों का मुझ से इस समय कोई संबंध न था, फिर भी जब तक मैं इसका उत्तर दूं कप्तान ने एक हस्तलेख की

ओर इशारा करके गंभीरतापूर्वक कहा, "प्रोफेसर, यह हस्तलेख कई भाषाओं में लिखा है। इसमें मेरी सारी समुद्री यात्रा का वर्णन है। और यदि ईश्वर ने चाहा, तो यह हम लोगों के साथ नष्ट भी न होगा। हम लोगों में से 'नाटिलस' में जो सबसे अंत में जीवित बचेगा, वह इसे एक अच्छे डिब्बे में बंद कर सागर में छोड़ देगा तथा समुद्री धाराएं उसे जहां चाहेंगी पहुंचा देंगी। इस लेख में हम लोगों के जीवन का सारा इतिहास लिखा है तथा उस पर मेरे हस्ताक्षर हैं।"

इस आदमी का नाम, इसका इतिहास, जिसे उसने स्वयं लिखा है, और इसका यह रहस्य एक दिन खुल ही जाएगा ? मैंने सोचा, यही बात करने का अवसर है।

मैंने उत्तर दिया, "मैं आपके इस विचार से सहमत हूं। आपके परिश्रम का फल अवश्य मिलना चाहिए, परंतु आपका तरीका बहुत पुराना मालूम पड़ता है। कौन जानता है कि हवा इसे कहां ले जाए तथा यह किस के हाथ में पड़े ? क्या कोई इससे अच्छा साधन आपके पास नहीं है ? क्या आप या आपके साथी, कप्तान ने मेरी बात काट कर कहा--"नहीं, कदापि नहीं।"

"परंतु मैं और मेरे साथी आपके इस हस्तलेख को सुरक्षित रख सकते हैं, यदि आप हमें स्वतंत्रता दें।"

कप्तान ने उठकर कहा, "महाशय, स्वतंत्रता ?"

"हां कप्तान; मैं इसी विषय पर आपसे बात करने आया था। हम लोग आपकी नाव में सात महीने से हैं और अब मैं अपने तथा अपने साथियों की ओर से पूछना चाहता हूं कि क्या आप हमें यहां आमरण रखेंगे ?"

"प्रोफेसर, मैंने जो उत्तर आपको सात महीने पहले दिया

था, वही अब भी देता हूं। इस नाव में जो आ जाता है वह फिर लौट कर नहीं जाता।"

"यह तो दासता है।"

"आप इसे जो चाहें कहें।"

"परंतु, कप्तान, हर दास को कभी न कभी अपने को स्वतंत्र कराने का अधिकार प्राप्त है। और इसके लिए वह जो भी साधन अपनाए वह सही है।"

कप्तान नेमो ने उत्तर दिया, "आपके इस अधिकार को मैंने कब छीना है। क्या मैंने अपने साथ रखने की कोई कसम ली है?"

कप्तान नेमो मेरी ओर देखने लगा। मैंने उससे कहा, "हम लोग भविष्य में इस विषय पर बात न करेंगे। परंतु इस समय यह बात चल पड़ी, इसलिए कह दिया। मेरे लिए अध्ययन एक नशा है, जिससे मैं सारी चीजें भूल सकता हूं। आपकी तरह मैं भी अज्ञातवास कर सकता हूं तथा उसका फल भविष्य के लिए एक डिब्बे में, वायु और लहरों को समर्पित कर सकता हूं। मैं आपकी प्रशंसा करता हूं क्योंकि मैं आपको कुछ समझ सका हूं; परंतु इसके अतिरिक्त आपके जीवन के अन्य पहलुओं से मेरा तथा मेरे साथियों का कोई संबंध नहीं है। हम लोग आपके दुख को समझते हैं तथा आपके सराहनीय कार्यों के लिए मेरे दिल में स्थान है। यह तो प्राकृतिक नियम है। मित्र और शत्रु दोनों से समता का व्यवहार करना मेरा कर्तव्य है। इसी विचार से मैं आपकी इन सब बातों से सहमत हूं। क्या आपने यह भी कभी सोचा है कि नेडलैंड जैसे आदमियों के लिए स्वतंत्रता से प्रेम तथा परतंत्रता से घृणा स्वाभाविक है।"

यह कह कर मैं चुप हो गया। कप्तान नेमो उठा। उसने

कहा, "नेडलैंड क्या सोचता है, मुझे इसकी कोई परवाह नहीं। मैं उसे नहीं लाया और न मैं उसे अपने लाभ के लिए यहां रखे हूं। मैं इसके अतिरिक्त और कुछ भी उत्तर नहीं देना चाहता। इस विषय पर मेरी और आपकी यह प्रथम और अंतिम बातचीत होनी चाहिए। भविष्य में मैं इस प्रकार की बात सुनूंगा भी नहीं।"

मैं वापिस चला आया। अब परिस्थिति स्पष्ट हो गई थी। मैंने सारा हाल अपने साथियों से कह सुनाया।

नेडलैंड ने कहा, "अब हम लोग समझ गए कि उस मनुष्य से कोई आशा नहीं। 'नाटिलस' लांग द्वीप की तरफ जा रही है, चाहे जैसा मौसम हो, हम लोग अवश्य भाग चलेंगे।"

परंतु आकाश में भयानक रूप से बादल घिरने के चिन्ह दिखाई दे रहे थे। सारा वातावरण कोहरे से पूर्ण तथा सफेद हो रहा था। ऊंची तरंगें उठ रही थीं।

'नाटिलस' १८ मई को जैसे ही न्यूयार्क से कुछ मील दूर लांग द्वीप के पास पहुंची कि तूफान आ गया। मैं इस दृश्य का वर्णन कर सकता हूं क्योंकि इस बार 'नाटिलस' जल के अंदर न रह सागर-सतह पर ही थी।

दक्षिण-पच्छिम हवा ४५ फुट प्रति सेकेंड की चाल से चलने लगी, जो ३ बजे शाम के कुछ ही पहले ७५ फुट प्रति सेकेंड हो गई। यही तूफान था।

कप्तान नेमो चबूतरे पर ही बैठा रहा। वह अपनी कमर में एक रस्सी बांधे था, जिससे हवा उसे उड़ा न ले जाय। मैं भी चबूतरे पर चढ़ अपनी कमर बांध कर बैठ गया और तूफान का मुकाबिला करने लगा।

सागर की लहरें ऊपर उठतीं तथा बादल नीचे आ उन्हें चूमते। लहरों की ऊंचाई और भी बढ़ने लगी। 'नाटिलस' उन्हीं में कभी सीधी, कभी तिरछी हो जाती थी।

५ बजे सायं वर्षा होने लगी। तूफान की चाल ४० मील प्रति घंटा हो गई। ऐसी ही अवस्था में मकान, दरवाजे और लोहे के फाटक उड़ जाते हैं।

ज्यों-ज्यों रात होती जाती थी, तूफान भी तीव्र होता जाता था। रात को क्षितिज पर एक जहाज डगमगाता दिखाई पड़ा। शायद वह न्यूयार्क, लिवरपूल या हैवेरे के वीच चलने वाला स्टीमर था। थोड़ी ही देर में वह अंधकार में लुप्त हो गया।

१० बजे रात को बादलों में आग-सी लग गई तथा चारों ओर बिजलियां चमकने लगीं। इनके प्रकाश को मैं सहन न कर सकता था, परंतु कप्तान नेमो उनका इतना अभ्यस्त था कि उन्हीं की ओर टकटकी लगाए देखता रहा। हवा, बादल तथा लहरों के भीषण शोर से वातावरण गूंज रहा था। वायु के भंवर पूर्व से चल उत्तर-पच्छिम-दक्खिन का चक्कर लगा, अपनी जगह पर वापस आ जाते थे। 'नाटिलस' के अंदर भी पैर एक जगह न रुकते थे।

लगभग आधी रात को कप्तान नेमो भी अंदर चला आया। टंकियां भरने की आवाज सुनाई दी। 'नाटिलस' धीरे-धीरे पानी के अंदर धंसने लगी।

खिड़कियों से बड़ी-बड़ी डरी हुई मछलियां इस तीव्र पानी में परियों की भांति दिखाई पड़ रही थीं। कुछ पर बिजली की चमक भी पड़ जाती थी।

'नाटिलस' अब भी अंदर घुस रही थी। मैं समझता था

कि शायद ८ फैदम की गहराई में पानी शांत हो, परंतु ऐसा न था। हमें शांत पानी पाने के लिए २५ फैदम गहराई में जाना पड़ा। यहां कितनी शांति थी। कौन कह सकता था कि सागर की सतह पर तूफ़ान आया है।

४४

तूफान ने हमें फिर एक बार पूर्व की ओर फेंक दिया। न्यूयार्क या सेंट लारेंस के तटों को भाग चलने की सारी आशाओं पर पानी फिर गया। बेचारा नेडलैंड भी हताश होकर कप्तान की तरह अपना कमरा बंद कर बैठ गया। मैं और कनसील एक ही जगह बैठे रहे।

'नाटिलस' इस समय उत्तर-पूर्व की ओर घूम गई थी। कुछ दिनों तक वह इधर-उधर कभी सागर सतह पर, कभी उसके अंदर चलती रही। कोहरा काफी था। इसी कोहरे के कारण दुर्घटनाएं हो जाती थीं। कहीं-कहीं तो 'नाटिलस' को तेज धक्का भी लग जाता था।

सागर-तलहटी में भी टूटे-फूटे जहाज तथा उनके अन्य भाग झलक रहे थे। कभी-कभी 'नाटिलस' की रोशनी से साफ-साफ भी दिखाई पड़ जाते थे। 'नाटिलस' इन्हीं के कब्रिस्तान के बीच चली जा रही थी।

१५ मई को हम लोग न्यूफ़ाउंडलैंड के किनारे के अंतिम दक्षिणी भाग में पहुंच गए। यह तट न्यूफाउंडलैंड के किनारे के पास

कुछ हो सौ फैदम गहरा है, परंतु दक्षिण की ओर कहीं-कहीं १५०० फैदम तक । यहां गल्फस्ट्रीम चौड़ी हो जाती है । इसकी चाल तथा गर्मी भी मंद हो जाती है तथा रंग-रूप में साधारण सागर जैसी ही रह जाती है ।

इसी अथाह सागर तट पर मुझे काड मछलियां दिखाई पड़ीं । इन्हें देख मुझे अत्यंत आश्चर्य हुआ ।

काड पहाड़ी मछलियां होती हैं । न्यूफाउंडलैंड का किनारा एक समुद्री पहाड़ ही है । 'नाटिलस' इन्हीं मछलियों के झुंड के बीच जा ही रही थी कि कनसील ने कहा, "ये कैसी काड मछलियां हैं ? मैं समझता था कि काड मछलियां चपटी होती होंगी ।"

मैंने कहा, "वे केवल दूकान पर ही चपटी होती हैं, क्योंकि वहां काट कर सुखा ली जाती हैं । पानी में वे अन्य मछलियों की भांति होती हैं । इनकी चाल बहुत तेज होती है ।"

कनसील ने कहा, "कितना बड़ा झुंड है ?"

"इससे भी अधिक होता है, परंतु इनके दुश्मन, आदमी तथा अन्य बड़ी मछलियां, इन्हें मार डालते हैं । क्या तुम जानते हो कि एक-एक मछली कितने-कितने अंडे देती है ?"

"मैं अनुमान करता हूं कि ५,००,००० ।"

"नहीं मेरे मित्र, ११० लाख ।"

"११० लाख; नहीं जब तक मैं गिन न लूं, मैं स्वीकार न करूंगा ।"

"फ्रांसीसी, अंग्रेज, अमेरिकी, नार्वे वाले सभी हजारों की संख्या में इनका शिकार करते हैं । यदि इस प्रकार पैदा न होतीं, तो अब तक समाप्त भी हो गई होतीं ।"

"यदि सारे अंडे जीवित रहते तो चार काड ही इंगलैंड, अमेरिका तथा नार्वे भर को खाने के लिए काफी होते ।"

'नाटिलस' इस आबाद भाग में अधिक देर तक न रुकी । ४२° अक्षांश तक यह उत्तर की ओर न्यूफाउंडलैंड के सेंट जान तथा हार्ट कंटेंट के सामने तक पहुंच गई ।

इसके आगे 'नाटिलस' उत्तर का रुख बदल कर पूर्व की ओर मुड़ी ।

१७ मई को यह हार्ट कंटेंट से ५०० मील दूर १४०० फैदम की गहराई में पहुंची । यहां जमीन पर तार पड़ा था । कनसील ने इसे बड़ा सांप समझा । मैंने उसे समझाने का प्रयत्न किया और सारा विवरण बतलाया ।

पहला तार इंगलैंड और अमेरिका के बीच १८५७ और १८५८ ई० में बिछाया गया था । परंतु ४०० समाचार भेजने के बाद इसने काम करना बंद कर दिया । १८६३ ई० में इंजीनियरों ने एक नया तार २००० मील लंबा और ४५०० टन वजनी बनाया । यह ग्रेट ईस्टन पर लगाया गया, परंतु यह प्रयत्न भी विफल रहा ।

अब २५ मई को 'नाटिलस' ठीक उसी स्थान पर १९० फैदम की गहराई में थी, जहां पर इन इंजीनियरों का प्रयत्न विफल हुआ था। यह स्थान आयरलैंड के किनारे से ६३८ मील दूर है । २ बजे शाम को पता चला कि यूरोप का संबंध विच्छिन्न हो गया था । जहाज के विद्युत विशेषज्ञ ने इसे काट कर ठीक करने का निश्चय कर लिया था, और ११ बजे रात को टूटे हुए स्थान का पता लगाया । वहां पहुंच उसे जोड़ दिया गया तथा फिर समुद्र में छोड़ दिया गया । किंतु थोड़े ही दिन बाद

यह फिर टूट गया। अब की बार इसका कहीं पता ही न लगा।

परंतु इस पर भी अमेरिकी हताश न हुए। साहसी साइ-प्रस फील्ड इसका आयोजक था। उसने एक बार फिर अपने भाग्य का निर्णय करने का निश्चय किया। उसने फिर चंदा इकट्ठा किया। दूसरा तार पहले से अच्छी परिस्थिति में समुद्र में डाला गया। यह तार गटापार्चा से ढका था तथा इसके ऊपर धातु की परत चढ़ी थी।

'नाटिलस' अब भी दक्षिण की ओर चली जा रही थी। ३० मई को इंगलैंड और सिली द्वीप के आखिरी किनारे का अंतिम स्थल दिखाई पड़ा।

यदि 'नाटिलस' को इंगलिश चैनेल में घुसना है, तो इसे पूर्व की ओर जाना चाहिए, परंतु वह ऐसा न कर रही थी।

३१ मई को दिन भर 'नाटिलस' सागर में चक्कर ही लगाती रही। मुझे यह बहुत मनोरंजक लगता था। शायद वह कोई ऐसी जगह ढूंढ़ रही थी जो उसे मिलती न हो। दोपहर को कप्तान नेमो स्वयं आए। मुझ से कुछ न बोले। आज वह दुखी से जान पड़ते थे। क्यों इतना दुःखी थे? क्या यूरोपीय तटों पर आने का दुख था? या उन्हें अपने छोड़े हुए देशों की याद आ गई थी? यही बातें मेरे दिमाग में काफी देर तक घूमती रहीं। मुझे कुछ ऐसा पूर्वाभास होता था कि शायद कप्तान का रहस्य खुलने वाला हो।

दूसरे दिन पहली जून को भी 'नाटिलस' उसी प्रकार चक्कर लगाती रही। यह सागर में किसी निश्चित स्थान की तलाश में थी। कप्तान कल की भांति आज भी सूर्य की ऊंचाई नापने के लिए आया, परंतु इस समय वातावरण शांत था।

आकाश भी निर्मल था। क्षितिज में ८ मील दूर एक जहाज दिखाई पड़ा। इसके मस्तूल पर किसी देश का झंडा न फहरा रहा था। इससे उसकी राष्ट्रीयता का पता न लग सका।

कुछ मिनट बाद कप्तान ने सूर्य की ठीक उंचाई की नाप ली तथा कुछ अन्य परीक्षण भी किए। शांत जल इन परीक्षणों में सहायता दे रहा था। 'नाटिलस' अचल थी।

इस समय मैं चबूतरे पर था। कप्तान जब परीक्षण कर चुका तो उसने कहा, "अच्छा, हम यहां हैं।"

वह खिड़की से नीचे चला गया। क्या कप्तान ने उस जहाज को, जो हमारी ओर आ रहा था, देख लिया था? मैं यह न जान सका।

मैं सैलून को वापस चला गया। खिड़कियां खोल दी गईं। मैंने टंकियों में पानी भरने की आवाज सुनी। 'नाटिलस' सीधी सागर में समाने लगी। इसकी चर्खी भी बंद कर दी गई थी। थोड़ी ही देर में वह ४१८ फैदम की गहराई में जा रुकी।

इस समय सैलून की छत की बिजली बंद कर दी गई थी, परंतु खिड़कियां अब भी खुलीं थीं। खिड़कियों से सागर लगभग आधा मील चारों ओर 'नाटिलस' के प्रकाश से चम-चम चमक रहा था।

मैंने खिड़की से देखा तो चारों ओर शांत पानी के सिवाय और कुछ न दिखाई पड़ा।

नीचे कुछ बड़ा-सा पदार्थ दिखाई पड़ा। मैं उसे ध्यान से देखने लगा। यह सफेद से पदार्थ से चारों ओर से घिरा था, मानो बर्फ से जम गया हो। ध्यान से देखने से मालूम हुआ कि यह कोई डूबा हुआ जहाज था। सफेद चूने से लदा हुआ यह

जहाज कई वर्षों से इसी प्रकार सागर तल पर पड़ा था।

यह कौन सा जहाज था ? 'नाटिलस' इस कब्र को देखने क्यों आई थी ? क्या इसी जहाज के ही कारण 'नाटिलस' इतनी गहराई तक आई थी ?

मैं कुछ समझ न सका। इतने में कप्तान को नीचे आते तथा धीरे-धीरे यह कहते सुना, "यह जहाज मार्सेलीज़ है। यह ७४ तोपें लेकर सन् १७६२ ई० में चला था। १३ अगस्त सन १७७८ ई० में इसके कप्तान पालिप वरट्रीअक्स ने बड़ी वीरता से 'प्रेस्टन' से युद्ध किया था।

४५

कप्तान के अंतिम शब्दों में उसकी राष्ट्रीयता की झलक मिल गई थी। उसके प्रति मेरे सम्मान की भावना बहुत बढ़ गई थी। वह दोनों हाथ फैलाए उस जहाज की ओर ध्यान से देख रहा था। शायद मैं यह कभी न समझ सकूं कि वह कौन था ? कहां से आया था तथा कहां वह जा रहा था। कप्तान तथा उसके साथी इस नाव में योंही न आए थे। विश्व के प्रति घृणा उन्हें यहां ले आई थी और यह घृणा अब भी समाप्त न हुई थी।

क्या यही घृणा अब भी बदले की तलाश में थी ? यह तो भविष्य ही बता सकेगा।

इसी बीच 'नाटिलस' सागर-सतह की ओर चढ़ने लगी।

जहाज़ धीरे-धीरे छिप गया। तुरंत ही पता चला कि 'नाटिलस' सागर की सतह पर आ गई।

मैंने कप्तान की ओर देखा, परंतु उसने कोई ध्यान न दिया।

मैंने कहा, "कप्तान।"

उसने उत्तर न दिया।

मैं उसे छोड़ चबूतरे पर चला गया। नेड और कनसील यहां पहले से ही थे।

मैंने पूछा, "यह शोर कैसा है?"

नेडलैंड ने उत्तर दिया, "बंदूक की गोली की आवाज है।"

मैंने जो जहाज पहले देखा था, उसी की ओर देखने लगा। वह अब 'नाटिलस' के निकट आ गया था तथा तेजी से आगे बढ़ रहा था। वह प्रायः ६ मील दूर होगा।

"नेड, यह कौन जहाज है?"

नेडलैंड ने उत्तर दिया, "इसके मस्तूल देखकर मैं शर्त लगाकर कह सकता हूं कि वह लड़ाकू जहाज है। जान पड़ता है कि वह 'नाटिलस' को हम लोगों समेत नीचे डुबा देगा।"

कनसील ने कहा, "मित्र नेड, 'नाटिलस' को वह क्या हानि पहुंचा सकता है? क्या वह इस पर पानी के अंदर भी हमला कर सकता है? क्या वह इसका सागर की तलहटी में पता लगा सकता है?"

मैंने कहा, "नेडलैंड, क्या तुम यह बता सकते हो कि वह जहाज किस देश का है?"

नेड ने ध्यान से उस जहाज की ओर देखा।

उसने उत्तर दिया, "नहीं महाशय, मैं नहीं कह सकता कि

वह किस देश का है, क्योंकि इसके मस्तूल पर कोई झंडा नहीं लगा है। किंतु इतना मैं अवश्य कह सकता हूं कि यह लड़ाकू जहाज है।"

लगभग १५ मिनट तक हम लोग उस जहाज की ओर देखते रहे। मेरा अब भी विश्वास था कि उसने 'नाटिलस' को नहीं देखा है।

इतने में नेडलैंड ने घोषित किया कि वह लड़ाई का बड़ा जहाज है, क्योंकि उस पर दो डेक हैं तथा वह लोहे से ढका है।

उसकी दोनों चिमनियों से काला-काला धुआं निकल रहा था। इस पर कोई रंग भी न था, जिससे कुछ अनुमान लगाया जा सके।

वह तेजी से हम लोगों की ओर चला आ रहा था। यदि कप्तान नेमो ने इसे निकट आने दिया, तो हम लोगों को शायद भागने का मौका न मिले।

नेडलैंड के मुझ से कहा, "महाशय, यदि वह जहाज हम लोगों से एक मील दूर तक आ पहुंचे, तो मैं सागर में कूद पड़ूंगा। मैं आपको भी सलाह देता हूं कि आप भी ऐसा ही करें।"

मैंने नेडलैंड की इस बात का कोई उत्तर न दिया तथा उसी जहाज की ओर टकटकी लगाए देखता रहा। वह चाहे अंग्रेजी हो या फ्रांसीसी, अमेरिकी हो या रूसी, यदि हम लोग उसके निकट पहुंच गए, तो वह हमें अवश्य शरण दे देगा।

कनसील ने कहा, "आप यह भी याद रखें कि हम लोगों को कुछ तैरने का भी अनुभव है। और जब नेड कूद पड़ेगा और कप्तान उसके पास जाना चाहेगा, तो वह 'नाटिलस' को

तो जहाज के पास नहीं ले जाएगा। अतः हम लोगों को ही नाव खेकर पास आने को कहेगा।"

मैं इसका उत्तर देने ही वाला था कि जहाज के अग्रभाग से सफेद धुआं निकला और कुछ ही सेकेंड बाद किसी वजनी पदार्थ के पानी में गिरने से उत्पन्न बौछार 'नाटिलस' पर आ गिरी। मैंने चिल्लाकर कहा, "हम पर वह लोग क्यों फायर करते हैं ?"

कनसील ने दूसरे गोले से उछले पानी के छींटे अपने पर से हटाकर कहा, "यदि आप कहें तो मैं बताऊं। वे लोग इसे एक बड़ी ह्वेल मछली समझे होंगे। इसीलिए इस पर गोलियां चला रहे हैं।"

नेडलैंड ने मेरी ओर देखकर उत्तर दिया, "शायद यही कारण हो।"

मेरे दिमाग को एकाएक एक सूझ मिली। क्या अब भी इस अज्ञात 'वस्तु' को लोग भयानक जीव समझते होंगे। 'नाटिलस' ने जब 'अब्राहम लिंकन' पर आक्रमण किया था, उस समय उसका कप्तान समझ गया होगा कि यह 'वस्तु' कोई समुद्री भयानक जीव नहीं, बल्कि सागर के अंदर चलने वाली कोई पनडुब्बी है। और अब वह लोग इस शक्तिशाली पनडुब्बी की प्रत्येक सागर में तलाश कर रहे होंगे।

सारे पिछले दृश्य मेरे सामने से गुजर गए। जो जहाज हमारी ओर बढ़ता चला आ रहा था, उसमें अब मुझे मित्रों के बजाय बेरहम शत्रु ही नजर आ रहे थे।

इसी बीच गोले हमारे चारों ओर बरस रहे थे, यद्यपि सब पानी में गिरते थे, 'नाटिलस' तक कोई भी गोला न

पहुंच सका था।

इस समय वह जहाज हमसे ३ मील से दूर न था। कप्तान नेमो अभी तक चबूतरे पर नहीं आया था। यदि एक भी गोला 'नाटिलस' के लग जाता, तो हमारे लिए घातक सिद्ध हो सकता था।

नेडलैंड ने मुझ से कहा, "महाशय, हमें इस मुसीबत से छुटकारा पाने का कुछ प्रयत्न करना चाहिए। हमें भी उन लोगों को सिगनल देना चाहिए। शायद वे बदमाश भी समझे होंगे कि हम लोग भी डाकू हैं।"

नेडलैंड ने हवा में उड़ाने के लिए अपना रूमाल निकाला। वह उसे उड़ाने ही वाला ही था, कि अपनी महान शक्ति के बावजूद एक प्रबल झटके से वह चबूतरे पर गिर पड़ा।

कप्तान नेमो ने चिल्लाकर कहा, "दुष्ट पाजी ! क्या तू चाहता है कि उस जहाज से पहले मैं तुझे समाप्त कर दूं ?"

कप्तान नेमो के शब्द तथा मुखाकृति बहुत भयानक थी। उसका चेहरा पीला पड़ गया था, मानो दिल धड़कना बंद हो गया हो। उसकी आंखों की पुतलियां खिच गई थीं। उसने अपना शरीर आगे झुका कर नेडलैंड के कंधे को हिलाया।

फिर उसे छोड़ उस जहाज की ओर देखने लगा जो 'नाटिलस' के चारों ओर गोले बरसा रहा था।

उसने जोर से चिल्लाकर कहा, "वाह, तुम नहीं जानते मैं कौन हूं ? एक सताए हुए राष्ट्र का जहाज ! तुम्हें पहचानने के लिए तुम्हारा झंडा देखने की आवश्यकता नहीं। देखो, मैं अपना झंडा दिखाता हूं।"

कप्तान नेमो ने दक्षिणी ध्रुव में लगाए झंडे की भांति एक बड़ा काला झंडा चबूतरे पर फहरा दिया।

इसी बीच एक गोला 'नाटिलस' में आकर लगा तथा कप्तान के पास से होकर पानी में जा गिरा।

कप्तान नेमो ने मुझ से कहा, "तुम अपने साथियों समेत नीचे जाओ।"

मैंने कहा, "महाशय, क्या आप उस पर हमला करना चाहते हैं?"

"महाशय, मैं उसे डुबाने जा रहा हूं।"

"आप ऐसा नहीं कर सकेंगे।"

कप्तान नेमो ने उत्तर दिया, "नहीं, मैं उसे अवश्य डुबाऊंगा। तुम मुझे शिक्षा मत दो। जो तुम्हें नहीं देखना था, वह तुम्हारे भाग्य ने दिखाया है। हमला हो गया है, उसका बदला बहुत भयानक होगा। तुम नीचे चले जाओ।"

"वह किस देश का जहाज है?"

"तुम नहीं जानते, यही अच्छा है कि तुम कम से कम यह न जानो कि वह किस देश का है। नीचे जाओ।"

कनसील, नेडलैंड तथा मुझे उसका आदेश मानना ही पड़ा। लगभग १५ खलासी कप्तान को घेरकर खड़े हो गए। ये लोग बड़े क्रोध तथा घृणा से उस जहाज की ओर देख रहे थे। शायद उन्हें भी उन जहाजियों की तरह आक्रमण की भावना ने घेर लिया था।

जैसे ही मैं नीचे गया, एक गोला लगने का फिर शब्द सुनाई पड़ा।

कप्तान को बड़बड़ाते सुना, "मारो इस दुश्मन जहाज को।"

मैं अपने कमरे में चला गया। कप्तान तथा उसके अधिकारी चबूतरे पर ही रहे। चर्खी चालू कर दी गई। 'नाटिलस'

जल्दी से उस जहाज की तोपों की मार से बाहर भाग गई, परंतु जहाज ने उसका पीछा न छोड़ा ।

चार बजे शाम मेरा धैर्य समाप्त हो गया। मैं बीच के जीने पर गया, खिड़की खोल दी गई थी । मैं चबूतरे पर जाने का प्रयत्न करने लगा। कप्तान क्रोध में भरा चबूतरे पर टहल रहा था। वह ५-६ मील दूर उस जहाज की ओर देख रहा था, शायद वह उस पर हमला न करना चाहता था।

मैंने एक बार फिर कप्तान से बात करनी चाही। मैं उस से बोलने वाला था कि कप्तान नेमो ने मुझे शांत रहने का इशारा करके कहा, "मैं यहां सत्य और न्याय का प्रतिनिधि हूं। मैं सताया गया हूं और सताने वाला वह देखो वहां ! इन्हीं दुष्टों के कारण मेरा सब प्यार, खुशी, देश, पत्नी, बच्चे, पिता और माता सब कुछ खो गए हैं। मैं जिसे सबसे अधिक घृणा करता हूं, वह है दूसरे का शोषण । और यही वह जहाज कर रहा है।"

मैंने अंतिम बार उस जहाज की ओर देखा। वह काफी भाप निकाल रहा था। मैं, नेडलैंड और कनसील के पास चला आया।

मैंने कहा, "हमें भाग चलना चाहिए ।"

नेडलैंड ने पूछा "वह किस देश का जहाज है ?"

"मैं यह नहीं जानता; परंतु किसी भी देश का हो, आज रात को वह डुबा दिया जाएगा । अन्याय में साझीदार होने की अपेक्षा स्वयं नष्ट हो जाना अच्छा है ।"

नेडलैंड ने शांतिपूर्वक कहा, "मेरा भी यही विचार है। हमें रात तक इंतजार कर लेना चाहिए ।"

रात हो गई। नाव में अपार शांति थी। 'नाटिलस' अब भी उसी दिशा को जा रही थी। चर्खी भी तेजी से चल रही थी। मैं तथा मेरे साथियों ने यह निश्चय कर लिया था कि इस युद्ध में यदि वह जहाज हमारे इतने निकट आ गया कि वह हमारी बात सुन सके, तो हम लोग उनसे अवश्य सब कुछ बता देंगें और उसको डूबने से बचाने का प्रयत्न करेंगे।

रात का कुछ समय बीत गया, परंतु कोई घटना न हुई। हम लोग अवसर की प्रतीक्षा कर रहे थे। हम उत्तेजना के कारण बहुत कम बातचीत कर रहे थे। नेडलैंड समुद्र में कूदने ही वाला था कि मैंने रोक लिया।

३ बजे प्रातः मैं चबूतरे पर गया। कप्तान नेमो अब भी वहीं मौजूद था। वह अपने झंडे के नीचे खड़ा था, तथा झंडा हवा में उसके सिर पर फहरा रहा था। वह अब भी उस जहाज की ओर घूर २ कर देख रहा था और उसके आगे आने की प्रतीक्षा कर रहा था।

जहाज हम से दो मील दूर था। वह 'नाटिलस' की उस चमकदार रोशनी से, उसकी स्थिति का अंदाज अवश्य लगा रहा होगा। जहाज की लाल और हरी रोशनी साफ दिखाई देती थी और सफेद लैंप मस्तूल में टंगा जान पड़ता था।

६ बजे सुबह तक यों ही रहा। कप्तान मुझे अब तक भी देख न पाया था। जहाज अब डेढ़ ही मील दूर था। वह समय अब दूर न था कि 'नाटिलस' जहाज पर आक्रमण करे और हम लोग इसे सदैव के लिए छोड़कर अपने देश जाएं।

मैं जाने ही वाला था कि 'नाटिलस' का अधिकारी कई खलासी लेकर चबूतरे पर आ गया। कप्तान ने उन्हें भी न देखा

था। आक्रमण की तैयारियां शुरू करदी गईं। भयानक दो जून आ गई थी।

पांच बजे सुबह 'नाटिलस' की चाल धीमी पड़ गई। शायद यह उस जहाज को निकट आ जाने के लिए किया गया था। फायरिंग साफ-साफ सुनाई पड़ रही थी। गोले चारों तरफ के पानी को मथ रहे थे।

मैंने कहा, "मेरे मित्र, अब समय आ गया है। हाथ का एक इशारा और ईश्वर मेरी मदद करे।

नेडलैंड निश्चिंत था पर कनसील तथा मैं घबराए हुए थे। हम सब लोग वाचनालय में घुसे। जैसे ही बीच के दरवाजे को खोलने ही वाला था कि बड़े शब्द के साथ ऊपर की खिड़की बंद हो गई। नेडलैंड जीने पर कूदने ही वाला था कि उसे रोक लिया। सरसर शब्द सुनाई पड़ा। टंकियां पानी से भरी जाने लगीं। कुछ ही मिनट में 'नाटिलस' सागर की सतह से कुछ गज नीचे समा गई।

मैं अब उसका तात्पर्य समझ गया। अब भागना व्यर्थ था। 'नाटिलस' जहाज पर सागर की सतह से नहीं, नीचे से हमला करना चाहती थी, क्योंकि उसका नीचे का भाग लोहे से ढका न होगा।

हम लोग फिर कैद हो गए; अनिच्छुक गवाहों की भांति उस दुखद घटना को देखने को मजबूर हो गए। अब बात करने का कोई समय न रह गया था। हम लोगों ने एक दूसरे से बिना बोले ही अपने-अपने कमरे की शरण ली। मेरी विचार शक्ति लुप्त हो गई। मुझे उस भयानक युद्ध का आभास पहले से ही होने लगा। मैं चुप होकर अवश्यंभावी की प्रतीक्षा करने

लगा ।

इसी बीच 'नाटिलस' की चाल तेज हो गई। उसका सारा भाग हिल रहा था ।

एकाएक मैं चिल्ला उठा । कोई धक्का लगा था, परंतु था वह छोटा ही । मुझे प्रतीत हुआ कि 'नाटिलस' का नुकीला अग्रभाग उस जहाज के पेंदे में जोर से घुस रहा था।

मैं अब न सहन कर सका । एक पागल की भांति सैलून की ओर भागा ।

कप्तान नेमो वहां मौजूद था। वह शांत, चुपचाप खिड़की से देख रहा था।

एक बड़ा-सा पदार्थ पानी में डूब रहा था तथा 'नाटिलस' भी क्रोध में उसी के साथ डूब रही थी । हम लोगों से ३० फुट दूर एक टूटा हुआ जहाज दिखाई पड़ा, जिसमें तेजी से पानी घुस रहा था। थोड़ी देर में डेक पानी में डूब गया ।

पानी और ऊंचा उठा । जहाज के लोग एक जगह इकट्ठा हो कभी मस्तूल पर चढ़ते, कभी पानी से लड़ते, अपने जीवन की अंतिम घड़ियां गिन रहे थे।

मैं बड़ी ही वेदना से यह दृश्य देख रहा था तथा खिड़की से मानो कोई अदृश्य आकर्षण शक्ति मुझे उधर खींच रही थी।

जहाज धीरे-धीरे डूब गया । 'नाटिलस' उसकी सारी हरकतों को देखती रही । एकाएक एक शब्द हुआ । जहाज के भीतर की दबी हुई हवा अपने स्थान को तोड़कर ऊपर निकली, मानो उसकी तोप से गोला चलाया गया हो ।

अब अभागा जहाज और जल्दी डूबने लगा। उसकी चोटी पर कुछ व्यक्ति दिखाई पड़े । उसकी चहार-दीवारी आदमियों

के बोझ से झुकी जा रही थी। अंत में उसके खास मस्तूल की चोटी भी डूब गई। जहाज को अपने खलासियों तथा अन्य यात्रियों के साथ भंवर ने खींच लिया।

मैं कप्तान की ओर मुड़ा। वह भयानक बदला लेने के लिए चुपचाप खड़ा था। जब सारा दृश्य समाप्त हो गया तो कप्तान अपने कमरे को चला गया। मैं भी उसी के साथ गया।

अंतिम खिड़की के पास गोद में बच्चा लिए एक युवती का चित्र टंगा था। कप्तान नेमो कुछ समय उसकी ओर देखता रहा, फिर अपने हाथों से उनको झुककर नमस्कार किया तथा रंज में डूबा हुआ बैठ गया और सिसकियां भरने लगा।

४६

इस भयानक घटना के बाद खिड़कियां बंद हो गईं। सैलून में रोशनी भी न जलाई गई। 'नाटिलस' में आज शांति और अंधकार का राज्य था। 'नाटिलस' तेजी से दुर्घटना का स्थान छोड़ रही थी। कहां जा रही थी। उत्तर या दक्षिण? इतना भयानक हत्याकांड करके कप्तान कहां भागा जा रहा था?

मैं कमरे में वापस चला गया। वहां कनसील और नेडलैंड शांत खड़े थे। मुझे कप्तान नेमो से बहुत शिकायत थी। चाहे जितना नुकसान हुआ हो, परंतु उन्हें इस प्रकार का दंड न देना चाहिए था।

११ बजे बिजली की रोशनी फिर आ गई। मैं सैलून

में गया तथा विभिन्न यंत्रों द्वारा अपनी स्थिति का पता लगाया। 'नाटिलस' उत्तर की ओर २५ मील प्रति घंटा की चाल से कभी सागर-सतह पर, कभी ३० फुट नीचे जा रही थी।

यंत्रों को देखने से पता चला कि 'नाटिलस' इंगलिश चैनेल के फाटक को पारकर उत्तर की ओर तेज चाल से जा रही थी।

शाम तक हम लगभग २०० लीग की यात्रा कर चुके थे। रात हो गई। सागर में जब तक चंद्रमा न निकला, अंधियारा ही रहा।

मैं अपने कमरे में आ तो गया, परंतु मुझे नींद न आई। मेरे दिमाग में वही कल का दृश्य बार-बार नाच रहा था। हम न तो जानते थे कि कहां हैं और न यही कि किधर जा रहे हैं ?

एक दिन सुबह, तारीख का मुझे पता न था, मुझे नींद आ गई। जब मैं जागा तो देखा कि नेडलैंड झुका मेरे कान में फुसफुसा रहा था, "हम लोग भाग रहे हैं।"

मैं उठकर बैठ गया।

मैंने पूछा, "कब ?"

"आज रात को। 'नाटिलस' के सारे प्रबंधक लापता हैं तथा इसमें शांति का राज्य है। महाशय, क्या आप तैयार हो जाएंगे।"

"हां, परंतु हम हैं कहां ? कुछ पता है ?"

"मैंने कोहरे से २० मील पूर्व स्थल देखा है।"

"वह कौन देश है ?"

"यह मैं नहीं जानता, परंतु इससे क्या, वहां हमें शरण अवश्य मिल जाएगी।"

"हां नेड, अच्छा। आज रात को हम अवश्य भाग चलेंगे, चाहे सागर हमें निगल ही क्यों न जाय।"

"सागर अशांत है और हवा भी तेज चल रही है। परंतु बीस मील 'नाटिलस' की नाव में डरने की कोई बात नहीं। मैंने उसमें कुछ खाना और पानी की बोतलें भी रख ली हैं। यह बात कोई खलासी तक नहीं जान पाया है।"

"मैं तुम्हारे साथ अवश्य चलूंगा।"

नेडलैंड ने कहा, "और इसके अतिरिक्त यदि मैं पकड़ लिया गया, तो मैं अपनी रक्षा कर लूंगा और उनको मार डालूंगा।"

"मित्र नेड, हम लोग भी उन्हीं के साथ जान दे देंगे।"

मैं हरएक परिस्थिति के लिए तैयार था। नेडलैंड मुझे छोड़ कर चला गया। मैं चबूतरे पर चढ़ गया, परंतु हवा के कारण मैं वहां दिक्कत से खड़ा रह सका। आकाश धमकियां दे रहा था, परंतु फिर भी यदि स्थल २० ही मील है तो हमें अवश्य भाग चलना चाहिए। हमें एक दिन क्या, एक घंटा भी व्यर्थ न गंवाना चाहिए।

मैं नीचे सैलून को चला गया। कप्तान से मिलना भी चाहता था और नहीं भी। डर भी अंदर समा गया था और अंतिम बार मिलने की भी प्रबल इच्छा थी। मैं उससे क्या कहूंगा? क्या मैं डर के मारे उससे छिप जाऊं? हां, यही अधिक अच्छा होगा कि हम लोग उसके सामने ही न पड़ें। मुझे उसे भूल जाना चाहिए।

मुझे 'नाटिलस' का यह अंतिम दिन कितना बड़ा लग रहा था। मैं अकेला रह गया था। नेडलैंड और कनसील भी

मेरे सामने न पड़े थे।

६ बजे शाम को मैंने खाना खाया, परंतु आज मुझे भूख न थी। मैंने केवल ताकत रखने के लिए जबरदस्ती खाना खाया था।

साढ़े ६ बजे नेडलैंड मेरे कमरे में आया। उसने मुझसे कहा, "अब हम लोग चलने से पहले न मिल सकेंगे। दस बजे चलेंगे, तब तक चंद्रमा भी न निकलेगा। अंधकार का हम लाभ उठा लेंगे। आप वहीं नाव पर आ जाइएगा। कनसील के साथ मैं आपका वहीं इंतजार करूंगा।"

इतना कहकर नेडलैंड मुझे उत्तर देने का समय दिए बिना चला गया।

मैं 'नाटिलस' की दिशा जानना चाहता था। सैलून में गया। हम लोग उत्तर-पूर्व २५ फैदम की गहराई में तेजी से चले जा रहे थे।

इस संग्रहालय में एकत्रित विविध कलाकृतियों को मैंने अंतिम बार फिर देखा। ये वस्तुएं एक दिन अपने बनाने वाले के साथ इसी सागर में नष्ट हो जाएंगी। मैंने इनका अंतिम चित्र अपने दिमाग में बनाना चाहा। इसीलिए लगभग १ घंटे तक शीशे की आलमारियों में चमकदार बहुमूल्य पदार्थों का निरीक्षण करता रहा। इसके बाद अपने कमरे को चला गया।

वहां मैंने अपनी समुद्री पोशाक पहन ली तथा अपनी इस यात्रा में तैयार की हुई डायरी भी अपने साथ सुरक्षित रख ली। मेरा दिल जोरों के साथ धड़क रहा था। कप्तान मुझे देख अवश्य समझ सकता था कि मैं कोई अजीब काम

करने वाला हूं।

वह उस समय क्या कर रहा था ? मैं उसके दरवाजे पर खड़ा यही सुन रहा था। मुझे उसके पैरों की आवाज सुनाई दी। कप्तान नेमो कमरे में मौजूद था। अभी वह सोया न था। प्रत्येक क्षण मेरे दिमाग में यही आ रहा था कि अब वह निकल कर मुझसे पूछने ही वाला है कि मैं क्यों भागा जा रहा हूं। मैं भी इसका उत्तर देने को तैयार था। मैं सोचने लगा कि यदि मैं कप्तान के सामनें न आया होता तो बहुत अच्छा होता।

परंतु यह एक पागल मनुष्य का विचार था। मैं अपने को रोक अपने कमरे में जा कर बिस्तर पर लेट गया तथा अपने शरीर और दिमाग की इस उलझन को शांत करने का प्रयत्न करने लगा। मेरी विचार शक्ति धीरे २ ठीक होने लगी, परंतु मेरे उत्तेजित दिमाग में 'नाटिलस' की सारी यात्रा घूमने लगी। 'अब्राहम लिंकन' से गायब होने से आज तक के सुख-दुख के वृत्तांत, समुद्री शिकार, टोरस द्वीप और जलडमरू-मध्य, पापुअन के जंगली मनुष्य, मोती के मैदान, स्वेज की सुरंग सेंटोरिन द्वीप, क्रेटन गोताखोर, वीगो की खाड़ी, एटलांटिस, बर्फ की दीवार, दक्षिणी ध्रुव, बर्फ के अंदर की कैद, आक्टोपस से युद्ध, गल्फस्ट्रीम के तूफान तथा डूबते जहाज का दर्दनाक दृश्य तथा उसके खलासी—यह सारी चीजें मेरे दिमाग में सिनेमा के पर्दे की भांति आ रही थीं, और इन सारी चीजों का नायक कप्तान नेमो—वह आज हम लोगों की तरह साधारण आदमियों की तरह नहीं, वरन एक ज्ञान संपन्न समुद्री-दैत्य की भांति मेरे समक्ष नाच रहा था। इस समय साढ़े नौ

वज थे । मैंने फट जाने के भय से अपना सिर हाथों में दबा लिया। मैंने आंखें बंद कर लीं तथा अब कुछ न सोचना ही निश्चय किया। आधा घंटा और बाकी था, परंतु रात का यह आधा घंटा मुझे पागल न कर दे । इसी बीच मुझे एक बाजे का मधुर स्वर सुनाई पड़ा। मुझे कुछ शांति मिली । उसी के सुनने में व्यस्त हो, उसका आनंद लेने लगा। परंतु आनन्द था ही कहां ?

एकाएक एक विचार ने मेरे दिल में डर पैदा कर दिया। कप्तान नेमो ने अपना कमरा छोड़ा। वह सैलून में आ गया था और मुझे 'नाटिलस' से बाहर जाने में सैलून से होकर निकलना पड़ेगा। वहां वह मुझे अंतिम समय मिल जाएगा। वह मुझे देखेगा और मुझसे अवश्य बोलेगा। उसका एक इशारा मेरे सारे शरीर को शून्य कर देगा तथा उसका एक शब्द मुझे फिर 'नाटिलस' में रोक लेगा ।

दस बजने ही वाले थे। मुझे कमरा छोड़कर साथियों के पास पहुंचने का समय आ गया था।

कप्तान यदि मेरे सामने भी खड़ा हो, फिर भी मुझे दुविधा न करनी थी। मैंने धीरे से अपना दरवाजा खोला, परंतु इतने पर भी मुझे मालूम हुआ कि वह जोर से खुला था। शायद वह जोर की आवाज मेरे दिमाग में ही हो, वास्तव में दरवाजा धीरे से ही खुला था।

मैं कदम-कदम पर अपने दिल की चाल रोके हुए उस कमरे के बीच से गुजरा।

मैं सैलून के दरवाजे के पास पहुंचा, उसे धीरे से खोला। सैलून में बिल्कुल अंधेरा था। बाजे की आवाज अब भी

धीरे-धीरे सुनाई पड़ रही थी। कप्तान नेमो वहां था अवश्य, परंतु वह मुझे देख न सका था। मैंने सोचा कि वह इतना व्यस्त था कि शायद रात भर मुझे देख न पाता।

मैं कमरे में बिछी हुई दरी के ऊपर से निकला। डर था कहीं कप्तान मेरी आहट पाकर मुझे देख न ले। वहां से वाचनालय के दरवाजे तक जाने में मुझे पांच मिनट लगे।

मैं उसे खोलने ही वाला था कि कुछ आवाज सुनाई पड़ी। कप्तान अपनी जगह से उठा था। मैंने उसे देखा था, क्योंकि वाचनालय में जलते हुए प्रकाश की किरणें सैलून में पड़ रही थीं। वह चुपचाप मेरी तरफ आया। उसका दिल सताया हुआ था। मैंने उसे यह अंतिम स्वर गुनगुनाते सुना, "ईश्वर सर्व शक्तिमान है।"

हताश मैं जल्दी से वाचनालय में घुस गया। फिर बीच के जीने से होकर बीच-बीच उसी रास्ते में, जिससे मेरे दो साथी गए थे, उनके पास पहुंचा।

मैंने कहा, "हमें अब चलना चाहिए। हमें अब चलना चाहिए!!

नेडलैंड ने उत्तर दिया, "फौरन ही।"

नेडलैंड अपने साथ रिंच तथा बोल्ट लाया था। उनकी सहायता से 'नाटिलस' और नाव के बीच का दरवाजा बंद कर दिया गया। फिर नेडलैंड नाव को 'नाटिलस' से जोड़ने वाले बोल्ट खोलने लगा।

अचानक अंदर से एक शब्द सुनाई पड़ा। कई व्यक्ति एक दूसरे को जल्दी-जल्दी जवाब दे रहे थे। क्या मामला है? क्या उन्होंने हमारे भागने के रहस्य का पता लगा लिया है?

नेडलैंड ने एक छुरा मेरे हाथ में दे दिया।

मैं गुनगुनाया, "अब हम देखेंगे कौन मुझे मार डालता है!"

नेडलैंड ने अपना काम बंद कर दिया, परंतु वही शब्द लगभग बीस बार दोहराया गया। मुझे यह चीत्कार बड़ा भयानक मालूम पड़ता था।

खलासी चिल्ला रहे थे, "समुद्री भंवर! समुद्री भंवर!"

समुद्री भंवर! इससे भयानक शब्द इन परिस्थितियों में और क्या हो सकता था? क्या अब हम नाव के सबसे अधिक खतरनाक किनारे पर थे? जैसे ही मेरी नाव 'नाटिलस' से अलग हुई, 'नाटिलस' को कोई अज्ञात शक्ति खाड़ी की ओर खींच ले गई।

यह तो सब लोग जानते हैं कि पानी की धाराएं फारो और लोफोडेन द्वीपों के बीच बड़े जोर से बाहर निकलती हैं। उनसे एक बड़ा भंवर पैदा हो जाता है, और इस भंवर से आज तक कोई जहाज बचकर नहीं निकला।

जान बूझकर या धोखे से कप्तान 'नाटिलस' को यहीं ले आया था। जैसे ही 'नाटिलस' यहां पहुंची, वह तेजी से चक्कर खाने लगी। हम इतना डर गए थे कि मेरी संज्ञा लुप्त-सी हुई जा रही थी। सभी लोग मृत्यु के समय के ठंडे पसीने से सराबोर थे। मेरी नाव के चारों ओर कैसा शोर हो रहा था! पानी की आवाज दूर-दूर से टक्कर खाकर वापस आ रही थी और 'नाटिलस' के पेंदे से टकरा रही थी। इस भंवर में कड़े से कड़े पदार्थ चूर-चूर हो जाते हैं। पेड़ों के तने इस चक्की में पड़कर टुकड़े-टुकड़े हो जाते हैं। ऐसे विकट स्थान पर 'नाटिलस' आ फंसी थीं।

कैसी विकट परिस्थिति थी ! हम लोग बहुत डर गए थे। 'नाटिलस' डूबते हुए मनुष्य की भांति अपनी रक्षा करने का प्रयत्न कर रही थी। उसके लोहे की चद्दरें चटख गई थीं। कभी-कभी वह सीधी ऊपर को खड़ी हो जाती थी और हम लोग भी उसी के साथ ऊपर को उठ जाते थे।

नेडलैंड ने कहा, "हमें पेंच फिर कस कर 'नाटिलस' को मजबूती में पकड़ लेना चाहिए। 'नाटिलस' के साथ रहने से हम शायद बच ही जाएं।"

उसने कहना समाप्त भी न किया था कि एक झटका लगा। पेंच टूट गए तथा नाव भंवर में फंस गई।

मेरा सिर नाव की लोहे की दीवार से टकरा गया और इस भीषण चोट के कारण मुझे मूर्च्छा आ गई।

४७

इस प्रकार समुद्र के अंदर की यह यात्रा समाप्त हुई। रात में क्या हुआ; नाव कैसे उस समुद्री भंवर के चक्करों से निकली; नेडलैंड, कनसील और मैं उसी खाडी से कैसे निकले; मुझे इसका कुछ भी ज्ञान नहीं। जब मुझे होश आया, तो मैं लोफोडेन द्वीप के एक मछली के शिकारी की झोंपड़ी में लेटा था। मेरे दो साथी भी सुरक्षित थे तथा मेरे पास बैठे मेरे हाथ दबा रहे थे। मैंने धीरे से हाथ-पैर हिलाए।

इस समय फ्रांस वापस जाने के लिए मेरे पास साधन ही

क्या थे ? उत्तरी नार्वे और दक्षिणी नार्वे के बीच आने-जाने के साधन बहुत कम थे । हमें कई दिन उत्तरी अंतरीप को जाने वाले स्टीमर की प्रतीक्षा करनी पड़ी ।

इस स्थान के उत्साही परोपकारी निवासी मुझे स्थल पर सुँरक्षित ले आए थे । मैंने उन्हें अपनी सारी यात्रा का हाल सुनाया । यह वृतांत बिल्कुल यही है । न तो इसमें से कुछ घटाया गया है, और न कोई चीज बढ़ाकर ही कही गई है । यह एक ऐसी यात्रा का वर्णन है जो साधारणतया आदमी को दुर्लभ है।

क्या कोई मेरी बात पर विश्वास करेगा ? मैं यह नहीं जानता; परंतु मुझे इस बात से कोई मतलब नहीं । दस महीनों की यात्रा का वर्णन करने का मुझे पूरा अधिकार है । मैंने बीस हजार लीग समुद्री यात्रा की है । इससे मुझे प्रशांत-महासागर, हिंद महासागर, लाल सागर, भूमध्य सागर, अतलांतिक महासागर और उत्तरी तथा दक्षिणी ध्रुव सागरों की अद्भुत बातों का रहस्य ज्ञात हुआ है ।

परंतु 'नाटिलस' का क्या हुआ ? क्या वह उस समुद्री भंवर के दबाव से अपनी रक्षा कर सकी ? क्या कप्तान नेमो अब भी जिंदा है ? क्या बदला लेने की भावना उस में अब भी है ? क्या एक दिन लहरें वह हस्तलेख, जिसमें उसका सारा हाल लिखा है, वस्तुतः बहा कर जगत के सामने लाएंगी ? क्या मैं उस आदमी का नाम भी जान सकूंगा ? क्या वह डूबा हुआ जहाज अपनी राष्ट्रीयता बताकर कप्तान नेमो के देश का परिचय देगा ?

मैं तो ऐसी आशा करता हूं । यदि ऐसा है तो कप्तान नेमो अब भी अपने देश, सागर, में रह रहा होगा । खाड़ी के उस समुद्री भंवर में असंख्य जहाज चूर-चूर हो गए हैं, पर मेरा

विश्वास है कि 'नाटिलस' उसमें फंसकर भी निकल आई होगी। मैं भगवान से प्रार्थना करता हूं कि कप्तान नेमो के हृदय से कटुता और घृणा की भावना समाप्त हो जाए और इतनी सृष्टि की अद्भुत चीजें देखकर उसके बदले की प्यास बुझ जाय। यदि वह विचित्र व्यक्ति है तो क्या, वह महान भी तो है। क्या मैंने इसका अनुभव स्वयं नहीं किया है ? क्या मैंने दस महीने तक उसके साथ का अस्वाभाविक जीवन नहीं बिताया है ? हजारों वर्ष पूर्व मनीषियों ने एक प्रश्न बार-बार दोहराया था—"जो इतनी अथाह गहराई में है, उनका कौन पता लगा सकता है.?"

कम से कम दो व्यक्ति अवश्य हुए जिन्होंने पता लगाया, कप्तान नेमो और मैं।